प्राचीन छुटक पत्रादि उपरथी तैयार करवामा आवेले रसवतीरूप[illegible]

# यंत्रपूर्वक कर्मादिविचार.

( छ कर्मग्रंथना रहस्यभूत )



परमोपकारी महात्मा श्रीवृद्धिचंदजी महाराजना परिवारना गुरुणीजी
लाभश्रीजीना पूर्ण प्रयासथी तैयार करवामां आवेलो

कर्मग्रंथना अभ्यासीओने -
अत्यंत उपयोगी
आ लघु ग्रंथ.

भावनगर, अमदावाद विगेरेनी आर्यिकाओनी
आर्थिक सहायवडे

छपावी प्रसिद्ध करनार

श्रीजैन धर्म प्रसारक सभा

भावनगर

मुंबई,
निर्णयसागर प्रीन्टींग प्रेस

प्रथमावृत्ति | नकल १०००

वीरसंवत २४४३ | विक्रम संवत १९७३

प्रयासकारक साध्वीजीनो भूत वर्त्तमान

# साध्वी समुदाय.

## परमपूज्य गुरुणीजीश्री जेश्रीजी

### तेमनी शिष्या.

साध्वीजी उजमश्री, वीजकोरश्री, चंदनश्री, विवेकश्री, प्रेमश्री, जोगश्री ने वुद्धिश्रीजी.

### गुरुणीजी श्री विवेकश्रीजीनी शिष्याओ.

साध्वीजी गुलाबश्री (वीकानेरवाळा), दीवाळीश्री, हीरश्री, अमृतश्री, गुलाबश्री, ज्ञानश्री, पुन्यश्री, उत्तमश्री, जयश्री, चंपाश्री अने प्रसन्नश्रीजी.

### गुरुणीजीश्री गुलाबश्रीजीनी शिष्याओ.

साध्वीजी लाभश्रीजी, सदाश्री, चतुरश्री, खीमकोरश्री, आणंदश्री, हेमश्री, हुकमश्री, ज्ञानश्रीजी विगेरे.

### गुरुणीजीश्री हीरश्रीजीनी शिष्याओ.

साध्वीजी मणीश्री, मुक्तिश्री, सोमश्री, आणंदश्री विगेरे

### गुरुणीजी लाभश्रीजीनी शिष्याओ.

साध्वीजी दयाश्री, माणेकश्री, तिलकश्री, कमळश्री, निधानश्री, खीमा कंचनश्री, हरकोरश्री, तिलकश्री तथा

प्रशिष्याओनो समुदाय विगेरे हालमां विचरे छे.

---

— आवी नीशानीवाली साध्वीओ हाल विद्यमान छे.

# प्रस्तावना.

आ बुक एक अमूल्य ग्रंथनी गरज सारे तेवी छे तेना मुख्य बे विभाग छे एक तद्गतविषयनी समजुतीमाटे भाषारूपे जे लखाण छे ते, अने बीजो यंत्रोमा आकडा विगेरे पूरीने करेल छे ते यंत्रनो विभाग प्रथम पृष्ठ ९ थी १४, १०१ थी ११८ अने प्राते २१० थी बुक पूर्णथता सुधी (पृष्ठ २७७ पर्यंत) छे यंत्रोमा आवेली हकीकत मोटे भागे प्रथम समजुतीमां भाषारूपे लखायेली छे, जेथी यंत्र समजवा माटे खास उपयोगी छे कर्मग्रन्थना अभ्यासीओने आ बुक तैयार करेली रसवती जेवी मिष्ट लागे तेम छे छ कर्मग्रंथनी अदर लभ्य न थई शके एवो पण केटलोक भाग के जे पूर्व पुरुषोए छुटक पत्रोमा लखी राखेलो ते आमा दाखल करेलो छे बीजा पण खास जरुरी प्रकरणो दाखल करेला छे

पेहेला, बीजा ने त्रीजा कर्मग्रथ सबधी हकीकत आपता छेवटे ६२ मार्गणाए गुणस्थान तथा तेनी उदयगत प्रकृतिओ बतावेली छे ते उदयस्वामित्व त्रीजा कर्मग्रथमाथी लभ्य थइ शके तेम नथी, परतु आनी अदर लभ्य छे त्यारपछी जीवादि २१ द्वारे जीवस्थान, गुणस्थान, योग, उपयोग, लेश्या अल्पबहुत्व आपेल छे, ते ९९ अथवा १०० बोलनो बासठीओ कहेवाय छे, तेमा ६२ मार्गणाने ज वधारे विस्तारीने बोल वधार्या छे. अने ६२ उत्तरमार्गणानी मूळ १४ मार्गणाना १४ द्वार उपरात उपयोग, भाषक, परित्त, पर्याप्त, सूक्ष्म ने चरिम ए छ द्वार वधारेला छे प्रारभनुं जीवद्वार तो नामनुं ज छे. आ हकीकत पण कर्मग्रथमा लभ्य थई शके तेम नथी

त्यारपछी १४ गुणठाणे बधहेतु ने तेना भागा आपेला छे ते पचसंग्रहमाथी उद्धरीने कोइ महात्माए तैयार करेला ते दाखल कर्या छे

आगळ गत्यादि ६२ मार्गणाए (अनुक्रमणिकाना अक २७ थी ४८ पर्यंत) जे जे हकीकत आपीछे ते बुद्धिपूर्वक विचारीने काढवामा आवे तो कर्मग्रथमाथी नीकळी शके तेम छे, परतु आ तो तेने माटे तैयार करेली रसवती छे वळी ते बधी हकीकत छेवटना यत्रोमां पण आकवडे आपेली छे. आश्रव, सवर, समुद्घात, बधहेतु, चार ध्यान, पाच भाव, कुळकोटी विगेरे जे ६२ मार्गणाए बतावेल छे ते कर्मग्रथमा पण लभ्य थइ शके तेम नथी बाकी जे जुदी जुदी १७ प्रकारनी प्रकृतिओना नाम प्रथम पृष्ठ ५७ थी ६२ सुधीमा आपेला छे ते पैकी १५ प्रकारनी[1] प्रकृतिओ ६२ मार्गणाए उतारी छे ते पण सामान्य बुद्धिवाळाने कर्मग्रंथमाथी तारवी काढवी मुश्केल पडे तेम छे, बुद्धिमान्ने दुर्लभ नथी

---

१ बाकी रहेली अध्रुवसत्ताक ने ध्रुवसत्ताक प्रकृतिओ ६२ मार्गणाए उतारवी रहीगयेल ते बुकने अंते आपेल छे

त्यार पछीना अल्पबहुत्व विगेरे नाना नाना प्रकरणो अने ५६३ जीवभेद संबंधीना यंत्रो खास ध्यानपूर्वक वांचवा योग्य छे.

छेवट सिद्धद्वार आपेल छे ते लोकप्रकाशनी प्रसादी छे.

गद्यविभागनो छेवटनो मोटो भाग पृष्ट १२१ थी २०९ पर्यंत (८९ पृष्ठ) छट्ठा कर्मग्रंथना विवरणे रोकेल छे. आ विवरण महातपस्वी श्री खांतिविजयजी (दादा) महाराजश्रीनी पासे श्रावक कुंवरजी आणंदजीए कर्मग्रंथनो अभ्यास टीका उपरथी कर्यो त्यारे तेनी क्रमसर उतारेली नोट उपरथी अक्षरशः लेवामां आव्युं छे. तेनी अंदर टीका प्रमाणे गाथाओना अंक पण आप्या छे. छट्ठा कर्मग्रंथनो अभ्यास करतां घणा बंधुओ बंध, उदय ने सत्तास्थानना संवेधमां मुंझाइ जाय छे, अने अभ्यास छोडी दे छे, तेमनी मुंझवण दूर करवामां आ विवरण सारी रीते उपयोगी थवा संभव छे.

त्यार पछी यंत्रोना प्रारंभमां मोहनी अने नाम कर्म संबंधी यंत्रो आपेला छे, ते खरेखरा उपयोगी छे. तेमां बतावेला पदो ने पदवृंद खास समजवा लायक छे. पछी चौद गुणठाणे जीवस्थानादि ८८ द्वारो यंत्ररूपे ११ पृष्ठमां आप्या छे. तेनी अंदरना दरेक द्वारो ध्यान आपवा लायक छे.

प्रांते मोटो बासठीओ के जेनी अंदर ६२ मार्गणाए १६३ द्वार यंत्ररूपे आपेला छे. ते दरेक द्वारना नाम अनुक्रमणिकामां आप्या छे. ते नामो वांचतां ज आ यंत्रोनुं उपयोगीपणुं केटलुं विशेष छे? ते ध्यानमां आवी शके तेम छे.

उपर प्रमाणेना विषयोनो आ बुकमां समावेश करेलो छे. ते अनुक्रमणिका वांचवाथी लक्षमां आवे तेम होवाथी अहीं तेनुं पुनरावर्तन करवामां आव्युं नथी. बाकी आ बुकनुं उपयोगीपणुं तो कर्मादि द्रव्यानुयोगना विषयमां प्रेम (टेस्ट) धरावनारा बंधुओ ज समजी शके तेम छे. श्राविकाओ अने साध्वीजीओ जेओ निरंतर कर्मग्रंथनुं मनन स्मरण कर्या करे छे, तेमने आ बुक अत्यंत उपयोगी छे अने तेमनी वारंवारनी मागणी उपरथी ज आ प्रयास लेवामां आव्यो छे.

आ बुक तैयार करवामां पूरेपूरो प्रयास साध्वीजीश्री लाभश्रीजी के जेओ मुनिराज श्री वृद्धिचंदजी महाराजना परिवारमां सारा विद्वान गणाय छे, जेमने संस्कृत भाषानो अने द्रव्यानुयोगनो सारो बोध छे—तेमनो छे. श्री रांधणपुर निवासी श्रावक ककलभाइ जुठमल जोटा के जेओ द्रव्यानुयोगना सारा बोधवाळा छे, तेमणे पण आ बुक तैयार करवामां घणी सहाय करी छे. गुरुणीजी हेतश्रीजीनी शिष्या साध्वीजी उत्तमश्रीए पण सारुं लक्ष आप्युं छे. उपरांत भावनगरनी श्री वृद्धिचंदजी जैनविद्याशाळाना मुख्य अध्यापक मास्तर शामजी हेमचंद्रे अने शास्त्री जेठालाल हरिभाइए पण सारो प्रयास लीधो छे. शास्त्रीनो पोतानो आ विषय नहीं छतां तेमणे आ बुकनी यंत्रो सहित तमाम प्रेसकापी करवामां बहु सारुं लक्ष आप्युं छे. अंदर उंडो प्रवेश कर्या विना आवा विषयमां लेखिनी चाली शकती नथी. आ सर्वेनो अत्र अंतः-

करणपूर्वक उपकार मानवामा आवे छे गुरुणीजी शिवश्रीजी महाराज तथा हेत-श्रीजी महाराजनी आ कार्यमा पूर्ण प्रेरणा होवाथी बहु प्रयास वडे थइ शके तेवु आ कार्य सुसाध्य थयु छे आ बुकमा लगभग ९२ पानाओ यत्रना छे ते कार्य प्रेसवाळाओए पण बहु सतोषकारक करी आप्यु छे सामान्य प्रेसवाळा आवुं संतोपकारक कार्य करी शकता नथी आ बुक पूर्ण छपाया अगाउ पण जे जे मुनिराजे के विद्वान श्रावकोए आना फारमो जोया छे, ते सर्वेए आ बुकना उपयोगीपणाने माटे एक सरखो ज श्रेष्ठ मत आपेलो छे तेथी ते सबधमा हवे लखवानी जरूर रही नथी

आ बुकमा रही गयेली अशुद्धिना संबधमा शुद्धिपत्र आ साथे आपवामां आव्युं छे, परतु ते सबधमा एक बे बाबत माटे खुलासा करवानी अगत्य छे

पृष्ट २७ उपर आपेली गाथा अशुद्ध मळेली अने तेने माटे बीजुं साधन मळेलु नहीं परंतु हालमा श्री आवश्यक सूत्रनी हारिभद्री टीका वाचता तेनी अदर तेज गाथा दृष्टिगोचर थता गाथा सुधरी शकी छे अने अशुद्ध गाथामा बतावेल 'थि' शब्द नीकळी जवाथी एक द्वार घटता २१ द्वारनो मेळ मळी रह्यो छे

पृष्ट-४५ मां आपेला पाच स्थावरना संयोगी भागानुं मथाळु 'पाच स्थावरना सयोगी भागा' एम थवुं जोइए तेने बदले 'पाचमा गुणस्थानना सयोगी भागा' लखाइ गयेल छे अने तेनु वास्तविक स्थळ पण पृष्ट ३२ मे छकायना सयोगी भागानी नीचे होवुं जोइए छता भूलथी बंधहेतुना भागानी वचमा दाखल थइ गयेल छे, ते सुधारी लेवा विनंति छे

पृष्ट ६३ मा प्रकृतिओ गणावता 'केवळज्ञानावरण ने केवळदर्शनावरण' ने बदले केवळज्ञान ने केवळदर्शन लखायेल छे आवुं अन्यत्र पण प्रकृतिना नाम लखवामा सकुचित नाम लखवाने कारणे थयु होय तो ते सुधारी लेवा विनंति छे आ सिवाय बीजी तो साधारण भूलो मात्र उपलक नजरे जोता देखाणी ते लखी छे, परंतु आ बुकने खंतपूर्वक वाचनार बीजी कोई भूलो दृष्टिदोपथी, मतिदोपथी अथवा प्रेसदोपथी रही गयेली सूचवशे तो ते सुधारी लेवा माटे बनतो प्रयास करवामां आवशे यत्रोनी अदर पण बारीक दृष्टिथी विचारपूर्वक दरेक आकडाओ वाची तेमा रही गयेली भूल कोई सूचवशे तो तेनो पण आभार मानवामा आवशे.

आ बुकनो बहोळो भाग साधु साध्वी तेमज श्रावक श्राविका जेओ कर्मग्रथादिकना अभ्यासी होय अने तेमा रस लेनारा होय तेमने भेट आपवानो होवाथी तेनी अदर रहेली आर्थिक सहायनी अपेक्षा साध्वीजी श्री लाभश्रीजीना अमोघ उपदेशथी भावनगर, गोघा, अमदावाद, राधणपुर विगेरेनी श्राविकाओए पुरी पाडेली छे तेथी उदार सहायक बहेनोना नामो आ साथे आपवामा आव्या छे तेमा कर्मक्षयनिमित्ते १५८ कर्मप्रकृतिनो तप ( १५८ उपवास प्रमाण ) करनार बहेनोए आ बुक कर्मक्षयमा पूर्ण सहायक होवाथी सारी सहाय करी छे उपरात अक्षयनिधि, वीश स्थानक तथा ज्ञान-पंचमीनो तप करनार बहेनोए पण आर्थिक सहाय आपी छे ज्ञानावरणी कर्मने त्रोडवा माटे आ बुक एक प्रबळ साधन छे आ विषयना खरेखरा अभ्यासीओ तो

आ विषयनुं रटण कर्या करे छे, जेथी तेमनुं दुर्ध्यान नाश पामे छे अने आत्माने सकाम-निर्जरा प्राप्त थाय छे.

साध्वीजी लाभश्रीजी के हाल जेओ मुनिराजश्री वृद्धिचंदजी महाराजना परिवारना साध्वी समुदायमां मुख्य छे. तेमणे पोताना वडील साध्वी समुदायनुं लीस्ट पण आ साथे दाखल कराव्युं छे के जे तेमनी वडीलो प्रत्येनी पूज्यबुद्धि प्रदर्शित करे छे. विनय वैयावच्चादि गुण अप्रतिपाती होवा साथे आत्माने परम हितकारक छे. तेथी आवे प्रसंगे वडीलोनुं स्मरण ताजुं करवुं ए सर्व रीते घटित छे. एमना परिवारमांना बे त्रण साध्वीओए पण आ विषयपर सारुं ध्यान आप्युं छे, अने आ कार्यमां बनती सहाय करी छे, तेमनो पण अत्र आभार मानवो घटे छे.

प्रांते आ बुकनी अंदर आपेल तमाम विभागोमां मूळ लेखक जेओनां नाम ज्ञात करतां अज्ञात विशेष छे-ते सर्वनो, तेने सुधारी शुद्ध करी आपनारनो, दरेक प्रकारनी आ बुकने अंगे सहाय आपनारनो तेमज आर्थिक सहाय आपनार बहेनोनो आभार मानी आ टुंकी प्रस्तावना समाप्त करवामां आवे छे, तेमां रही गयेली भूलोने माटे मिच्छा दुक्कड देवामां आवे छे अने आ बुकनो तेना उत्कट अभ्यासीओ पूर्ण लाभ ले अने तेना अभ्यासवडे तेमनी कर्मसंतति नाश पामे एवा सत्फळनी वांछा राखी हाल तरत तो विरमवामां आवे छे.

**परमात्मा सर्वजीवना पूर्वकर्मो नाश करवामां आ बुक द्वारा पूर्ण सहायक थाओ. एज प्रार्थना.**

भाद्रपद शुदि. १
सं. १९७३.

कुंवरजी आणंदजी.
श्रीजैनधर्मप्रसारकसभाना प्रमुख.
भावनगर.

# यन्त्रपूर्वक कर्मादिविचारनी अनुक्रमणिका.

## कर्मग्रंथ पहेलो (कर्मविपाक)



## कर्मग्रंथ बीजो (कर्मस्तव)



## कर्मग्रंथ त्रीजो (बंध स्वामित्व)



## चतुर्थ षडशीति कर्मग्रंथादिगत विचार



## पांचमा शतक कर्मग्रंथादिगत विचार

पृष्ठ

पृष्ठ

# आर्थिक सहाय आपनार व्हेनोना नामोनुं लीस्ट.

## अमदावाद

७५) बाई रूपाळी   १०) बाई चचळ   १०) बाई जीवी   ५) बाई पार्वती
५) बाई चचळ   ५) बाई नवी

## गोघा

५०) बाई राम   १०) बाई पार्वती   १०) बाई मणी   ५) बाई दीवाळी
५) बाई पार्वती   ५) बाई देवकोर   ५) बाइ भाकु   ५) बाई मोती

## भावनगर

४०) बाई जडाव   २०) बाइ फुळी   २०) बाई कीली   २०) बाई वीरू
२०) बाइ मोंघी   १५) बाई दीवाळी   १५) बाई कंकु   १५) बाई पुरी
१३) बाई वीजी   १०) बाई मोंघी   १०) बाई जडाव   १०) बाई जडाव
१०) बाई सूरज   १०) बाई अमरत   १०) बाई पार्वती   ६। शा खाते
५। बाई लेरी   ५। बाई लखमी   ५। बाई राम   ५। बाई हेम
५। बाइ चदन   ५। बाई शीव   ५। बाई मोती   ५। बाइ धोळी
५। बाई पुरी   ५। बाइ वीजी   ५) बाइ हरकोर   ५) बाइ राम
५) बाइ दुधी   ५) बाइ उजम   ५) बाई दीवाळी   ५) बाइ मेघ
५) बाइ वीजळी   ५) बाइ हरकोर   ५) बाई समरत   ५) बाइ वीजी
५) बाई कुवर   ५) बाइ समरत   ५) बाई अनोप   ५) बाइ चचळ
५) बाइ मोती   ५) बाई प्रेमकोर   ५) बाई चचळ   ५) बाई हरमर
५) बाइ सतोख   ५) बाइ जेकोर   ५) बाइ मणी   ५) शा   खाते
५) बाइ संतोख   ५) बाइ उजम   ५) बाई अमरत   ५) बाई नदु
५) बाई पार्वती   ५) बाई मणि   ५) बाइ देवकोर   ५) बाइ पातळी

## राधनपुर

१५) बाई परसन   ५) बाइ मेणा   ५) बाइ मणी

## पालीताणा

१०) बाइ कुवर   ५। बाई मोंघी

१०) बाई परसन अगाशीवाळी   २०) बाइ समरत पाटणवाळी
५) बाइ कुवर अगीयाळी   ४॥ शा खाते मटसबीउ

११५) सवत् १९७२ मां भावनगरमां श्राविकाओए अक्षयनिधि तप करेलो तेनी उपजना आवेला छे
५०) चालु वर्षमां भावनगरमां श्राविकाओए युगप्रधान तप करतां तेनी उपजना आव्या छे

# शुद्धिपत्र.

| पृष्ठ | पंक्ति | अशुद्ध | शुद्ध |
|---|---|---|---|
| १७ | २४ | नरकत्रिक | नरत्रिक |
| १८ | ६ | नरकानुपूर्वी | नरानुपूर्वी |
| २१ | २० | मिश्र १, ए ५ विना ओघे | ए ४ विना ओघे ११८ |
| २७ | ९ | सन्नी १९ भव २० त्थी २१ चरिमे य २२ | सन्नी १९ य होई भव २० चरिमे २१ |
| ४६ | १ | पांचमा गुणस्थानना | पांच स्थावरना |
| | | | स्थळ—पाना ३३ मे छकायना संयोगी भांगानी नीचे |
| ६३ | १९ | केवळ ज्ञान १, केवळ दर्शन १ | केवळ ज्ञानावरण १, केवळ दर्शनावरण १ |
| | | आवी रीते अन्यत्र पण टुंका नामथी लखायेल होय त्यां सुधारीने वांचवुं | |
| ९६ | ३० | एक प्रदेशमां | एकेक प्रदेशमां |
| ९६ | ३१ | जघन्य उत्कृष्ट छे | जघन्यथी उत्कृष्ट पर्यंत |
| | | | एकेक प्रदेश वधती असंख्याती छे दरेक जातिनी अनंती छे |
| ९७ | २ | एक प्रदेशी आश्रित | एकेक प्रदेश आश्रित |
| ९७ | ६ | पर्वत कुटादिने | पर्वत कूटादिने विषे |

कर्मविपाकमुक्ताय नमः

# यंत्रपूर्वक कर्मादिविचार.

## कर्मग्रंथ पहेलो (कर्मविपाक)

### आठ कर्मनां नाम.

१ ज्ञानावरणीय २ दर्शनावरणीय ३ वेदनीय ४ मोहनीय ५ आयुष्य ६ नामकर्म ७ गोत्रकर्म ८ अंतरायकर्म.

### आठ कर्मना उत्तर भेद १५८

(१) ज्ञानावरणीयना ५ भेद
- १ मतिज्ञानावरणीय
- २ श्रुतज्ञानावरणीय
- ३ अवधिज्ञानावरणीय
- ४ मन पर्यवज्ञानावरणीय
- ५ केवलज्ञानावरणीय

(२) दर्शनावरणीय कर्मना ९ भेद
- १ चक्षुर्दर्शनावरणीय
- २ अचक्षुर्दर्शनावरणीय
- ३ अवधिदर्शनावरणीय
- ४ केवलदर्शनावरणीय
- ५ निद्रा
- ६ निद्रानिद्रा
- ७ प्रचला
- ८ प्रचलाप्रचला
- ९ थीणद्धी

(३) वेदनीय कर्मना बे भेद
- १ सातावेदनीय
- २ असातावेदनीय

(४) मोहनीय कर्मना २८ भेद
- १ सम्यकत्व मोहनीय
- २ मिश्र मोहनीय
- ३ मिथ्यात्व मोहनीय
- ४ अनतानुबधी क्रोध
- ५ „ मान
- ६ „ माया
- ७ „ लोभ
- ८ अप्रत्याख्यानी क्रोध
- ९ „ मान
- १० „ माया
- ११ „ लोभ
- १२ प्रत्याख्यानी क्रोध
- १३ „ मान
- १४ „ माया
- १५ „ लोभ
- १६ सज्वलन क्रोध
- १७ „ मान
- १८ „ माया
- १९ „ लोभ
- २० हास्य मोहनीय
- २१ रति मोहनीय
- २२ शोक मोहनीय
- २३ अरति मोहनीय
- २४ भय मोहनीय

२५ जुगुप्सा मोहनीय
२६ स्त्री वेद
२७ पुरुष वेद
२८ नपुंसक वेद

(५) आयुष्यकर्मना चार भेद
१ देवायु
२ मनुष्यायु
३ तिर्यंचायु
४ मनुष्यायु

(६) नाम कर्मना १०३ भेद
१ देवगति
२ मनुष्यगति
३ तिर्यंचगति
४ नरकगति
५ एकेंद्रियजाति
६ वेइंद्रियजाति
७ तेइंद्रियजाति
८ चौरिंद्रियजाति
९ पंचेंद्रियजाति
१० औदारिक शरीर
११ वैक्रिय शरीर
१२ आहारक शरीर
१३ तैजस शरीर
१४ कार्मण शरीर
१५ औदारिक अंगोपांग
१६ वैक्रिय अंगोपांग
१७ आहारक अंगोपांग
१८ औदारिक वंधन
१९ वैक्रिय वंधन
२० आहारक वंधन
२१ तैजस वंधन
२२ कार्मण वंधन
२३ औदारिक तैजस वंधन
२४ वैक्रिय तैजस वंधन
२५ आहारक तैजस वंधन
२६ औदारिक कार्मण वंधन
२७ वैक्रिय कार्मण वंधन
२८ आहारक कार्मण वंधन
२९ औदारिक तैजस कार्मण वंधन
३० वैक्रिय तैजस कार्मण वंधन
३१ आहारक तैजस कार्मण वंधन
३२ तैजस कार्मण वंधन
३३ औदारिक संघातन
३४ वैक्रिय संघातन
३५ आहारक संघातन
३६ तैजस संघातन
३७ कार्मण संघातन
३८ वज्रऋषभनाराच संघयण
३९ ऋषभनाराच संघयण
४० नाराच संघयण
४१ अर्धनाराच संघयण
४२ कीलिका संघयण
४३ छेवट्ठुं संघयण
४४ समचतुरस्र संस्थान
४५ न्यग्रोध संस्थान
४६ सादि संस्थान
४७ कुब्ज संस्थान
४८ वामन संस्थान
४९ हुंडक संस्थान
५० कृष्ण वर्ण
५१ नील वर्ण
५२ रक्त वर्ण
५३ पीत वर्ण
५४ श्वेत वर्ण
५५ सुरभि गंध
५६ दुरभि गंध
५७ तिक्त रस
५८ कटुक रस
५९ कपायलो रस
६० आम्ल रस

६१ मधुर रस
६२ गुरु स्पर्श
६३ लघु स्पर्श
६४ मृदु स्पर्श
६५ खर स्पर्श
६६ शीत स्पर्श
६७ उष्ण स्पर्श
६८ स्निग्ध स्पर्श
६९ रूक्ष स्पर्श
७० देवानुपूर्वी
७१ मनुष्यानुपूर्वी
७२ तिर्यचानुपूर्वी
७३ नरकानुपूर्वी
७४ शुभ विहायोगति
७५ अशुभ विहायोगति
७६ पराघात नामकर्म
७७ श्वासोच्छ्वास नामकर्म
७८ आतप नामकर्म
७९ उद्योत नामकर्म
८० अगुरुलघु नामकर्म
८१ तीर्थंकर नामकर्म
८२ निर्माण नामकर्म
८३ उपघात नामकर्म
८४ त्रस नामकर्म
८५ बादर नामकर्म
८६ पर्याप्त नामकर्म
८७ प्रत्येक नामकर्म
८८ स्थिर नामकर्म
८९ शुभ नामकर्म
९० सौभाग्य नामकर्म
९१ सुस्वर नामकर्म
९२ आदेय नामकर्म
९३ यशःकीर्ति नामकर्म
९४ स्थावर नामकर्म
९५ सूक्ष्म नामकर्म
९६ अपर्याप्त नामकर्म
९७ साधारण नामकर्म
९८ अस्थिर नामकर्म
९९ अशुभ नामकर्म
१०० दुर्भाग्य नामकर्म
१०१ दुःस्वर नामकर्म
१०२ अनादेय नामकर्म
१०३ अपयश नामकर्म

(७) गोत्रकर्मना बे भेद
१ उच्च गोत्र
२ नीच गोत्र

(८) अतरायकर्मना पाच भेद
१ दानातराय
२ लाभातराय
३ भोगातराय
४ उपभोगातराय
५ वीर्यातराय

## प्रकृति आश्रयी टुंक वर्णन

उपर प्रमाणे ज्ञानावरणीयनी ५, दर्शनावरणीयनी ९, वेदनीयनी २, मोहनीयनी २८, आयुष्यनी ४, नामकर्मनी १०३, गोत्रकर्मनी २ अने अतराय कर्मनी ५—एवी-रीते आठ कर्मनी मली १५८ प्रकृति थाय छे

सत्तामां—उपर प्रमाणे १५८ प्रकृति होय छे कोइ स्थले दश बधन सिवाय, फक्त पाच शरीरना पाच ज बधन गणीने १४८ पण करेली छे ते सुज्ञोए वि-चारी लेवु

उदयमां—पंदर बंधन, पांच संघातन, तथा वर्णादि सोल एम ३६ प्रकृति बाद करतां. बाकीनी १२२ प्रकृति गणवामां आवी छे. कारणके बंधन तथा संघातनने शरीर साथे मेलवी देवामां आव्या छे अने वर्णादि वीशने बदले सामान्य-रीते वर्ण, गंध, रस, स्पर्श, एम चार भेद गणवामां आव्या छे.

उदीरणामां—पण उपर प्रमाणे १२२ प्रकृति ज गणवामां आवी छे.

बंधमां—उपर कहेली १२२ मांथी सम्यक्त्व मोहनीय अने मिश्रमोहनीय सिवाय १२० प्रकृति गणवामां आवी छे. सम्यक्त्व मोहनीय, अने मिश्रमोहनीय, ए बे प्रकृति बंधमां होती नथी; कारणके ते मिथ्यात्व मोहनीयना, अर्धविशुद्ध तथा शुद्ध करेलां दलीआं छे. तेथी ते बंधनमां गणाय नहीं. आ बे प्रकृति अनादि मिथ्यात्वीने उदयमां पण होती नथी.

---

# कर्मग्रन्थ बीजो (कर्मस्तव).

## १ गुणस्थाने बंध विचार.

सामान्य बंध १२०. वर्ण १६, बंधन १५, संघातन ५, समकित मोहनी १, मिश्र मोहनी १, ए ३८ विना.

१ मिथ्यात्व गुणस्थाने—११७ प्रकृतिनो बंध होय छे. तीर्थंकर नामकर्म १, आहारक शरीर १, आहारक अंगोपांग १, ए ३ प्रकृति विना.

२ सास्वादन गुणस्थाने—१०१ प्रकृतिनो बंध. नरक त्रिक ३, जाति चतुष्क ४, स्थावर चतुष्क ४, हुंडक १, आतप १, छेवट्ठुं संघयण १, नपुंसक वेद १, मिथ्यात्व मोहनी १, ए १६ विना.

३ मिश्र गुणस्थाने—७४ प्रकृतिनो बंध. तिर्यंच त्रिक ३, स्त्यानर्द्धि त्रिक ३, दुर्भग त्रिक ३, अनंतानुबंधी ४, मध्य संस्थान ४, मध्य संहनन ४, नीच गोत्र १, उद्योतनाम कर्म १, अशुभ विहायोगति १, स्त्रीवेद १, ए २५ विना तथा २ आयुष्य (अबंधक होय तेथी) कुल २७ विना.

४ अविरति गुणस्थाने—७७ प्रकृतिनो बंध. आयुष्य २, तथा तीर्थंकर नाम कर्म १, ए त्रण प्रकृति सहित पूर्वनी ७४ प्रकृति मळी कुल ७७.

५ देशविरति गुणस्थाने—६७ प्रकृतिनो बंध होय छे. वज्रऋषभ नाराच १, मनुष्य त्रिक ३, अप्रत्याख्यान चतुष्क ४, औदारिक द्विक २, ए दश प्रकृति विना.

६ प्रमत्त गुणस्थाने—६३ प्रकृतिनो बंध होय छे. प्रत्याख्यान चतुष्क ४, विना.

७ अप्रमत्त गुणस्थाने—५९ अथवा ५८ प्रकृतिनो बंध होय छे. शोक १, अरति १, अस्थिर १, अशुभ १, अयश १, असाता १, ए ६ विना ५७ प्रकृति रहे, तेमा आहारक द्विक २, अहीं बंधाय छे तेथी ए बे भेळवतां ५९ थाय.

तेमाथी देवायु १, जता ५८ रहे कारणके अहीं कोईने देवायुनो बंध होय छे अने कोईने नथी होतो तेथी छठ्ठेथी बाधता बाधता अहीं आवे तेने होय अहीं शरु तो करेज नहीं

८ निवृत्ति गुणस्थान—आना सात भाग छे तेमा पहेले भागे ५८ (उपर प्रमाणे) बीजे भागे निद्राद्विक विना ५६, त्रीजे पण ५६, चोथे ५६, पाचमे ५६, छठ्ठे ५६, अने सातमे भागे सुरद्विक २, पचेंद्रिय जाति १, शुभ विहायोगति १, त्रसनवक ९, औदारिक विना शरीर चतुष्क ४, अगोपागद्विक २, समचतुरस्र संस्थान १, निर्माण १, जिननाम कर्म १, वर्णादि चतुष्क ४, अगुरुलघु चतुष्क ४, ए ३० विना बाकीनी २६ प्रकृतिनो बध रहे

९ अनिवृत्ति गुणस्थान—आना पाच भाग छे तेमां पहेले भागे उपरनी २६ माथी हास्य १, रति १, दुगछा १, अने भय १, ए चार प्रकृति जता २२ रहे बीजे भागे पुरुषवेद जवाथी २१, त्रीजे भागे सज्वलन क्रोध जता २०, चोथे भागे मान जवाथी १९, अने पाचमे भागे माया जवाथी १८ रहे

१० सूक्ष्म संपराय गुणस्थाने—उपरनी १८ माथी सज्वलन लोभ जता १७ प्रकृतिनो बध रहे छे

११ उपशांत मोह गुणस्थाने—उपरनी १७ प्रकृतिमाथी दर्शनावरणीय ४, उच्चगोत्र १, यशनामकर्म १, ज्ञानावरणीय ५, अने अतराय ५, ए १६ प्रकृति जवाथी बाकी एक ज सातावेदनी प्रकृतिनो बध रहे छे

१२ क्षीणमोह गुणस्थाने—एक साता वेदनीनो ज बध छे

१३ सयोगी केवली गुणस्थाने—एक साता वेदनीनो ज बध होय छे

१४ अयोगी केवली गुणस्थाने—एके प्रकृतिनो बध न होय आ गुणस्थान अबधक छे

## २ गुणस्थाने उदय विचार.

ओघे प्रकृति १२२ (उपर जणावेली १२० मा समकित मोहनी ने मिश्रमोहनी उमेरवाथी )

१ मिथ्यात्व गुणस्थाने—मिश्रमोहनी १, समकित मोहनी १, आहारक द्विक २, जिन नाम कर्म १, ए पाच प्रकृति विना बाकीनी ११७ प्रकृतिनो उदय होय छे.

२ सास्वादन गुणस्थाने—१११ प्रकृतिनो उदय होय सूक्ष्म १, अपर्याप्त १, साधारण १, आतप १, मिथ्यात्व १, ए पाच विना तथा नरकानुपूर्वीनो अनुदय होवाथी कुल छ प्रकृति जता बाकी १११

३ मिश्र गुणस्थाने—उपरनी १११ माथी अनतानुबधी ४, स्थावर १, एकेन्द्रिय १, तथा विकलेंद्रिय ३, ए नव प्रकृतिनो अत होय, तथा त्रण आनुपूर्वीनो अनुदय होय, तेथी कुल बार प्रकृति जता ९९ प्रकृतिनो उदय रहे, अने मिश्र मोहनी भळवाथी १०० प्रकृतिनो उदय होय

४ अविरति गुणस्थाने—१०४ प्रकृतिनो उदय होय. कारण के उपरनी १०० प्रकृतिमां समकित मोहनी १, तथा आनुपूर्वी ४, ए पांच प्रकृतिनो उदय होवाथी अने मिश्रमोहनीना उदयनो विच्छेद थवाथी बाकीनी चार प्रकृति भेळवतां १०४ थाय.

५ देशविरति गुणस्थाने—८७ प्रकृतिनो उदय होय. अप्रत्याख्यानी ४, मनुष्यानुपूर्वी १, तिर्यंगानुपूर्वी १, वैक्रियाष्टक ८, दुर्भाग्य १, अनादेय १, अयश १, ए १७ प्रकृति विना.

६ प्रमत्त गुणस्थाने—८१ नो उदय होय. तिर्यग्गति १, तिर्यगायु १, नीचगोत्र १, उद्योत १, प्रत्याख्यानी ४, ए आठ विना तथा आहारक द्विक भळे तेथी.

७ अप्रमत्त गुणस्थाने—७६ प्रकृतिनो उदय होय. स्त्यानर्द्धि त्रिक ३, आहारकद्विक २, ए पांच प्रकृति विना.

८ निवृत्ति गुणस्थाने—७२ प्रकृतिनो उदय. समकित मोहनी १, छेल्लां संघयण ३, ए चार विना.

९ अनिवृत्ति गुणस्थाने—६६ नो उदय. हास्यादिक ६ विना.

१० सूक्ष्मसंपराय गुणस्थाने—६० नो उदय. वेद ३, संज्वलन क्रोध १, मान १, माया १, ए छ विना.

११ उपशांतमोह गुणस्थाने—५९ नो उदय. संज्वलन लोभ विना.

१२ क्षीणमोह गुणस्थाने—पहेले भागे ऋषभ नाराच १, नाराच १, ए बे विना ५७, तेमांथी निद्राद्विक २ विना छेल्ले समये ५५.

१३ सयोगी गुणस्थाने—४२ नो उदय. ज्ञानावरणीय ५, अंतराय ५, दर्शनावरणीय ४, ए १४ विना तथा तीर्थंकर नाम कर्म भेळवतां कुल १३ प्रकृति बाद करतां ४२ रहे. ( अहीं तीर्थंकर नाम कर्मनो उदय होय छे. )

१४ अयोगी गुणस्थाने—१२ प्रकृतिनो उदय छेल्ला समय सुधी रहे. कारण के उपरनी ४२ मांथी औदारिक द्विक २, अस्थिर १, अशुभ १, शुभ विहायोगति १, अशुभ विहायोगति १, प्रत्येक १, स्थिर १, शुभ १, संस्थान ६, अगुरुलघु १, उपघात १, श्वासोच्छ्वास १, वर्ण १, गंध १, रस १, स्पर्श १, निर्माण १, तैजस १, पराघात १, कार्मण १, वज्रऋषभनाराच १, दुःस्वर १, सुस्वर १, साता अने असातामांथी १, ए ३० प्रकृतिना उदयनो विच्छेद १३ माने अंते होय. अने १४ माने छेल्ला समये सुभग १, आदेय १, यश १, साता असातामांथी १, त्रस १, बादर १, पर्याप्त १, पंचेंद्रिय जाति १, मनुष्य गति १, मनुष्यायु १, जिन नाम १, उच्च गोत्र १, ए बार प्रकृतिनो उदय विच्छेद करे.

## ३ गुणस्थाने उदीरणा विचार.

पहेला गुणस्थानथी छट्ठा एटले प्रमत्त गुणस्थान सुधी उदयनी पेठे ज उदीरणा जाणवी. अप्रमत्त गुणस्थानथी त्रण त्रण प्रकृति ओछी करवी. एटले के उदयमां प्रमत्त

गुणस्थाने स्त्यानर्द्धि त्रिक ३ अने आहारकद्विक २, ए पाच प्रकृतिनो विच्छेद थाय छे पण उदीरणामा वेदनीय द्विक २, अने मनुष्यायु १, ए त्रण प्रकृति सहित आठ प्रकृतिनो विच्छेद थतो होवाथी अप्रमत्तादिक गुणस्थाने त्रण त्रण प्रकृति उदय करता उदीरणामा ओछी गणवी तेथी अप्रमत्ते ७३, निवृत्तिए ६९, अनिवृत्तिए ६३, सूक्ष्म संपराये ५७, उपशातमोहे ५६, क्षीणमोहे ५४, अने सयोगीए ३९ अयोगी गुणस्थाने वर्तताने उदीरणा होती नथी

## ४ गुणस्थाने सत्ता विचार.

ओघे १४८ प्रकृति होय ( १५८ मा वधन १५ गण्या छे ते ५ गणवाथी १४८ थाय )

१ मिथ्यात्व गुणस्थाने—१४८ नी सत्ता

२ सास्वादन गुणस्थाने—१४७ नी सत्ता जिननामकर्म विना.

३ मिश्र गुणस्थाने—१४७ नी सत्ता जिननामकर्म विना

४ अविरति गुणस्थाने—१४८ नी सत्ता अथवा अनतानुवंधी ४, मिथ्यात्व १, मिश्र १, समकितमोहनी १, ए सातनो अत थवाथी १४१ नी सत्ता अचरम शरीरी क्षायिक सम्यग्दृष्टिने उपशम श्रेणिनी अपेक्षाए होय अने क्षपक श्रेणिनी अपेक्षाए नरकायु १, तिर्यगायु १, सुरायु १, ए त्रण विना १४५ नी सत्ता होय अने तेमाथी सप्तक एटले सात टाळीये त्यारे १३८ नी सत्ता होय (आ चारे भागा अविरति गुणस्थानथी माडीने अनिवृत्ति बादर सपराय नामना नवमा गुणस्थानकना प्रथम भाग सुधी होय ते आ प्रमाणे )

| | ओघे | क्षपक-श्रेणी | उपशम-श्रेणी | | क्षपकश्रेणीमा सप्तक क्षये |
|---|---|---|---|---|---|
| ५ देशविरति गुणस्थाने— | १४८– | १४५– | १४१ | क्षायक | १३८ |
| ६ प्रमत्त गुणस्थाने— | १४८– | १४५– | १४१ | सम- | १३८ |
| ७ अप्रमत्त गुणस्थाने— | १४८– | १४५– | १४१ | किती | १३८ |
| ८ निवृत्ति गुणस्थाने— | १४८– | १४५– | १४२* | | १३८ |

* अनतानुबंधी ४, तिर्यगायु १, नरकायु १, ए छ विना १४२ जाणवी

९ अनिवृत्ति बादर संपराय गुणस्थाने—

| | उपशमश्रेणी स्वाभाविक | उपशमश्रेणी विसयोजनी | क्षपकश्रेणी. |
|---|---|---|---|
| १ पहेले भागे— | १४८– | १४२ | १३८ |
| २ बीजे भागे— | १४८– | १४२ | १२२* |

* स्थावर द्विक २, तिर्यच द्विक २, नरक द्विक २, आतप द्विक २, स्त्यानर्द्धि त्रिक ३, एकेंद्रिय जाति १, विकलेंद्रिय त्रिक ३, साधारण १, ए १६ विना १२२ समजवी.

३ त्रीजे भागे—१४८–१४२–११४. वीजा कपाय ४, त्रीजा कपाय ४, ए ८ विना.
४ चोथे भागे—१४८–१४२–११३. नपुंसक वेद जवाथी.
५ पांचमे भागे—१४८–१४२–११२. स्त्रीवेद जवाथी.
६ छठ्ठे भागे—१४८–१४२–१०६. हास्यादिक ६ जवाथी.
७ सातमे भागे—१४८–१४२–१०५. पुरुषवेद जवाथी.
८ आठमे भागे—१४८–१४२–१०४. संज्वलन क्रोध जवाथी.
९ नवमे भागे—१४८–१४२–१०३. संज्वलन मान जवाथी.

१० सूक्ष्म संपराय गुणस्थाने—१४८–१४२–१०२. संज्वलन माया जवाथी.

११ उपशांतमोह गुणस्थाने—१४८–१४२–१०१. संज्वलन लोभ जवाथी.

१२ क्षीणमोह गुणस्थाने—१०१. तेमांथी द्विचरम समये निद्रा १, निद्रानिद्रा १, ए वे जवाथी ९९ प्रकृतिनी सत्ता होय.

१३ सयोगी गुणस्थाने—८५ नी सत्ता होय. कारण के उपरनी ९९ मांथी ज्ञानावरणीय ५, दर्शनावरणीय ४, अंतराय ५, ए १४ जवाथी.

१४ अयोगी गुणस्थाने—छेल्लानी पहेलाना (द्विचरम) समये ८५ मांथी वेद २, विहायोगति २, गंध २, स्पर्श ८, वर्ण ५, रस ५, शरीर ५, वंधन ५, संघातन ५, निर्माण १, संघयण ६, अस्थिर १, अशुभ १, दुर्भग १, दुःस्वर १, अनादेय १, अयश १, संस्थान ६, अगुरुलघु १, उपघात १, पराघात १, उच्छ्वास १, अपर्याप्त १, साता असातामांथी १, पर्याप्त १, स्थिर १, प्रत्येक १, उपांग ३, सुस्वर १, नीच गोत्र १, ए ७२ प्रकृतिनो अंत होय. तेथी अयोगी गुणस्थानना छेल्ला समये १३ नी सत्ता होय. मनुष्य त्रिक ३, त्रस त्रिक ३, यश १, आदेय १, सुभग १, जिननाम १, उच्च गोत्र १, पंचेंद्रिय जाति १, साता असातामांथी १, ए १३ एटले नरानुपूर्वी सहित १३ प्रकृतिनो अंत थवाथी कर्म सत्ता समग्र नाश पामे. तेमां जो नरानुपूर्वी सहित ७३ द्विचरम समये गई होय तो अहीं ते विना १२ नो क्षय करे.

आ प्रमाणे वंध, उदय, उदीरणा अने सत्ता ए चारनो विचार चौद गुणस्थानने आश्रीने जाणवो.

# त्रीजो कर्मग्रन्थ.

## १४ गुणस्थानके ७९ मार्गणाए वंध संवंधी प्रकृतिदर्शक यंत्र.

( दरेक मार्गणाए गुणठाणा केटला होय ने त्यां बंध केटली प्रकृतिनो होय ते बताव्युं छे )

| नंबर | मार्गणा नामानि | गुणस्थान | ओघबंध | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १ | नरकगति ए सामान्य | ४ | १०१ | १०० | ९६ | ७० | ७२ | | | | | | | | | | |
| २ | रत्नप्रभादि ३ नरके | ४ | १०१ | १०० | ९६ | ७० | ७२ | | | | | | | | | | |
| ३ | पंकप्रभादि ३ नरके | ४ | १०० | १०० | ९६ | ७० | ७१ | | | | | | | | | | |
| ४ | तम तम प्रभा | ४ | ९९ | ९६ | ९१ | ७० | ७० | | | | | | | | | | |
| ५ | तिर्यंच पंचेंद्री पर्याप्ता | ५ | ११७ | ११७ | १०१ | ६९ | ७० | ६६ | | | | | | | | | |
| ६ | तिर्यंच अपर्याप्ता | १ | १०९ | १०९ | | | | | | | | | | | | | |
| ७ | मनुष्य पर्याप्ता | १४ | १२० | ११७ | १०१ | ६९ | ७१ | ६७ | ६३ | ५९ | ५८ | २२ | १७ | १ | १ | १ | ० |
| ८ | मनुष्य अपर्याप्ता | १ | १०९ | १०९ | | | | | | | | | | | | | |
| ९ | देवगतिमां सामान्ये | ४ | १०४ | १०३ | ९६ | ७० | ७२ | | | | | | | | | | |
| १० | भवनपति व्यंतर ज्योतिषी | ४ | १०३ | १०३ | ९६ | ७० | ७१ | | | | | | | | | | |
| ११ | सौधर्म ईशान बे देवलोके | ४ | १०४ | १०३ | ९६ | ७० | ७२ | | | | | | | | | | |

| नंबर | मार्गणा नामानि. | गुणस्थान | ओघबंध | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १२ | सनत्कुमारादि ६ देवलोके | ४ | १०१ | १०० | ९६ | ७० | ७२ | | | | | | | | | | |
| १३ | आनतादि ४ देवलोक ने नवग्रैवेयके | ४ | ९७ | ९६ | ९२ | ७० | ७२ | | | | | | | | | | |
| १४ | अनुत्तर विमाने | १ | ७२ | × | × | × | ७२ (एकलुं चोथुं गुणठाणुज होय) | | | | | | | | | | |
| १५ | एकेंद्रिय | २ | १०९ | १०९ | ९६ ९४ | | | | | | | | | | | | |
| १६ | द्वींद्रिय | २ | १०९ | १०९ | ९६ ९४ | | | | | | | | | | | | |
| १७ | त्रींद्रिय | २ | १०९ | १०९ | ९६ ९४ | | | | | | | | | | | | |
| १८ | चतुरिंद्रिय | २ | १०९ | १०९ | ९६ ९४ | | | | | | | | | | | | |
| १९ | पंचेंद्रिय | १४ | १२० | ११७ | १०१ | ७४ | ७७ | ६७ | ६३ | ५९ | ५८ | २२ | १७ | १ | १ | १ | ० |
| २० | पृथ्वीकाय | २ | १०९ | १०९ | ९६ ९४ | | | | | | | | | | | | |
| २१ | अप्काय | २ | १०९ | १०९ | ९६ ९४ | | | | | | | | | | | | |
| २२ | तेजस्काय | १ | १०५ | १०५ | | | | | | | | | | | | | |
| २३ | वायुकाय | १ | १०५ | १०५ | | | | | | | | | | | | | |
| २४ | वनस्पतिकाय | २ | १०९ | १०९ | ९६ ९४ | | | | | | | | | | | | |
| २५ | त्रसकाय | १४ | १२० | ११७ | १०१ | ७४ | ७७ | ६७ | ६३ | ५९ | ५८ | २२ | १७ | १ | १ | १ | ० |

| | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| २६ | मनोयोग ४ | १३ | १२० | ११७ | १०१ | ७४ | ७७ | ६७ | ६३ | ५९ | ५८ | २२ | १७ | १ | १ | १ | × |
| २७ | वचनयोग ४ | १३ | १२० | ११७ | १०१ | ७४ | ७७ | ६७ | ६३ | ५९ | ५८ | २२ | १७ | १ | १ | १ | × |
| २८ | औदारिककाययोग | १३ | १२० | ११७ | १०१ | ७४ | ७७ | ६७ | ६३ | ५९ | ५८ | २२ | १७ | १ | १ | १ | × |
| २९ | औदारिक मिश्र काययोग | ४ | ११४ | १०९ | ९४ | × | ७५ | × | × | × | × | × | × | × | × | १ | × |
| ३० | वैक्रिय काययोग | ४ | १०४ | १०२ | ९६ | ७० | ७२ | | | | | | | | | | |
| ३१ | वैक्रिय मिश्र काययोग | ३ | १०२ | १०१ | ९४ | × | ७१ | | | | | | | | | | |
| ३२ | आहारक काययोग | १ | ६३ | × | × | × | × | × | ६३ | | | | | | | | |
| ३३ | आहारक मिश्र काययोग | १ | ६३ | × | × | × | × | × | ६३ | | | | | | | | |
| ३४ | कार्मण काययोग | ४ | ११२ | १०७ | ९८ | × | ७५ | × | × | × | × | × | × | × | × | १ | × |
| ३५ | स्त्रीवेद | ९ | १२० | ११७ | १०१ | ७४ | ७७ | ६७ | ६३ | ५९ | ५८ | २२ | | | | | |
| ३६ | पुरुषवेद | ९ | १२० | ११७ | १०१ | ७४ | ७७ | ६७ | ६३ | ५९ | ५८ | २२ | | | | | |
| ३७ | नपुंसकवेद | ९ | १२० | ११७ | १०१ | ७४ | ७७ | ६७ | ६३ | ५९ | ५८ | २२ | | | | | |
| ३८ | अनंतानुबंधि ४ | २ | ११७ | ११७ | १०१ | | | | | | | | | | | | |
| ३९ | अप्रत्याख्यानावरण ४ | ४ | ११८ | ११७ | १०१ | ७४ | ७७ | | | | | | | | | | |
| ४० | प्रत्याख्यानावरण ४ | ५ | ११८ | ११७ | १०१ | ७४ | ७७ | ६७ | | | | | | | | | |

| नंबर | मार्गणा नामानि. | गुणस्थान | ओघबंध | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ४१ | संज्वलन ३ क्रोध, मान, माया | ९ | १२० | ११७ | १०१ | ७४ | ७७ | ६७ | ६३ | ५९ | ५८ | २२ | | | | | |
| ४२ | संज्वलन लोभ | १० | १२० | ११७ | १०१ | ७४ | ७७ | ६७ | ६३ | ५९ | ५८ | २२ | १७ | | | | |
| ४३ | मतिज्ञानी | ९ | ७९ | × | × | × | ७७ | ६७ | ६३ | ५९ | ५८ | २२ | १७ | १ | १ | | |
| ४४ | श्रुतज्ञानी | ९ | ७९ | × | × | × | ७७ | ६७ | ६३ | ५९ | ५८ | २२ | १७ | १ | १ | | |
| ४५ | अवधिज्ञानी | ९ | ७९ | × | × | × | ७७ | ६७ | ६३ | ५९ | ५८ | २२ | १७ | १ | १ | | |
| ४६ | मनःपर्यवज्ञानी | ७ | ६५ | × | × | × | × | × | ६३ | ५९ | ५८ | २२ | १७ | १ | १ | | |
| ४७ | केवलज्ञानी | २ | १ | × | × | × | × | × | × | × | × | × | × | × | × | १ | ० |
| ४८ | मतिअज्ञानी | ३ | ११७ | ११७ | १०१ | ७४ | | | | | | | | | | | |
| ४९ | श्रुतअज्ञानी | ३ | ११७ | ११७ | १०१ | ७४ | | | | | | | | | | | |
| ५० | विभंगज्ञानी | ३ | ११७ | ११७ | १०१ | ७४ | | | | | | | | | | | |
| ५१ | सामायिक चारित्र | ४ | ६५ | × | × | × | × | × | ६३ | ५९ | ५८ | २२ | | | | | |
| ५२ | छेदोपस्थापनीय चारित्र | ४ | ६५ | × | × | × | × | × | ६३ | ५९ | ५८ | २२ | | | | | |
| ५३ | परिहारविशुद्धि चारित्र | २ | ६५ | × | × | × | × | × | ६३ | ५९ | | | | | | | |
| ५४ | सूक्ष्मसंपराय चारित्र | १ | १७ | × | × | × | × | × | × | × | × | × | १७ | | | | |

| | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ५५ | यथाख्यात चारित्र | ४ | १ | × | × | × | × | × | × | × | × | × | × | १ | १ | १ | ० |
| ५६ | देशविरति चारित्र | १ | ६७ | × | × | × | × | ६७ | | | | | | | | | |
| ५७ | अविरति | ४ | ११८ | ११७ | १०१ | ७४ | ७७ | | | | | | | | | | |
| ५८ | चक्षुदर्शन | १२ | १२० | ११७ | १०१ | ७४ | ७७ | ६७ | ६३ | ५९ | ५८ | २२ | १८ | १ | १ | | |
| ५९ | अचक्षुदर्शन | १२ | १२० | ११७ | १०१ | ७४ | ७७ | ६७ | ६३ | ५९ | ५८ | २२ | १७ | १ | १ | | |
| ६० | अवधिदर्शन | ९ | ७९ | × | × | × | ७७ | ६७ | ६३ | ५९ | ५८ | २२ | १७ | १ | १ | | |
| ६१ | केवलदर्शन | २ | १ | × | × | × | × | × | × | × | × | × | × | × | × | १ | ० |
| ६२ | कृष्णलेश्या | ४–६ | ११८ | ११७ | १०१ | ७४ | ७७ | ६७ | ६३ | | | | | | | | |
| ६३ | नीललेश्या | ४–६ | ११८ | ११७ | १०१ | ७४ | ७७ | ६७ | ६३ | | | | | | | | |
| ६४ | कापोतलेश्या | ४–६ | ११८ | ११७ | १०१ | ७४ | ७७ | ६७ | ६३ | | | | | | | | |
| ६५ | तेजोलेश्या | ७ | १११ | १०८ | १०१ | ७४ | ७७ | ६७ | ६३ | ५९ | | | | | | | |
| ६६ | पद्मलेश्या | ७ | १०८ | १०५ | १०१ | ७४ | ७७ | ६७ | ६३ | ५९ | | | | | | | |
| ६७ | शुक्ललेश्या | १३ | १०४ | १०१ | ९७ | ७४ | ७७ | ६७ | ६३ | ५९ | ५८ | २२ | १७ | १ | १ | १ | × |
| ६८ | भव्य | १४ | १२० | ११७ | १०१ | ७४ | ७७ | ६७ | ६३ | ५९ | ५८ | २२ | १७ | १ | १ | १ | ० |
| ६९ | अभव्य | १ | ११७ | ११७ | | | | | | | | | | | | | |

| नंवर | मार्गणा नामानि. | गुणस्थान | ओघवंध | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ७० | औपशमिक समकिते | ८ | ७७ | × | × | × | ७५ | ६६ | ६२ | ५९ | ५८ | २२ | १७ | १ | × | × | × |
| ७१ | सास्वादने | १ | १०१ | × | १०१ | | | | | | | | | | | | |
| ७२ | क्षायोपशमिके | ४ | ७९ | × | × | × | ७७ | ६७ | ६३ | ५९ | | | | | | | |
| ७३ | क्षायिके | ११ | ७९ | × | × | × | ७७ | ६७ | ६३ | ५९ | ५८ | २२ | १७ | १ | १ | १ | ० |
| ७४ | मिश्रे | १ | ७४ | × | × | ७४ | | | | | | | | | | | |
| ७५ | मिथ्यात्वे | १ | ११७ | ११७ | | | | | | | | | | | | | |
| ७६ | संज्ञी | १४ | १२० | ११७ | १०१ | ७४ | ७७ | ६७ | ६३ | ५९ | ५८ | २२ | १७ | १ | १ | १ | ० |
| ७७ | असंज्ञी | २ | ११७ | ११७ | १०१ | | | | | | | | | | | | |
| ७८ | आहारी | १३ | १२० | ११७ | १०१ | ७४ | ७७ | ६७ | ६३ | ५९ | ५८ | २२ | १७ | १ | १ | १ | × |
| ७९ | अनाहारी | ५ | ११२ | १०७ | ९४ | × | ७५ | × | × | × | × | × | × | × | × | १ | ० |

१. आमां जे गुणठाणुं न होय तेनी चोकडी × समजवी अने जे गुणठाणे वंध न होय तेनुं मींडुं ० समजवुं.

तेमांथी सम्यक्त्व १, मिश्र १, ए वे विना मिथ्यात्वे १०५/१०७.

तेमांथी सूक्ष्म १, अपर्याप्त १, साधारण १, आतप १, मिथ्यात्व १, ए पाच विना सासादने १००/१०२.

अनंतानुबंधी ४, स्थावर १, एकेंद्रियादि जाति ४, तिर्यंचानुपूर्वी १, ए १० विना अने मिश्र युक्त करतां मिश्र गुणस्थाने ९१/९३.

मिश्रने बाद करतां तथा सम्यक्त्व १, अने तिर्यंचानुपूर्वी १, ए वे भेळवता अविरतिए ९२/९४.

अप्रत्याख्यानी ४, दुर्भग १, अनादेय १, अयश १, तिर्यंचानुपूर्वी १, ए ८ विना देशविरतिए ८४/८६. अहीं गुणप्रत्ययीक वैक्रियनी विवक्षा न करीए तो दरेक गुणठाणे वे वे ओछी गणवी.

**३ मनुष्यगति—गुणस्थान १४.**

वैक्रियाष्टक ८, जाति ४, तिर्यंचत्रिक ३, उद्योत १, स्थावर १, सूक्ष्म १, साधारण १, आतप १. ए २० विना ओघे १०२ अने वैक्रियद्विक गणीए तो १०४.

आहारकद्विक २, जिननाम १, सम्यक्त्व १, मिश्र १. ए ५ विना मिथ्यात्वे ९७/९९.

अपर्याप्त १, मिथ्यात्व १, ए वे विना सासादने ९६/९७.

अनंतानुवंधी ४, मनुष्यानुपूर्वी १, ए ५ विना अने मिश्र भळवाथी मिश्रे ९१/९३

मिश्र वाद करतां ने सम्यक्त्व १, मनुष्यानुपूर्वी १, ए वे भेळवतां अविरतिए ९२/९४.

अप्रत्याख्यानी ४, मनुष्यानुपूर्वी १, दुर्भग १, अनादेय १, अयश १, ए आठ विना देशविरतिए ८४.

प्रत्याख्यानी ४, नीचगोत्र १, ए पांच काढतां ने आहारकद्विक २, भेळवतां प्रमत्ते ८१.

स्त्यानर्द्धित्रिक ३, आहारकद्विक २, ए पांच विना अप्रमत्ते ७६.

सम्यक्त्वमोहनी १, छेलां संघयण ३, ए चार विना अपूर्वे ७२.

हास्यादि ६ विना अनिवृत्तिए ६६.

वेद ३, संज्वलन ३, ए ६ विना सूक्ष्मसंपराये ६०.

संज्वलना लोभ विना उपशांतमोहे ५९.

ऋषभनाराच १, नाराच १, ए वे विना क्षीणमोहे ५७.

वे निद्रा विना क्षीणमोहने छेल्ले समये ५५.

ज्ञानावरणीय ५, दर्शनावरणीय ४, अंतराय ५, ए १४ विना सयोगीए ४२. कारणके अहीं जिननाम कर्मनो उदय होय.

औदारिक २, विहायोगति २, अस्थिर १, अशुभ १, प्रत्येक १, स्थिर १, शुभ १, संस्थान ६, अगुरुलघु ४, वर्णादि ४, निर्माण १, तैजस १, कार्मण १, वज्रऋषभनाराच संघयण १, दुःस्वर १, सुस्वर १, साताअसातामांथी १, ए ३० विना अयोगी गुणस्थाने १२ रहे.

सुभग १, आदेय १, यश १, वेदनीय १, त्रस १, बादर १, पर्याप्त १, पंचेंद्रिय जाति १, मनुष्यायु १, मनुष्यगति १, जिननाम १, उच्चैर्गोत्र १, ए १२ अयोगी गुणस्थानना छेल्ले समये जाय

४ देवगति—गुणस्थान ४

नरकत्रिक ३, तिर्यंच त्रिक ३, मनुष्यत्रिक ३, जाति ४, औदारिकद्विक २, आहारकद्विक २, संघयण ६, न्यग्रोधादि संस्थान ५, अशुभ विहायोगति १, आतप १, उद्योत १, जिननाम १, स्थावर चतुष्क ४, दुःस्वर १, नपुंसकवेद १, नीचगोत्र १, एवं ३९ वर्जीने ओघे ८३ ज्यारे स्त्यानर्द्धित्रिक वर्जीए त्यारे ८० नो उदय होय

तेमांथी सम्यक्त्व १, मिश्र १, विना मिथ्यात्वे $\frac{७८}{८१}$

मिथ्यात्व १ विना सासादने $\frac{७७}{८१}$

अनंतानुबंधी ४, देवानुपूर्वी १, ए ५ विना अने मिश्र भळे त्यारे मिश्र गुणस्थाने $\frac{७३}{७६}$

मिश्र काढी देवानुपूर्वी १, सम्यक्त्व १, ए बे भळे त्यारे अविरतिए $\frac{७४}{७७}$

५ एकेंद्रियजाति—गुणस्थान २

वैक्रियाष्टक ८, मनुष्यत्रिक ३, उच्चगोत्र १, स्त्रीवेद १, पुवेद १, द्वींद्रियादि जाति ४, आहारकद्विक २, औदारिक अंगोपांग १, संघयण ६, संस्थान ५, विहायोगति २, जिननाम १, त्रस १, दुःस्वर १, सुस्वर १, सम्यक्त्व १, मिश्र १, सुभग १, आदेय १, ए ४२ विना ओघे तथा मिथ्यात्वे ८० अने वैक्रिय शरीर सहित करीए त्यारे ८१

सूक्ष्मत्रिक ३, आतप १, उद्योत १, मिथ्यात्व १, पराघात १, श्वासोच्छ्वास १, ए ८ विना सासादने $\frac{७२}{७३}$

६ द्वींद्रियजाति—गुणस्थान २

वैक्रियाष्टक ८, नरकत्रिक ३, उच्च गोत्र १, स्त्रीवेद १, पुवेद १, एकेंद्रिय १, त्रींद्रिय १, चतुरिंद्रिय १, पंचेंद्रिय १, आहारकद्विक २, संघयण ५, संस्थान ५, शुभ विहायोगति १, जिननाम १, स्थावर १, सूक्ष्म १, साधारण १, आतप १, सुभग १, आदेय १, सम्यक्त्व १, मिश्र १, ए ४० विना ओघे अने मिथ्यात्वे ८२ नो उदय होय

तेमांथी लब्धि अपर्याप्त १, उद्योत १, मिथ्यात्व १, पराघात १, अशुभ विहायोगति १, उच्छ्वास १, सुस्वर दुःस्वर २, ए ८ विना सासादने ७४

७-८ त्रींद्रिय तथा चतुरिंद्रिय—ए बन्ने मार्गणाए द्वींद्रियनी पेठे ज जाणवु पण द्वींद्रियने ठेकाणे त्रींद्रिय, चतुरिंद्रिय, एम जाणवु

९ पंचेंद्रिय—गुणस्थान १४

जाति ४, स्थावर १, सूक्ष्म १, साधारण १, आतप १, ए ८ विना ओघे

११४. तेमाथी आहारक द्विक २, जिननाम १, सम्यक्त्व १, मिश्र, ए ५ विना मिथ्यात्वे १०९.

मिथ्यात्व १, अपर्याप्त १, नरकानुपूर्वी १, ए ३ विना सास्वादने १०६.
अनंतानुबंधी ४, आनुपूर्वी ३, ए ७ विना अने मिश्रभळतां मिश्रे १००.
मिश्र टाळीने आनुपूर्वी ४, सम्यक्त्व १, भळे त्यारे अविरतिए १०४.
अप्रत्याख्यानी ४, वैक्रियाष्टक ८, नरकानुपूर्वी १, तिर्यंचानुपूर्वी १, दुर्भग १, अनादेय १, अयश १, ए १७ विना देशविरतिए ८७.

छट्ठा गुणस्थानथी मनुष्य गतिनी पेठे ८१-७६-७२-६६-६०-५९-५७-४२-१२ एम अनुक्रमे जाणवुं.

**१० पृथ्वीकायनी मार्गणाए—एकेंद्रियनी पेठे गुणस्थान २.**

साधारण विना ओघे अने मिथ्यात्वे ७९.
सूक्ष्म १, लब्धि अपर्याप्त १, आतप १, उद्योत १, मिथ्यात्व १, पराघात १, श्वासोच्छ्वास १, ए सात विना सासादने ७२. ( अहीं करण अपर्याप्तनी अपेक्षाए सासादनपणुं जाणवुं. )

**११ अप्कायनी मार्गणाए—गुणस्थान २.**

आतप विना ओघे अने मिथ्यात्वे ७८.
सूक्ष्म १, अपर्याप्त १, उद्योत १, मिथ्यात्व १, पराघात १, उच्छ्वास १, ए ६ विना सासादने ७२.

**१२ तेजस्कायनी मार्गणाए—गुणस्थान १.**

उद्योत १, यश १, ए वे विना ओघे अने मिथ्यात्वे ७६.

**१३ वायुकायनी मार्गणाए—पण उपर प्रमाणे ७६.**

**१४ वनस्पति कायनी मार्गणाए—गुणस्थान २.**

एकेंद्रियनी पेठे आतप विना ओघे मिथ्यात्वे ७९. अने सासादने ७२.

**१५ त्रसकायनी मार्गणाए—गुणस्थान १४.**

स्थावर १, सूक्ष्म १, साधारण १, आतप १, एकेंद्रिय जाति १, ए ५ विना ओघे ११७.

आहारक द्विक २, जिननाम १, सम्यक्त्व १, मिश्र १, ए ५ विना मिथ्यात्वे ११२. मिथ्यात्व १, अपर्याप्त १, नरकानुपुर्वी १, ए ३ विना सासादने १०९. अनंतानुबंधी ४, विकलेंद्रिय ३, अनुपूर्वी ३, ए १० विना अने मिश्र भळे त्यारे मिश्र गुणस्थाने १००.

अनुपूर्वी ४, सम्यक्त्व १, ए ५ भळे अने मिश्र टळे त्यारे अविरतिए १०४. देशविरति आदि गुणस्थाने ओघनी पेठे ८७-८१-७६-७२-६६-६०-५९-५७-४२-१२ विगेरे जाणी लेवुं.

१६ मनोयोगीने—गुणस्थान १३

स्थावर चतुष्क ४, जाति ४, आतप १, अनुपूर्वी ४, ए १३ विना ओघे १०९.
आहारक द्विक २, जिननाम १, सम्यक्त्व १, मिश्र १, ए ५ विना मिथ्यात्वे १०४.
मिथ्यात्व विना सासादने १०३
अनंतानुबंधी ४ विना अने मिश्र भळवाथी मिश्रे १००
मिश्र टाळी सम्यक्त्व भळवाथी अविरतिए १००.
अप्रत्याख्यानी ४, वैक्रियद्विक २, देवगति १, देवायु १, नरकगति १, नरकायु १, दुर्भग १, अनादेय १, अयश १, ए १३ विना देशविरतिए ८७
त्यारपछी ओघनी पेठे जाणवु

१७ वचनयोगीने—गुणस्थान १३

स्थावर ४, एकेंद्रिय १, आतप १, अनुपूर्वी ४, ए १० विना ओघे ११२.
आहारकद्विक २, जिननाम १, सम्यक्त्व १, मिश्र १, ए ५ विना मिथ्यात्वे १०७.
मिथ्यात्व १, विकलेंद्रिय ३, ए ४ विना सासादने १०३ (वचनयोग पर्याप्ताने होय, त्या सासादन न होय )
अनंतानुबंधी ४ काढी मिश्र भळवाथी मिश्रे १००
अविरतिथी आरंभीने बीजा गुणस्थानोने विषे मनोयोगीनी पेठे जाणवुं

१८ काययोगीने—गुणस्थान १३

ओघे १२२ मिथ्यात्वे ११७ सासादने १११ इत्यादि ओघनी पेठे जाणवु

१९ पुरुषवेदीने—गुणस्थान ९

नरकत्रिक ३, जाति ४, स्थावर १, सूक्ष्म १, साधारण १, आतप १, जिननाम १, स्त्रीवेद १, नपुसकवेद १, ए १४ विना ओघे १०८.
आहारकद्विक २, सम्यक्त्व १, मिश्र १, ए ४ विना मिथ्यात्वे १०४
मिथ्यात्व १, अपर्याप्त १, ए २ विना सास्वादने १०२
अनतानुबंधी ४, अनुपूर्वी ३, ए ७ कादीने मिश्र भेळवनाथी मिश्रे ९६
मिश्र काढीने सम्यक्त्व १, अनुपूर्वी ३, ए ४ भळवाथी अविरतिए ९९.
अनुपूर्वी ३, अप्रत्याख्यानी ४, देवद्विक २, वैक्रियद्विक २, दुर्भग १, अनादेय १, अयश १, ए १४ विना देशविरतिए ८५
प्रत्याख्यानी ४, तिर्यंचद्विक २, उद्योत १, नीचगोत्र १, ए ८ कादीने आहारकद्विक भळे त्यारे प्रमत्ते ७९
स्त्यानर्द्धित्रिक ३, आहारकद्विक २, ए ५ विना अप्रमत्ते ७४
सम्यक्त्वमोहनी १, छेला सघयण ३, ए ४ विना अपूर्वे ७०
हास्यादि ६ विना अनिवृत्तिए ६४

२० स्त्रीवेदीने—पुरुषवेदीनी पेठे पण ओघे अने प्रमत्ते आहारकद्विक विना तथा चोथे गुणस्थाने आनुपूर्वी ३ विना करेवु कारणके स्त्रीने घाटे वहेता

चोथुं गुणस्थान न होय. स्त्रीने १४ पूर्वनुं ज्ञान न होवाथी आहारक-द्विक पण न होय. तेथी ओघे तथा ९ गुणस्थाने १०६–१०४–१०२–९६–९६ ८५–७७–७४–७०–६४ ए प्रमाणे जाणवुं.

२१ नपुंसकवेदीने—गुणस्थान ९.

देवत्रिक ३, जिननाम १, स्त्रीवेद १, पुंवेद १, ए ६ विना ओघे ११६.
आहारकद्विक २, सम्यक्त्व १, मिश्र १, ए ४ विना मिथ्यात्वे ११२.
सूक्ष्मत्रिक ३, आतप १, मिथ्यात्व १, नरकानुपूर्वी १, मनुष्यानुपर्वी १, ए ७ विना सास्वादने १०५.
अनंतानुबंधी ४, तिर्यगानुपूर्वी १, स्थावर १, जाति ४, ए १० विना तथा मिश्र भळे एटले मिश्र गुणस्थाने ९६.
नरकानुपूर्वी १, सम्यक्त्व १, ए २ भेळवीने मिश्र काढीए, त्यारे अविरतिए ९७.

अप्रत्याख्यानी ४, नरकत्रिक ३, वैक्रिय द्विक २, दुर्भग १, अनादेय १, अयश १, ए १२ विना देशविरतिए ८५.
तिर्यंचगति १, तिर्यगायु १, नीचगोत्र १, उद्योत १, प्रत्याख्यानी ४, ए ८ काढीने आहारक द्विक २ भळे त्यारे प्रमत्ते ७९.
स्त्यानर्द्धि त्रिक ३, आहारक द्विक २, ए ५ विना अप्रमत्ते ७४.
सम्यक्त्व मोहनी १, अंत्य संघयण ३, ए ४ विना अपूर्वे ७०.
हास्यादि ६ विना अनिवृत्तिए ६४.

२२ क्रोध मार्गणाए—गुणस्थान ९.

मान ४, माया ४, लोभ ४, जिननाम कर्म १, ए १३ विना ओघे १०९
सम्यक्त्व १, मिश्र १, आहारक द्विक २, ए ४ विना मिथ्यात्वे १०५
सूक्ष्मत्रिक ३, आतप १, मिथ्यात्व १, नरकानुपूर्वी १, ए ६ विना सासादने ९९. अनंतानुबंधी क्रोध १, स्थावर १, जाति ४, आनुपूर्वी ३, ए ९ काढीने मिश्र भेळवतां मिश्रे ९१.
मिश्र काढीने सम्यक्त्व १, आनुपूर्वी ४, ए ५ भेळवीए त्यारे अविरतिए ९५.
अप्रत्याख्यानी क्रोध १, आनुपूर्वी ४, देवगति १, देवायु १, नरकगति १, नरकायु १, वैक्रिय द्विक २, दुर्भग १, अनादेय १, अयश १, ए १४ विना देशविरतिए ८१.

तिर्यंचगति १, तिर्यंचायु १, उद्योत १, नीचगोत्र १, प्रत्याख्यानी क्रोध १, ए ५ काढीने आहारक द्विक भळे त्यारे प्रमत्ते ७८.
स्त्यानर्द्धि त्रिक ३, आहारकद्विक २, ए ५ विना अप्रमत्ते ७३.
सम्यक्त्व मोहनी १, अंत्य संघयण ३, ए ४ विना अपूर्वे ६९.
हास्यादि ६ विना अनिवृत्तिए ६३.

२३-२४-२५ मान, माया अने लोभ मार्गणाए—पण एज प्रमाणे उदय कहेवो, पोते सिवाय अन्य कषाय १२ विना समजवो लोभ मार्गणाए दशमे गुणस्थाने ३ वेद टळे त्यारे ६०

२६-२७ मतिज्ञान अने श्रुतज्ञान मार्गणाए—गुणस्थान ९ चोथाथी बारमा सुधी स्थावर ४, जाति ४, आतप १, अनतानुबंधी ४, जिननाम १, मिथ्यात्व १, मिश्र १, ए १६ विना ओघे १०६

आहारक द्विक २ विना अविरतिए १०४

देशविरतिथी ओघनी पेठे ८७-८१-७६-७२-६६-६०-५९-५७

२८ अवधिज्ञाननी मार्गणाए—पण उपर प्रमाणे जाणवु विशेष एटलु के-तिर्यचानुपूर्वी विना ओघे १०५ तथा पन्नवणा सूत्रनी वृत्तिने अनुसारे अवधिज्ञानीने तिर्यचानुपूर्वी जणाय छे, तेथी १०६

आहारक द्विक २ विना अविरतिए $\frac{१०३}{१०४}$

बाकी मतिज्ञानीनी पेठे जाणवु. अवधि के विभग सहित तिर्यचमा उपजे नहीं ते माटे ए लख्युं छे ते वक्रगतिनी अपेक्षाए जाणवुं अने ऋजु गतिनी अपेक्षाए तिर्यचमा उपजे छे

२९ मनःपर्यवज्ञाननी मार्गणाए—प्रमत्तथी माडीने गुणस्थान ७

ओघे ८१ प्रमत्तादिके ८१-७६-७२-६६-६०-५९-५७

३० केवळज्ञाननी मार्गणाए—छेल्ला बे गुणस्थान त्या ओघनी पेठे ४२-१२

३१-३२ मतिअज्ञान तथा श्रुतअज्ञाननी मार्गणाए—गुणस्थान ३

आहारक द्विक २, जिननाम १, सम्यक्त्व १, मिश्र १, ए ५ विना ओघे अने मिथ्यात्वे ११७, सासादने १११, मिश्रे १००, ओघनी पेठे.

३३ विभंगज्ञाननी मार्गणाए—गुणस्थान ३.

आहारक द्विक २, जिननाम १, सम्यक्त्व १, स्थावर चतुष्क ४, जातिचतुष्क ४, आतप १, नरतिर्यचानुपूर्वी २, ए १५ विना ओघे १०७ (मनुष्यने तिर्यचमा उपजता वाटे विभगज्ञान न होय ए वक्रगतिनी अपेक्षाए लख्यु छे पण ऋजुगतिनी अपेक्षाए नरने तिर्यचमा उपजता वाटे विभंग होय पन्नवणामाथी विशेष पद तथा कायस्थिति पदने अनुसारे लख्यु छे, तेथी विभंगज्ञाने ओघे १०९ )

मिश्र विना मिथ्यात्वे १०८, बे अनुपूर्वी न गणीए तो १०६

मिथ्यात्व १, नरकानुपूर्वी १, ए विना सास्वादने $\frac{१०६}{१०४}$

अनतानुबंधी ४, देवानुपूर्वी १, ए ५ विना अने मिश्र भळे त्यारे मिश्रे १००.

पक्षे (अथवा) अनतानुबंधी ४, नर १, तिर्यंच १, देव १, ए ३ अनुपूर्वी, एव ७ विना अने मिश्र भळे त्यारे मिश्रे १००

३४-३५ सामायिक तथा छेदोपस्थापनीय—ए बे चारित्रनी मार्गणाए गुणस्थान ४. प्रमत्तथी त्या ओघनी पेठे ८१, ७६, ७२, ६६

३६ परिहारविशुद्धि मार्गणाए—गुणस्थान २ छठ्ठुं अने सातमुं.

त्यां ८१ मांहेथी आहारकद्विक २, स्त्रीवेद १, संघयण ५, ए ८ विना ओघे तथा प्रमत्ते ७३, अथवा संघयण ५ गणीए त्यारे ७८. ( ए चौदपूर्वी न होय माटे आहारकद्विक नहीं, अने स्त्रीवेदी पण न होय अने वज्रर्षभनाराच संघयण होय, ते माटे ऋषभनाराचादि पांचनी ना कही. तथा कोइक आचार्य ते ५ संघयण पण कहे छे, ए विचारवानुं छे. )

स्त्यानर्द्धित्रिक ३ टळे त्यारे अप्रमत्ते ७०/७५.

३७ सूक्ष्मसंपराय मार्गणाए—गुणस्थान १ दशमुं. अहीं ६० नो उदय ओघनी पेठे.

३८ यथाख्यात मार्गणाए—गुणस्थान ४ छेल्लां.

त्यां जिननाम सहित ओघे ६०, जिननाम विना उपशांतमोहे ५९, संघयण २ विना क्षीणमोहे ५७, निद्रादुग २ विना छेल्ले समये ५५, सयोगीए ४२, अयोगीए १२.

३९ देशविरतिनी मार्गणाए—गुणस्थान १ पांचमुं. त्यां ८७ नो उदय ओघनी पेठे.

४० अविरतिनी मार्गणाए—गुणस्थान ४.

त्यां जिननाम १, आहारकद्विक २, ए ३ विना ओघे ११९.

सम्यक्त्व १, मिश्र १, ए २ विना मिथ्यात्वे ११७.

सूक्ष्मत्रिक ३, आतप १, मिथ्यात्व १, नरकानुपूर्वी १, ए ६ विना सास्वादने १११.

अनंतानुबंधी ४, स्थावर १, जाति ४, अनुपूर्वी ३, ए १२ विना मिश्र भळवाथी मिश्र गुणस्थाने १००.

अनुपूर्वी ४, सम्यक्त्व १, ए ५ भळे अने मिश्र काढीए त्यारे अविरतिए १०४.

४१ चक्षुदर्शननी मार्गणाए—गुणस्थान १२.

त्यां जाति ३, स्थावर चतुष्क ४, जिननाम १, आतप १, अनुपूर्वी ४, ए १३ विना ओघे १०९.

आहारकद्विक २, सम्यक्त्व १, मिश्र १, ए ४ विना मिथ्यात्वे १०५.

मिथ्यात्व विना सास्वादने १०४.

अनंतानुबंधी ४, चतुरिंद्रिय जाति १, ए ५ विना अने मिश्र भळे त्यारे मिश्रे १००.

मिश्र काढी सम्यक्त्व भळे त्यारे अविरतिए १००.

अप्रत्याख्यानी ४, वैक्रियद्विक २, दुर्भग १, अनादेय १, अयश १, देवगति १, देवायु १, नरकगति १, नरकायु १, ए १३ विना देशविरतिए ८७. पछी ओघनी पेठे जाणवुं.

४१ अचक्षुदर्शनमी मार्गणाए—गुणस्थान १२

जिननाम विना ओघे १२१

आहारकद्विक २, सम्यकत्व १, मिश्र १, ए ४ विना मिथ्यात्वे ११७

पछी ओघनी पेठे १११, १००, १०४, ८७, ८१, ७६, ७२, ६६, ६०, ५९, ५७/५८.

४३ अवधिदर्शननी मार्गणाए—गुणस्थान ९, चोथाथी वारमा सुधी

सिद्धाते विभगने पण अवधिदर्शन कह्यु छे, ते रीते तो पहेला त्रण गुणस्थान पण होय पण अहीं कर्मग्रंथे विभंगने अवधिदर्शन नथी कह्यु तेथी अवधिज्ञानीनी पेठे ओघे १०५/१०६, तिर्यंचानुपूर्वी विना.

अविरतिए १०३/१०४, आहारकद्विक विना

पछी ओघनी पेठे, पन्नवणानी अपेक्षाए तिर्यंचानुपूर्वी होय त्यारे ओघे १०६ समजवी इत्यादि

४४ केवळदर्शननी मार्गणाए—छेल्ला गुणस्थान २, त्यां ४२ अने १२ नो उदय होय.

४५-४६-४७ कृष्ण, नील अने कापोत लेश्यानी मार्गणाए—गुणस्थान ६

त्या जिननाम विना ओघे १२१, तथा पहेली त्रण लेश्याए चार गुणस्थाननी अपेक्षाए आहारक द्विक विना ओघे ११९

मिथ्यात्वादिके ११५/११७, १०१/१११, ९८/१००, १०२/१०४, ८७, ८१, ओघनी पेठे समजवु

४८ तेजोलेश्यानी मार्गणाए—गुणस्थान ७.

त्या सूक्ष्मत्रिक ३, विकलेंद्रिय ३, नरकत्रिक ३, आतप, १, जिननाम १, ए ११ विना ओघे १११

आहारकद्विक २, सम्यक्त्व १, मिश्र १, ए ४ विना मिथ्यात्वे १०७

मिथ्यात्व विना सास्वादने १०६

अनतानुवंधी ४, स्थावर १, एकेंद्रिय १, अनुपूर्वी ३, ए ९ विना अने मिश्र भळे त्यारे मिश्र गुणस्थाने ९८

अनुपूर्वी ३ भळे अने मिश्र काढीए तथा सम्यक्त्व नाखीए त्यारे अविरतिए १०१.

अप्रत्याख्यानी ४, अनुपूर्वी ३, वैक्रियद्विक २, देवगति १, देवायु १, दुर्भग १, अनादेय १, अयश १, ए १४ विना देशविरतिए ८७

प्रमत्ते ८१, अप्रमत्ते ७६

४९ पद्मलेश्यानी मार्गणाए—गुणस्थान ७

त्या स्थावर ४, जाति ४, नरकत्रिक ३, जिननाम १, आतप १, ए १३ विना ओघे १०९

आहारकद्विक २, सम्यक्त्व १, मिश्र १, ए ४ विना मिथ्यात्वे १०५

मिथ्यात्व विना सास्वादने १०४.

अनंतानुबंधी ४, अनुपूर्वी ३, ए ७ विना अने मिश्र भळे त्यारे मिश्रे ९८.

अनुपूर्वी ३, सम्यक्त्व १, ए ४ भेळवीने मिश्र काढतां अविरतिए १०१.

अप्रत्याख्यानी ४, अनुपूर्वी ३, देवगति १, देवायु १, वैक्रियद्विक २, दुर्भग १, अनादेय १, अयश १, ए १४ विना देशविरतिए ८७.

प्रमत्ते ८१, अप्रमत्ते ७६.

५० शुक्ललेश्यानी मार्गणाए—गुणस्थान १३.

त्यां स्थावर चतुष्क ४, जाति ४, नरकत्रिक ३, आतप १, ए १२ विना ओघे ११०.

आहारकद्विक २, सम्यक्त्व १, मिश्र १, जिननाम १ ए ५ विना मिथ्यात्वे १०५.

मिथ्यात्व विना सास्वादने १०४.

अनंतानुबंधी ४, अनुपूर्वी ३, ए ७ काढीने मिश्र भेळवीए त्यारे मिश्रे ९८.

अविरतिए १०१, देशविरतिए ८७, त्यार पछी ओघनी पेठे.

५१ भव्य मार्गणाए—गुणस्थान १४, ओघे १२२, मिथ्यात्वे ११७ इत्यादि ओघनी पेठे.

५२ अभव्य मार्गणाए—गुणस्थान १.

सम्यक्त्व १, मिश्र १, जिननाम १, आहारकद्विक २, ए ५ विना ओघे तथा मिथ्यात्वे ११७.

५३ उपशम समकितनी मार्गणाए—गुणस्थान ८ चोथाथी अग्यारमा सुधी.

त्यां स्थावरचतुष्क ४, जाति ४, अनंतानुबंधी ४, सम्यक्त्व मोहनी १, मिश्र मोहनी १, मिथ्यात्व १, जिननाम १, आहारकद्विक २, आतप १, अनुपूर्वी ४, ए २३ विना ओघे ९९.

अविरतिए पण ९९, तथा उपशम समकिती मरीने अनुत्तर विमाने जाय, त्यां वाटे वहेतां चोथे गुणस्थाने कोइकने देवानुपूर्वीनो उदय होय, ते अपेक्षाए ओघे १००, तथा अविरतिए पण १००,

अप्रत्याख्यानी ४, देवगति १, देवायु १, नरकगति १, नरकायु १, वैक्रियद्विक २, दुर्भग १, अनादेय १, अयश १, देवानुपूर्वी १, ए १४ विना देश विरतिए ८६, समकित नांखीए त्यारे ८७.

तिर्यंच गति १, तिर्यंच आयु १, नीचगोत्र १, उद्योत १, प्रत्याख्यानी ४, ए ८ विना प्रमत्ते ७९.

स्त्यानर्द्धित्रिक ३ विना अप्रमत्ते ७६.

समकित १, अंत्यसंघयण ३, ए ४ विना अपूर्वे ७२, पछी अनुक्रमे ६६, ६०, ५९.

५४ क्षायिक समकितनी मार्गणाए—गुणस्थान ११, चोथाथी.

त्यां जाति ४, स्थावरचतुष्क ४, अनंतानुबंधी ४, आतप १, समकित १, मिश्र १, मिथ्यात्व १, ऋषभनाराचादि संघयण ५, ए २१ विना ओघे १०१.

आहारकद्विक २, जिननाम १, ए ३ विना अविरतिए ९८
अप्रत्याख्यानी ४, वैक्रियाष्टक ८, नरकानुपूर्वी १, तिर्यंचत्रिक ३, दुर्भग १, अनादेय १, अयश १, उद्योत १, ए २० विना देशविरतिए ७८
प्रत्याख्यानी ४, नीचगोत्र १, ए ५ काढीने आहारकद्विक भेळवता प्रमत्ते ७५
स्त्यानर्द्धित्रिक ३, आहारकद्विक २, ए ५ विना अप्रमत्ते ७०.
अपूर्वे पण ७०
हास्यादि ६ विना अनिवृत्तिए ६४
वेद ३, सज्वलन ३ ए ६ विना सूक्ष्मसंपराये ५८
संज्वलन लोभ विना उपशात मोहे ५७
क्षीण मोहे पण ५७
बे निद्रा विना क्षीणमोहने चरम समये ५५
सयोगिए ४२
अयोगिए १२

५५ क्षायोपशमिकनी मार्गणाए—गुणस्थान ४ चोथाथी सातमा सुधी
मिथ्यात्व १, मिश्र १, जिननाम १, जाति ४, स्थावर चतुष्क ४, आतप १, अनतानुबधी ४, ए १६ विना ओघे १०६
आहारकद्विक विना अविरतिए १०४
देशविरतिए ८७ प्रमत्ते ८१. अप्रमत्ते ७६ ओघनी पेठे

५६ मिश्र मार्गणाए—गुणस्थान १ त्रीजु उदय १०० नो

५७ सास्वादन मार्गणाए—गुणस्थान १ बीजु १११ नो उदय

५८ मिथ्यात्व मार्गणाए—गुणस्थान १ पहेलु
त्या आहारकद्विक २, जिननाम १, सम्यक्त्व १, मिश्र १ ए ५ विना ११७

५९ संज्ञी मार्गणाए—गुणस्थान १४ अथवा १२
त्या स्थावर १, सूक्ष्म १, साधारण १, आतप १, जाति ४, ए ८ विना ओघे ११४. अने गुणस्थान १२ लइए तो जिननाम विना ११३.
आहारकद्विक २, सम्यक्त्व १, मिश्र १, ए ४ विना मिथ्यात्वे १०९
अपर्याप्त १, मिथ्यात्व १, नरकानुपूर्वी १, ए ३ विना सास्वादने १०६
अनतानुबधी ४, आनुपूर्वी ३, ए ७ विना ने मिश्र भळे त्यारे मिश्रे १००
त्यारपछी ओघनी पेठे जाणवु

६० असंज्ञी मार्गणाए—गुणस्थान २
त्या वैक्रियाष्टक ८, जिननाम १, आहारकद्विक २, सम्यक्त्व १, मिश्र १, सघयण ५, सस्थान ५, सुभग १, आदेय १, शुभ विहायोगति १, उच्च गोत्र १, स्त्रीपुवेद २, ए २९ विना ओघे तथा मिथ्यात्वे ९३
सूक्ष्मत्रिक ३, आतप १, उद्योत १, मनुष्यत्रिक ३, मिथ्यात्व १, पराघात

१, उच्छ्वास १, सुस्वर १, दुःस्वर १, अशुभ विहायोगति १, ए १४ विना सास्वादने ७९.

६१ **आहारीनी मार्गणाए—गुणस्थान १३.**

त्यां अनुपूर्वी ४ विना ओघे ११८.

आहारकद्विक २, जिननाम १, सम्यक्त्व मोहनी १, मिश्र मोहनी १, ए ५ विना मिथ्यात्वे ११३.

सूक्ष्मत्रिक ३, आतप १, मिथ्यात्व १, ए ५ विना सास्वादने १०८.

अनंतानुवंधी ४, स्थावर १, जाति ४, ए ९ विना अने मिश्र भळे त्यारे मिश्रे १००.

मिश्र काढी समकित भळे त्यारे अविरतिए १००.

अप्रत्याख्यानी ४, वैक्रियद्विक २, देवगति १, देवायु १, नरकगति १, नरकायु १, दुर्भग १, अनादेय १, अयश १, ए १३ विना देशविरतिए ८७. त्यारपछी ओघनी पेठे जाणवुं.

६२ **अनाहारी मार्गणाए—गुणस्थान ५ पहेलुं, वीजुं, चोथुं, तेरमुं अने चौदमुं.**

त्यां औदारिकद्विक २, वैक्रियद्विक २, आहारकद्विक २, संघयण ६, संस्थान ६, विहायोगति २, उपघात १, पराघात १, उच्छ्वास १, आतप १, उद्योत १, प्रत्येक १, साधारण १, सुस्वर १, दुःस्वर १, मिश्रमोहनी १, निद्रा ५, ए ३५ विना ओघे ८७.

जिननाम १, सम्यक्त्व १, ए २ विना मिथ्यात्वे ८५.

सूक्ष्म १, अपर्याप्त १, मिथ्यात्व १, नरकत्रिक ३, ए ६ विना सास्वादने ७९. ( मिश्र अनाहारीने होय नहीं. )

अनंतानुवंधी ४, स्थावर १, जाति ४, ए ९ विना अने सम्यक्त्व मोहनी १, नरकत्रिक ३, ए ४ भळे त्यारे अविरतिए ७४.

वर्णादि ४, तैजस १, कार्मण १, अगुरुलघु १, निर्माण १, स्थिर १, अस्थिर १, शुभ १, अशुभ १, मनुष्यगति १, पंचेंद्रियजाति १, जिननाम १, त्रसत्रिक ३, सुभग १, आदेय १, यश १, मनुष्यायु १, वेदनी २, उच्चगोत्र १, ए २५ तेरमे सयोगी गुणस्थाने केवळी समुद्घातवेळा त्रीजे, चोथे अने पांचमे समये अनाहारीने उदये होय.

त्रसत्रिक ३, मनुष्यगति १, मनुष्यायु १, उच्च गोत्र १, जिननाम १, वेमांथी एक वेदनी १, सुभग १, आदेय १, यश १, पंचेंद्रिय जाति १, ए १२ चौदमे गुणस्थाने उदये होय.

अहीं उदयने विषे उत्तर वैक्रियनी विवक्षा करी नथी. अपर्याप्ता ते लब्धि अपर्याप्ता विवक्ष्या छे, पण करण विवक्ष्या नथी. तथा सिद्धांतमां पृथ्वी, अप् अने वनस्पति मांहे सास्वादन कह्युं नथी. सास्वादनीने मतिश्रुत ज्ञानी कह्या

छे विभगने अवधिदर्शन कह्युं छे. वैक्रिय आहारके औदारिक मिश्र कह्यु छे कर्मग्रंथे आटला बोल कह्या नथी, ते माटे अहीं पण कह्या नथी आ उदयना विचारने विषे जे कोइ बोलमा फेरफार होय, ते डाह्या पडिते विचारी शास्त्रनो अभिप्राय जोइ शुद्ध करवो

---

इति ६२ मार्गणाए १४ गुणस्थान तथा उदयनी १२२ प्रकृतिनु संक्षिप्त विवरण

---

## ( षडशीत्यादि कर्मग्रंथगतविचार. )

**जीव १ गइ २ इंदि ३ काए ४ जोए ५ वेए ६ कसाय ७ लेसाय ८ ।**
**सम्मत्त ९ नाण १० दंसण ११ संजय १२ उवओग १३ आहारे १४ ॥ १ ॥**
**भासग १५ परित्त १६ पजत्त १७ सुहुम १८ सन्नी १९ भव २० त्थी २१ चरिमेय २२**
**एएसिं तु पयाणं, बासट्ठीओ होइ नायव्वो ॥ २ ॥**

| | | जीवस्थान | गुणस्थान | योग | उपयोग | लेश्या |
|---|---|---|---|---|---|---|
| १ | समुच्चये जीवमा | १४ | १४ | १५ | १२ | ६ |
| २ | नारकीमा | २ | ४ | ११ | ९ | ३ |
| ३ | तिर्यंचमा | १४ | ५ | १३ | ९ | ६ |
| ४ | तिर्यंचनी स्त्रीमा | २ | ५ | १३ | ९ | ६ |
| ५ | मनुष्यमा | ३ | १४ | १५ | १२ | ६ |
| ६ | मनुष्यनी स्त्रीमा | २ | १४ | १३ | १२ | ६ |
| ७ | देवमा | २ | ४ | ११ | ९ | ४ |
| ८ | देवीमां | २ | ४ | ११ | ९ | ४ |
| ९ | सिद्धमा | ० | ० | ० | २ | ० |

सर्वथी थोडी मनुष्यनी स्त्री १ । तेथी मनुष्य असख्यात गुणा २ । तेथी नारकी असंख्यात गुणा ३ । तेथी तिर्यंचनी स्त्री असख्यात गुणी ४ । तेथी देवता असंख्यात गुणा ५ । तेथी देवी संख्यात गुणी ६ । तेथी सिद्ध अनत गुणा ७ । तेथी तिर्यंच अनत गुणा ८ ॥

| | | जीवस्थान | गुणस्थान | योग | उपयोग | लेश्या |
|---|---|---|---|---|---|---|
| १० | सेंद्रियमा | १४ | १२ | १५ | १० | ६ |
| ११ | एकेंद्रियमा | ४ | १ २ | ५ | ३ | ४ |
| १२ | द्वींद्रियमा | २ | २ | ४ | ५ ३ | ३ |
| १३ | त्रींद्रियमा | २ | २ | ४ | ५ ३ | ३ |
| १४ | चतुरिंद्रियमा | २ | २ | ४ | ६ ४ | ३ |

---

१ समूर्छिम गर्भजना २ बेंद्रिय अपर्याप्ता ३ वैक्रय विना

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| १५ पंचेंद्रियमां | ४ | १२ | १५ | १० | ६ |
| १६ अनिंद्रियमां | १ | २ | ७ | २ | १ |

सर्वथी थोडा पंचेंद्रिय १ । तेथी चतुरिंद्रिय विशेपाधिक २ । तेथी त्रींद्रिय विशेपाधिक ३ । तेथी द्वींद्रिय विशेपाधिक ४ । तेथी अनिंद्रिय अनंतगुणा ५ । तेथी एकेंद्रिय अनंतगुणा ६ । तेथी सेंद्रिय विशेपाधिक ७ ॥

| | जीवस्थान | गुणस्थान | योग | उपयोग | लेश्या |
|---|---|---|---|---|---|
| १७ सकायिकमां | १४ | १४ | १५ | १२ | ६ |
| १८ पृथ्वीकायिकमां | ४ | १ / २ | ३ | ३ | ४ |
| १९ अप्कायिकमां | ४ | १ / २ | ३ | ३ | ४ |
| २० तेजस्कायिकमां | ४ | १ | ३ | ३ | ३ |
| २१ वायुकायिकमां | ४ | १ | ५ | ३ | ३ |
| २२ वनस्पतिकायिकमां | ४ | १ / २ | ३ | ३ | ४ |
| २३ त्रसकायिकमां | १० | १४ | १५ | १२ | ६ |
| २४ अकायिकमां | ० | ० | ० | २ | ० |

सर्वथी थोडा त्रसकायिक १ । तेथी तेजस्कायिक असंख्यात गुणा २ । तेथी पृथ्वीकायिक विशेषाधिक ३ । तेथी अप्कायिक विशेपाधिक ४ । तेथी वायुकायिक विशेषाधिक ५ । तेथी अकायिक अनंतगुणा ६ । तेथी वनस्पतिकायिक अनंतगुणा ७ । तेथी सकायिक विषेशाधिक ८ ॥

| | जीवस्थान | गुणस्थान | योग | उपयोग | लेश्या |
|---|---|---|---|---|---|
| २५ सयोगीमां | १४ | १३ | १५ | १२ | ६ |
| २६ मनोयोगीमां | १ / २ | १३ | १३ | १२ | ६ |
| २७ वचनयोगीमां | ५ / ८ | १३ / २ | १३ / ४ | १२ / ४ | ६ |
| २८ काययोगीमां | १४ / ४ | १३ / २ | १५ / ५ | १२ / ३ | ६ |
| २९ अयोगीमां | १ | १ | ० | २ | ० |

सर्वथी थोडा मनोयोगी १ । तेथी वचनयोगी असंख्यात गुणा २ । तेथी अयोगी अनंतगुणा ३ । तेथी काययोगी अनंतगुणा ४ । तेथी सयोगी विशेषाधिक ५ ॥

| | जीवस्थान | गुणस्थान | योग | उपयोग | लेश्या |
|---|---|---|---|---|---|
| ३० सवेदीमां | १४ | ९[३] | १५ | १२[४] | ६ |
| ३१ स्त्रीवेदीमां | ४[५] | ९ | १३ | १२ | ६ |
| ३२ पुरुषवेदीमां | ४ | ९ | १५ | १२ | ६ |
| ३३ नपुंसकवेदीमां | १४ | ९ | १५ | १२ | ६ |
| ३४ अवेदीमां | १ | ६ | ११ | ९ | १ |

सर्वथी थोडा पुरुषवेदी १ । तेथी स्त्रीवेदी संख्यातगुणा २ । तेथी अवेदी अनंतगुणा ३ । तेथी नपुंसकवेदी अनंतगुणा ४ । तेथी सवेदी विशेषाधिक ५ ॥

---

१ केवळी शिवाय. २ केवळी. ३ भाववेदनी अपेक्षाए. ४ द्रव्यवेदनी अपेक्षाए. ५ आकृतिनी अपेक्षाए.

| | | जीवस्थान | गुणस्थान | योग | उपयोग | लेश्या |
|---|---|---|---|---|---|---|
| ३५ | सकपायीमा | १४ | १० | १५ | १० | ६ |
| ३६ | क्रोधकपायीमा | १४ | ९ | १५ | १० | ६ |
| ३७ | मानकपायीमा | १४ | ९ | १५ | १० | ६ |
| ३८ | मायाकपायीमा | १४ | ९ | १५ | १० | ६ |
| ३९ | लोभकपायीमा | १४ | १० | १५ | १० | ६ |
| ४० | अकपायीमा | १ | ४ | ११ | ९ | १ |

सर्वथी थोडा अकपायी १ । तेथी मानकपायी अनतगुणा २ । तेथी क्रोधकपायी विशेपाधिक ३ । तेथी मायाकपायी विशेपाधिक ४ । तेथी लोभकपायी विशेपाधिक ५ । तेथी सकपायी विशेपाधिक ६ ॥

| | | जीवस्थान | गुणस्थान | योग | उपयोग | लेश्या |
|---|---|---|---|---|---|---|
| ४१ | सलेश्यामा | १४ | १३ | १५ | १२ | ६ |
| ४२ | कृष्णलेश्यामा | १४ | ६/४ | १५ | १० | १ |
| ४३ | नीललेश्यामा | १४ | ६/४ | १५ | १० | १ |
| ४४ | कापोतलेश्यामा | १४ | ६/४ | १५ | १० | १ |
| ४५ | तेजोलेश्यामा | ३ | ७ | १५ | १० | १ |
| ४६ | पद्मलेश्यामा | २ | ७ | १५ | १० | १ |
| ४७ | शुक्ललेश्यामा | २ | १३ | १५ | १२ | १ |
| ४८ | अलेश्यामा | १ | १ | ० | २ | ० |

सर्वथी थोडा शुक्ललेश्यी १ । तेथी पद्मलेश्यी संख्यातगुणा २ । तेथी तेजोलेश्यी संख्यातगुणा ३ । तेथी अलेश्यी अनतगुणा ४ । तेथी कापोतलेश्यी अनतगुणा ५ । तेथी नीललेश्यी विशेपाधिक ६ । तेथी कृष्णलेश्यी विशेपाधिक ७ । तेथी सलेश्यी विशेपाधिक ८ ॥

| | | जीवस्थान | गुणस्थान | योग | उपयोग | लेश्या |
|---|---|---|---|---|---|---|
| ४९ | सम्यक्त्वमा | ७ | १२ | १५ | ९ | ६ |
| ५० | उपशमसम्यक्त्वमा | २ | ८ | १३ | ७ | ६ |
| ५१ | क्षायिकसम्यक्त्वमा | २ | ११ | १५ | ९ | ६ |
| ५२ | क्षायोपशमसम्यक्त्वमा | २ | ४ | १५ | ७ | ६ |
| ५३ | सास्वादनसम्यक्त्वमा | ७ | १ | १३ | ५/६ | ६ |
| ५४ | मिश्रदृष्टिमा | १ | १ | १० | ६ | ६ |
| ५५ | मिथ्यादृष्टिमा | १४ | १ | १३ | ५ | ६ |

सर्वथी सास्वादन सम्यक्त्ववत थोडा १ । तेथी उपशमसम्यक्त्ववत सख्यातगुणा २ । तेथी मिश्रदृष्टि सख्यातगुणा ३ । तेथी क्षायोपशमसम्यक्त्ववत सख्यातगुणा ४ । तेथी क्षायिकसम्यक्त्ववत अनतगुणा ५ । तेथी सम्यक्त्ववत विशेपाधिक ६ । तेथी मिथ्यादृष्टि अनतगुणा ७ ॥

| | | जीवस्थान | गुणस्थान | योग | उपयोग | लेश्या |
|---|---|---|---|---|---|---|
| ५६ | सज्ञानीमां | ६/२ | १२ | १५ | ९ | ६ |
| ५७ | मतिज्ञानीमां | ६/२ | ९ | १५ | ७ | ६ |
| ५८ | श्रुतज्ञानीमां | ६/२ | ९ | १५ | ७ | ६ |
| ५९ | अवधिज्ञानीमां | २ | ९ | १५ | ७ | ६ |
| ६० | मनःपर्यवज्ञानीमां | १ | ७ | १३ | ७ | ६ |
| ६१ | केवलज्ञानीमां | १ | २ | ७ | २ | १ |
| ६२ | समुच्चये अज्ञानीमां | १४ | २/३ | १३ | ५/६ | ६ |
| ६३ | मति अज्ञानीमां | १४ | २/३ | १३ | ५/६ | ६ |
| ६४ | श्रुत अज्ञानीमां | १४ | २/३ | १३ | ५/६ | ६ |
| ६५ | विभंग(अ)ज्ञानीमां | २ | २/३ | १३ | ५/६ | ६ |

सर्वथी थोडा मनःपर्यवज्ञानी १। तेथी अवधिज्ञानी असंख्यातगुणा २। तेथी मतिश्रुतज्ञानी मांहोमांहे तुल्य अने तेथी विशेषाधिक ३। तेथी विभंगज्ञानी असंख्यातगुणा ४। तेथी केवलज्ञानी अनंतगुणा ५। तेथी सज्ञानी विशेषाधिक ६। तेथी मति-श्रुत अज्ञानी मांहोमांहे तुल्य अने तेथी अनंतगुणा ७। तेथी समुच्चये अज्ञानी विशेषाधिक जाणवा ८॥

| | | जीवस्थान | गुणस्थान | योग | उपयोग | लेश्या |
|---|---|---|---|---|---|---|
| ६६ | चक्षुर्दर्शनीमां | ३/६ | १२ | १३ | १० | ६ |
| ६७ | अचक्षुर्दर्शनीमां | १४ | १२ | १५ | १० | ६ |
| ६८ | अवधिदर्शनीमां | २ | ९ | १५ | ७ | ६ |
| ६९ | केवलदर्शनीमां | १ | २ | ७ | २ | १ |

सर्वथी थोडा अवधिदर्शनी १। तेथी चक्षुर्दर्शनी असंख्यातगुणा २। तेथी केवल-दर्शनी अनंतगुणा ३। तेथी अचक्षुर्दर्शनी अनंतगुणा ४॥

| | | जीवस्थान | गुणस्थान | योग | उपयोग | लेश्या |
|---|---|---|---|---|---|---|
| ७० | संयतमां | १ | ९ | १५ | ९ | ६ |
| ७१ | सामायिक चारित्रमां | १ | ४ | १३ | ७ | ६ |
| ७२ | छेदोपस्थापनीयमां | १ | ४ | १३ | ७ | ६ |
| ७३ | परिहारविशुद्धिमां | १ | २ | ९ | ७ | ६ |
| ७४ | सूक्ष्मसंपरायमां | १ | १ | ९ | ७ | १ |
| ७५ | यथाख्यातमां | १ | ४ | ११ | ९ | १ |
| ७६ | देशविरतिमां | १ | १ | ११ | ६ | ६ |
| ७७ | अविरतिमां | १४ | ४ | १३ | ९ | ६ |
| ७८ | नोसंयत नोअसंयत नो-संयतासंयतमां | ० | ० | ० | २ | ० |

सर्वथी थोडा सूक्ष्मसंपरायी १। तेथी परिहार विशुद्धिक संख्यातगुणा २। तेथी य-

याख्याती सख्यातगुणा ३। तेथी छेदोपस्थापनीय सख्यातगुणा ४। तेथी सामायिक चारित्री सख्यातगुणा ५। तेथी सयत विशेषाधिक ६। तेथी सयतासयत असख्यातगुणा ७। तेथी नोसयत नोअसयत नोसयतासयत अनतगुणा ८। तेथी असयत अनंतगुणा ९।

| | | जीवस्थान | गुणस्थान | योग | उपयोग | लेश्या |
|---|---|---|---|---|---|---|
| ७९ | साकारोपयुक्तमा | १४ | १४ | १५ | १२ | ६ |
| ८० | अनाकारोपयुक्तमा | १४ | १४ | १५ | १२ | ६ |

सर्वथी थोडा अनाकारोपयुक्त १। तेथी साकारोपयुक्त सख्यातगुणा २॥

| | | जीवस्थान | गुणस्थान | योग | उपयोग | लेश्या |
|---|---|---|---|---|---|---|
| ८१ | आहारकमा | १४ | १३ | १५ | १२ | ६ |
| ८२ | अनाहारकमा | ८ | ५ | १ | १० | ६ |

सर्वथी थोडा अनाहारक १। तेथी आहारक असख्यातगुणा २॥

| | | जीवस्थान | गुणस्थान | योग | उपयोग | लेश्या |
|---|---|---|---|---|---|---|
| ८३ | भाषकमा | ८ | १३ | १३ | १२ | ६ |
| ८४ | अभाषकमा | ९ | ५ | ७ | १० | ६ |

सर्वथी थोडा भाषक १। तेथी अभाषक अनतगुणा २॥

| | | जीवस्थान | गुणस्थान | योग | उपयोग | लेश्या |
|---|---|---|---|---|---|---|
| ८५ | परित्तमा | १४ | १४ | १५ | १२ | ६ |
| ८६ | अपरित्तमा | १४ | १ | १३ | ६ | ६ |
| ८७ | नोपरित्त नोअपरित्तमा | ० | ० | ० | २ | ० |

सर्वथी थोडा परित्त १। तेथी नोपरित्त नोअपरित्त अनतगुणा २। तेथी अपरित्त अनतगुणा ३॥ परित्त एटले अल्प ससारी, अपरित्त–बहुलससारी, नोपरित्त नोअपरित्त ते सिद्ध जाणवा॥

| | | जीवस्थान | गुणस्थान | योग | उपयोग | लेश्या |
|---|---|---|---|---|---|---|
| ८८ | पर्याप्तामा | ७ | १४ | १५ | १२ | ६ |
| ८९ | अपर्याप्तामा | ७ | ३ | ५ | ८ | ६ |
| ९० | नोपर्याप्ता नोअपर्याप्तामा | ० | ० | ० | २ | ० |

सर्वथी थोडा नोपर्याप्ता नोअपर्याप्ता १। तेथी अपर्याप्ता अनतगुणा २। तेथी पर्याप्ता सख्यातगुणा ३॥

| | | जीवस्थान | गुणस्थान | योग | उपयोग | लेश्या |
|---|---|---|---|---|---|---|
| ९१ | सूक्ष्ममा | २ | १ | ३ | ३ | ३ |
| ९२ | बादरमा | १२ | १४ | १५ | १२ | ६ |
| ९३ | नोसूक्ष्म नोबादरमा | ० | ० | ० | २ | ० |

सर्वथी थोडा नोसूक्ष्म नोबादर १। तेथी बादर अनतगुणा २। तेथी सूक्ष्म असख्यातगुणा ३॥

| | | जीवस्थान | गुणस्थान | योग | उपयोग | लेश्या |
|---|---|---|---|---|---|---|
| ९४ | संज्ञीमां | २ | १२ | १५ | १०/१२ | ६ |
| ९५ | असंज्ञीमां | १२ | २ | ६ | ६/४ | ४ |
| ९६ | नोसंज्ञी नोअसंज्ञीनां | १ | २ | ७ | २ | १ |

सर्वथी थोडा संज्ञी १ । तेथी नोसंज्ञी नोअसंज्ञी अनंतगुणा २ । तेथी असंज्ञी अनंतगुणा ३ ॥

| | | जीवस्थान | गुणस्थान | योग | उपयोग | लेश्या |
|---|---|---|---|---|---|---|
| ९७ | भव्यमां | १४ | १४ | १५ | १२ | ६ |
| ९८ | अभव्यमां | १४ | १ | १३ | ५/६ | ६ |

सर्वथी थोडा अभव्य १ । तेथी भव्य अनंतगुणा २ ॥

| | | जीवस्थान | गुणस्थान | योग | उपयोग | लेश्या |
|---|---|---|---|---|---|---|
| ९९ | चरिममां | १४ | १४ | १५ | १२ | ६ |
| १०० | अचरिममां | १४ | १ | १३ | ५/६ | ६ |

सर्वथी थोडा चरिम १ । तेथी चरिम अनंतगुणा २ ॥ चरिम शब्दे समकित पामेला अने अचरिम शब्दे समकित नहीं पामेला एम व्याख्या होय तो आ यंत्र घटी शके छे. ते शिवाय बीजी अपेक्षा समजाती नथी.

## चोथा कर्मग्रंथमांना भांगा.

असंयोगी भांगा ६.

१ पृथ्वी.
२ अप्.
३ तेज.
४ वायु.
५ वनस्पति.
६ त्रस.

द्विक संयोगी भांगा १५.

१ पृथ्वी अप्.
२ पृथ्वी तेज.
३ पृथ्वी वायु.
४ पृथ्वी वनस्पति.
५ पृथ्वी त्रस.
६ अप् तेज.
७ अप् वायु.
८ अप् वनस्पति.
९ अप् त्रस.
१० तेज वायु.
११ तेज वनस्पति.
१२ तेज त्रस.
१३ वायु वनस्पति.
१४ वायु त्रस.
१५ वनस्पति त्रस.

त्रिक संयोगी भांगा २०.

१ पृथ्वी अप् तेज.
२ पृथ्वी अप् वायु.
३ पृथ्वी अप् वनस्पति.
४ पृथ्वी अप् त्रस.
५ पृथ्वी तेज वायु.
६ पृथ्वी तेज वनस्पति.
७ पृथ्वी तेज त्रस.
८ पृथ्वी वायु वनस्पति.
९ पृथ्वी वायु त्रस.
१० पृथ्वी वनस्पति त्रस.

११ अप् तेज वायु
१२ अप् तेज वनस्पति
१३ अप् तेज त्रस
१४ अप् वायु वनस्पति
१५ अप् वायु त्रस
१६ अप् वनस्पति त्रस
१७ तेज वायु वनस्पति
१८ तेज वायु त्रम
१९ तेज वनस्पति त्रस.
२० वायु वनस्पति त्रस

चतुःसयोगी भागा १५.

१ पृथ्वी अप् तेज वायु
२ पृथ्वी अप् तेज वनस्पति
३ पृथ्वी अप् तेज त्रस.
४ पृथ्वी अप् वायु वनस्पति
५ पृथ्वी अप् वायु त्रस
६ पृथ्वी अप् वनस्पति त्रस
७ पृथ्वी तेज वायु वनस्पति
८ पृथ्वी तेज वायु त्रस
९ पृथ्वी तेज वनस्पति त्रम
१० पृथ्वी वायु वनस्पति त्रस
११ अप् तेज वायु वनस्पति
१२ अप् तेज वायु त्रस
१३ अप् तेज वनस्पति त्रस.
१४ अप् वायु वनस्पति त्रस
१५ तेज वायु वनस्पति त्रस

पचसयोगी भागा ६

१ पृथ्वी अप् तेज वायु वनस्पति
२ पृथ्वी अप् तेज वायु त्रस
३ पृथ्वी अप् तेज वनस्पति त्रस
४ पृथ्वी अप् वायु वनस्पति त्रस
५ पृथ्वी तेज वायु वनस्पति त्रम
६ अप् तेज वायु वनस्पति त्रस

पट् संयोगी भागो १

१ पृथ्वी अप् तेज वायु वनस्पति त्रस

---

## चोथा कर्मग्रंथना भांगा.

१ एक जीवने एक समये मिथ्यात्वे जघन्य पदे—१० बध हेतु होय ते आ रीते

| | |
|---|---|
| पाच मिथ्यात्वमाथी | १ मिथ्यात्व. |
| पाच इंद्रियोमाथी | १ इद्रिय |
| छ कायनावधमाथी | १ कायनो वध |
| त्रण वेदमाथी | १ वेद |
| वे युगलमाथी | १ युगल युगलनी २ प्रकृति |
| चार कपायमाथी | ३ कपाय अनतानुबधी विना |
| दश योगमाथी | १ योग आहारक द्विक २, औदारिक मिश्र १, वैक्रिय मिश्र १, कार्मण काय योग १, ए ५ विना योग १० समजवा |

ए जघन्ये मूळ १० बध हेतुना भागा कहे छे

५ मिथ्यात्वने.
६ कायवध साथे गुणवा.

३०
५ इंद्रियो साथे गुणवा.

१५०
२ हास्य रति के शोक अरति साथे गुणवा.

३००
३ वेद साथे गुणवा.

९००
४ कषाय साथे गुणवा.

३६००
१० योग साथे गुणवा.

३६००० आ दश बंध हेतुना भांगा थया. आ एक कायवधना भागा थया.

---

हवे उत्तर भेदे १८ बंधहेतु उत्कृष्टथी होय, ते कहेछे—१०-११-१२-१३-१४-१५-१६-१७-१८-ए रीते दश आदि लईने अढार सुधी बंधहेतु कहेवा.

हवे एक कायना वधमां पूर्वे कहेला दश बंध हेतुमां भय के जुगुप्सा के अनंतानुबंधी एक कषाय, एम एक एक भेळवतां ११ बंध हेतु थाय.

पूर्वना १० बंध हेतुमां भय नांखतां ११ तेना भांगा ३६०००.

पूर्वना १० बंध हेतुमां जुगुप्सा नांखतां ११ तेना भांगा ३६०००.

पूर्वना १० बंध हेतुमां अनंतानुबंधी १ नांखतां ११ तेना भांगा ३६०० ने आहारक द्विक विना १३ योगे गुणतां ४६८०० भांगा थाय.

ज्यारे बे कायना वधनी विवक्षा करीए, त्यारे द्विक संयोगी १५ भांगा थाय तेने पूर्वोक्त रीते गुणीए त्यारे ११ बंध हेतुना ९०००० भांगा थाय ते आ प्रमाणे—

द्विक संयोगी १५ भांगाने ५ मिथ्यात्व साथे गुणतां ७५.

तेने ५ ईंद्रिये गुणतां ३७५.

तेने १ युगल एटले बे वडे गुणतां ७५०.

तेने ३ वेद साथे गुणतां २२५०.

तेने ४ कषाय साथे गुणतां ९०००.

तेने १० योग साथे गुणतां ९०००० भांगा थाय.

कुल ३६००० १ ला विकल्पना
३६००० २ जा विकल्पना
४६८०० ३ जा विकल्पना
९०००० ४ था विकल्पना
२०८८०० भागा अगीआर बंधहेतुना चार विकल्पो मळीने थया

---

पूर्वोक्त १० मध्ये भय अने जुगुप्सा ए २ नाखीए त्यारे १२ बंधहेतु थाय त्या एक कायनो वध लेखवता पूर्वनी पेठे ३६०००

पूर्वोक्त १० मध्ये एकने बदले बे काय ने भय मेळवता तेना भागा ९००००,

बे काय अने कुत्सा मेळवता तेना भंग पूर्वनी पेठे ९००००

त्रण कायनो वध लेखवीए त्यारे २० भागा त्रिक संयोगी छे तेनी साथे गुणवा

२० भागाने ५ मिथ्यात्वे गुणता १००
तेने ५ इंद्रिये गुणता ५००
तेने २ युगले गुणता १०००
तेने ३ वेदे गुणता ३०००
तेने ४ कषाये गुणता १२०००
तेने १० योगे गुणता १२००००

अनतानुबंधी अने भय मेळवीए त्यारे १२ बंधहेतुना भागा ३६०० ने १३ योग साथे गुणता ४६८००

अनतानुबंधी अने कुत्सा मेळवता पण पूर्वनी जेटला ४६८००.

अनतानुबंधी अने बे कायनो वध लेखवता द्विक संयोगी १५ भंगना जे ९००० भग छे, तेने १३ योग साथे गुणता ११७०००

ए रीते १२ बंध हेतुना सात विकल्पना भागा नीचे प्रमाणे—

| | |
|---|---|
| ३६००० पहेला विकल्पना | ४६८०० पाचमा विकल्पना |
| ९०००० बीजा विकल्पना | ४६८०० छठ्ठा विकल्पना |
| ९०००० त्रीजा विकल्पना | ११७००० सातमा विकल्पना |
| १२०००० चोथा विकल्पना | ५४६६०० कुल भागा थया |

---

हवे १३ बंधहेतुना भागा कहे छे

पूर्वोक्त १० मा भय अने कुत्सा तथा एकने बदले बे कायनो वध मेळवता १३ बंधहेतु थाय त्या ९०००० भागा थाय

भय अने त्रण कायनो वध लेखवीए त्यारे १२०००० भागा थाय

कुत्सा अने त्रण कायनो वध लेखवीए त्यारे १२०००० भागा थाय

अनतानुबंधीने उदये भय अने कुत्सा मेळवीए अने १३ योग साथे गुणीए त्यारे ४६८०० भग थाय

अनंतानुबंधी, भय अने बे कायनो वध लेखवतां भंग ११७००० थाय.

अनंतानुबंधी, कुत्सा अने बे कायनो वध लेखवतां भंग ११७००० थाय.

अनंतानुबंधी ने त्रण कायनो वध लेखवीये त्यारे त्रिक संयोगी २० भंग साथे गुणतां भंग १५६००० थाय.

| | |
|---|---|
| २०+५=१०० | १०००+३=३००० |
| १००+५=५०० | ३०००+४=१२००० |
| ५००+२=१००० | १२०००+१३=१५६००० |

पूर्वोक्त १० साथे ४ कायनो वध लेखवीए त्यारे ९०००० भांगा थाय.

आ प्रमाणे १३ बंध हेतुना ८ विकल्पना ८५६८०० भांगा थाय तेनी विगत.

| | |
|---|---|
| ९०००० पहेला विकल्पनां. | ११७००० पांचमा विकल्पना. |
| १२०००० बीजा विकल्पना. | ११७००० छठ्ठा विकल्पना. |
| १२०००० त्रीजा विकल्पना. | १५६००० सातमा विकल्पना. |
| ४६८०० चोथा विकल्पना. | ९००,०० आठमा विकल्पना. |

---

| | |
|---|---|
| १ पूर्वोक्त १० मध्ये भय अने कुत्सा भेळवीए अने एकने बदले त्रण कायनो वध साथे गणीए त्यारे १४ बंध हेतु थाय. तेना भांगा | १२०००० |
| २ भय ने चार कायने वधे | ९०००० |
| ३ कुत्सा अने चार कायने वधे | ९०००० |
| ४ पांच कायना वधे | ३६००० |
| ५ अनंतानुबंधीना उदये भय, कुत्सा अने बे कायने वधे (१३ योग साथे गुणवा) | ११७६.०० |
| ६ अनंतानुबंधी, भय अने त्रण कायने वधे | १५६००० |
| ७ अनंतानुबंधी, कुत्सा अने त्रण कायने वधे | १५६००० |
| ८ अनंतानुबंधी ने चार कायने वधे | ११७००० |
| आ प्रमाणे चौद बंध हेतुना ८ विकल्पे थईने भांगा थया. | ८८२००० |

---

| | |
|---|---|
| १ पूर्वोक्त १० मध्ये भय, कुत्सा अने एकने बदले ४ कायनो वध लेखवीए त्यारे १५ बंध हेतु थाय त्यां भांगा | ९०००० |
| २ भय अने ५ कायना वधे | ३६००० |
| ३ कुत्सा अने ५ कायना वधे | ३६००० |
| ४ छ कायना वधे | ६००० |

| | |
|---|---|
| १+५=५ | ५०+३=१५० |
| ५+५=२५ | १५०+४=६०० |
| २५+२=५० | ६००+१०=६००० |

५ अनतानुवंधीने उदये भय, कुत्सा
अने त्रण कायनो वध गणीए
अने १३ योगे गुणीए त्यारे भागा १५६०००
६ अनंतानुवंधी, भय ने चार कायने वधे ११७०००
७ अनतानुवंधी, कुत्सा ने चार कायने वधे ११७०००
८ अनतानुवधी ने पाच कायने वधे ४६८००
आ प्रमाणे पदर वध हेतुना ८ विकल्पे थईने भागा थया ६०४८००

---

१ पूर्वोक्त १० हेतु मध्ये भय, कुत्सा अने एकने वदले पाच कायनो वध
लेखवीए त्यारे १६ वंध हेतु थाय तेना भागा ३६०००
२ भय अने छ कायनो वध लईए त्यारे ६०००
३ कुत्सा अने छ कायनो वध लईए त्यारे ६०००
४ अनंतानुवधी, भय, कुत्सा अने चार कायना वध साथे गुणता ११७०००
५ अनतानुवधी, भय अने पाच कायना वध साथे गुणता ४६८००
६ अनंतानुवधी, कुत्सा अने पाच कायना वध साथे गुणता ४६८००
७ अनतानुवंधी ने छ कायना वध साथे गुणता ७८००
आ प्रमाणे सोळ हेतुना सात विकल्पे भागा थया २६६४००

---

१ पूर्वोक्त १० मध्ये भय, कुत्सा अने एकने वदले छ कायनो वध लईए
त्यारे १७ वध हेतु थाय तेना भागा ६०००
२ अनतानुनधी, भय, कुत्सा ने पाच कायनो वध लेखवीए त्यारे ४६८००
३ अनतानुवंधी, भय अने छ कायना वधे ७८००
४ अनंतानुवधी, कुत्सा अने छ कायना वधे ७८००
आ प्रमाणे १७ वध हेतुना चार विकल्पे भागा थया ६८४००

---

पूर्वोक्त १० मध्ये अनंतानुनधी, भय, कुत्सा ने एकने वदले छ कायनो वध
लेखवता १८ वधहेतुनो १ विकल्प तेना भागा ७८०० थाय

| | |
|---|---|
| षट्काय सयोगी १ | ५० |
| मिथ्यात्व ५ | वेद ३ |
| ५ | १५० |
| इद्रिय ५ | कषाय ४ |
| २५ | ६०० |
| युगल २ | योग १३ |
| ५० | ७८०० |

ए रीते मिथ्यात्व गुणस्थाने—

| | |
|---|---|
| १० वंध हेतुना भांगा | ३६००० |
| ११ वंध हेतुना भांगा | २०८८०० |
| १२ वंध हेतुना भांगा | ५४६६०० |
| १३ वंध हेतुना भांगा | ८५६८०० |
| १४ वंध हेतुना भांगा | ८८२००० |
| १५ वंध हेतुना भांगा | ६०४८०० |
| १६ वंध हेतुना भांगा | २६६४०० |
| १७ वंध हेतुना भांगा | ६८४०० |
| १८ वंध हेतुना भांगा | ७८०० |
| ए रीते मिथ्यात्व गुणस्थाने दशथी मांडीने अढार सुधीना वंध हेतुने नव विकल्पे थईने भांगा थया. | ३४७७६०० |

२ हवे बीजा स्वास्वादन गुणस्थाने—भांगा ३८३०४० थाय, ते कहे छे.

अहीं जघन्य १० हेतु होय. तेमां मिथ्यात्व न होय. अने अनंतानुवंधीना उदय विना बीजुं गुणस्थान न होय. तेथी कषाय ४, वेद १, युगल १, इंद्रियनी अविरति १, कायनो वध १, योग तेरमांथी १, ए १० हेतु जघन्यथी. अने उत्कृष्टथी १७ हेतु–१०–११–१२–१३–१४–१५–१६–१७. आ उत्कृष्ट वंधहेतु एक समये होय. तेना ८ विकल्प होय. विशेष एटलुं के–नपुंसक वेदे वैक्रियमिश्र योग न होय. नारकी अपर्याप्त अवस्थाए सास्वादनी न होय तेथी.

३ वेदने पूर्व प्रमाणे १३ योग साथे गुणतां ३९. तेमांथी एक रूप काढता ३८.

तेने छ काय साथे गुणतां २२८.

तेने ५ इंद्रिय साथे गुणतां ११४०.

तेने १ युगलना २ साथे गुणतां २२८०.

तेने ४ कषाय साथे गुणतां ९१२०.

बीजा गुणस्थानना भांगानी गणतरी नीचे प्रमाणे.

६ कायने ५ इंद्रिय साथे गुणतां ३०.

तेने १ युगलना बे साथे गुणतां ६०.

तेने ४ कषाये गुणतां २४०.

तेने २ वेद साथे गुणतां ४८०.

तेने १३ योग साथे गुणतां ६२४०.

तथा वेद १ लईए तो ते साथे गुणतां २४०.

तेने वैक्रियमिश्र विना योग १२ साथे गुणता २८८०.

पूर्वना ६२४० मा २८८० भेळवता कुल ९१२० जघन्य दश बंध हेतुना भागा जाणवा

---

१ पूर्वोक्त १० हेतु मध्ये भय भेळवीए त्यारे ११ बंध हेतु थाय तेना ९१२०
२ दशमा कुत्सा भेळवीए त्यारे ११ बध हेतुना भागा ९१२०
३ बे कायनो वध लेखवीए त्यारे द्विक संयोगी १५ भंग साथे गुणता नीचे प्रमाणे थता भागा २२८००

ए रीते ३ विकल्पे थईने ११ हेतुना कुल भंग थाय ४१०४०

११ हेतुना द्विक संयोगी भागा १५ ने ५ इंद्रिय साथे गुणता ७५

तेने युगलना बे साथे गुणता १५०

तेने ४ कषाय साथे गुणता ६००

तेने २ वेद साथे गुणता १२००

तेने १३ योग साथे गुणता १५६००

तथा वेद १ लईए तो ६०० ने १२ योग साथे गुणता ७२०० ते पूर्वना १५६०० मा भेळवीए त्यारे २२८०० भागा थाय, ते उपर लख्याछे

---

पूर्वोक्त १० हेतु मध्ये भय कुत्सा भेळवीए त्यारे १२ हेतु थाय

१ तेमा पहेले विकल्पे भागा ९१२०
२ भय अने बे कायना वधे भागा २२८००
३ कुत्सा अने बे कायनो वध लेता भागा २२८००
४ त्रण कायनो वध लेता भागा नीचे लख्या प्रमाणे ३०४००

आ रीते १२ हेतुना चार विकल्पे भागा थाय ८५१२०

अहीं त्रिक संयोगी २० भागाने ५ इंद्रिये गुणता १००

तेने युगलना बे साथे गुणता २००

तेने ४ कषाय साथे गुणता ८००

तेने २ वेद साथे गुणता १६००

तेने १३ योग साथे गुणता २०८००

तथा एक वेद साथे गुणता ८०० तेने १२ योग साथे गुणता ९६०० तेमा पूर्वना २०८०० भेळवीए त्यारे ३०४०० थाय ते उपर लख्या छे

---

१ पूर्वोक्त १० मध्ये भय, कुत्सा अने एकने बदले बे कायनो वध लइए
त्यारे १३ बंधहेतुना भांगा. २२८००
२ भय ने त्रण कायनो वध लेखवीए त्यारे ३०४००
३ कुत्सा ने त्रण कायनो वध लेखवीए त्यारे ३०४००
४ चार कायनो वध लेखवतां चतुःसंयोगी १५ भांगा साथे गुणतां
२२८०० थाय छे ते २२८००

आ रीते १३ हेतुना चार विकल्पे भांगा थाय. १०६४००

---

१ पूर्वोक्त १० मध्ये भय कुत्सा अने एकने बदले त्रण कायनो वध
लहीए त्यारे १४ हेतु थाय भांगा पूर्वनी पेठे. ३०४००
२ भय ने चार कायना वधे २२८००
३ कुत्सा ने चार कायना वधे २२८००
४ पांच कायना वधे ९१२०

आ रीते १४ हेतुना चार विकल्पे भांगा थाय. ८५१२०

---

पूर्वोक्त १० मध्ये भय, कुत्साने एकने बदले चार कायनो वध लेखवीए त्यारे
१५ हेतु थाय. १ पहेला विकल्पना भांगा २२८००
२ भय अने पांच कायना वधे भांगा ९१२०
३ कुत्सा अने पांच कायना वधे ९१२०
४ छ कायना वधे १५२०

ए रीते १५ हेतुना चार विकल्पे भांगा थया. ४२५६०

---

पूर्वोक्त १० मध्ये भय, कुत्सा अने एकने बदले पांच कायनो वध लेतां
१६ हेतु थाय. तेना १ पहेले विकल्पे भांगा ९१२०
२ भय अने छ कायना वधे भांगा १५२०
३ कुत्सा अने छ कायना वधे १५२०

आ रीते १६ हेतुना त्रण विकल्पे भांगा थाय. १२१६०

---

६ काय, १ इंद्रिय, ४ कषाय, २ युगल एकना, १ वेद, १ भय, १ कुत्सा,
१ योग, ए १७ हेतुनो ६ संयोगी एक भंग होय.
१ कायने ५ इंद्रिय साथे गुणतां ५.
तेने युगलना २ साथे गुणतां १०.
तेने ४ कषाय साथे गुणतां ४०.
तेने २ वेद साथे गुणतां ८०.
तेने १३ योग साथे गुणतां १०४०.
तथा एक वेद लईए तो ४० ने १२ योग साथे गुणतां ४८०. तेमां पूर्वना
१०४० भेळवीए त्यारे १५२० भांगा थाय.

आ रीते सास्वादन गुणस्थाने—

| | | | |
|---|---|---|---|
| १० हेतुना भांगा | ९१२० | १४ हेतुना भागा | ८५१२० |
| ११ हेतुना भागा | ४१०४० | १५ हेतुना भागा | ४२५६० |
| १२ हेतुना भागा | ८५१२० | १६ हेतुना भागा | १२१६० |
| १३ हेतुना भागा | १०६४०० | १७ हेतुना भागा | १५२० |

आठ विकल्पना थईने भागा कुल ३८३०४० थाय.

---

३ मिश्र गुणस्थाने—३०२४०० भागा थाय, ते कहे छे.—

मिश्र गुणस्थाने अनतानुबधी न होय तेथी एक जीवने एक समये ९-१०-११-१२-१३-१४-१५ अने उत्कृष्ट १६ हेतु थाय त्या जघन्यथी काय १, इद्रिय १, कषाय ३, हास्यादि युगल २, वेद १, योग १, ए ९ हेतु होय.

| | |
|---|---|
| तेमा ६ कायने ५ इंद्रिय साथे गुणता | ३० |
| तेने ४ कषाय साथे गुणता | १२० |
| तेने युगलना बे साथे गुणता | २४० |
| तेने ३ वेद साथे गुणता | ७२० |
| तेने १० योग साथे गुणता | ७२०० |

पूर्वोक्त ९ मध्ये भय भेळवता १० हेतु थाय.

| | |
|---|---|
| १ तेना पहेले विकल्पे भागा | ७२०० |
| २ कुत्सा भेळवता भागा | ७२०० |
| ३ बे कायनो वध लेखवता भागा (नीचे जणाव्या प्रमाणे) | १८००० |
| आ प्रमाणे ३ विकल्पे दश हेतुना भागा ३२४०० थाय | ३२४०० |

| | |
|---|---|
| तेमा द्विक सयोगीना भागा | १५ |
| तेने ५ इद्रिय साथे गुणता | ७५ |
| बे युगल साथे गुणता | १५० |
| त्रण वेद साथे गुणतां | ४५० |
| ४ कषाय साथे गुणता | १८०० |
| १० योग साथे गुणता | १८००० थाय |

पूर्वोक्त ९ मध्ये भय अने कुत्सा भेळवीए त्यारे ११ हेतु थाय

| | |
|---|---|
| १ तेमा पहेलो विकल्प पूर्वनी पेठे | ७२०० |
| २ कुत्सा अने बे कायना वधे | १८००० |
| ३ भय अने बे कायना वधे | १८००० |
| ४ त्रण कायना वधे (नीचे जणाव्या प्रमाणे) | २४००० |
| ए प्रमाणे चार विकल्पे ११ हेतुना भागा ६७२०० थाय. | ६७२०० |

तेमां त्रिक संयोगी भांगा २० ने ५ इंद्रिये गुणतां १००, तेने २ युगल साथे गुणतां २००, तेने ३ वेद साथे गुणतां ६००, तेने ४ कषाय साथे गुणतां २४००, तेने १० योग साथे गुणतां २४०००.

पूर्वोक्त ९ हेतु मध्ये भय, कुत्सा अने बे कायनो वध लेखवतां १२ हेतु थाय.

| | |
|---|---|
| १ तेमां पहेले विकल्पे भांगा | १८००० |
| २ भय ने ३ कायना वधे भांगा | २४००० |
| ३ कुत्सा ने ३ कायना वधे भांगा | २४००० |
| ४ चार कायना वधे भांगा | १८००० |
| आप्रमाणे ४ विकल्पे १२ हेतुना भांगा ८४००० थाय. | ८४००० |

पूर्वोक्त ९ हेतु मध्ये भय, कुत्सा अने त्रण काय लेखवतां १३ हेतु थाय.

| | |
|---|---|
| १ तेमां पहेले विकल्पे भांगा | २४००० |
| २ भय ने चार कायना वधे | १८००० |
| ३ कुत्सा ने चार कायना वधे | १८००० |
| ४ पांच कायना वधे | ७२०० |
| आ प्रमाणे ४ विकल्पे १३ हेतुना भांगा ६७२०० थाय. | ६७२०० |

पूर्वोक्त ९ हेतु मध्ये भय, कुत्सा अने चार कायनो वध लेखवतां १४ हेतु थाय.

| | |
|---|---|
| १ तेमां पहेले विकल्पे भांगा पूर्वनी पेठे | १८००० |
| २ भय अने पांच कायना वधे | ७२०० |
| ३ कुत्सा अने पांच कायना वधे | ७२०० |
| ४ छ कायना वधे | १२०० |
| ए प्रमाणे ४ विकल्पे १४ हेतुना भांगा ३३६०० थाय. | ३३६०० |

पूर्वोक्त ९ हेतु मध्ये भय, कुत्सा अने पांच कायनो वध लेतां १५ हेतु थाय.

| | |
|---|---|
| १ तेमां पहेले विकल्पे पूर्वनी पेठे | ७२०० |
| २ भय ने छ कायना वधे | १२०० |
| ३ कुत्सा ने छ कायना वधे | १२०० |
| ए प्रमाणे ३ विकल्पे १५ हेतुना भांगा थया. | ९६०० |

काय ६, इंद्रिय १, कषाय ३, हास्यादिक एक युगलना २, वेद १, योग १, भय १, कुत्सा १, ए १६ बंध हेतुना भांगा १२०० थाय.

आ ८ विकल्पे मिश्र गुणस्थाने—

| | | | |
|---|---|---|---|
| ९ हेतुना भांगा | ७२०० | १३ हेतुना भांगा | ६७२०० |
| १० हेतुना भांगा | ३२४०० | १४ हेतुना भांगा | ३३६०० |
| ११ हेतुना भांगा | ६७२०० | १५ हेतुना भांगा | ९६०० |
| १२ हेतुना भांगा | ८४००० | १६ हेतुना भांगा | १२०० |

कुल भांगा ३०२४०० थाय.

४–५ हवे अविरति अने देशविरति ए बे गुणस्थाने कहे छे

तेमा चोथे गुणस्थाने ३५२८०० भागा थाय त्या जघन्य ९ अने उत्कृष्ट १६ बध हेतु होय—९–१०–११–१२–१३–१४–१५–१६

आहारक द्विक विना १३ योगने ३ वेद साथे गुणता ३९
तेमाथी ४ रूप काढीए त्यारे ३५
तेने ६ काय साथे गुणता २१०
तेने ५ इद्रिय साथे गुणता १०५०
तेने युगलना २ साथे गुणता २१००
तेने ४ कषाये गुणता ८४००

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| काय | ६ | नपुसकवेदे | २४० | स्त्रीवेदे | २४० |
| इद्रिय | ५ | योग | १२ | योग | १० |
| | ३० | | २८८० | | २४०० |
| युगल | २ | | | | |
| | ६० | | | | |
| कषाय | ४ | | | | |
| | २४० | | | | |
| पुंवेद | १ | | | | |
| | २४० | | | | |
| योग | १३ | | | | |
| | ३१२० | त्रण प्रकारना एकंदर करतां ८४०० | | | |

पूर्वोक्त ९ हेतु मध्ये भय भेळवता १० हेतु थाय

| | |
|---|---|
| १ तेना पूर्वनी पेठे पहेला विकल्पमा भागा | ८४०० |
| २ नव मध्ये कुत्सा भेळवतां भांगा | ८४०० |
| ३ नव मध्ये बे काय भेळवता भागा | २१००० |
| ए रीते ३ विकल्पे १० हेतुना भांगा ३७८०० थाय | ३७८०० |

| द्विक सयोगी भागा | | नपुंसकवेदे | | स्त्रीवेदे | |
|---|---|---|---|---|---|
| | १५ | | ६०० | | ६०० |
| इंद्रिय | ५ | योग | १२ | योग | १० |
| | ७५ | | ७२०० | | ६००० |
| युगल | २ | | | | |
| | १५० | | | | |
| कषाय | ४ | | | | |
| | ६०० | | | | |
| पुवेद | १ | | | | |
| | ६०० | | | | |
| योग | १३ | | | | |
| | ७८०० | त्रण प्रकारना एकदर करता २१००० | | | |

पूर्वोक्त ९ हेतु मध्ये भय अने कुत्सा भेळवतां ११ वंध हेतु थाय.

| | |
|---|---|
| १ तेमां पहेले विकल्पे भांगा | ८४०० |
| २ भय तथा वे काय लेखवतां भांगा | २१००० |
| ३ कुत्सा अने वे काय लेखवतां भांगा | २१००० |
| ४ त्रण काय लेखवतां भांगा | २८००० |
| ए प्रमाणे ४ विकल्पे ११ हेतुना भांगा ७८४०० थाय. | ७८४०० |

| त्रिक संयोगी भांगा | | नपुंसकवेदे | | स्त्रीवेदे | |
|---|---|---|---|---|---|
| | २० | | ८०० | | ८०० |
| इंद्रिय | ५ | योग | १२ | योग | १० |
| | १०० | | ९६०० | | ८००० |
| युगल | २ | | | | |
| | २०० | | | | |
| कषाय | ४ | | | | |
| | ८०० | | | | |
| पुंवेद | १ | | | | |
| | ८०० | | | | |
| योग | १३ | | | | |
| | १०४०० | | | | |

त्रण प्रकारना एकंदर करतां २८०००.

पूर्वोक्त ९ मध्ये भय, कुत्सा अने वे कायनो वध लेखवतां १२ हेतु थाय.

| | |
|---|---|
| १ तेमां पहेले विकल्पे भांगा | २१००० |
| २ नवमां भय अने त्रण कायनो वध लेखवतां | २८००० |
| ३ नवमां कुत्सा अने त्रण कायनो वध लेखवतां | २८००० |
| ४ नवमां चार कायनो वध लेखवतां भांगा | २१००० |
| आ रीते ४ विकल्पे १२ हेतुना भांगा ९८००० थाय. | ९८००० |

पूर्वोक्त ९ मध्ये त्रण कायनो वध, भय अने कुत्सा लइए त्यारे १३ हेतु थाय.

| | |
|---|---|
| १ तेमां पहेले विकल्पे भांगा | २८००० |
| २ नवमां भय अने चार कायना वधे भांगा | २१००० |
| ३ नवमां कुत्सा अने चार कायना वधे भांगा | २१००० |
| ४ नवमां पांच कायना वधे भांगा | ८४०० |
| आ रीते ४ विकल्पे थइने १३ हेतुना भांगा ७८४०० थाय. | ७८४०० |

पूर्वोक्त ९ मध्ये भय, कुत्सा अने चार कायनो वध लेखवता १४ हेतु थाय

| | |
|---|---|
| १ तेमा पहेले विकल्पे भागा | २१००० |
| २ नवमा भय ने पाच काय लेखवीए त्यारे भागा | ८४०० |
| ३ नवमा कुत्सा अने पाच काय लेखवीए त्यारे भागा | ८४०० |
| ४ नवमा छ कायनो वध लेखवता नीचे जणाव्या प्रमाणे भागा | १४०० |
| आ रीते ४ विकल्पे १४ हेतुना भागा ३९२०० थाय | ३९२०० |

| | पुवेदे | | नपुंसकवेदे | | स्त्रीवेदे |
|---|---|---|---|---|---|
| षट्कायसंयोगी | १ | | ४० | | ४० |
| इंद्रिय | ५ | योग | १२ | योग | १० |
| | ५ | | ४८० | | ४०० |
| युगल | २ | | | | |
| | १० | | | | |
| कषाय | ४ | | | | |
| | ४० | | | | |
| पुवेद | १ | | | | |
| | ४० | | | | |
| योग | १३ | | | | |
| | ५२० | त्रणे प्रकारना एकदर करता १४०० | | | |

पूर्वोक्त ९ मध्ये भय, कुत्सा अने पांच कायनो वध लेखवता १५ हेतु थाय

| | |
|---|---|
| १ तेमा पहेले विकल्पे भागा | ८४०० |
| २ नवमा भय अने छ कायनो वध लेखवता | १४०० |
| ३ नवमा कुत्सा अने छ कायनो वध लेखवता | १४०० |
| आ ३ विकल्पे थइने १५ हेतुना भागा ११२०० थाय | ११२०० |

पूर्वोक्त ९ मध्ये भय, कुत्सा अने छ कायनो वध लेखवता १६ हेतु थाय
तेमा विकल्प एक ज छे तेना भागा १४०० थाय

| | |
|---|---|
| ९ वध हेतुना भागा ८४०० | १३ वध हेतुना भागा ७८४०० |
| १० वध हेतुना भागा ३७८०० | १४ वध हेतुना भागा ३९२०० |
| ११ वध हेतुना भागा ७८४०० | १५ वध हेतुना भागा ११२०० |
| १२ वंध हेतुना भागा ९८००० | १६ वध हेतुना भागा १४०० |

कुल चोथे गुणस्थाने ९ थी १६ वध हेतुना ३५२८०० भागा थाय

हवे पांचमा गुणस्थानना संयोगी भांगा कहे छे.—

एक संयोगी भांगा ५

१ पृथ्वी
२ अप्
३ तेज
४ वायु
५ वनस्पति

द्विक संयोगी भांगा १०

१ पृथ्वी अप्
२ पृथ्वी तेज
३ पृथ्वी वायु
४ पृथ्वी वनस्पति
५ अप् तेज
६ अप् वायु
७ अप् वनस्पति
८ तेज वायु
९ तेज वनस्पति
१० वायु वनस्पति

त्रिक संयोगी भांगा १०

१ पृथ्वी अप् तेज
२ पृथ्वी अप् वायु
३ पृथ्वी अप् वनस्पति
४ पृथ्वी तेज वायु
५ पृथ्वी तेज वनस्पति
६ पृथ्वी वायु वनस्पति
७ अप् तेज वायु
८ अप् तेज वनस्पति
९ अप् वायु वनस्पति
१० तेज वायु वनस्पति

चतुः संयोगी भांगा ५.

१ पृथ्वी अप् तेज वायु.
२ पृथ्वी अप् तेज वनस्पति.
३ पृथ्वी अप् वायु वनस्पति.
४ पृथ्वी तेज वायु वनस्पति.
५ अप् तेज वायु वनस्पति.

पंच संयोगी भांगो १.

१ पृथ्वी अप् तेज वायु वनस्पति.

---

हवे पांचमे गुणस्थाने एक जीव आश्री जघन्यथी ८ वंध हेतु अने उत्कृष्टथी १४ हेतुना विकल्प ७ थाय. तेना भांगा १६३६८० थाय. केम जे त्रस विना एक संयोगी भांगा ५, द्विक संयोगी भांगा १०, त्रिक संयोगी भांगा १०, चतुःसंयोगी भांगा ५, पंचसंयोगी भांगो १, तेनुं कोष्टक उपर प्रमाणे जाणवुं. वंध हेतु आ प्रमाणे. ८–९–१०–११–१२–१३–१४.

जघन्यथी काय १, इंद्रिय १, कषाय २, युगलनी २, वेद १, योग १. एम जघन्य ८ वंध हेतुनो विकल्प एकज छे, तेना भांगा ६६००.

| | | | |
|---|---|---|---|
| काय | ५ | | १५० |
| इंद्रिय | ५ | कषाय | ४ |
| | २५ | | ६०० |
| युगल | २ | योग | ११ |
| | ५० | | ६६०० |
| वेद | ३ | | |

हवे ८ मध्ये भय अथवा कुत्सा अथवा वे काय लेखवता ९ हेतु थाय

| | |
|---|---|
| १ आठमा भय भेळवता ९ हेतुना पहेले विकल्पे भागा | ६६०० |
| २ आठमा कुत्सा भेळवता भागा | ६६०० |
| ३ बे कायनो वध लेखवता भागा नीचे लख्या प्रमाणे. | १३२०० |
| आ त्रण विकल्पे ९ हेतुना भागा २६४०० थाय | २६४०० |

द्विक सयोगी भागा १०
इंद्रिय ५ — ५०
युगल २ — १००
वेद ३ — ३००
कपाय ४ — १२००
योग ११ — १३२००

पूर्वोक्त आठमा भय अने कुत्सा भेळवता १० हेतु थाय.

| | |
|---|---|
| १ तेमा पहेले विकल्पे भागा | ६६०० |
| २ आठमा भय ने बे काय लेखवता भागा | १३२०० |
| ३ आठमा कुत्सा अने बे काय लेखवता | १३२०० |
| ४ त्रण कायनो वध लेखवता | १३२०० |
| आ ४ विकल्पे १० हेतुना भागा ४६२०० थया | ४६२०० |

पूर्वोक्त आठ मध्ये भय, कुत्सा अने बे कायनो वध लेखवता ११ हेतु थाय.

| | |
|---|---|
| १ तेमा पहेले विकल्पे भागा | १३२०० |
| २ आठमा भय अने त्रण काय लेखवता | १३२०० |
| ३ आठमा कुत्सा अने त्रण काय लेखवता | १३२०० |
| ४ चार कायना वधे | ६६०० |
| आ ४ विकल्पे ११ हेतुना भागा ४६२०० थया | ४६२०० |

पूर्वोक्त आठ मध्ये भय अने चार कायनो वध लेखवता १२ हेतु थाय.

| | |
|---|---|
| १ तेमा पहेले विकल्पे भागा | ६६०० |
| २ आठमा कुत्सा अने चार कायना वधे | ६६०० |
| ३ आठमा भय, कुत्सा अने त्रण कायना वधे | १३२०० |
| ४ पाच कायना वधे | १३२० |
| एम ४ विकल्पे १२ हेतुना भागा २७७२० थया | २७७२० |

पूर्वोक्त ८ मध्ये भय, कुत्सा अने चार कायनो वध लेखवता १३ हेतु थाय

| | |
|---|---|
| १ तेमा पहेले विकल्पे भागा | ६६०० |
| २ आठमा भय अने पाच कायनो वध लेखवता | १३२० |
| ३ आठमा कुत्सा ने पाच कायनो वध लेखवता | १३२० |
| एम ३ विकल्पे थईने १३ हेतुना भागा ९२४० थाय | ९२४० |

पूर्वोक्त आठ मध्ये भय, कुत्सा अने पांच कायनो वध लेखवीए त्यारे १४ बंध हेतु थाय, तेनो विकल्प एक ज छे. तेना भांगा १३२०.

१ पंच संयोगीयो भांगो.

| | | | |
|---|---|---|---|
| ५ | इंद्रिय | ३० | |
| ५ | | ४ | कषाय |
| २ | युगल | १२० | |
| १० | | ११ | योग |
| ३ | वेद | १३२० | |

ए प्रमाणे पांचमे गुणस्थाने सात विकल्पे थइने भांगानो सरवाळो कहे छे.—

| | | | |
|---|---|---|---|
| ८ बंध हेतुना भांगा | ६६० | १२ बंध हेतुना भांगा | २७७२० |
| ९ बंध हेतुना भांगा | २६४०० | १३ बंध हेतुना भांगा | ९२४० |
| १० बंध हेतुना भांगा | ४६२०० | १४ बंध हेतुना भांगा | १३२० |
| ११ बंध हेतुना भांगा | ४६२०० | | १६३६८० |

६ हवे छठ्ठे गुणस्थाने त्रणमांथी वेद १, एक युगलनी २, चार कषाय मध्ये पहेलो तथा बीजो कषाय १, तेर योगमांथी योग १, तेमां स्त्रीवेदे आहारक द्विक विना होय. आ ५ हेतु जघन्य पदे एक जीवने एक समये होय. तथा उत्कृष्टथी७ हेतु होय. ५–६–७.

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| वेद | ३ | वेद | २ | स्त्रीवेद | १ |
| योग | १३ | योग | १३ | योग | ११ |
| | ३९ | | २६ | | ११ |
| रूप काढीए | २ | युगल | २ | युगल | २ |
| | ३७ | | ५२ | | २२ |
| युगल | २ | कषाय | ४ | कषाय | ४ |
| | ७४ | | २०८ | | ८८ |
| कषाय | ४ | स्त्रीवेदे | ८८ | | |
| | २९६ | | २९६ | | |

| | |
|---|---|
| पांच हेतुना भांगा | २९६ |
| पांचमां भय लेखवतां ६ हेतुना भांगा }<br>पांचमां कुत्सा लेखवतां ६ हेतुना भांगा } | ५९२ |
| पांचमां भय अने कुत्सा लेखवतां सात हेतुना | २९६ |
| | ११८४ |

एम सर्व मळीने त्रण विकल्पे भांगा ११८४ थाय.

१३ तेरमे गुणस्थाने सात योग मध्येथी एक जीवने जघन्ये १ योग होय. माटे सात योगना ७ भांगा होय.

| गुणस्थान | भांगा | गुणस्थान | भांगा |
|---|---|---|---|
| १ मिथ्यात्व | ३४७७६०० | ८ अपूर्वकरण | ८६४ |
| २ सास्वादन | ३८३०४० | ९ अनिवृत्तिकरण | १४४ |
| ३ मिश्र | ३०२४०० | १० सूक्ष्म संपराय | ९ |
| ४ अविरति | ३५२८०० | ११ उपशम | ९ |
| ५ देशविरति | १६३६८० | १२ क्षीणमोह | ९ |
| ६ प्रमत्त | ११८४ | १३ सयोगी | ७ |
| ७ अप्रमत्त | १०२४ | १४ अयोगी | ० |

सर्व गुणस्थाने भांगानो सरवाळो ४६८२७७०

## अलपबहुत्व.

| | जीव-स्थान | गुण-स्थान | योग | उप-योग | लेश्या |
|---|---|---|---|---|---|
| १ सर्वथी थोडा गर्भज मनुष्य. | २ | १४ | १५ | १२ | ६ |
| २ तेथी मानुषी संख्यातगुणी. | २ | १४ | १३ | १२ | ६ |
| ३ तेथी वादर तेजस्काय पर्याप्ता असंख्यातगुणा. | १ | १ | १ | ३ | ३ |
| ४ तेथी अनुत्तर विमानवासी देवता असंख्यातगुणा. | २ | १ | ११ | ६ | १ |
| ५ तेथी उपरना ग्रैवेयक त्रिकना देवता संख्यातगुणा | २ | ¾ | ११ | ९ | १ |
| ६ तेथी मध्य ग्रैवेयक त्रिकना देवता संख्यातगुणा. | २ | ¾ | ११ | ९ | १ |
| ७ तेथी हेठला ग्रैवेयक त्रिकना देवता संख्यातगुणा. | २ | ¾ | ११ | ९ | १ |
| ८ तेथी बारमा देवलोकना देवता संख्यातगुणा. | २ | ४ | ११ | ९ | १ |
| ९ तेथी अग्यारमा देवलोकना देवता संख्यातगुणा. | २ | ४ | ११ | ९ | १ |
| १० तेथी दशमा देवलोकना देवता संख्यातगुणा. | २ | ४ | ११ | ९ | |
| ११ तेथी नवमा देवलोकना देवता संख्यातगुणा. | २ | ४ | ११ | ९ | |
| १२ तेथी सातमी नरकना नारकी असंख्यातगुणा. | २ | ४ | ११ | ९ | १ |
| १३ तेथी छठी नरकना नारकी असंख्यातगुणा. | २ | ४ | ११ | ९ | १ |
| १४ तेथी आठमा देवलोकना देवता असंख्यातगुणा. | २ | ४ | ११ | ९ | १ |
| १५ तेथी सातमा देवलोकना देवता असंख्यातगुणा. | २ | ४ | ११ | ९ | १ |
| १६ तेथी पांचमी नरकना नारकी असंख्यातगुणा. | २ | ४ | ११ | ९ | १ |
| १७ तेथी छट्ठा देवलोकना देवता असंख्यातगुणा. | २ | ४ | ११ | ९ | १ |
| १८ तेथी चोथी नरकना नारकी असंख्यातगुणा. | २ | ४ | ११ | ९ | १ |
| १९ तेथी पांचमा देवलोकना देवता असंख्यातगुणा. | २ | ४ | ११ | ९ | १ |
| २० तेथी त्रीजी नरकना नारकी असंख्यातगुणा. | २ | ४ | ११ | ९ | २ |
| २१ तेथी चोथा देवलोकना देवता असंख्यातगुणा. | २ | ४ | ११ | ९ | १ |

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| ५६ तेथी बादर अपूकाय पर्याप्ता असंख्यातगुणा. | १ | १ | १ | ३ | ३ |
| ५७ तेथी बादर वायुकायिक पर्याप्ता असंख्यातगुणा. | १ | १ | ३ | ३ | ३ |
| ५८ तेथी बादर तेजस्कायिक अपर्याप्ता असंख्यातगुणा. | १ | १ | २ | ३ | ३ |
| ५९ तेथी प्रत्येक वनस्पतिकायिक अपर्याप्ता असंख्यातगुणा. | १ | १/२ | २ | ३ | ४ |
| ६० तेथी बादर निगोद शरीर अपर्याप्ता असंख्यातगुणा. | १ | १ | २ | ३ | ३ |
| ६१ तेथी बादर पृथ्वीकायिक अपर्याप्ता असंख्यातगुणा. | १ | ०/२ | २ | ३ | ४ |
| ६२ तेथी बादर अपूकायिक अपर्याप्ता असंख्यातगुणा. | १ | १/२ | २ | ३ | ४ |
| ६३ तेथी बादर वायुकायिक अपर्याप्ता असंख्यातगुणा. | १ | १ | २ | ३ | ३ |
| ६४ तेथी सूक्ष्म तेजस्कायिक अपर्याप्ता असंख्यातगुणा. | १ | १ | २ | ३ | ३ |
| ६५ तेथी सूक्ष्म पृथ्वीकायिक अपर्याप्ता विशेषाधिक. | १ | १ | २ | ३ | ३ |
| ६६ तेथी सूक्ष्म अपूकायिक अपर्याप्ता विशेषाधिक. | १ | १ | २ | ३ | ३ |
| ६७ तेथी सूक्ष्म वायुकायिक अपर्याप्ता विशेषाधिक. | १ | १ | २ | ३ | ३ |
| ६८ तेथी सूक्ष्म तेजस्कायिक पर्याप्ता संख्यातगुणा. | १ | १ | १ | ३ | ३ |
| ६९ तेथी सूक्ष्म पृथ्वीकायिक पर्याप्ता विशेषाधिक. | १ | १ | १ | ३ | ३ |
| ७० तेथी सूक्ष्म अपूकायिक पर्याप्ता विशेषाधिक. | १ | १ | १ | ३ | ३ |
| ७१ तेथी सूक्ष्म वायुकायिक पर्याप्ता विशेषाधिक. | १ | १ | १ | ३ | ३ |
| ७२ तेथी सूक्ष्म निगोद शरीर अपर्याप्ता असंख्यातगुणा. | १ | १ | २ | ३ | ३ |
| ७३ तेथी सूक्ष्म निगोद शरीर पर्याप्ता संख्यातगुणा. | १ | १ | १ | ३ | ३ |
| ७४ तेथी अभव्य जीव अनंतगुणा. | १४ | १ | १३ | ५/६ | ६ |
| ७५ तेथी प्रतिपाति जीव अनंतगुणा. | १४ | ३ | १३ | ५/६ | ६ |
| ७६ तेथी सिद्ध भगवान अनंतगुणा. | ० | ० | ० | २ | ० |
| ७७ तेथी बादर वनस्पतिकायिक पर्याप्ता अनंतगुणा. | १ | १ | १ | १ | ३ |
| ७८ तेथी बादर पर्याप्ता विशेषाधिक. | ६ | १४ | १५ | १२ | ६ |
| ७९ तेथी बादर वनस्पतिकायिक अपर्याप्ता असंख्यातगुणा. | १ | ०/२ | २ | ३ | ४ |
| ८० तेथी बादर अपर्याप्ता विशेषाधिक. | ६ | ३ | ३ | ६/१ | ४ |
| ८१ तेथी बादर जीव विशेषाधिक. | १२ | १४ | १५ | १२ | ६ |
| ८२ तेथी सूक्ष्म वनस्पतिकायिक अपर्याप्ता असंख्यातगुणा. | १ | १ | २ | ३ | ३ |
| ८३ तेथी सूक्ष्म जीव अपर्याप्ता विशेषाधिक. | १ | १ | २ | ३ | ३ |
| ८४ तेथी सूक्ष्म वनस्पतिकायिक पर्याप्ता संख्यातगुणा. | १ | १ | १ | ३ | ३ |
| ८५ तेथी सूक्ष्म जीव पर्याप्ता विशेषाधिक. | १ | १ | १ | ३ | ३ |
| ८६ तेथी सूक्ष्म जीव विशेषाधिक. | २ | १ | ३ | ३ | ३ |
| ८७ तेथी भव्य जीव विशेषाधिक. | १४ | १४ | १५ | १२ | ६ |
| ८८ तेथी निगोदना जीव विशेषाधिक. | ४ | १ | ३ | ३ | ३ |
| ८९ तेथी वनस्पति जीव विशेषाधिक. | ४ | १/२ | ३ | ३ | ४ |

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| ९० तेथी एकेंद्रिय जीव विशेपाधिक | ४ | ३ | ५ | ३ | ४ |
| ९१ तेथी तिर्यंच जीव विशेपाधिक | १४ | ५ | १३ | ९ | ६ |
| ९२ तेथी मिथ्यात्वी जीव विशेपाधिक | १४ | १ | १३ | ५ | ६ |
| ९३ तेथी अविरति जीव विशेपाधिक | १४ | ४ | १३ | ९ | ६ |
| ९४ तेथी सकपायी जीव विशेपाधिक | १४ | १० | १५ | १० | ६ |
| ९५ तेथी छद्मस्थ जीव विशेपाधिक | १४ | १२ | १५ | १० | ६ |
| ९६ तेथी सयोगि जीव विशेपाधिक | १४ | १३ | १५ | १२ | ६ |
| ९७ तेथी भवस्थ जीव विशेपाधिक | १४ | १४ | १५ | १२ | ६ |
| ९८ तेथी सर्व जीव विशेपाधिक | १४ | १४ | १५ | १२ | ६ |

---

# चोथो कर्मग्रन्थ.

## भावप्रकरण.

भाव पाच छे—औपशमिकभाव, क्षायिकभाव, क्षायोपशमिकभाव, औदयिकभाव तथा पारिणामिकभाव

१ औपशमिकभावना बे भेद छे—औपशमिकसम्यक्त्व तथा औपशमिकचारित्र.

२ क्षायिकभावना नव भेद छे—केवलज्ञान, केवलदर्शन, क्षायिकसम्यक्त्व, दानलब्धि, लाभलब्धि, भोगलब्धि, उपभोगलब्धि, वीर्यलब्धि, तथा क्षायिकचारित्र.

३ क्षायोपशमिकभावना अढार भेद छे—केवलज्ञान अने केवलदर्शन विना चार ज्ञान, त्रण अज्ञान, त्रण दर्शन, दानादिक पाच लब्धि, क्षायोपशमिकसम्यक्त्व, सर्वविरति, तथा देशविरति

४ औदयिकभावना एकवीश भेद छे—अज्ञान, असिद्धता, असयम, छ लेश्या, चार कपाय, चार गति, त्रण वेद, तथा मिथ्यात्व

५ पारिणामिकभावना त्रण भेद छे—भव्यपणु, अभव्यपणु, तथा जीवत्व.

---

## सान्निपातिकना भेद २६ नुं विवरण.

द्विकसयोगी भागा १०

१ औपशमिक क्षायिक
२ औपशमिक मिश्र[1]
३ औपशमिक औदयिक
४ औपशमिक पारिणामिक
५ क्षायिक मिश्र

त्रिकसयोगी भागा १०

१ औपशमिक क्षायिक क्षायोपशमिक
२ औपशमिक क्षायिक औदयिक
३ औपशमिक क्षायिक पारिणामिक
४ औपशमिक मिश्र औदयिक
५ औपशमिक मिश्र पारिणामिक

---

१ मिश्र शब्दे क्षायोपशमिक भाव जाणवो

६ क्षायिक औदयिक
७ क्षायिक पारिणामिक
८ मिश्र औदयिक
९ मिश्र पारिणामिक
१० औदयिक पारिणामिक

६ औपशमिक औदयिक पारिणामिक
७ क्षायिक मिश्र औदयिक
८ क्षायिक मिश्र पारिणामिक
९ क्षायिक औदयिक पारिणामिक
१० मिश्र औदयिक पारिणामिक

## चतुःसंयोगी भांगो ५.

| | | | |
|---|---|---|---|
| १ औपशमिक | क्षायिक | क्षायोपशमिक | औदयिक |
| २ औपशमिक | क्षायिक | क्षायोपशमिक | पारिणामिक |
| ३ औपशमिक | क्षायिक | औदयिक | पारिणामिक |
| ४ औपशमिक | मिश्र | औदयिक | पारिणामिक |
| ५ क्षायिक | मिश्र | औदयिक | पारिणामिक |

## पंचसंयोगी भांगा १.

१ औपशमिक क्षायिक क्षायोपशमिक औदयिक पारिणामिक.

## सांनिपातिकना भांगो ६.

७ मो क्षायिक पारिणामिक १ द्विकसंयोगी सिद्धना जीवोने होय.
९ मो क्षायिक औदयिक पारिणामिक १ त्रिकसंयोगी केवलीने होय.
१० मो क्षायोपशमिक औदयिक पारिणामिक १ त्रिकसंयोगी चारे गतिना जीवने होय.
४ थो औपशमिक मिश्र औदयिक पारिणामिक १ चतुःसंयोगी उपशमसम्यग्दृष्टि चारे गतिना जीवने होय.
५ मो क्षायिक मिश्र औदयिक पारिणामिक १ चतुःसंयोगी क्षायिकसम्यग्दृष्टि चारे गतिना जीवने होय.
६ ठो औपशमिक क्षायिक मिश्र औदयिक पारिणामिक १ ए पंचसंयोगी भांगो उपशम श्रेणिए वर्तता क्षायिक सम्यग्दृष्टि मनुष्यने ९–१०–११ गुणस्थानके होय.

---

## सान्निपातिक भांगा ६ ना भेद १५.

क्षायोपशमिक १, औदयिक २, पारिणामिक ३, ए त्रिकसंयोगे नारकीना जीव १, देवता २, तिर्यंच ३, मनुष्य ४, ए त्रिकसंयोगी भांगा ४.

हवे चार भावने संयोगे ४ भांगा कहे छे.—

क्षायिक सम्यक्त्व १, मिश्र २, औदयिक ३, पारिणामिक ४, ए चार भाव साथे चारे गतिमां होय. सर्व मलीने ८ भेद थया.

हवे औपशमिक १, मिश्र २, औदयिक ३, पारिणामिक ४, ए चार भावे चार गतिना संज्ञी पंचेंद्रिय होय. सर्व मली १२ भांगा थया.

हवे क्षायिक १, औदयिक २, पारिणामिक ३, ए त्रिक संयोगी भागे १३–१४ मे गुणस्थानके केवळी होय ए १३ मो भागो थयो

क्षयिक १, पारिणामिक २, ए द्विक सयोगी भागे सिद्धना जीवो होय ए १४ मो भागो थयो

हवे औपशमिक १, मिश्र २, क्षायिक ३, औदयिक ४, पारिणामिक ५, ए पाच सयोगी भागो उपशमश्रेणि करता ९–१०–११ ए त्रण गुणस्थानके एक समये होय ए १५ मो भागो जाणवो

॥ इति सानिपातिकना १५ भागा ॥

---

## अथ चौद गुणस्थानके मूलभाव तथा उत्तरभावनु विवरण.

१ मिथ्यात्व गुणस्थाने

मूलभाव ३

उत्तरभाव ३४—क्षायोपशमिकना १० (लब्धि ५, अज्ञान ३, दर्शन २), औदयिकना २१, तथा पारिणामिकना ३ सर्व मली ३४

२ सास्वादन गुणस्थाने

मूलभाव ३

उत्तरभाव ३२—क्षायोपशमिकना १० ( लब्धि ५, अज्ञान ३, दर्शन २, ), औदयिकना २० ( मिथ्यात्व विना ), पारिणामिकना २ ( अभव्य विना ) सर्व मली ३२

३ मिश्र गुणस्थाने

मूलभाव ३

उत्तरभाव ३३—क्षायोपशमिकना १२ ( मिश्रज्ञान ३, दर्शन ३, लब्धि ५, मिश्रमोहनी १ ), औदयिकना १९ ( मिथ्यात्व तथा अज्ञानपणा विना ), पारिणामिकना २ सर्व मली ३३

४ अविरति गुणस्थाने

मूलभाव ५–३–४ ( सर्व जीव आश्रीने ५ ) पृथक् जीव आश्री ३ के ४

उत्तरभाव ३५—उपशम सम्यक्त्व १, क्षायिक सम्यक्त्व १, क्षायोपशमिकना १२ ( ज्ञान ३, दर्शन ३, लब्धि ५, क्षायोपशम सम्यक्त्व १ ), औदयिकना १९ ( मिथ्यात्व तथा अज्ञान विना ), पारिणामिकना २ सर्व मली ३५, ३४, ३४, ३३

५ देशविरति गुणस्थाने

मूलभाव ५–४–४–३

उत्तरभाव ३४—उपशम सम्यक्त्व १, क्षायिक सम्यक्त्व १, क्षायोपशमिकना १३ ( ज्ञान ३, दर्[illegible] लब्धि ५, सम्यक्त्व १, देशविरति १ )

यिकना १७ ( मिथ्यात्व, अज्ञान, देवगति अने नरकगति ए चार विना ), पारिणामिकना २. सर्व मली ३३–३४–३३–३२.

६ प्रमत्त गुणस्थाने.

मूलभाव ५–४—४–३.

उत्तरभाव ३३—उपशम सम्यक्त्व १, क्षायिक सम्यक्त्व १, क्षायोपशमिकना १४ ( अज्ञान ३, देशविरति १, ए चार विना ), औदयिकना १५ ( गति ३, मिथ्यात्व १, अज्ञान १, असंयम १, ए छ विना ), पारिणामिकना २. सर्व मली ३३–३२–३२–३१.

७ अप्रमत्त गुणस्थाने.

मूलभाव ५–४–४–३.

उत्तरभाव ३०—उपशम सम्यक्त्व १, क्षायिक सम्यक्त्व १, क्षायोपशमिकना १४ ( अज्ञान ३, देशविरति १, ए चार विना ), औदयिकना १२ ( अज्ञान १, लेश्या ३, गति ३, मिथ्यात्व १, असंयम १, ए नव विना ), पारिणामिकना २. सर्व मली ३०–२९–२९–२८.

८ आठमे गुणस्थाने.

मूलभाव ५–४–४.

उत्तरभाव २७—उपशम सम्यक्त्व १, क्षायिक सम्यक्त्व १, क्षायोपशमिकना १३ ( अज्ञान ३, क्षायोपशम सम्यक्त्व १, देशविरति १, ए पांच विना ), औदयिकना १० ( गति ३, लेश्या ५, मिथ्यात्व १, अज्ञान १, असंयम १, ए अगीयार विना ), पारिणामिकना २. सर्व मली २७–२६–२६.

९ नवमे गुणस्थाने.

मूलभाव ५–४[१].

उत्तरभाव २८—उपशमना २, क्षायिकनो १, क्षायोपशमिकना १३ ( अज्ञान ३, क्षायोपशमसम्यक्त्व १, देशविरति १, ए पांच विना ), औदयिकना १० ( मनुष्यगति १, शुक्ललेश्या १, असिद्ध १, कषाय ४, वेद ३, ए १० छे. बाकीना ११ नथी ), पारिणामिकना २. सर्व मली २८–२७.

१० दशमे गुणस्थाने.

मूलभाव ५–४.

उत्तरभाव २२—उपशमना २, क्षायिकनो १, क्षायोपशमिकना १३ ( नवमे गुणस्थाने कह्या ते ), औदयिकना ४ ( लोभ १, मनुष्यगति १, असिद्ध १, शुक्ललेश्या १ ), पारिणामिकना २. सर्व मली २२–२१.

---

१ जो क्षायिक समकिती उपशम श्रेणि पडिवजे तो तेने पांच भाव ज होय तेथी अहीं चार भावनो बीजो प्रकार लाभे नहीं.

११ अगीयारमे गुणस्थाने.

मूळभाव ५-४

उत्तरभाव २०—उपशमना २, क्षायिकनो १, क्षायोपशमिकना १२ ( ज्ञान ४, दर्शन ३, लब्धि ५ ), औदयिकना ३ ( मनुष्यगति १, शुक्लेश्या १, असिद्ध १ ) पारिणामिकना २. सर्व मळी २०-१९. (क्षायिकनी भजना).

१२ बारमे गुणस्थाने

मूळभाव ४

उत्तरभाव १९—क्षायिकना २, औदयिकना ३ ( मनुष्यगति १, असिद्ध १, शुक्लेश्या १ ) क्षायोपशमिकना १२ ( ज्ञान ४, दर्शन ३, लब्धि ५), पारिणामिकना २ सर्व मळी १९

१३ तेरमे गुणस्थाने

मूळभाव ३.

उत्तरभाव १३—क्षायिकना ९, औदयिकना ३ ( मनुष्यगति १, शुक्लेश्या १, असिद्ध १ ), पारिणामिकनो १ ( जीवत्व ) सर्व मळी १३

आ गुणस्थानके आव्या पछी भव्यत्वने लेखामा गण्युं नथी.

१४ चौदमे गुणस्थाने.

मूळभाव ३.

उत्तरभाव १२—क्षायिकना ९, औदयिकना २ ( मनुष्यगति १, असिद्ध १ ) पारिणामिकनो १ ( जीवत्व ) सर्व मळी १२

॥ इति चौद गुणस्थानके मूळभाव तथा उत्तरभावनुं विवरण ॥

---

## शतकादि कर्मग्रंथगत विचार.

### १ पुण्यप्रकृति ४२.

| | | |
|---|---|---|
| १ सात वेदनी | १० आहारक शरीर | १९ शुभ गंध |
| २ उच्च गोत्र | ११ तैजस शरीर | २० शुभ रस |
| ३ मनुष्य गति | १२ कार्मण शरीर | २१ शुभ स्पर्श |
| ४ मनुष्यानुपूर्वी | १३ औदारिकांगोपांग | २२ अगुरुलघु नामकर्म |
| ५ देवगति | १४ वैक्रियांगोपांग | २३ पराघात नामकर्म |
| ६ देवानुपूर्वी | १५ आहारकांगोपांग | २४ उच्छ्वास नामकर्म |
| ७ पंचेंद्रिय जाति | १६ वज्रऋषभनाराच संघयण | २५ आतप नामकर्म |
| ८ औदारिक शरीर | १७ समचतुरस्र संस्थान | २६ उद्योत नामकर्म |
| ९ वैक्रिय शरीर | १८ शुभ वर्ण | २७ शुभ विहायोगति |

२८ निर्माण नामकर्म
२९ त्रस नामकर्म
३० वादर नामकर्म
३१ पर्याप्त नामकर्म
३२ प्रत्येक नामकर्म
३३ स्थिर नामकर्म
३४ शुभ नामकर्म
३५ सौभाग्य नामकर्म
३६ सुस्वर नामकर्म
३७ आदेय नामकर्म
३८ यशःकीर्ति नामकर्म
३९ देवायु
४० मनुष्यायु
४१ तिर्यगायु
४२ तीर्थंकर नामकर्म

---

## पाप प्रकृति ८२.

१ मति ज्ञानावरणी
२ श्रुत ज्ञानावरणी
३ अवधि ज्ञानावरणी
४ मनःपर्यव ज्ञानावरणी
५ केवल ज्ञानावरणी
६ दानांतराय
७ लाभांतराय
८ भोगांतराय
९ उपभोगांतराय
१० वीर्यांतराय
११ चक्षु दर्शनावरणी
१२ अचक्षु दर्शनावरणी
१३ अवधि दर्शनावरणी
१४ केवल दर्शनावरणी
१५ निद्रा
१६ निद्रानिद्रा
१७ प्रचला
१८ प्रचलाप्रचला
१९ स्त्यानर्द्धि निद्रा
२० नीच गोत्र
२१ असाता वेदनी
२२ मिथ्यात्व मोहनी
२३ स्थावर नामकर्म
२४ सूक्ष्म नामकर्म
२५ अपर्याप्त नामकर्म
२६ साधारण नामकर्म
२७ अस्थिर नामकर्म
२८ अशुभ नामकर्म
२९ दुर्भग नामकर्म
३० दुःस्वर नामकर्म
३१ अनादेय नामकर्म
३२ अयश नामकर्म
३३ नरकगति
३४ नरकानुपूर्वी
३५ नरकायु
३६–३९ अनंतानुवंधी ४
४०–४३ अप्रत्याख्यानी ४
४४–४७ प्रत्याख्यानी ४
४८–५१ संज्वलन ४
५२ हास्य
५३ रति
५४ अरति
५५ भय
५६ शोक
५७ दुगंछा
५८ पुरुष वेद
५९ स्त्री वेद
६० नपुंसक वेद
६१ तिर्यंच गति
६२ तिर्यंचानुपूर्वी
६३ एकेंद्रिय जाति
६४ द्वींद्रिय जाति
६५ त्रींद्रिय जाति
६६ चतुरिंद्रिय जाति
६७–७० अशुभ वर्णादि ४
७१ अशुभ विहायोगति
७२ उपघात
७३–७७ संघयण ५
७८–८२ संस्थान ५

---

## आश्रव ४२.

१–५ इंद्रिय ५
६–९ कषाय ४
१०–१४ अव्रत ५
१५–१७ जोग ३
१८ कायिकी क्रिया
१९ अधिकरणिकी क्रिया
२० प्राद्वेषिकी क्रीया
२१ पारितापनिकी क्रिया
२२ प्राणातिपातिकी क्रिया
२३ आरंभिकी क्रिया

२४ पारिग्रहिकी क्रिया
२५ मायाप्रत्ययिकी क्रिया
२६ मिथ्यादर्शनप्रत्ययिकी क्रिया
२७ अप्रत्याख्यानिकी क्रिया
२८ दृष्टिकी क्रिया
२९ स्पृष्टिकी क्रिया
३० प्रातीत्यकी क्रिया
३१ सामंतोपनिपातिकी क्रिया
३२ नैशस्त्रीकी क्रिया
३३ स्वहस्तिकी क्रिया
३४ आनयनिकी ( आज्ञापनिकी ) क्रिया
३५ विदारणिकी क्रिया
३६ अनाभोगिकी क्रिया
३७ अनवकाक्षप्रत्ययिकी क्रिया
३८ प्रायोगिकी क्रिया
३९ समुदानिकी क्रिया
४० प्रेमिकी क्रिया
४१ द्वेषिकी क्रिया
४२ इर्यापथिकी क्रिया

---

## संवर तत्त्वना ५७ भेद

१–५ समिति ५
६–८ गुप्ति ३
९ क्षुधा परिषह
१० पिपासा परिषह
११ शीत परिषह
१२ उष्ण परिषह
१३ दश परिषह
१४ अचेलक परिषह
१५ अरति परिषह
१६ स्त्री परिषह
१७ चर्या परिषह
१८ निषद्या परिषह
१९ शय्या परिषह
२० आक्रोश परिषह
२१ वध परिषह
२२ याचना परिषह
२३ अलाभ परिषह
२४ रोग परिषह
२५ तृणस्पर्श परिषह
२६ मल परिषह
२७ सत्कार परिषह
२८ प्रज्ञा परिषह
२९ अज्ञान परिषह
३० सम्यक्त्व परिषह
३१ क्षमा धर्म
३२ मार्दव धर्म
३३ आर्जव धर्म
३४ मुक्ति धर्म
३५ तप धर्म
३६ सयम धर्म
३७ सत्य धर्म
३८ शौच धर्म
३९ अकिंचन्य धर्म
४० ब्रह्मचर्य धर्म
४१ अनित्य भावना
४२ अशरण भावना
४३ ससार भावना
४४ एकत्व भावना
४५ अन्यत्व भावना
४६ अशुचित्व भावना
४७ आश्रव भावना
४८ संवर भावना
४९ निर्जरा भावना
५० लोकस्वभाव भावना
५१ बोधिबीज भावना
५२ धर्म भावना
५३ सामायिक चारित्र
५४ छेदोपस्थानीय चारित्र
५५ परिहारविशुद्धि चारित्र
५६ सूक्ष्मसंपराय चारित्र
५७ यथाख्यात चारित्र

---

## ध्रुव बंधी ४७.

१–४ वर्ण चतुष्क ४
५–६ तेजस नाम कार्मण नाम
७ अगुरुलघु नाम
८ निर्माण नाम
९ उपघात नाम
१० भय मोहनी
११ कुत्सा मोहनी
१२ मिथ्यात्व मोहनी
१३–२८ कषाय १६
२९–३३ ज्ञानावरणीय ५
३४–४२ दर्शनावरणीय ९
४३–४७ अंतराय ५

---

## अध्रुव बंधी ७३.

१–३ शरीर ३
४–६ उपांग ३
७–१२ संघयण ६
१३–१८ संस्थान ६
१९–२३ जाति ५
२४–२७ गति ४
२८–२९ विहायोगति २
३०–३३ आनुपूर्वी ४
३४ जिन नाम
३५ उच्छ्वास नाम
३६ उद्योत नाम
३७ आतप नाम
३८ पराघात नाम
३९–४८ त्रस दशक १०
४९–५८ स्थावर दशक १०
५९–६० गोत्र २
६१–६२ वेदनी २
६३–६६ हास्यादि युगल २नी (४)
६७–६९ वेद ३
७०–७३ आयु ४

---

## ध्रुवोदयी २७.

१ निर्माण नामकर्म
२ स्थिर नामकर्म
३ अस्थिर नामकर्म
४ अगुरुलघु नामकर्म
५ शुभ नामकर्म
६ अशुभ नामकर्म
७–८ तैजस कार्मण नामकर्म
९–१२ वर्णादिक ४
१३–१७ ज्ञानावरणीय ५
१८–२२ अंतराय ५
२३–२६ दर्शनावरणीय ४
२७ मिथ्यात्व मोहनी

---

## अध्रुवोदयी ९५.

१–३ शरीर ३
५–६ उपांग ३
७–१२ संस्थान ६
१३–१८ संघयण ६
१९–२३ जाति ५
२४–२७ गति ४
२८–२९ विहायोगति द्विक
३०–३३ अनुपूर्वी ४
३४ जिन नाम
३५ उच्छ्वास नाम
३६ उद्योत नाम
३७ आतप नाम
३८ पराघात नाम
३९–४२ त्रसचतुष्क ४
४३–४६ सुभग चतुष्क ४
४७–५० स्थावर चतुष्क ४
५१–५४ दुर्भग चतुष्क ४
५५–५६ गोत्रद्विक
५७–५८ वेदनीय द्विक २
५९–६० हास्य रति २
६१–६२ शोक अरति २
६३–६५ वेद ३
६६–६९ आयु ४
७०–८५ १६ कष्याय १६
८६–८७ भय तथा कुत्सा
८८–९२ निद्रा ५
९३ उपघात नाम
९४ मिश्र मोहनी
९५ समकित मोहनी

---

## ध्रुव सत्ता १३०.

१–१० त्रस १०
११–२० स्थावर १०
२१–२५ वर्ण ५
२६–२७ गंध २
२८–३२ रस ५
३३–४० स्पर्श ८
४१ तैजस शरीर नाम
४२ कार्मण शरीर नाम
४३ तैजस संघात नाम
४४ कार्मण संघात नाम
४५ तैजस तैजस बंधन
४६ कार्मण कार्मण बंधन
४७ तैजस कार्मण बंधन
४८–६३ कषाय १६
६४ भय
६५ कुत्सा
६६ मिथ्यात्व मोहनी
६७–७१ ज्ञानावरणीय ५

७२–८० दर्शनावरणीय ९
८१–८५ अतराय ५
८६ निर्माण नाम
८७ उपघात नाम
८८ अगुरूलघु नाम
८९–९१ वेद ३
९२–९७ सघयण ६
९८–१०३ संस्थान ६
१०४–१०८ जाति ५
१०९–११० वेदनी २
१११–११४ वे युगलनी ४
११५ औदारिक शरीर
११६ औदारिक अगोपाग
११७ औदारिक सघातन
११८ औदारिक औदारिक वधन
११९ औदारिक तैजस वधन
१२० औदारिक कार्मण वधन
१२१ औदारिक तैजस कार्मण वधन
१२२ उच्छ्वास नाम
१२३ उद्योत नाम
१२४ आतप नाम
१२५ पराघात नाम
१२६–१२७ विहायोगति-द्विकनी २
१२८–१२९ तिर्यंचद्विक
१३० नीच गोत्र

---

## अध्रुव सत्ता २८.

१ सम्यकत्व मोहनी
२ मिश्र मोहनी
३–४ मनुष्य द्विक
५ वैक्रिय शरीर
६ वैक्रिय अगोपाग
७ वैक्रिय संघातन
८ वैक्रिय वैक्रिय वंधन
९ वैक्रिय तैजस वंधन
१० वैक्रिय कार्मण वधन
११ वैक्रिय तैजस कार्मण वधन
१२ देवगति
१३ देवानुपूर्वी
१४ नरकगति
१५ नरकानुपूर्वी
१६ जिननाम
१७–२० आयु ४
२१ आहारक शरीर
२२ आहारक अगोपाग
२३ आहारक संघातन
२४ आहारक आहारक वंधन
२५ आहारक तैजस वधन
२६ आहारक कार्मण वंधन
२७ आहारककार्मणतैजसवंधन
२८ उच्च गोत्र

---

## सर्व घाती २०.

१ केवळ ज्ञानावरणीय
२ केवळ दर्शनावरणीय
३–७ निद्रा ५
८–१९ प्रथम कषाय १२
२० मिथ्यात्व

---

## देश घाती २५.

१–४ ज्ञानावरणीय ४
५–७ दर्शनावरणीय ३
९–११ सज्वलन कषाय ४
१२–२० नो कषाय ९
२१–२५ अतराय ५

---

## अघाती ७५

१–८ प्रत्येक प्रकृति ८
९–१३ शरीर ५
१४–१६ अगोपाग ३
१७–२२ सघयण ६
२३–२८ सस्थान ६
२९–३३ जाति ५
३४–३७ गति ४
३८–३९ विहायोगति २
४०–४३ अनुपूर्वी ४
४४–४७ आयु ४
४८–५७ त्रस दशक
५८–६७ स्थावर दशक
६८–६९ गोत्र २
७०–७१ वेदनी २
७२–७५ वर्णादि ४

---

## परावर्तमान ९१.

| | | |
|---|---|---|
| १–३ वेद ३ | ३०–३४ निद्रा ५ | ६५–७० संस्थान ६ |
| ४–७ बे युगलनी ४ | ३५–४४ त्रस १० | ७१–७६ संघयण ६ |
| ८–२३ कषाय १६ | ४५–५४ स्थावर १० | ७७–८१ जाति ५ |
| २४–२५ उद्योत, आतप | ५५–५८ आयु ४ | ८२–८५ गति ४ |
| २६–२७ गोत्रकर्मनी २ | ५९–६१ शरीर ३ | ८६–८७ विहायोगति २ |
| २८–२९ वेदनी २ | ६२–६४ अंगोपांग ३ | ८८–९१ आनुपूर्वी ४ |

## अपरावर्तमान २९.

| | | |
|---|---|---|
| १–४ वर्णादि ४ | ९ अगुरूलघु नाम | २५ भय मोहनी |
| ५ तैजस शरीर | १०–१४ ज्ञानावरणीय ५ | २६ कुत्सा मोहनी |
| ६ कार्मण शरीर | १५–१८ दर्शनावरणीय ४ | २७ मिथ्यात्व मोहनी |
| ७ निर्माण नाम | १९–२३ अंतराय ५ | २८ उच्छ्वास नाम |
| ८ उपघात नाम | २४ पराघात नाम | २९ तीर्थंकर नाम |

## क्षेत्र विपाकी ४.

४ चार अनुपूर्वी नो उदय.

## भव विपाकी ४.

४ आयु ४ नो उदय.

## जीव विपाकी ७८ उदय.

| | | |
|---|---|---|
| १–५ ज्ञानावरणीय ५ | ५०–५१ वेदनी २ | ६३–६६ दुर्भग चतुष्कनी ४ |
| ६–१४ दर्शनावरणीय ९ | ५२ तीर्थंकर नाम | ६७–७१ जाति ५ |
| १५–४२ मोहनी २८ | ५३–५५ त्रस-बादर-पर्याप्त ३ | ७२–७५ गति ४ |
| ४३–४७ अंतराय ५ | ५६–५८ स्थावर-सूक्ष्म-अपर्याप्त ३ | ७६–७७ विहायोगति २ |
| ४८–४९ गोत्र २ | ५९–६२ सुभग चतुष्कनी ४ | ७८ श्वासोच्छ्वास |

## पुद्गल विपाकी ३६ उदय.

| | | |
|---|---|---|
| १–४ वर्णादि ४ | १०–११ तैजस कार्मण | ३१ उपघात नाम |
| ५ निर्माण नाम | १२ अगुरूलघु नाम | ३२ साधारण नाम |
| ६ स्थिर नाम | १३–१५ शरीर ३ | ३३ प्रत्येक नाम |
| ७ अस्थिर नाम | १६–१८ अंगोपांग ३ | ३४ उद्योत नाम |
| ८ शुभ नाम | १९–२४ संघयण ६ | ३५ आतप नाम |
| ९ अशुभ नाम | २५–३० संस्थान ६ | ३६ पराघात नाम |

## बंध हेतु ५७.

| (मिथ्यात्व ५) | (अविरति १२) | २९ प्रत्याख्यानी ४ |
|---|---|---|
| १ आभिग्रहिक मिथ्यात्व | १० इंद्रियनी अविरति ५ | ३३ संज्वलनी ४ |
| २ अनभिग्रहिक मिथ्यात्व | १६ कायनी अविरति ६ | ४२ नोकषाय ९ |
| ३ आभिनिवेशिक मिथ्यात्व | १७ मननी अविरति १ | (योग १५) |
| ४ सांशयिक मिथ्यात्व | (कषाय २५) | ४६ मनना योग ४ |
| ५ अनाभोग मिथ्यात्व | २१ अनंतानुबंधी ४ | ५० वचनना योग ४ |
| | २५ अप्रत्याख्यानी ४ | ५७ कायना योग ७ |

---

## सर्व घाती बंध प्रकृति २० नुं विवरण.

२५ नरकगतिनी मार्गणाथी मांडीने पचीशमी लोभ मार्गणा सुधी २० नो बंध जाणवो.
२८ मति, श्रुत अने अवधि ए त्रण ज्ञाननी मार्गणाए स्त्यानर्द्धित्रिक ३, प्रथमना कषाय ४. मिथ्यात्व मोहनी १, ए ८ विना १२ नो बंध जाणवो
२९ मन.पर्यव ज्ञाननी मार्गणाए आदिना कषाय १२, मिथ्यात्व १, स्त्यानर्द्धित्रिक ३, ए १६ विना ४ नो बंध
३० केवळ ज्ञाननी मार्गणाए बंध नथी.
३३ मति, श्रुत अने विभंग ए त्रण अज्ञाननी मार्गणाए बंध २० नो जाणवो
३६ सामायिक, छेदोपस्थापनीय अने परिहारविशुद्धिनी मार्गणाए मन.पर्यव ज्ञाननी पेठे १६ विना ४ नो बंध
३७ सूक्ष्मसंपराय मार्गणाए केवळ ज्ञान १, केवळ दर्शन १, ए २ नो बंध
३८ यथाख्यात मार्गणाए बंध नथी
३९ देशविरतिनी मार्गणाए पहेला तथा बीजा कषाय ८, स्त्यानर्द्धि त्रिक ३, मिथ्यात्व १, ए १२ विना ८ नो बंध
४२ अविरति, चक्षु अने अचक्षुदर्शननी मार्गणाए २० नो बंध
४३ अवधि दर्शन मार्गणाए अवधि ज्ञाननी पेठे १२
४४ केवळ दर्शननी मार्गणाए ०.
५२ कृष्ण, नील, कापोत, तेजो, पद्म अने शुक्ल ए छ लेश्या तथा भवी अने अभवी ए ८ मार्गणाए २० नो बंध
५८ उपशम, क्षायक, क्षायोपशमिक अने मिश्रनी मार्गणाए मतिज्ञाननी पेठे ८ विना १२.
५७ सास्वादन मार्गणाए मिथ्यात्व विना १९ नो बंध
६२ मिथ्यात्व, सन्ज्ञी, असन्ज्ञी, आहारी अने अनाहारी मार्गणाए २० नो बंध.

---

## देश घाती प्रकृति बंध २५ नुं विवरण.

२५ नरक गतिनी मार्गणाथी मांडीने पचीशमी लोभ मार्गणा सुधी २५ नो बंध होय.

२९ मति ज्ञान, श्रुत ज्ञान, अवधि ज्ञान अने मनःपर्यव ज्ञाननी मार्गणाए स्त्रीवेद १, नपुंसक वेद १, ए २ विना २३.

३० केवळ ज्ञाननी मार्गणाए बंध ०.

३३ मति, श्रुत अने विभंग अज्ञाननी मार्गणाए २५.

३६ सामायिक, छेदोपस्थापनीय अने परिहारविशुद्धिनी मार्गणाए स्त्रीवेद १, नपुंसकवेद १, ए २ विना २३.

३७ सूक्ष्मसंपराय मार्गणाए संज्वलन कषाय ४, नोकषाय ९, ए १३ विना १२.

३८ यथाख्यात चारित्र मार्गणाए ०.

३९ देशविरति मार्गणाए स्त्रीवेद १, नपुंसक वेद १, ए २ विना २३.

४२ अविरति, चक्षु दर्शन अने अचक्षु दर्शननी मार्गणाए २५.

४३ अवधि दर्शननी मार्गणाए अवधिज्ञाननी पेठे २३.

४४ केवळ दर्शननी मार्गणाए ०.

५२ कृष्ण, नील, कापोत, तेजो, पद्म, शुक्ल ए ६ लेश्या तथा भव्य अने अभव्य ए ८ मार्गणाए २५.

५६ उपशम, क्षायक, क्षायोपशमिक समकित अने मिश्रनी मार्गणाए स्त्रीवेद १, नपुंसक वेद १, ए बे विना २३.

५७ सास्वादन मार्गणाए नपुंसक वेद विना २४.

६२ मिथ्यात्व, संज्ञी, असंज्ञी, आहारी, अनाहारी मार्गणाए २५.

---

## अघाती बंध ७५ नुं विवरण.

१ नरक गतिनी मार्गणाए देव त्रिक ३, नरक त्रिक ३, वैक्रिय द्विक २, सूक्ष्म त्रिक ३, जाति ४, स्थावर १, आतप १, आहारक द्विक २, ए १९ विना ५६ नो, बंध होय.

२ देव गतिनी मार्गणाए देवत्रिक ३, नरकत्रिक ३, वैक्रिय द्विक २, आहारक द्विक २, सूक्ष्म त्रिक ३, विकल त्रिक ३, ए १६ विना ५९.

३ मनुष्य गतिनी मार्गणाए ७५.

४ तिर्यंच गतिनी मार्गणाए जिननाम १, आहारक द्विक २, ए ३ विना ७२.

८ एकेंद्रिय, द्वींद्रिय, त्रिंद्रीय अने चतुरिंद्रियनी मार्गणाए देवत्रिक ३, नरकत्रिक ३, वैक्रिय द्विक २, आहारक द्विक २, जिननाम १, ए ११ विना ६४.

९ पंचेद्रियनी मार्गणाए ७५.

११ पृथ्वीकाय अने अप्कायनी मार्गणाए एकेंद्रियादिकनी पेठे ११ विना ६४.

१३ तेजस्काय अने वायुकायनी मार्गणाए एकेंद्रियनी मार्गणानी ११, मनुष्यत्रिक ३, उच्च गोत्र १, ए १५ विना ६०.

१४ वनस्पति कायनी मार्गणाए पूर्वोक्त ११ विना ६४

२५ त्रसकाय, मन, वचन, काया, पुरुष वेद, स्त्री वेद, नपुसक वेद, क्रोध, मान, माया अने लोभनी मार्गणाए ७५

२८ मतिज्ञान, श्रुतज्ञान अने अवधि ज्ञानना मार्गणाए नीच गोत्र १, तिर्यंच त्रिक ३, नरकत्रिक ३, जाति ४, स्थावर ४, पहेला विना सघयण ५, पहेला विना संस्थान ५, आतप १, उद्योत १, अशुभ विहायोगति १, दुर्भग त्रिक ३, ए ३१ विना ४४.

२९ मन.पर्यव ज्ञाननी मार्गणाए मतिज्ञाननी मार्गणाना ३१, वज्रर्षभनाराच सघयण १, मनुष्य त्रिक ३, औदारिक द्विक २, ए ३७ विना ३८

३० केवळ ज्ञाननी मार्गणाए १ साता वेदनी

३३ मति अज्ञान, श्रुत अज्ञान अने विभग ज्ञाननी मार्गणाए जिन नाम १, आहारक द्विक २, ए ३ विना ७२

३६ सामायिक, छेदोपस्थापनीय अने परिहारविशुद्धिनी मार्गणाए मन.पर्यव ज्ञाननी पेठे ३७ विना ३८

३७ सूक्ष्मसंपराय मार्गणाए जिननाम १, उच्च गोत्र १, सातावेदनी १, ए ३ प्रकृति ज बांधे

३८ यथाख्यात चारित्रनी मार्गणाए १ सातावेदनी ज बाधे

३९ देशविरति मार्गणाए मन.पर्यव ज्ञाननी ३७, आहारक द्विक २, ए ३९ विना ३६

४० अविरति मार्गणाए आहारक द्विक विना ७३

४२ चक्षुदर्शन तथा अचक्षुदर्शनना मार्गणाए ७५

४३ अवधिदर्शनना मार्गणाए अवधिज्ञाननी पेठे ४४

४४ केवळदर्शनना मार्गणाए १ सातावेदनी

४७ कृष्ण, नील, कापोत, ए ३ लेश्यानी मार्गणाए आहारक द्विक विना ७३

४८ तेजो लेश्यानी मार्गणाए नरक त्रिक ३, सूक्ष्मत्रिक ३, विकलेंद्रिय ३, ए ९ विना ६६

४९ पद्म लेश्यानी मार्गणाए तेजो लेश्यानी ९, एकेंद्रिय १, आतप १, स्थावर १, ए १२ विना ६३

५० शुक्ल लेश्यानी मार्गणाए पूर्वोक्त १२, तिर्यंचत्रिक ३, उद्योत १, ए १६ विना ५९.

५१ भव्यनी मार्गणाए ७५

५२ अभव्यनी मार्गणाए आहारकद्विक २, जिननाम १, ए ३ विना ७२

५४ क्षायिक अने क्षायोपशमिक मार्गणाए मतिज्ञानप्रमाणे ३१ विना ४४.

५५ उपशम समकित मार्गणाए मतिज्ञानप्रमाणे ३१ तथा आहारक द्विक ए ३३ विना ४२

५६ मिश्र मार्गणाए मतिज्ञाननी मार्गणानी ३१, मनुजायु १, देवायु १, जिननाम १, आहारकद्विक २, ए ३६ विना ३९.

५७ सासादन मार्गणाए नरकत्रिक ३, जाति ४, स्थावर ४, हुडक सस्थान १, छेवट्ठु सघयण १, आतप १, आहारकद्विक २, जिननाम १, ए १७ विना ५८.

५८ मिथ्यात्व मार्गणाए जिननाम १, आहारकद्विक २, ए ३ विना ७२.

५९ संज्ञी मार्गणाए ७५.

६० असंज्ञी मार्गणाए आहारकद्विक २, जिननाम १, ए ३ विना ७२.

६१ आहारकनी मार्गणाए ७५.

६२ अनाहारकनी मार्गणाए आयु ४, आहारकद्विक २, नरकद्विक २, ए ८ विना ६७.

---

## क्षेत्रविपाकी ४ अनुपूर्वीनो उदय.

१ नरक गतिनी मार्गणाए नरकनी अनुपूर्वी १.

२ देव गतिए देवतानी अनुपूर्वी १.

३ मनुष्य गतिए मनुष्यनी अनुपूर्वी १.

४ तिर्यंच गतिए तिर्यंचनी अनुपूर्वी १.

८ एकेंद्रिय, द्वींद्रिय, त्रींद्रिय अने चतुरिंद्रियने तिर्यंचनी अनुपूर्वी १.

९ पंचेंद्रियने चारे गतिनी अनुपूर्वी ४.

१४ पृथ्वी, अप्, तेजो, वायु अने वनस्पतिने तिर्यंचनी अनुपूर्वी १.

१६ त्रसकाय तथा काययोगने चारे गतिनी अनुपूर्वी ४.

१८ पुरुषवेद अने स्त्रीवेदने नरकनी अनुपूर्वी विना ३.

१९ नपुंसकवेदने देवतानी अनुपूर्वी विना ३.

२५ क्रोध, मान, माया, लोभ, मतिज्ञान तथा श्रुतज्ञानने चारे गतिनी अनुपूर्वी ४.

२६ अवधिज्ञानने पण चारे गतिनी अनुपूर्वी ४. परंतु तिर्यंचनी न होय तो ३.

२८ मतिअज्ञान तथा श्रुतअज्ञानने चारे गतिनी अनुपूर्वी ४.

२९ विभंग ज्ञानने पण ४. विशेष एटलो के मनुष्य अने तिर्यंचनी अनुपूर्वी न होय तो २.

३० अविरतिने पण ४.

३१ अचक्षु दर्शनने ४.

३२ अवधि दर्शनने ३ अथवा ४.

३५ कृष्ण, नील अने कापोत लेश्यावंतने ४.

३८ तेजो, पद्म अने शुक्ल लेश्यावंतने नरकनी अनुपूर्वी विना ३.

४० भव्य तथा अभव्यने ४.

४१ उपशम समकितने उपशम श्रेणीना मरीने देवगतिमां जाय त्यारे १ देवगतिनी अनुपूर्वी होय अथवा न होय.

४३ क्षायिक अने क्षयोपशमने ४.

४४ सास्वादनने नरकनी अनुपूर्वी विना ३.

४६ मिथ्यात्वीने तथा संज्ञीने ४.

४७ असंज्ञीने देव अने नारकीनी बे अनुपूर्वी विना २.

४८ अनाहारीने ४.

६२ मनयोग, वचनयोग, मन पर्यवज्ञान, केवळज्ञान, सामायिक, छेदोपस्थापनीय, परिहारविशुद्धि, सूक्ष्मसपराय, यथाख्यात, देशविरति, चक्षुदर्शन, केवळदर्शन, मिश्र, अने आहारी आ २४ मार्गणाए अनुपूर्वी न होय

---

## भवविपाकी आयुष्य ४ नो उदय.

४ चारे गतिमा पोत पोतानु आयु होय
८ एकेंद्रिय, द्वींद्रिय, त्रींद्रिय अने चतुरिंद्रियने १ तिर्यंचनुं आयु
९ पचेंद्रियने चारे गतिनुं आयु ४
१४ पृथ्वी, अप्, तेज, वायु अने वनस्पतिने तिर्यंचायु १
१८ त्रसकाय, मनयोग, वचनयोग अने काययोगने आयु ४
२० पुरुषवेद अने स्त्रीवेदने नरकायु विना ३
२१ नपुसकवेदने देवायु विना ३
२८ क्रोध, मान, माया, लोभ, मतिज्ञान, श्रुतज्ञान, अवधिज्ञानने ४
३० मन पर्यव अने केवळज्ञानने मनुजायु १
३३ मतिअज्ञान, श्रुतअज्ञान अने विभगज्ञानने आयु ४
३८ सामायिक, छेदोपस्थापनीय, परिहारविशुद्धि, सूक्ष्मसंपराय अने यथाख्यातने मनुजायु १
३९ देशविरतिने मनुष्य तथा तिर्यंचनुं आयु २
४३ अविरति, चक्षुदर्शन, अचक्षुदर्शन अने अवधिदर्शनने आयु ४
४४ केवळदर्शनने मनुष्यायु १
४७ कृष्ण, नील अने कापोत लेश्यावतने आयु ४
५० तेजो, पद्म अने शुक्ल लेश्यावतने नरकायु विना ३
५९ भव्य, अभव्य, छए समकित, तथा सज्ञीने आयु ४
६० असज्ञीने मनुष्य तथा तिर्यंचनु आयु २
६२ आहारी तथा अनाहारीने चारे गतिनु आयु ४

---

## जीवविपाकी ७८ नो उदय.

१ नरकगति—उच्चगोत्र १, स्त्रीवेद १, पुरुषवेद १, गति ३, जाति ४, जिननाम १, सुभग चतुष्क ४, स्थावर ३, शुभ विहायो गति १, ए १९ विना ५९ अने जो स्त्यानर्द्धिनु त्रिक ३ काढीए तो ५६

२ देवगति—नीच गोत्र १, नपुमकवेद १, जाति ४, गति ३, अशुभ विहायोगति १, जिननाम १, स्थावर त्रिक ३, दु.स्वर १, ए १५ विना ६३ अथवा स्त्यानर्द्धि त्रिक काढीए त्यारे ६०

५९ संज्ञी—स्थावर १, सूक्ष्म १, जाति ४, ए ६ विना ७२.

६० असंज्ञी—जिन नाम १, समकितमोहनी १, मिश्र १, सुभग १, आदेय १, शुभ-विहायोगति, १ उच्चगोत्र १, स्त्रीवेद १, पुरुषवेद १, देवगति १, नरक-गति १, ए ११ विना ६७.

६१ आहारी—७८.

६२ अनाहारी—विहायोगति २, उच्छ्वास १, सुस्वर १, दुःस्वर १, मिश्रमोहनी १, ए ६ विना ७२.

---

## पुद्गल विपाकी ३६. नो उदय.

१ नरकगति—संघयण ६, संस्थान ५, आतप १, औदारिकद्विक २, आहारकद्विक २, साधारण १, उद्योत १, ए १८ विना १८.

२ देवगति—उपर प्रमाणे १८ विना १८.

३ मनुष्यगति—वैक्रियद्विक २, उद्योत १, आतप १, साधारण १, ए ५ विना ३१.

४ तिर्यंचगति—वैक्रियद्विक २, आहारकद्विक २, ए ४ विना ३२.

५ एकेंद्रिय—संघयण ६, संस्थान ५, वैक्रियद्विक २, आहारकद्विक २, औदारिक अंगोपांग १, ए १६ विना २०.

८ द्वींद्रिय, त्रींद्रिय, चतुरिंद्रिय—संघयण ५, संस्थान ५, वैक्रियद्विक २, आहारक-द्विक २, आतप १, साधारण १, ए १६ विना २०.

९ पंचेंद्रिय—साधारण १, आतप १, ए बे विना ३४.

१० पृथ्वीकाय—एकेंद्रियनी १६, साधारण १, ए १७ विना १९.

११ अपूकाय—उपरनी १७, आतप १, ए १८ विना १८.

१३ तेजस्काय, वायुकाय—उपरनी १८, उद्योत १, ए १९ विना १७.

१४ वनस्पतिकाय—पृथ्वीकायनी १७ मांथी साधारण काढी आतप सहित करवाथी १७ विना १९.

१९ त्रसकाय, मनोयोग, वाग्योग, काययोग, पुरुषवेद–साधारण १, आतप १, ए २ विना ३४.

२० स्त्रीवेद—आहारकद्विक २, साधारण १, आतप १, ए ४ विना ३२.

२५ नपुंसकवेद, क्रोध, मान, माया, लोभ–३६.

२८ मतिज्ञान, श्रुतज्ञान, अवधिज्ञान–आतप १, साधारण १, ए २ विना ३४.

२९ मनःपर्यवज्ञान–साधारण १, आतप १, उद्योत १, वैक्रियद्विक २, ए ५ विना ३१.

३० केवळज्ञान—आहारकद्विक २, वैक्रियद्विक २, पहेला संघयण विना संघयण ५, आ-तप १, उद्योत १, साधारण १, ए १२ विना २४.

३२ मतिअज्ञान, श्रुतअज्ञान—आहारकद्विक २ विना ३४.

३३ विभंगज्ञान—आहारकद्विक २, साधारण १, आतप १, ए ४ विना ३२.

३५ सामायिक, छेदोपस्थापनीय—मनःपर्यव प्रमाणे ५ विना ३१

३६ परिहारविशुद्धि—आहारकद्विक २, पहेला विना संघयण ५, साधारण १, आतप १, उद्योत १, वैक्रियद्विक २, ए १२ विना २४

३७ सूक्ष्मसंपराय—आहारकद्विक २, वैक्रियद्विक २, छेल्ला संघयण ३, आतप १, उद्योत १, साधारण १, ए १० विना २६

३८ यथाख्यात—उपर प्रमाणे १० विना २६

३९ देशविरति—आहारकद्विक २, वैक्रियद्विक २, साधारण १, आतप १, ए ६ विना ३०.

४० अविरति—आहारकद्विक २ विना ३४

४१ चक्षुदर्शन—साधारण १, आतप १, ए २ विना ३४

४२ अचक्षुदर्शन—३६

४३ अवधिदर्शन—अवधिज्ञान प्रमाणे २ विना ३४

४४ केवलदर्शन—केवळज्ञान प्रमाणे १२ विना २४.

४७ कृष्ण, नील, कापोत—३६

५० तेजोलेश्या, पद्मलेश्या शुक्ललेश्या—आतप १, साधारण १, ए २ विना ३४.

५१ भव्य—३६

५२ अभव्य—आहारकद्विक विना ३४

५३ उपशम—साधारण १, आतप १, आहारकद्विक २, ए ४ विना ३२

५४ क्षयोपशम—साधारण १, आतप १, ए २ विना ३४

५५ क्षायिक—पहेला विना संघयण ५, आतप १, साधारण १, ए, ७ विना २९

५६ मिश्र—आहारकद्विक २, साधारण १, आतप १, ए ४ विना ३२

५७ सास्वादन—उपर प्रमाणे ३२

५८ मिथ्यात्व—आहारकद्विक २ विना ३४

५९ संज्ञी—साधारण १, आतप १, ए २ विना ३४

६० असंज्ञी—पहेला संघयण ५, पहेला संस्थान ५, आहारकद्विक २, वैक्रियद्विक २, ए १४ विना २२

६१ आहारी—३६

६२ अनाहारी—तैजस १, कार्मण १, वर्णादि ४, अगुरुलघु १, निर्माण १, स्थिर १, अस्थिर १, शुभ १, अशुभ १, ए १२ होय

---

## आश्रव ४२

१० मनुष्यगति, त्रस, मन, वचन, काया, भव्य, सन्नी, आहारी, शुक्ल लेश्या, पचेंद्रिय, ए १० मार्गणाए ४२ आश्रव होय

३३ गति ३, वेद ३, कषाय ४, अज्ञान ३, अविरति १, लेश्या ५, अभव्य १, मिथ्यात्व १, सास्वादन १, मिश्र १, ए २३ मार्गणाए इर्यावहीनी क्रिया विना ४१ होय

३८ पहेलां ज्ञान ३, अवधि दर्शन १, क्षायिक १, ए ५ मार्गणाए मिथ्यात्विकी क्रिया विना ४१.

४० पहेला बे दर्शने ४२ आश्रव होय. मिथ्यात्विकी क्रिया सहित.

४१ क्षयोपशम मार्गणाए इर्यावहीनी क्रिया अने मिथ्यात्विकी क्रिया ए बे क्रिया विना ४० आश्रव होय.

४२ उपशम समकिते इर्यावहिकी क्रिया सुधां ४२ आश्रव होय.

४८ एकेंद्रिय १, स्थावर ५, ए छ मार्गणाए इंद्रिय १, अव्रत ५, कषाय ४, काययोग १, ए ११, तेमां दृष्टिकी १, प्रातीत्यकी १, सामंतोपनिपातिकी १, आज्ञापनिकी १, इर्यापथिकी १, प्रायोगिकी १, ए छ क्रिया विना १९ क्रिया भेळवतां कुल ३० आश्रव होय.

४९ द्वींद्रिय मार्गणाए एकेंद्रियना ३०, वचन योग १, रसनेंद्रिय १, कुल ३२ आश्रव होय.

५० त्रींद्रिय मार्गणाए उपरना ३२ मां घ्राणेंद्रिय भेळवतां ३३ आश्रव होय.

५१ चतुरिंद्रिय मार्गणाए उपरना ३३, चक्षु इंद्रिय १, दृष्टिकी क्रिया १, ए बे सहित करतां ३५ आश्रव होय.

५४ पहेला ३ चारित्रनी मार्गणाए प्राणातिपातिकी १, पारिग्रहिकी १, मिथ्यात्विकी १, अप्रत्याख्यानिकी १, इर्यावहिकी १, ए ५ क्रिया तथा इंद्रिय ५, अव्रत ५, ए १५ विना २७ आश्रव होय.

५५ मनःपर्यवज्ञाने ११ मुं १२ मुं गुणठाणुं पण होवाथी इर्यावहिकी क्रिया सुद्धां २८ आश्रव होय.

५६ सूक्ष्मसंपराय मार्गणाए योग ३, संज्वलन लोभ १, कायिकी क्रिया १, अनाभोगिकी १, प्रेमिकी १, ए ७ आश्रव होय. कोइक नय भेदे अधिकरणिकी १, प्राद्वेषिकी १, ए बे क्रिया सहित होवाथी ९ कहे छे.

५९ यथाख्यात, केवलज्ञान, केवळदर्शन, ए त्रण मार्गणाए योग ३, इर्यापथिकी १, ए ४ आश्रव होय.

६० देशविरति मार्गणाए मिथ्यात्विकी १, इर्यापथिकी १, ए २ विना ४० अथवा अविरति १ सहित करवाथी ३ विना ३९.

६१ असंज्ञी मार्गणाए मनयोग १, इर्यापथिकी १, ए २ विना ४०.

६२ अनाहारी मार्गणाए दृष्टिकी १, प्रातीत्यकी १, सामंतोपनिपातिकी १, नैसृष्टिकी १, स्वहस्तिकी १, आज्ञापनिकी १, विदारणिकी १, मन १, वचन १, ए ९ विना ३३ आश्रव होय.

---

## संवरतत्त्व ५७.

१९ मनुष्यगति १, पंचेंद्रिय १, त्रस १, योग ३, पहेलां ज्ञान ४, पहेलां दर्शन ३, शुक्ल लेश्या १, भव्य १, उपशम १, क्षायिक १, संज्ञी १, आहारी १, ए १९ मार्गणाए ५७ भेद होय.

२० लोभ मार्गणाए यथाख्यात चारित्र विना ५६ भेद होय

३२ वेद ३, कषाय ३, लेश्या ५, क्षायोपशम १, ए १२ मार्गणाए यथाख्यात १, सूक्ष्मसपराय १, ए २ चारित्र विना ५५ भेद होय.

३५ देवता १, नारकी १, तिर्यंच १, ए ३ मार्गणाए १२ भावना होय

५२ इंद्रिय ४, काय ५, अज्ञान ३, अभव्य १, छेल्ला समकित ३, असज्ञी १, ए १७ मार्गणाए सवर नथी

५५ पहेला त्रण चारित्रनी मार्गणाए पोतपोतानुं चारित्र राखीने वाकीना चार चारित्र विना ५३ भेद होय

५७ सूक्ष्मसपराय तथा यथाख्यातनी मार्गणाए ८ परिसह ने ४ चारित्र विना ४५ भेद होय.

५८ देशविरति मार्गणाए १२ भावना

५९ अविरतिए १२ भावना

६१ केवळज्ञान अने केवळदर्शननी मार्गणाए पहेला चारित्र ४, भावना १२, अचेलपरिषह १, अरतिपरिषह १, स्त्रीपरिषह १, सम्यक्त्वपरिषह १, निषद्यापरिषह १, आक्रोशपरिषह १, याचनापरिषह १, अलाभपरिषह १, सत्कारपरिषह १, प्रज्ञापरिषह १, अज्ञानपरिषह १, ए २७ विना बीजा ३० भेद होय. सामायिक चारित्र राखीने त्रण चारित्र काढीए तो ३१ भेद होय

६२ अनाहारी मार्गणाए केवल ज्ञानप्रमाणे ३१ भेद होय.

---

## चार ध्यानना भेद १६.

२ देवता अने नारकी ए वे मार्गणाए आर्तध्यानना ४ भेद, रौद्रध्यानना ४ भेद, ए आठ भेद होय कोइ मतमा ९ भेद पण छे तेमां धर्मध्याननो पहेलो आज्ञाविचय भेद गणवो, तेथी ९ भेद थाय

६ मनुष्य, पचेंद्रिय, त्रस, क्षायिक समकित, ए ४ मार्गणाए आर्तध्यानना ४, रौद्रध्यानना ४, धर्मध्यानना ४, शुक्लध्यानना ४, ए १६ भेद होय

७ तिर्यंचनी मार्गणाए आर्तध्यानना ४, रौद्रध्यानना ४, धर्मध्याननो पहेलो भेद आज्ञाविचय तथा बीजो अपायविचय, ए १० भेद होय, अथवा ८ होय

१७ एकेंद्रिय, द्वींद्रिय, त्रींद्रिय, चतुरिंद्रिय, पृथ्वी, अप्, तेज, वायु, वनस्पति अने असंज्ञी ए १० मार्गणाए ध्यान नथी केमके मनविना ध्यान न होय एम श्रीदेवचदजीए करेला विचारसारमा छे अने कोइना मतमा आर्तध्यानना ४, रौद्रध्यानना ४, ए ८ भेद पण छे

२२ योग ३, आहारी, शुक्लेश्या, ए ५ मार्गणाए आर्तध्यानना ४ रौद्रध्यानना ४, धर्मध्यानना ४, शुक्लध्यानना पृथक्त्व वितर्क सविचार १, एकत्व पृथक्त्व सविचार १, ए १४ भेद होय. अने जो सूक्ष्मक्रिया अनिवृत्ति सहित करीए तो १५ भेद होय

२४ भव्य तथा संज्ञी ए बे मार्गणाए १६ भेद होय, अथवा शुक्लध्यानना छेल्ला बे पाद विना १४ भेद होय.

३२ वेद ३, कषाय ४, उपशम १, ए ८ मार्गणाए शुक्लध्यानना छेल्ला ३ पाद विना १३ भेद होय.

३८ ज्ञान ३, दर्शन ३, ए ६ मार्गणाए शुक्लध्यानना त्रीजा अने चोथा पाद विना १४ भेद.

४५ अभव्य १, अज्ञान ३, मिश्र १, सास्वादन १, मिथ्यात्व १, ए ७ मार्गणाए आर्तध्यानना ४, रौद्रध्यानना ४, ए ८ भेद होय.

४६ मनःपर्यव ज्ञान मार्गणाए धर्मध्यानना ४, शुक्लध्यानना पहेला पाद २, ए छ भेद अथवा आर्तध्यानना त्रीजा भेद (निदानार्तध्यान) विना बीजा ३ भेद सहित करीए तो ९.

४८ केवळज्ञान, केवळदर्शन, ए बे मार्गणाए शुक्लध्याननो त्रीजो तथा चोथो पाद ए २ भेद.

५० सामायिक, छेदोपस्थापनीय, ए बे मार्गणाए आर्तध्यानना निदानार्त पाद विना ३, धर्मध्यानना ४, शुक्लध्याननो पहेलो पाद १, ए ८ भेद होय. अथवा धर्मध्यानना ४, शुक्लध्याननो पहेलो पाद १, ए ५ भेद होय.

५१ परिहारविशुद्धि मार्गणाए आर्तध्यानना निदानार्त पाद विना ३ भेद, अने धर्मध्यानना ४ भेद, ए ७ भेद होय.

५२ सूक्ष्मसंपराय मार्गणाए शुक्लध्याननो पहेलो पाद, ए १ भेद होय.

५३ यथाख्यात मार्गणाए शुक्लध्यानना ४ भेद होय.

५४ देशविरति मार्गणाए आर्तध्यानना ४, रौद्रध्यानना ४, धर्मध्याननो पहेलो तथा बीजो पाद २, ए १० भेद होय. अथवा आर्तध्यानना ४, रौद्रध्यानना ४, ए ८ होय.

५५ अविरति मार्गणाए देवतानी पेठे ८ अथवा ९.

६१ लेश्या ५. क्षयोपशम १, ए ६ मार्गणाए आर्तध्यानना ४, रौद्रध्यानना ४, धर्मध्यानना ४, ए १२ भेद होय.

६२ अनाहारी मार्गणाए शुक्लध्याननो त्रीजो तथा चोथो ए २ भेद होय. अथवा तिर्यंच प्रमाणे १० अथवा ८ भेद होय.

---

## समुद्घात ७.

१० मनुष्यगति १, पंचेंद्रिय जाति १, त्रसकाय १, योग ३, क्षायिक १, आहारी १, शुक्ललेश्या १, भव्य १, आ १० मार्गणाए ७ समुद्घात होय.

३१ पुरुषवेद १, नपुंसकवेद १, कषाय ४, ज्ञान ४, पहेला बे चारित्र २, दर्शन ३, लेश्या ५, क्षयोपशम १, ए २१ मार्गणाए केवळी समुद्घात विना ६ समुद्घात होय.

४२ देवगति १, तिर्यचगति १, स्त्रीवेद १, अज्ञान ३, अविरति १, अभव्य १, मिथ्यात्व १, परिहारविशुद्धि १, देशविरति १, ए ११ मार्गणाए केवळी समुद्घात तथा आहारक समुद्घात ए २ विना ५ समुद्घात होय

४६ असंज्ञी १, नारकी १, एकेंद्रिय १, वायुकाय १, ए ४ मार्गणाए केवळी समुद्घात १, आहारक समुद्घात १, तैजस समुद्घात १, ए ३ वर्जीने ४ समुद्घात होय

४७ यथाख्यात मार्गणाए-वेदना, मरण, केवली, ए त्रण समुद्घात होय

५४ विकलेंद्रिय ३, स्थावर ४, ए ७ मार्गणाए वेदना १, कषाय १, मरण १, ए ३ समुद्घात होय

५६ केवळज्ञान, केवळदर्शन, ए २ मार्गणाए १ केवळी समुद्घात ज होय

५७ सूक्ष्मसपराय मार्गणाए वेदना १, कषाय १, मरण १ ए ३ समुद्घात होय अथवा कषाय विना २ होय

५८ संज्ञी मार्गणाए केवळी विना ६ अथवा ते सहित गणीए तो साते होय

५९ उपशम मार्गणाए वेदना १, कषाय १, मरण १, ए ३ समुद्घात होय

६० मिश्रमार्गणाए मरण विना वेदना १, कषाय १, वे समुद्घात होय

६१ सास्वादन मार्गणाए केवळी १, आहारक १, ए २ समुद्घात वर्जीने ५ होय अथवा वेदना १, कषाय १, मरण १, ए ३ समुद्घात होय

६२ अनाहारी मार्गणाए वेदना १, मरण १, ए २ समुद्घात होय

---

## बंध हेतु ५७.

१ नरकगति—मूल बंध हेतु ४ ( मिथ्यात्व १, अविरति १, कषाय १, योग १, ) उत्तरभेदे मिथ्यात्व ५, अविरति १२, स्त्रीवेद अने पुरुषवेद विना कषाय २३, औदारिक द्विक २ तथा आहारक द्विक ए ४ विना ११ योग कुल बध हेतु ५१

२ देवगति—मूल बध हेतु ४ उत्तरभेदे-मिथ्यात्व ५, अविरति १२, नपुसकवेद विना कषाय २४, औदारिक द्विक अने आहारक द्विक ए चार योग विना ११ योग. ए ५२ बध हेतु

३ तिर्यचगति—मूळ बध हेतु ४ उत्तरभेदे-मिथ्यात्व ५, अविरति १२, कषाय २५, आहारक द्विक विना योग १३, एव ५५

१७ मनुष्य १, पचेंद्रिय १, त्रस १, काययोग १, अचक्षुदर्शन १, लेश्या ६, भव्य १, सज्ञी १, आहारी १, ए १४ मार्गणाए-मूळबध हेतु ४, उत्तर भेद ५७

१८ एकेंद्रिय—मूळ बंध हेतु ४ उत्तरभेदे-अनाभोग मिथ्यात्व १, तथा स्पर्शेन्द्रिय १, १, काय ६, ए ७ अविरति, तथा पुरुषवेद अने स्त्रीवेद विना कषाय २३, औदारिकद्विक २, वैक्रियद्विक २ कार्मण काययोग १, ए ५ योग-एव ३६ बध हेतु

१९ द्वींद्रिय—मूळ बंध हेतु ४. उत्तरभेदे—अनाभोगिक मिथ्यात्व १, तथा इंद्रिय २, काय ६, ए ८ अविरति, बे वेद विना २३ कषाय, औदारिकद्विक २, कार्मण काययोग १, असत्यामृषा वचनयोग १, ए ४ योग, कुल ३६ बंध हेतु.

२० त्रींद्रिय—मूळ बंध हेतु ४. उत्तरभेदे–अनाभोग मिथ्यात्व १, तथा इंद्रिय ३, काय ६, ए ९ अविरति, बे वेद विना कषाय २३, योग द्वींद्रिय प्रमाणे ४, एवं ३७ बंध हेतु.

२१ चतुरिंद्रिय—मूळ बंध हेतु ४. उत्तरभेदे–अनाभोग मिथ्यात्व १, तथा इंद्रिय ४, काय ६, ए १० अविरति, तथा बे वेद विना कषाय २३, योग पूर्ववत् ४, एवं ३८.

२५ पृथ्वी, अप्, तेज, वनस्पति—मूळ बंध हेतु ४. उत्तरभेदे–अनाभोग मिथ्यात्व १, अविरति एकेंद्रिय प्रमाणे ७, बे वेद विना कषाय २३, औदारिक द्विक २, कार्मण काययोग १, ए ३ योग, कुल ३४ बंध हेतु.

२६ वायुकाय—पृथ्वीकाय प्रमाणे. परंतु वैक्रियद्विक सहित करीने योग ५ लेवा कुल ३६ भेद.

२८ मनयोग, वचनयोग—मूळ बंध हेतु ४. उत्तरभेदे—मिथ्यात्व ५, अविरति १२, कषाय २५, औदारिक मिश्र १, कार्मण काययोग १, ए बे विना योग १३, कुल ५५ बंध हेतु.

२९ पुरुषवेद—मूळ बंध हेतु ४. उत्तरभेदे–मिथ्यात्व ५, अविरति १२, बे वेद विना कषाय २३, योग १५, एवं ५५ बंध हेतु.

३० स्त्रीवेद—मूळ भेद ४. उत्तर भेदे–पुरुषवेद प्रमाणे पण आहारक द्विक विना ५३ भेद.

३१ नपुंसकवेद—मूळ भेद ४. उत्तरभेदे–पुरुषवेद प्रमाणे, पण पुरुष अने स्त्री, ए बे वेद विना ५५ बंध हेतु होय.

३२ क्रोध—मूळ भेद ४. उत्तरभेदे–मिथ्यात्व ५, अविरति १२, क्रोध ४ तथा नोकषाय ९ ए १३ कषाय, योग १५, एवं ४५ बंध हेतु.

३३ मान—मूळ भेद ४. उत्तरभेदे क्रोधनी प्रमाणे, पण क्रोधने ठेकाणे मान ४ लेवां.

३५ माया, लोभ—उपर प्रमाणे, पण मानने ठेकाणे माया ४ लेवी. मायाने ठेकाणे लोभ ४ लेवा. ए प्रमाणे कषायनी मार्गणाए ४५ भेद कहेवा.

३८ ज्ञान पहेलां ३—मूळ बंध हेतु ३. उत्तरभेदे–मिथ्यात्व ५ नही, अविरति १२, अनंतानुबंधी कषाय ४ विना कषाय २१, योग १५, एवं ४८ भेद.

३९ मनःपर्यव ज्ञान—मूळ बंध हेतु २. उत्तरभेदे–मिथ्यात्व ५, तथा अविरति १२ नही, संज्वलन कषाय ४, नोकषाय ९. एवं कषाय १३, तथा कार्मण काययोग १, औदारिक मिश्र १, ए बे विना योग १३, कुल २६ भेद.

४० केवळ ज्ञान—मूळ भेद १. उत्तरभेद–मिथ्यात्व ५, अविरति १२, कषाय २५, ए सर्व विना योग मनना २, वचनना २, अने कायाना ३ एवं ७ योग बंध हेतु.

४३ अज्ञान ३—मूळ भेद ४. उत्तरभेद–मिथ्यात्व ५, अविरति १२, कषाय २५, आहारक द्विक विना योग १३, एवं ५५ बंध हेतु.

४५ सामायिक अने छेदोपस्थापनीय—मूळ भेद २ मिथ्यात्व अने अविरति विना उत्तर भेदे–सज्वलन ४, नोकपाय ९, ए १३ कपाय, औदारिक मिश्र १, कार्मण काययोग १, ए २ विना १३ योग, एव २६ वंध हेतु

४६ परिहारविशुद्धि—मूळ भेद २ मिथ्यात्व अने अविरति विना उत्तरभेदे–संज्वलन कपाय ४, स्त्रीवेद विना नोकपाय ८, ए १२ कपाय, मनयोग ४, वचन योग ४, औदारिक काययोग १ ए ९ योग, कुल २१ वध हेतु

४७ सूक्ष्मसंपराय—मूळ भेद २. उत्तरभेदे–संज्वलन लोभ १, योग उपर प्रमाणे ९, एव १० वंध हेतु

४८ यथाख्यात—मूळ भेद १ मिथ्यात्व, अविरति अने कपाय विना उत्तरभेदे–आहारक द्विक २, वैक्रिय द्विक २, ए ४ विना योग ११ वध हेतु

४९ देशविरति—मूळ भेद ३ मिथ्यात्व विना उत्तरभेदे–त्रसनी अविरति विना ११, पहेला अने वीजा कपायनी चोकडी विना कपाय १७, आहारक द्विक २, कार्मण काययोग १, औदारिक मिश्र १, ए ४ विना योग ११, एवं ३९ वंध हेतु

५१ अविरति तथा अभव्य—मूळ वध हेतु ४ उत्तरभेदे–आहारक द्विक २ विना ५५ वध हेतु.

५२ चक्षु दर्शन—मूळ वध हेतु ४ उत्तरभेदे–औदारिक मिश्र १, कार्मण काययोग १, ए २ विना ५५ वंध हेतु

५३ अवधि दर्शन—अवधि ज्ञाननी पेठे वंध हेतु ४८.

५४ केवल दर्शन—केवळ ज्ञाननी पेठे योग ७ वध हेतु

५५ उपशम—मूळ वंध हेतु ३ मिथ्यात्व विना उत्तरभेदे–अविरति १२, पहेला कपायनी चोकडी विना कपाय २१, आहारकद्विक विना योग १३, एव ४६ वध हेतु

५७ क्षयोपशम तथा क्षायिक—मूळ वध हेतु ३ मिथ्यात्व विना उत्तरभेदे–अविरति १२, पहेला कपायनी चोकडी विना कपाय २१, योग १५, एव ४८.

५८ मिश्र—मूळ वध हेतु ३ मिथ्यात्व विना उत्तरभेदे–अविरति १२, कपाय उपर प्रमाणे २१, औदारिक मिश्र १, वैक्रिय मिश्र १, आहारक द्विक २, कार्मण काय-योग १, ए ५ विना योग १०, एव ४३

५९ सास्वादन—मूळ वध हेतु ३ मिथ्यात्व विना उत्तर भेदे–अविरति १२, कपाय २५, आहारक द्विक विना योग १३, एव ५०

६० मिथ्यात्व—मूळ वंध हेतु ४ उत्तर भेदे–आहारक द्विक विना ५५ वंध हेतु

६१ असञ्ज्ञी—मूळ वध हेतु ४ उत्तर भेदे—अनाभोग मिथ्यात्व १, मननी अविरति विना ११, वे वेद विना कपाय २३, औदारिक द्विक २, वैक्रिय द्विक २, कार्मण काययोग १, असत्यामृपा वचनयोग १, ए योग ६, एव ४१ वध हेतु

६२ अनाहारी—मूळ वध हेतु ४ उत्तर भेदे–मिथ्यात्व ५, अथवा अनाभोग मिथ्यात्व १, अविरति १२, अथवा छ कायनी ६, कपाय २५, कार्मण काययोग १, एव ४३, अथवा ३३ वध हेतु होय

## भाव ५३.

१ नारकी—मूळ भाव ५. उत्तरभेद–उपशम भावे उपशम सम्यक्त्व १. क्षायिक भावे क्षायिक समकित १. क्षयोपशम भावे मनःपर्यव ज्ञान १, सर्व विरति १, देश विरति १, ए ३ विना १५ भाव. औदयिक भावे छेल्ली ३ लेश्या, गति ३, वेद २, ए ८ विना १३ भाव. पारिणामिक भावे भव्यत्व १, अभव्यत्व १, जीवत्व १, ए ३ भाव. एवं ३३ भाव होय.

२ देवता—मूळ भाव ५. उत्तर भेद—उपशम भावे उपशम सम्यक्त्व १. क्षायिक भावे क्षायिक सम्यक्त्व १. क्षयोपशम भावे नारकी प्रमाणे १५ भाव. औदयिक भावे गति ३, वेद १, ए ४ विना १७ भाव. पारिणामिकना उपर प्रमाणे ३. एवं ३७ भाव होय.

३ मनुष्य—मूळ भाव ५. उत्तर भेद–उपशम भावे सम्यक्त्व अने चारित्र ए २. क्षायिक भावे सम्यक्त्व अने चारित्र ए २, केवल ज्ञान १, केवल दर्शन १, दानादि लब्धि ५, ए ९. क्षयोपशम भावे ज्ञान ४, अज्ञान ३, दर्शन ३, दानादि लब्धि ५, विरति द्विक २, सम्यक्त्व १, ए १८. औदयिक भावे गति ३ विना १८. पारिणामिक भावे पूर्व प्रमाणे ३. एवं ५० भाव.

४ तिर्यंच—मूळ भाव ५. उत्तर भेद–उपशम भावे सम्यक्त्व १, क्षायिक भावे सम्यक्त्व १. क्षयोपशम भावे मनःपर्यव ज्ञान १, सर्व विरति १, ए २ विना १६. औदयिक भावे गति ३ विना १८. पारिणामिक भावे पूर्ववत् ३. एवं ३९.

८ एकेंद्रिय, पृथ्वी, अप्, वनस्पति,—मूळ भाव ३. उत्तर भेद–उपशम अने क्षायिक भाव न होय. क्षयोपशम भावे दानादि लब्धि ५, उपयोग ३, ए ८. औदयिक भावे गति ३, पद्म लेश्या अने शुक्ल लेश्या ए २, वेद २, ए ७ विना १४. पारिणामिक भावे पूर्ववत् ३. कुल २५ भाव होय.

१२ द्वींद्रिय, त्रींद्रिय, तेज, वायु—मूळ भाव ३. उपशम अने क्षायिक विना. उत्तर भेद–क्षयोपशम भावे एकेंद्रिय प्रमाणे ८. औदयिक भावे गति ३, वेद २, छेल्ली लेश्या ३, ए ८ विना १३. पारिणामिक भावे उपर प्रमाणे ३. कुल २४.

१३ चतुरिंद्रिय—द्वींद्रिय प्रमाणे. पण चक्षु दर्शन सहित २५ भाव कहेवा.

२० पंचेंद्रिय, त्रस, मनोयोग, वचनयोग, काययोग, संज्ञी, आहारी, ए ७ मार्गणाए मूळ भाव ५ अने उत्तर भेद ५३ भाव होय.

२७ वेद ३, क्रोध, मान, माया, लोभ, ए ७ मार्गणाए—मूळ भाव ५, उत्तर भेद–उपशम भावे सम्यक्त्व अने चारित्र ए २. क्षायिक भावे सम्यक्त्व १. क्षयोपशम भावे १८. औदयिक भावे गति १, वेद २, ए ३ विना १८. तेमां कषायनी मार्गणाए क्रोधमां मान, माया अने लोभ विना कहेवुं. मानमां क्रोध, माया अने लोभ विना कहेवुं. तथा लोभमां क्रोध, मान अने माया विना कहेवुं. एम ३ विना १८ भाव होय. पारिणामिक भावे ३. कुल ४२ भाव होय.

३१ मति, श्रुत, अवधि ज्ञान, अवधि दर्शन ए ४ मार्गणाए—मूल भाव ५. उत्तर भेद उपशम भावे सम्यक्त्व अने चारित्र २ क्षायिक भावे सम्यक्त्व अने चारित्र २ क्षयोपशम भावे अज्ञान ३ विना १५ औदयिक भावे अज्ञान १, मिथ्यात्व १, ए २ विना १९ पारिणामिक भावे अभव्य विना २. कुल ४०. भाव होय.

३२ मनःपर्यव ज्ञान—मूल भाव ५ उत्तर भेद-उपशम भावे २ क्षायिक भावे २. क्षयोपशम भावे अज्ञान ३, देशविरति १, ए ४ विना १४ औदयिक भावे गति ३, अज्ञान १, असंयम १, मिथ्यात्व १, ए ६ विना १५ पारिणामिक भावे उपर प्रमाणे २ कुल ३५

३४ केवळ ज्ञान, केवळ दर्शन—मूळ भाव ३ उपशम तथा क्षयोपशम विना. उत्तर भेद-क्षायिक भावे ९ औदयिक भावे शुक्ल लेश्या १, मनुष्य गति १, असिद्ध १, ए ३ भाव होय. पारिणामिक भावे जीवत्व १ कुल १३

३७ अज्ञान ३—मूल भाव ३ उपशम अने क्षायिक विना उत्तर भेद-क्षयोपशम भावे लब्धि ५, अज्ञान ३, प्रथमना दर्शन २, ए १० औदयिक भावे २१. पारिणामिक भावे ३ कुल ३४.

३९ सामायिक, छेदोपस्थापनीय—मूल भाव ५ उत्तर भेद-उपशम भावे सम्यक्त्व अने चारित्र २ क्षायिक भावे सम्यक्त्व १ क्षयोपशम भावे अज्ञान ३, देश विरति १, ए ४ विना १४ औदयिक भावे गति ३, मिथ्यात्व १, असयम १, अज्ञान १, ए ६ विना १५ पारिणामिक भावे अभव्य विना २. कुल ३४.

४० परिहारविशुद्धि—मूल भाव ५ अथवा उपशम विना ४ उत्तर भेद-उपशम भावे सम्यक्त्व १ क्षायिक भावे सम्यक्त्व १ क्षयोपशम भावे सामायिकनी पेठे १४ औदयिक भावे गति ३, मिथ्यात्व १, अज्ञान १, असयम १, स्त्री वेद १, ए ७ विना १४ पारिणामिक भावे २. एव ३२. अथवा उपशम भाव न लईए त्यारे ३१

४१ सूक्ष्मसंपराय—मूळ भाव ५ उत्तर भेद-उपशम भावे सम्यक्त्व अने चारित्र २. क्षायिक भावे सम्यक्त्व १. क्षयोपशम भावे अज्ञान ३, सम्यक्त्व १, देशविरति १, ए ५ विना १३ औदयिक भावे लोभ १, मनुष्य गति १, असिद्ध पणु १, शुक्ल लेश्या १, ए ४ पारिणामिक भावे २ कुल २२.

४२ यथाख्यात—मूल भाव ५ उत्तर भेद- उपशम भावे २ क्षायिक भावे ९ क्षयोपशम भावे अज्ञान ३, सम्यक्त्व १, विरति द्विक २, ए ६ विना १२. औदयिक भावे असिद्ध पणु १, मनुष्य गति १, शुक्ल लेश्या १, ए ३. पारिणामिक भावे २ कुल २८

४३ देशविरति—मूल भाव ५ उत्तर भेद-उपशम भावे सम्यक्त्व १ क्षायिक भावे सम्यक्त्व १ क्षयोपशम भावे अज्ञान ३, मन पर्यव ज्ञान १, सर्व विरति १, ए ५ विना १३ औदयिक भावे अज्ञान १, मिथ्यात्व १, गति २, ए ४ विना १७ पारिणामिक भावे २ अभव्य विना कुल ३४.

४४ अविरति—मूल भाव ५. उत्तर भेद–उपशम भावे सम्यक्त्व १. क्षायिक भावे सम्यक्त्व १. क्षयोपशम भावे विरति द्विक २, मनःपर्यव ज्ञान १, ए ३ विना १५. औदयिक भावे २१. पारिणामिक भावे ३. कुल ४१ होय.

४६ चक्षुदर्शन, अचक्षुदर्शन—मूल भाव ५. उत्तर भेद–उपशम भावे २. क्षायिक भावे सम्यक्त्व अने चारित्र २. क्षयोपशमे १८. औदयिके २१. पारिणामिके ३. कुल ४६.

४९ लेश्या पहेली ३—मूल भाव ५. उत्तर भेद–उपशम भावे सम्यक्त्व १. क्षायिक भावे सम्यक्त्व १. क्षयोपशम भावे १८. औदयिक भावे पांच लेश्या विना १६. पारिणामिक भावे ३. कुल ३९.

५१ तेजो अने पद्म लेश्या—मूल भाव ५. उत्तर भेद–उपशम भावे सम्यक्त्व १. क्षायिक भावे सम्यक्त्व १. क्षयोपशम भावे १८. औदयिक भावे लेश्या ५, नरक गति १, ए ६ विना १५. पारिणामिक भावे ३. एवं ३८.

५२ शुक्ल लेश्या—मूल भाव ५. उत्तर भेद–उपशम भावे २. क्षायिक भावे ९. क्षयोपशमे १८. औदयिक भावे लेश्या ५, नरक गति १, ए ६ विना १५. पारिणामिक भावे ३. एवं ४७.

५३ भव्य—मूल भाव ५. उत्तर भेदे–अभव्य विना ५२ भाव होय.

५४ अभव्य—मूल भाव ३. उपशम अने क्षायिक विना. उत्तर भेद–क्षयोपशम भावे लब्धि ५, अज्ञान ३, दर्शन २, ए १० भाव. औदयिक भावे २१. पारिणामिक भावे भव्य विना २. एवं ३३.

५५ उपशम—मूल भाव ५. उत्तर भेद–उपशम भावे २. क्षायिक भावे सम्यक्त्व १. क्षयोपशम भावे अज्ञान ३, देशविरति १, ए ४ विना १४. औदयिक भावे मिथ्यात्व १, अज्ञान १, ए २ विना १९. पारिणामिक भावे अभव्य विना २. कुल ३८.

५६ क्षयोपशम—मूल भाव ३. उपशम अने क्षायिक विना. उत्तर भेद–क्षयोपशम भावे अज्ञान ३ विना १५. औदयिक भावे उपर प्रमाणे १९. पारिणामिक भावे उपर प्रमाणे २. कुल ३६.

५७ क्षायिक—मूल भाव ५. उत्तर भेद–उपशम भावे चारित्र १. क्षायिक भावे ९. क्षयोपशमे अज्ञान ३, देशविरति १, ए ४ विना १४. औदयिक भावे पूर्वनी पेठे १९. पारिणामिके २. कुल ४५.

५८ मिश्र—मूल भाव ३. उपशम अने क्षायिक विना. उत्तर भेद–क्षयोपशमे मिश्र ज्ञान ३, दर्शन ३, दानादि लब्धि ५, मिश्र समकित १, ए १२ होय. औदयिक भावे पूर्ववत् १९. पारिणामिक भावे २. कुल ३३.

५९ सास्वादन—मूल भाव ३. उपशम अने क्षायिक विना. उत्तर भेद–क्षयोपशम भावे लब्धि ५, दर्शन २, अज्ञान ३, ए १०. औदयिक भावे मिथ्यात्व विना २०. पारिणामिके २. कुल ३२.

६० मिथ्यात्व—मूल भाव ३ उपशम अने क्षायिक विना उत्तर भेद–क्षयोपशम भावे उपर प्रमाणे १० औदयिके २१ पारिणामिके ३ कुल ३४

६१ असञ्ज्ञी—मूल भाव ३. उपशम अने क्षायिक विना उत्तर भेद–क्षयोपशमे लब्धि ५, अज्ञान २, दर्शन २, ए ९ औदयिक भावे गति २, वेद ?, पद्म तथा शुक्ल लेश्या २, ए ६ विना १५ पारिणामिके ३ कुल २७

६२ अनाहारी—मूल भाव ५ उत्तर भेद–उपशम भावे समकित १ क्षायिक भावे ९. क्षयोपशम भावे मन पर्यव ज्ञान १, विरति द्विक २, चक्षुदर्शन १, ए ४ विना १४ औदयिक भावे २१, पारिणामिक भावे ३ एव ४८ भाव होय

---

## पाप प्रकृतिनो बंध ८२

१ नरक गति—नरक त्रिक ३, सूक्ष्म त्रिक ३, विकलेंद्रिय ३, एकेंद्रिय १, स्थावर १, ए ११ विना ७१ प्रकृतिनो वध होय

२ देव गति—नरक त्रिक ३, सूक्ष्मत्रिक ३, विकलेंद्रिय ३, ए ९ विना ७३.

४ मनुष्य, तिर्यंच गति—८२ प्रकृतिनो वध

८ एकेंद्रिय, द्वींद्रिय, त्रींद्रिय, चतुरिंद्रिय—नरक त्रिक ३ विना ७९ नो वध

९ पचेंद्रिय—८२ नो वध

१४ पृथ्वी काय—नरक त्रिक ३ विना ७९ तेवीज रीते अप्काय, तेउकाय, वाउकाय अने वनस्पति कायने विषे पण ७९ नो वध जाणवो

२५ त्रस कायनी मार्गणाथी आरभीने लोभनी मार्गणा सुधी ११ मार्गणाए–८२ नो वध.

२८ मतिज्ञान, श्रुतज्ञान, अवधिज्ञान—स्त्यानर्द्धि त्रिक ३, अनतानुवधी ४, स्त्री-वेद १, नपुसक वेद, १, मिथ्यात्व मोहनी १, नीच गोत्र १, नरक त्रिक ३, जाति ४, स्थावर ४, सस्थान ५, सघयण ५, तिर्यंच द्विक २, दुर्भग त्रिक ३, अशुभ विहायोगति १, ए ३८ विना ४४

२९ मन पर्यव ज्ञान—मतिज्ञाननी मार्गणाए काढी छे ते ३८, प्रत्याख्यानी ४, अप्रत्याख्यानी ४, ए ४६ विना ३६.

३० केवळ ज्ञान—अवंध

३३ मति अज्ञान, श्रुत अज्ञान, विभग ज्ञान—८२

३६ सामायिक, छेदोपस्थापनीय, परिहारविशुद्धि—मन पर्यव ज्ञाननी पेठे ४६ विना ३६.

३७ सूक्ष्मसपराय—ज्ञानावरणी ५, दर्शनावरणी ४, अतराय ५, ए १४ नो वध होय.

३८ यथाख्यात—अवंध

३९ देशविरति—मतिज्ञाननी मार्गणाए काढी छे ते ३८, अप्रत्याख्यानी ४, ए ४२ विना ४०.

४२ अविरति, चक्षु, अचक्षु दर्शन—८२

४३ अवधिदर्शन—अवधिज्ञाननी पेठे ४४

४४ केवळ दर्शन—अवध

४७ कृष्ण लेश्या, नील लेश्या, कापोत लेश्या—८२.
४८ तेजो लेश्या—नरक त्रिक ३, सूक्ष्म त्रिक ३, विकलेंद्रिय ३, ए ९ विना ७३.
४९ पद्म लेश्या—उपरनी ९, एकेंद्रिय १, स्थावर १, ए ११ विना ७१.
५० शुक्ल लेश्या—उपरनी ११, तिर्यंच द्विक २, ए १३ विना ६९.
५२ भव्य, अभव्य—८२.
५६ उपशम, क्षयोपशम, क्षायिक, मिश्र—मतिज्ञाननी पेठे ३८ विना ४४.
५७ सासादन—नरक त्रिक ३, जाति ४, स्थावरचतुष्क ४, हुंडक संस्थान १, छेल्लुं संघयण १, नपुंसक वेद १, मिथ्यात्व मोहनी १, ए १५ विना ६७.
६१ मिथ्यात्व, संज्ञी, असंज्ञी, आहारी—८२.
६२ अनाहारी—नपुंसक त्रिक ३ विना ७९.

---

## पुण्य प्रकृतिनो बंध ४२.

१ नरकगति—देवत्रिक ३, वैक्रिय द्विक २, आहारक द्विक २, आतप १, ए ८ विना ३४ बांधे.
२ देवगति—देवत्रिक ३, वैक्रिय द्विक २, आहारक द्विक २, ए ७ विना ३५.
३ तिर्यंचगति—जिननाम १, आहारक द्विक २, ए ३ विना ३९.
१० एकेंद्रिय, द्वींद्रिय, त्रींद्रिय, चतुरिंद्रिय, पृथ्वीकाय, अप्काय, वनस्पतिकाय, ए ७ मार्गणाए देवत्रिक ३, वैक्रिय द्विक २, आहारक द्विक २, जिननाम १, ए ८ विना ३४.
१२ तेजस्काय, वायुकाय—देवत्रिक ३, मनुष्यत्रिक ३, आहारक द्विक २, वैक्रिय द्विक २, उच्चगोत्र १, जिन नाम १, ए १२ विना ३०.
१९ मति ज्ञान, श्रुत ज्ञान, अवधि ज्ञान, अवधि दर्शन, शुक्ल लेश्या, क्षायिक, क्षयोपशम, ए ७ मार्गणाए–तिर्यंचायु १, उद्योत १, आतप १, ए ३ विना ३९.
२३ मनःपर्यव ज्ञान, सामायिक, छेदोपस्थापनीय, परिहारविशुद्धि, ए ४ मार्गणाए—मनुष्यत्रिक ३, औदारिक द्विक २, आतप १, उद्योत १, तिर्यंचायु १, वज्रर्षभनाराच संघयण १, ए ९ विना ३३.
२४ सूक्ष्मसंपराय—यश १, उच्चगोत्र १, सातावेदनी १, ए ३ बांधे.
२५ देशविरति—आतप १, आहारक द्विक २, मनुष्यत्रिक ३, तिर्यगायु १, उद्योत १, औदारिक द्विक २, वज्रर्षभनाराच १, ए ११ विना ३१.
३१ अज्ञान ३, अभव्य, मिथ्यात्व, असंज्ञी, ए ६ मार्गणाए—जिननाम १, आहारक द्विक २, ए ३ विना ३९.
३५ कृष्ण, नील, कापोत लेश्या, अविरति, ए ४ मार्गणाए—आहारक द्विक विना ४०.
३६ पद्म लेश्या—तिर्यंचायु विना ४१.
३७ मिश्र—जिन नाम १, आहारक द्विक २, आतप १, उद्योत १, तिर्यगायु १, मनुष्यायु १, देवायु १, ए ८ विना ३४.

३८ सासादन—जिन नाम १, आहारक द्विक २, आतप १, ए ४ विना ३८
३९ अनाहारी—मनुष्यायु १, देवायु १, तिर्यंचायु १, आहारक द्विक २, ए ५ विना ३७
४० उपशम—मनुष्यायु १, देवायु १, तिर्यंचायु १, उद्योत १, आतप १, ए ५ विना ३७,
४३ यथाख्यात, केवळ ज्ञान, केवळ दर्शन, ए ३ मार्गणाए—१ सातावेदनी बाधे
६२ मनुष्यगति, पचेंद्रिय जाति, त्रसकाय, वेद ३, योग ३, कषाय ४, चक्षुदर्शन, अचक्षु दर्शन, तेजोलेश्या, भव्य, संज्ञी, आहारी, ए १९ मार्गणाए–४२ बाधे.

---

## ध्रुवबंधी ४७.

२५ नारकीनी मार्गणाथी आरंभीने पचीसमी लोभनी मार्गणा सुधी ४७ नो बंध होय
२६ मतिज्ञान—अनंतानुबंधी ४, मिथ्यात्व १, स्त्यानर्द्धि त्रिक ३, ए ८ विना ३९.
२८ श्रुतज्ञान, अवधिज्ञान—उपर प्रमाणे ८ विना ३९
२९ मन पर्यवज्ञान—अनंतानुबंधी ४, अप्रत्याख्यानी ४, प्रत्याख्यानी ४, मिथ्यात्व १, स्त्यानर्द्धि त्रिक ३, ए १६ विना ३१
३० केवळ ज्ञान—अबंध
३३ मति अज्ञान, श्रुत अज्ञान, विभंग ज्ञान—४७
३६ सामायिक, छेदोपस्थापनीय, परिहार विशुद्धि—मन पर्यव ज्ञाननी पेठे १६ विना ३१.
३७ सूक्ष्मसपराय—ज्ञानावरणी ५, दर्शनावरणी ४, अंतराय ५, ए १४ बाधे
३८ यथाख्यात—अबंध.
३९ देशविरति—अनंतानुबंधी ४, अप्रत्याख्यानी ४, स्त्यानर्द्धि त्रिक ३, मिथ्यात्व १, ए १२ विना ३५
४२ अविरति, चक्षु, अचक्षु दर्शन—४७
४३ अवधि दर्शन—अवधि ज्ञाननी पेठे ८ विना ३९
४४ केवळ दर्शन—अबंध.
५२ कृष्ण, नील, कापोत, तेज, पद्म, शुक्ल, भव्य, अभव्य, ए ८ मार्गणाए—४७
५६ उपशम, क्षयोपशम, क्षायिक, मिश्र, ए ४ मार्गणाए—मन पर्यवज्ञाननी पेठे ८ विना ३९.
५७ सास्वादन—मिथ्यात्व १ विना ४६
६२ मिथ्यात्व, सञ्ज्ञी, असञ्ज्ञी, आहारी, अनाहारी, ए ५ मार्गणाए—४७

---

## अध्रुव बंधी ७३.

१ नरकगति—जाति ४, स्थावर चतुष्क ४, वैक्रिय द्विक २, आहारक द्विक २, नरक त्रिक ३, देवत्रिक ३, आतप १, ए १९ विना ५४
२ देवगति—देव त्रिक ३, नरक त्रिक ३, वैक्रिय द्विक २, सूक्ष्म त्रिक ३, विकल त्रिक ३, आहारक द्विक २, ए १६ विना ५७
३ मनुष्यगति—७३.

४ तिर्यंचगति—आहारक द्विक २, जिन नाम १, ए ३ विना ७०.

८ एकेंद्रिय, द्वींद्रिय, त्रींद्रिय, चतुरिंद्रिय—देवत्रिक ३, नरक त्रिक ३, वैक्रिय द्विक २, आहारक द्विक २, जिन नाम १, ए ११ विना ६२.

९ पचेंद्रिय—७३.

११ पृथ्वीकाय, अप्काय—एकेंद्रियनी पेठे ६२.

१३ तेजस्काय, वायुकाय—मनुष्य त्रिक ३, उच्च गोत्र १, एकेंद्रियनी ११, ए १५विना ५८.

१४ वनस्पतिकाय—पृथ्वीकायनी पेठे ६२.

२५ त्रसकाय, मनोयोग, वचनयोग, काययोग, पुरुषवेद, स्त्रीवेद, नपुंसकवेद, क्रोध, मान, माया, लोभ, ए ११ मार्गणाए ७३.

२८ मतिज्ञान, श्रुतज्ञान, अवधिज्ञान—तिर्यंच त्रिक ३, नरक त्रिक, ३, दुर्भग त्रिक ३, जाति ४, स्थावरचतुष्क ४, प्रथम विना संघयण ५, पहेला विना संस्थान ५, आतप १, नपुंसकवेद १, स्त्रीवेद १, उद्योत १, अशुभ विहायोगति १, नीचगोत्र १, ए ३३ विना ४०.

२९ मनःपर्यवज्ञान—पूर्वनी मतिज्ञाननी ३३, मनुष्य त्रिक ३, वज्रर्षभनाराच १, औदारिक द्विक २, ए ३९ विना ३४.

३० केवलज्ञान—सातावेदनी १.

३३ मतिअज्ञान, श्रुतअज्ञान, विभंगज्ञान—आहारक द्विक २, जिन नाम १, ए ३विना ७०.

३६ सामायिक, छेदोपस्थापनीय, परिहारविशुद्धि—मनःपर्यव ज्ञाननी पेठे ३९ विना ३४,

३७ सूक्ष्मसंपराय—सातवेदनी १, उच्च गोत्र १, यश नाम १, ए ३ होय.

३८ यथाख्यात—सातवेदनी १ होय.

३९ देशविरति—मतिज्ञाननी ३३, मनुष्य त्रिक ३, वज्रर्षभनाराच संघयण १, औदारिक द्विक २, आहारक द्विक २, ए ४१ विना ३२.

४० अविरति—आहारक द्विक विना ७१.

४२ चक्षुदर्शन, अचक्षुदर्शन—७३.

४३ अवधिदर्शन—अवधि ज्ञाननी पेठे ४०.

४४ केवळदर्शन—सातावेदनी १ होय.

४७ कृष्ण लेश्या, नील लेश्या, कापोत लेश्या—आहारक द्विक २ विना ७१.

४८ तेजो लेश्या—नरक त्रिक ३, सूक्ष्म त्रिक ३, विकलेंद्रिय त्रिक ३, ए ९ विना ६४.

४९ पद्म लेश्या—उपरनी ९, एकेंद्रिय १, स्थावर १, आतप १, ए १२ विना ६१.

५० शुक्ल लेश्या—पद्मलेश्यानी १२, तिर्यंच त्रिक ३, उद्योत १, ए १६ विना ५७.

५१ भव्य—७३.

५२ अभव्य—आहारक द्विक २, जिन नाम १, ए ३ विना ७०.

५३ उपशम—मतिज्ञाननी ३३, देवायु १, मनुष्यायु १, ए ३५ विना ३८.

५५ क्षयोपशम, क्षायिक—मतिज्ञाननी पेठे ३३ विना ४०.

५६ मिश्र—मतिज्ञाननी ३३, देवायु १, मनुष्यायु १, आहारक द्विक २, जिन नाम १, ए २८ विना ३५

५७ सास्वादन—नरक त्रिक ३, स्थावर चतुष्क ४, जाति ४, आतप १, हुडक १, छेवट्ठु संघयण १, नपुंसक १, आहारक द्विक २, जिननाम १, ए १८ विना ५५.

५८ मिथ्यात्व—आहारक द्विक २, जिननाम १, ए ३ विना ७०

५९ सन्नी—७३

६० असन्नी—आहारक द्विक २, जिननाम १, ए ३ विना ७०.

६१ आहारी—७३

६२ अनाहारी—आयु ४, नरक द्विक २, आहारक द्विक २, ए ८ विना ६५.

---

## ध्रुवोदयी २७.

२५ नारकीथी माडीने लोभनी मार्गणा सुधी—२७ नो उदय.

२९ मतिज्ञान, श्रुतज्ञान, अवधिज्ञान, मनःपर्यवज्ञान—मिथ्यात्व १ विना २६

३० केवलज्ञान—ज्ञानावरणी ५, दर्शनावरणी ४, अंतराय ५, मिथ्यात्व १, ए १५ विना १२.

३३ मतिअज्ञान, श्रुतअज्ञान, विभंगज्ञान—२७

३९ सामायिक, छेदोपस्थापनीय, परिहारविशुद्धि, सूक्ष्मसंपराय, यथाख्यात, देशविरति, ए ६ मार्गणाए—मिथ्यात्व १, विना २६.

४२ अविरति, चक्षुदर्शन, अचक्षुदर्शन—२७

४३ अवधिदर्शन—मिथ्यात्व विना २६

४४ केवळदर्शन—केवळज्ञाननी पेठे १२

५२ कृष्णलेश्या, नीललेश्या, कापोतलेश्या, तेजोलेश्या, पद्मलेश्या, शुक्ललेश्या, भव्य, अभव्य, ए ८ मार्गणाए २७

५७ उपशम, क्षयोपशम, क्षायिक, मिश्र, सास्वादन, ए ५ मार्गणाए—मिथ्यात्व विना २६.

६२ मिथ्यात्व, सन्नी, असन्नी, आहारी, अनाहारी, ए ५ मार्गणाए—२७.

---

## अध्रुवोदयी ९५.

१ नरकगति—मनुष्य, देव अने तिर्यंच ए ३ आयुष्य, उच्चगोत्र १, स्त्री पुरुष वेद २, शरीर २, अंगोपांग २, जाति ४, गति ३, संघयण ६, संस्थान ५, आनुपूर्वी ३, शुभविहायोगति १, जिननाम १, स्थावर चतुष्क ४, आतप १, उद्योत १, सुभग चतुष्क ४, ए ४३ विना ७२

२ देवगति—शरीर २, अंगोपांग २, आनुपूर्वी ३, गति ३, आयु ३, जाति ४, जिन-नाम १, संघयण ६, संस्थान ५, नीचगोत्र १, नपुंसकवेद १, स्थावर चतुष्क ४, अशुभ विहायोगति १, आतप १, उपघात १, उद्योत १, ए ३९ विना ५६.

३ मनुष्यगति—वैक्रियाष्टक ८, तिर्यंच त्रिक ३, जाति ४, स्थावर १, सूक्ष्म १, साधारण १, आतप १, उद्योत १, ए २० विना ७५.

४ तिर्यंचगति—वैक्रियाष्टक ८, मनुष्य त्रिक ३, आहारक द्विक २, उच्चगोत्र १, जिननाम १, ए १५ विना ८०.

५ एकेंद्रिय—वैक्रियाष्टक ८, मनुष्य त्रिक ३, उच्चगोत्र १, वेद २, जाति ४, आहारक द्विक २, संघयण ६, संस्थान ५, औदारिक अंगोपांग १, विहायोगति २, समकित मोहनी १, मिश्रमोहनी १, जिननाम १, सुस्वर दुःस्वर २, त्रस १, अयश १, आदेय १, ए ४२ विना ५३.

६ द्वींद्रिय—वैक्रियाष्टक ८, मनुष्य त्रिक ३, उच्चगोत्र १, वेद २, जाति ४, आहारक द्विक २, संघयण ५, संस्थान ५, शुभ विहायोगति १, जिननाम १, स्थावर १, सूक्ष्म १, साधारण १, आतप १, अनादेय १, यश १, समकितमोहनी १, मिश्रमोहनी १, ए ४० विना ५५.

८ त्रींद्रिय, चतुरिंद्रिय—उपर प्रमाणे ४० विना ५५.

९ पंचेंद्रिय—जाति ४, स्थावर ३, आतप १, ए ८ विना ८७.

१० पृथ्वीकाय—एकेंद्रिय मार्गणानी ४२, साधारण १, ए ४३ विना ५२.

११ अप्काय—पृथ्वीकायनी ४३, आतप १, ए ४४ विना ५१.

१३ तेजस्काय, वायुकाय—उपरनी ४४, यश १, उद्योत १, ए ४६ विना ४९.

१४ वनस्पतिकाय—पृथ्वीकाय प्रमाणे. पण साधारण १ नांखीने आतप १ काढीए त्यारे ४३ विना ५२.

१५ त्रसकाय—स्थावर ३, आतप १, एकेंद्रिय जाति १, ए ५ विना ९०.

१६ मनोयोग—जाति ४, अनुपूर्वी ४, स्थावर चतुष्क ४, आतप १, ए १३ विना ८२.

१७ वचनयोग—स्थावर ४, एकेंद्रिय जाति १, अनुपूर्वी ४, आतप १, ए १० विना ८५.

१८ काययोग—९५.

१९ पुरुषवेद—वेद २, नरकत्रिक ३, जाति ४, स्थावर ३, आतप १, जिननाम १, ए १४ विना ८१.

२० स्त्रीवेद—उपरनी १४, आहारक द्विक २, ए १६ विना ७९.

२१ नपुंसकवेद—देवत्रिक ३, जिननाम १, वेद २, ए ६ विना ८९.

२२ क्रोध—मान ४, माया ४, लोभ ४, जिननाम १, ए १३ विना ८२.

२३ मान—क्रोध ४, माया ४, लोभ ४, जिननाम १, ए १३ विना ८२.

२४ माया—क्रोध ४, मान ४, लोभ ४, जिननाम १, ए १३ विना ८२.

२५ लोभ—क्रोध ४, मान ४, माया ४, जिननाम १, ए १३ विना ८२.

२७ मतिज्ञान, श्रुतज्ञान—जाति ४, स्थावर ४, अनंतानुबंधी ४, जिननाम १, आतप १, मिश्रमोहनी १, ए १५ विना ८०.

२८ अवधिज्ञान—मतिज्ञाननी पेठे १५ विना ८० अने जो तिर्यंचनी अनुपूर्वी १ काढीए तो १६ विना ७९.

२९ मनःपर्यवज्ञान—जाति ४, स्थावर ४, अनतानुवधी ४, अप्रत्याख्यानी ४, प्रत्याख्यानी ४, आनुपूर्वी ४, जिननाम १, आतप १, उद्योत १, तिर्यच द्विक २, नरक द्विक २, देव द्विक २, वैक्रिय द्विक २, मिश्र १, दुर्भग १, अनादेय १, अयश १, नीचगोत्र १, ए ४० विना ५५

३० केवळ ज्ञान—त्रस अष्टक ८, उच्चगोत्र १, जिननाम १, मनुष्य द्विक २, पचेंद्रिय जाति १, वेदनी वेमाथी १, सघयण १, संस्थान ६, विहायोगति २, औदारिक द्विक २, पराघात १, उच्छ्वास १, उपघात १, सुस्वर १, दु स्वर १, ए ३० होय

३२ मतिअज्ञान, श्रुतअज्ञान—आहारक द्विक २, जिननाम १, मिश्रमोहनी १, समकित मोहनी १, ए ५ विना ९०

३३ विभगज्ञान—जाति ४, स्थावर १, सूक्ष्म १, साधारण १, आतप १, आहारक द्विक २, जिननाम १, समकित मोहनी १, मनुष्य अने तिर्यचनी आनुपूर्वी २, अपर्याप्त १, ए १५ विना ८० अने जो २ अनुपूर्वा न काढीए तो १३ विना ८२.

३५ सामायिक, छेदोपस्थापनीय—मन पर्यव ज्ञाननी पेठे ४० विना ५५

३६ परिहारविशुद्धि—मन पर्यव ज्ञाननी ४०, आहारक द्विक २, स्त्रीवेद १, ए ४३ विना ५२ अने जो सघयण ५ काढीए तो ४८ विना ४७.

३७ सूक्ष्मसपराय—आहारक द्विक २, स्त्यानर्द्धि त्रिक ३, छेला संघयण ३, समकित मोहनी १, हास्यादि षट्क ६, वेद ३, सज्वलनादि ३, आ २१ मा मन पर्यव ज्ञाननी ४० सहित करवाथी कुल ६१ विना ३४

३८ यथाख्यात—सूक्ष्मसंपरायनी ६१ माथी लोभ काढी जिननाम नाखवाथी ६१ विना ३४

३९ देशविरति—जाति ४, स्थावर ४, अनतानुबधी ४, आनुपूर्वी ४, देव द्विक २, नरक द्विक २, वैक्रिय द्विक २, दुर्भग त्रिक ३, आहारक द्विक २, जिन नाम १, बीजा कषायनी ४, आतप १, मिश्रमोहनी १, ए ३४ विना ६१

४० अविरति—जिननाम १, आहारक द्विक २, ए ३ विना ९२

४१ चक्षुदर्शन—जाति ३, स्थावर ४, आनुपूर्वी ४, जिननाम १, आतप १, ए १३ विना ८२

४२ अचक्षुदर्शन—जिननाम १ विना ९४.

४३ अवधिदर्शन—अवधिज्ञाननी पेठे १६ विना ७९.

४४ केवळदर्शन—केवळ ज्ञाननी पेठे ३० होय

४७ कृष्ण लेश्या, नील लेश्या, कापोत लेश्या, ए ३ मार्गणाए—जिननाम १, आहारक द्विक २, ए ३ विना ९२ एकलु जिननाम काढीए त्यारे ९४.

४८ तेजो लेश्या—नरक त्रिक ३, विकलेंद्रिय त्रिक ३, सूक्ष्म त्रिक ३, जिननाम १, आतप १, ए ११ विना ८४

४९ पद्म लेश्या—तेजो लेश्यानी ११, एकेंद्रिय जाति १, स्थावर १, ए १३ विना ८२

५० शुक्ल लेश्या—पद्म लेश्यानी १३ ने जिननाम रहित करवाथी १२ रहे ए १२ विना ८३

५१ भव्य—९५.
५२ अभव्य—जिननाम १, आहारक द्विक २, समकित मोहनी १, मिश्र मोहनी १, ए ५ विना ९०.
५३ उपशम—जाति ४, स्थावर चतुष्क ४, आनुपूर्वी ४, अनंतानुवंधी ४, आहारक द्विक २, जिननाम १, आतप १, समकित मोहनी १, मिश्र मोहनी १, ए २२ विना ७३.
५४ क्षयोपशम—जाति ४, स्थावर चतुष्क ४, अनंतानुवंधी ४, जिन नाम १, आतप १, मिश्र मोहनी १, ए १५ विना ८०.
५५ क्षायिक—जाति ४, स्थावर चतुष्क ४, अनंतानुवंधी ४, आतप १, पहेला विना संघयण ५, समकित मोहनी १, मिश्र मोहनी १, ए २० विना ७५.
५६ मिश्र—जाति ४, स्थावर चतुष्क ४, अनंतानुवंधी ४, जिननाम १, आहारक द्विक २, समकित मोहनी १, आतप १, आनुपूर्वी ४, ए २१ विना ७४.
५७ सास्वादन—सूक्ष्म त्रिक ३, आतप १, समकित मोहनी १, मिश्र मोहनी १, आहारक द्विक २, जिननाम १, नरकानुपूर्वी १, ए १० विना ८५.
५८ मिथ्यात्व—अभव्यनी पेठे ५ विना ९०.
५९ संज्ञी—पंचेंद्रियनी पेठे ८ विना ८७, अने जिननाम विना ८६.
६० असंज्ञी—वैक्रियाष्टक ८, संघयण ५, संस्थान ५, समकित १, मिश्र १, आहारक द्विक २, जिननाम १, वेद २, उच्चगोत्र १, शुभ १, आदेय १, यश १, ए २९ विना ६६.
६१ आहारी—अनुपूर्वी ४ विना ९१.
६२ अनाहारी—संघयण ६, संस्थान ६, आहारक द्विक २, वैक्रिय द्विक २, औदारिक द्विक २, विहायोगति द्विक २, निद्रा ५, पराघात १, उच्छ्वास १, आतप १, उद्योत १, प्रत्येक १, सुस्वर १, उपघात १, साधारण १, दुःस्वर १, मिश्र मोहनी १, ए ३५ विना ६०.

---

## अपरावर्तमान प्रकृति वंध २९.

३ नरकगति, देवगति, मनुष्यगति—२९ नो वंध.
८ तिर्यंचगति, एकेंद्रिय, द्वींद्रिय, त्रींद्रिय, चतुरिंद्रिय, ए ५ मार्गणाए—जिननाम १ विना २८.
९ पंचेंद्रिय—२९.
१४ पृथ्वी, अप्, तेज, वायु, वनस्पति, ए ५ मार्गणाए—जिननाम विना २८.
२५ त्रसकाय, मन, वचन, काय, योग, पुरुषवेद, स्त्रीवेद, नपुंसकवेद, क्रोध, मान, माया, लोभ, ए ११ मार्गणाए—२९.
२९ मतिज्ञान, श्रुतज्ञान, अवधिज्ञान, मनःपर्यवज्ञान, ए ४ मार्गणाए—मिथ्यात्वविना २८.
३० केवळ ज्ञान—०.
३३ मतिअज्ञान, श्रुतअज्ञान, विभंगज्ञान—जिननाम विना २८.

३६ सामायिक, छेदोपस्थापनीय, परिहारविशुद्धि—मिथ्यात्व विना २८

३७ सूक्ष्मसपराय—वर्णादि ४, तैजस १, कार्मण १, निर्माण १, उपघात १, अगुरुलघु १, पराघात १, उच्छ्वास १, जिननाम १, भय १, कुत्सा १, मिथ्यात्व १, ए १५ विना १४

३८ यथाख्यात—०

३९ देशविरति—मिथ्यात्व १ विना २८

४२ अविरति, चक्षु, अचक्षु दर्शन—२९

४३ अवधि दर्शन—मिथ्यात्व विना २८

४४ केवळ दर्शन—०

५१ कृष्णलेश्या, नीललेश्या, कापोतलेश्या, तेजोलेश्या, पद्मलेश्या, शुक्ललेश्या, भव्य, ए ७ मार्गणाए—२९

५२ अभव्य—जिननाम विना २८

५५ उपशम, क्षयोपशम, क्षायिक—मिथ्यात्व विना २८

५७ मिश्र, सास्वादन—जिननाम १, मिथ्यात्व १, ए २ विना २७

५८ मिथ्यात्व—जिननाम विना २८

५९ संज्ञी—२९

६० असंज्ञी—जिननाम विना २८

६२ आहारी, अनाहारी—२९

---

## परावर्तमान प्रकृति बंध ९१.

१ नरकगति—जाति ४, स्थावर दशकमाथी ४, वैक्रिय द्विक २, आहारक द्विक २, नरकत्रिक ३, देवत्रिक ३, आतप १, ए १९ विना ७२

२ देवगति—देवत्रिक ३, नरकत्रिक ३, वैक्रिय द्विक २, सूक्ष्मत्रिक ३, विकलेंद्रिय त्रिक ३, आहारक द्विक २, ए १६ विना ७५

३ मनुष्यगति—९१

४ तिर्यंचगति—आहारक द्विक २, विना ८९

८ एकेंद्रिय, द्वींद्रिय, त्रींद्रिय, चतुरिंद्रिय—देवत्रिक ३, नरकत्रिक ३, वैक्रिय द्विक २, आहारक द्विक २, ए १० विना ८१

९ पचेंद्रिय—९१

११ पृथ्वीकाय, अप्काय—एकेंद्रिय प्रमाणे १० विना ८१

१३ तेजस्काय, वायुकाय—एकेंद्रियनी १०, मनुष्यत्रिक ३, ऊच्चगोत्र १, ए १४ विना ७७

१४ वनस्पति काय—एकेंद्रिय प्रमाणे १० विना ८१

२५ त्रसकाय, मन, वचन, काया, पुरुष वेद, स्त्री वेद, नपुंसक वेद, क्रोध, मान, माया, लोभ, ए ११ मार्गणाए—९१

२८ मतिज्ञान, श्रुतज्ञान, अवधिज्ञान—तिर्यंचत्रिक ३, नरकत्रिक ३, दुर्भगत्रिक ३, जाति

तिर्यंच आश्री कुलकोटी.

पाच स्थावरनी—५७००००००
विकलेंद्रियनी—२४००००००
जलचरनी—१२५०००००
स्थलचरनी—१००००००
खेचरनी—१२००००००
उरपरिसर्पनी—१००००००
भुजपरिसर्पनी—९००००००
१३४५०००००

पंचेंद्रिय आश्री.

मनुष्य—१२००००००
देव—२६००००००
नारकी—२५००००००
जलचरादि—५३५००००
११६५०००००

त्रस आश्री.

पंचेंद्रियनी—११६५०००००
विकलेंद्रियनी—२४००००००
१४०५०००००

पुरुषवेद आश्री

देव—२६ लाख.
मनुष्य—१२ लाख.
जलचरादि—५३॥ लाख.
९१५००००

नपुंसकवेद आश्री.

मनुष्य—१२ लाख.
नारकी—२५ लाख.
पांच स्थावर—५७ लाख.
जलचरादि—५३॥ लाख.
विकलेंद्रिय—२४ लाख.
१७१५०००००

देशविरति आश्री.

मनुष्य—१२ लाख.
जलचरादि—५३॥ लाख.
६५५००००

चक्षुदर्शन आश्री.

मनुष्य—१२ लाख.
देव—२६ लाख.
नारकी—२५ लाख.
जलचरादि—५३॥ लाख.
चतुरिंद्रिय—९०००००
१२५५००००

तेजोलेश्या आश्री.

देव—२६ लाख.
मनुष्य—१२ लाख.
जलचरादि—५३॥ लाख.
पृथ्वीकाय—१२ लाख.
अप्काय—७ लाख.
तेजस्काय—२८ लाख.
१३८५००००

क्षायिक आश्री.

नारकी—२५ लाख.
देवता—२६ लाख.
मनुष्य—१२ लाख.
स्थलचर—१० लाख.
७३००००००

सास्वादन आश्री.

पंचेंद्रिय—११६५०००००
विकलेंद्रिय—२४००००००
पृथ्वी—१२००००००
अप्—७००००००
वनस्पति—२८००००००
१८७५०००००

असंज्ञी आश्री.

मनुष्य—१२ लाख.
जलचरादि—५३॥ लाख.
विकलेंद्रिय—२४ लाख.
पांच स्थावर—५७ लाख.
१४६५०००००

## योगस्थानना स्वामी.

पचमकर्मग्रन्थ (शतक) विषय

१ सूक्ष्म निगोद अपर्याप्त जघन्य योगः सर्वस्तोक. ।
२ ततो वादरपर्याप्त जघन्ययोगोऽसंख्येय गुण. ।
३ ततो द्वींद्रिय अपर्याप्त जघन्ययोगोऽसंख्येय गुणः ।
४ तत त्रींद्रिय अपर्याप्त जघन्ययोगोऽसंख्येय गुण॰ ।
५ ततश्चतुरिन्द्रिय अपर्याप्त जघन्ययोगोऽसंख्येय गुण ।
६ ततोऽसज्ञि अपर्याप्त जघन्ययोगोऽसख्येय गुण ।
७ तत सज्ञि अपर्याप्त जघन्ययोगोऽसख्येय गुण ।
८ तत सूक्ष्म अपर्याप्त उत्कृष्टयोगोऽसख्येय गुण ।
९ ततो वादर अपर्याप्त उत्कृष्टयोगोऽसंख्येय गुण ।
१० ततः सूक्ष्म पर्याप्त जघन्ययोगोऽसख्येय गुण ।
११ ततो वादर पर्याप्त जघन्ययोगोऽसंख्येय गुण ।
१२ ततः सूक्ष्म पर्याप्त उत्कृष्टयोगोऽसख्येय गुण. ।
१३ ततो वादर पर्याप्त उत्कृष्टयोगोऽसख्येय गुण ।
१४ ततो द्वींद्रिय अपर्याप्त उत्कृष्टयोगोऽसख्येय गुण ।
१५ ततस्त्रींद्रिय अपर्याप्त उत्कृष्टयोगोऽसख्येय गुण. ।
१६ ततश्चतुरिन्द्रिय अपर्याप्त उत्कृष्टयोगोऽसख्येय गुण॰ ।
१७ ततोऽसज्ञि अपर्याप्त उत्कृष्टयोगोऽसख्येय गुण ।
१८ तत. सज्ञि अपर्याप्त उत्कृष्टयोगोऽसख्येय गुण॰ ।
१९ ततो द्वींद्रिय पर्याप्त जघन्ययोगोऽसख्येय गुण ।
२० ततस्त्रींद्रिय पर्याप्त जघन्ययोगोऽसख्येय गुण. ।
२१ ततश्चतुरिंद्रिय पर्याप्त जघन्ययोगोऽसंख्येय गुण॰ ।
२२ ततोऽसज्ञि पर्याप्त जघन्ययोगोऽसंख्येय गुण ।
२३ तत सज्ञि पर्याप्त जघन्ययोगोऽसख्येय गुण ।
२४ ततो द्वींद्रिय पर्याप्त उत्कृष्टयोगोऽसंख्येय गुण ।
२५ ततस्त्रींद्रिय पर्याप्त उत्कृष्टयोगोऽसख्येय गुणः ।
२६ ततश्चतुरिंद्रिय पर्याप्त उत्कृष्टयोगोऽसख्येय गुणः ।
२७ ततोऽसज्ञि पर्याप्त उत्कृष्टयोगोऽसख्येय गुण ।
२८ तत सज्ञि पर्याप्त उत्कृष्टयोगोऽसख्येय गुणः ।
२९ ततोऽनुत्तरसुर उत्कृष्टयोगोऽसख्येय गुण॰ ।
३० ततो ग्रैवेयकसुर उत्कृष्टयोगोऽसख्येय गुण॰ ।
३१ ततो युगलिक उत्कृष्टयोगोऽसख्येय गुणः ।
३२ तत आहारक शरीर उत्कृष्टयोगोऽसख्येय गुण॰ ।
३३ ततो शेषदेवनारकतिर्यचमनुष्याणा यथोत्तरमुत्कृष्टो योगोऽसख्येय गुण ।

---

# १४ जीवना स्थितिस्थाननुं अल्पबहुत्व.

(पंचम कर्मग्रन्थविषय.)

१ सूक्ष्मैकेन्द्रिय अपर्याप्त स्थितिस्थानानि सर्वस्तोकानि ।
२ ततो बादरैकेंद्रिय अपर्याप्त स्थितिस्थानानि संख्येयगुणानि ।
३ ततः सूक्ष्मैकेंद्रिय पर्याप्त स्थितिस्थानानि संख्येयगुणानि ।
४ ततो बादर एकेंद्रिय पर्याप्त स्थितिस्थानानि संख्येयगुणानि ।
५ ततो द्वींद्रिय अपर्याप्त स्थितिस्थानानि असंख्येयगुणानि ।
६ ततो द्वींद्रिय पर्याप्त स्थितिस्थानानि संख्येयगुणानि ।
७ ततस्त्रींद्रिय अपर्याप्त स्थितिस्थानानि संख्येयगुणानि ।
८ ततस्त्रींद्रिय पर्याप्त स्थितिस्थानानि संख्येयगुणानि ।
९ ततश्चतुरिंद्रिय अपर्याप्त स्थितिस्थानानि संख्येयगुणानि ।
१० ततश्चतुरिंद्रिय पर्याप्त स्थितिस्थानानि संख्येयगुणानि ।
११ ततोऽसंज्ञि अपर्याप्त स्थितिस्थानानि संख्येयगुणानि ।
१२ ततोऽसंज्ञि पर्याप्त स्थितिस्थानानि संख्येयगुणानि ।
१३ ततो द्वींद्रिय पर्याप्त गुरुस्थितिः विशेषाधिका ।
१४ ततस्त्रींद्रिय पर्याप्त जघन्यस्थितिः विशेषाधिका ।
१५ ततस्त्रींद्रिय अपर्याप्त जघन्यस्थितिः विशेषाधिका ।
१६ ततस्त्रींद्रिय अपर्याप्त गुरुस्थितिः विशेषाधिका ।
१७ ततस्त्रींद्रिय पर्याप्त गुरुस्थितिः विशेषाधिका ।
१८ ततश्चतुरिंद्रिय पर्याप्त जघन्यस्थितिः विशेषाधिका ।
१९ ततश्चतुरिंद्रिय अपर्याप्त जघन्यस्थितिः विशेषाधिका ।
२० ततश्चतुरिंद्रिय अपर्याप्त गुरुस्थितिः विशेषाधिका ।
२१ ततश्चतुरिंद्रिय पर्याप्त गुरुस्थितिः विशेषाधिका ।
२२ ततोऽसंज्ञि पंचेंद्रिय पर्याप्त जघन्यस्थितिः संख्येयगुणा ।
२३ ततोऽसंज्ञि पंचेंद्रिय अपर्याप्त जघन्यस्थितिः विशेषाधिका ।
२४ ततोऽसंज्ञि पंचेंद्रिय अपर्याप्त गुरुस्थितिबंध विशेषाधिकः ।
२५ ततोऽसंज्ञि पंचेंद्रिय पर्याप्त गुरुस्थितिबंध विशेषाधिकः ।
२६ ततो यतेरुत्कृष्टस्थितिबंधः संख्येयगुणः ।
२७ ततो देशविरति जघन्यस्थितिबंधः संख्येयगुणः ।
२८ ततो देशविरति उत्कृष्टस्थितिबंधः संख्येयगुणः ।
२९ ततोऽविरत पर्याप्त लघुस्थितिबंधः संख्येयगुणः ।
३० ततोऽविरत अपर्याप्त लघुस्थितिबंधः असंख्येयगुणः ।
३१ ततोऽविरत अपर्याप्त गुरुस्थितिबंधः संख्येयगुणाधिकः ।
३२ ततोऽविरत पर्याप्त गुरुस्थितिबंधः संख्येयगुणाधिकः ।
३३ ततः संज्ञिपंचेंद्रिय पर्याप्त लघुस्थितिबंधः संख्येयगुणाधिकः ।

३४ तत॰ संज्ञिपचेंद्रिय अपर्याप्त लघुस्थितिवंध संख्येयगुणाधिकः ।
३५ ततः सज्ञिपचेंद्रिय अपर्याप्त गुरुस्थितिवंध॰ संख्येयगुणाधिकः ।
३६ तत॰ सज्ञिपंचेंद्रिय पर्याप्त गुरुस्थितिवध संख्येयगुणाधिक ।

---

## एकेद्रियादिक जीवोमां स्थितिवंध आश्री अल्पवहुत्व.

१ सर्वेथी स्तोक वंध दशमे गुणस्थाने यतिनो होय
२ तेथी वादर पर्याप्ता एकेंद्रियने जघन्य वंध असंख्यात गुणो
३ तेथी सूक्ष्म पर्याप्ता एकेंद्रियने जघन्य वंध विशेपाधिक
४ तेथी वादर अपर्याप्ता एकेंद्रियने जघन्य वंध विशेपाधिक
५ तेथी सूक्ष्म अपर्याप्ता एकेंद्रियने जघन्य वंध विशेपाधिक
६ तेथी सूक्ष्म अपर्याप्ता एकेंद्रियने उत्कृष्ट वध विशेपाधिक
७ तेथी वादर अपर्याप्ता एकेंद्रियने उत्कृष्ट वध विशेपाधिक
८ तेथी सूक्ष्म पर्याप्ता एकेंद्रियने उत्कृष्ट वंध विशेपाधिक
९ तेथी वादर पर्याप्ता एकेंद्रियने उत्कृष्ट वध विशेपाधिक
१० तेथी द्वींद्रिय पर्याप्तानो जघन्य वंध संख्यात गुणो
११ तेथी द्वींद्रिय अपर्याप्तानो जघन्य वध विशेपाधिक
१२ तेथी द्वींद्रिय अपर्याप्तानो उत्कृष्ट वध विशेपाधिक
१३ तेथी द्वींद्रिय पर्याप्तानो उत्कृष्ट वंध विशेपाधिक
१४ तेथी त्रींद्रिय पर्याप्तानो जघन्य वंध विशेपाधिक
१५ तेथी त्रींद्रिय अपर्याप्तानो जघन्य वंध विशेपाधिक
१६ तेथी त्रींद्रिय अपर्याप्तानो उत्कृष्ट वंध विशेपाधिक
१७ तेथी त्रींद्रिय पर्याप्तानो उत्कृष्ट वंध विशेपाधिक
१८ तेथी चतुरिंद्रिय पर्याप्तानो जघन्य वंध विशेपाधिक
१९ तेथी चतुरिंद्रिय अपर्याप्तानो जघन्य वंध विशेपाधिक
२० तेथी चतुरिंद्रिय अपर्याप्तानो उत्कृष्ट वंध विशेपाधिक
२१ तेथी चतुरिंद्रिय पर्याप्तानो उत्कृष्ट वध विशेपाधिक
२२ तेथी असज्ञी पचेंद्रिय पर्याप्तानो जघन्य वध संख्यात गुणो
२३ तेथी असज्ञी पचेंद्रिय अपर्याप्तानो जघन्य वध विशेपाधिक
२४ तेथी असज्ञी पंचेंद्रिय अपर्याप्तानो उत्कृष्ट वंध विशेपाधिक
२५ तेथी असज्ञी पचेंद्रिय पर्याप्तानो उत्कृष्ट वध विशेपाधिक
२६ तेथी यतिने छठ्ठे गुणस्थाने उत्कृष्ट वध सख्यात गुणो
२७ तेथी देशविरतिने जघन्य वंध संख्यात गुणो
२८ तेथी देशविरतिने पाचमे गुणस्थाने उत्कृष्ट वंध संख्यात गुणो
२९ तेथी अविरतिने चोथे गुणस्थाने पर्याप्ताने जघन्य वंध सख्यात गुणो.
३० तेथी अविरति अपर्याप्ताने जघन्य वंध संख्यात गुणो

३१ तेथी अविरति अपर्याप्ताने उत्कृष्ट वंध संख्यात गुणो.
३२ तेथी अविरति पर्याप्ताने उत्कृष्ट वंध संख्यात गुणो.
३३ तेथी संज्ञी पंचेंद्रिय पर्याप्ताने जघन्य वंध संख्यात गुणो.
३४ तेथी संज्ञी पंचेंद्रिय अपर्याप्ताने जघन्य वंध संख्यात गुणो.
३५ तेथी संज्ञी पंचेंद्रिय अपर्याप्ताने उत्कृष्ट वंध संख्यात गुणो.
३६ तेथी संज्ञी पंचेंद्रिय पर्याप्ताने उत्कृष्ट वंध संख्यात गुणो.
(आमां २६ थी ३५ सुधीना वंध अंतःकोटाकोटी सागरोपम समजवा.)

---

## पुद्गळ वर्गणानो क्रम.

उत्तरोत्तर पूर्वानुपूर्वीए सूक्ष्म समजवी ने पश्चानुपूर्वीए स्थूळ समजवी.

१ अग्रहण वर्गणा.
२ औदारिक ग्रहण जघन्य उत्कृष्ट वर्गणा.
३ औदारिक वैक्रिय वन्नेने अग्रहण वर्गणा.
४ वैक्रिय ग्रहण जघन्य उत्कृष्ट वर्गणा.
५ वैक्रिय आहारक वन्नेने अग्रहण वर्गणा.
६ आहारक ग्रहण जघन्य उत्कृष्ट वर्गणा.
७ आहारक तैजस वन्नेने अग्रहण वर्गणा.
८ तैजस ग्रहण जघन्य उत्कृष्ट वर्गणा.
९ तैजस भाषा वन्नेने अग्रहण वर्गणा.
१० भाषा ग्रहण जघन्य उत्कृष्ट वर्गणा.
११ भाषा अने श्वासोच्छ्वास वन्नेने अग्रहण वर्गणा.
१२ श्वासोच्छ्वास ग्रहण जघन्य उत्कृष्ट वर्गणा.
१३ श्वासोच्छ्वास अने मन वन्नेने अग्रहण वर्गणा.
१४ मनने जघन्य उत्कृष्ट ग्रहण वर्गणा.
१५ मन अने कार्मण वन्नेने अग्रहण वर्गणा.
१६ कार्मण प्रायोग्य जघन्य उत्कृष्ट ग्रहण वर्गणा.
१७ ध्रुव अचित्त जघन्य वर्गणा.
१८ ध्रुव अचित्त उत्कृष्ट वर्गणा.
१९ अध्रुव अचित्त जघन्य वर्गणा.
२० अध्रुव अचित्त उत्कृष्ट वर्गणा.
२१ प्रत्येक जीवना पांच शरीरना प्रदेशो पैकी एक प्रदेशमां सर्व जीवथी अनंतगुणा विस्रसा परिणत सूक्ष्म पुद्गळ स्कंध आश्रित प्रत्येक वर्गणा जघन्य उत्कृष्ट छे.
२२ अनंती शून्य वर्गणा.
२३ बादर निगोदीया जीवना त्रण शरीर प्रदेशने आश्रित अनंता पुद्गळ स्कंध विस्रसा परिणत होय, तेनी पण एकेकाधिक प्रदेशे वधती अनंती वर्गणा जघन्यथी उत्कृष्ट पर्यंत असंख्याती छे.

२४ अनंती शून्य वर्गणा

२५ सूक्ष्म निगोदीया शरीरना एक प्रदेशी आश्रित विस्रसा परिणत अनंत पुद्गळ स्कंधनी वर्गणा जघन्य उत्कृष्ट

२६ अनंती शून्य वर्गणा

२७ मिश्र स्कधनी अनंती वर्गणा

२८ अचित्त महास्कंध ते पर्वत कुटादिने विस्रसा परिणामे आश्रित अनंत प्रदेशात्मक वर्गणा ते केवळीनी पेठे आठ सामयिक समुद्घात करे

---

## आठ कर्मनी उत्तर प्रकृतिनो उत्कृष्ट तथा जघन्य स्थितिबंध

### १ ज्ञानावरणीय ५

| उत्कृष्ट | जघन्य |
|---|---|
| पाचे ज्ञानावरणी | पाचे ज्ञानावरणी |
| त्रीश कोडाकोडी सागरोपम. | अंतर्मुहूर्त्त |

### २ दर्शनावरणीय ९

| उत्कृष्ट | जघन्य |
|---|---|
| ४ दर्शनावरणीय, त्रीश कोडाकोडी सागरोपम | ४ दर्शनावरणीय, अंतर्मुहूर्त्त |
| ५ निद्रा, त्रीश कोडाकोडी सागरोपम | ५ निद्रा, एक सागरोपमना सातैया त्रण भाग |

### ३ वेदनीय २

| उत्कृष्ट | जघन्य |
|---|---|
| १ साता, पदर कोडाकोडी सागरोपम | १ साता, बार मुहूर्त्त |
| १ असाता, त्रीश कोडाकोडी सागरोपम | १ असाता, एक सागरोपमना सातैया त्रण भाग |

### ४ मोहनीय २६

| उत्कृष्ट | जघन्य |
|---|---|
| १६ कषाय, चाळीश कोडाकोडी सागरोपम | १२ कषाय, एक सागरोपमना सातैया चार भाग |
| १ मिथ्यात्व, ७० कोडाकोडी सागरोपम | १ सज्वलन क्रोध, २ मास |
| २ हास्य, रति, १० कोडाकोडी सा० | १ संज्वलन मान, १ मास |
| ४ शोक, अरति, भय, दुगछा, २० कोडाकोडी सागरोपम | १ सज्वलन माया, १५ दिवस |
| | १ संज्वलन लोभ, अंतर्मुहूर्त्त |
| १ पुरुषवेद, १० कोडाकोडी सा० | १ मिथ्यात्व, १ सागरोपम |
| १ स्त्रीवेद, १५ कोडाकोडी सा० | २ हास्य, रति, सागरोपमनो सातैयो १ भाग |
| १ नपुंसकवेद, २० कोडाकोडी सा० | ४ शोक, अरति, भय, दुगछा, एक सागरोपमना सातैया बे भाग |
| | १ पुरुषवेद, आठ वर्ष |
| | १ स्त्रीवेद, १ सागरोपमना चौदीया ३ भाग. |
| | १ नपुसकवेद, १ सागरोपमना सातैया २ भाग. |

### ५ आयु कर्म ४

| उत्कृष्ट | जघन्य |
|---|---|
| २ नरकायु, देवायु, ३३ सागरोपम. | २ नरकायु, देवायु, दशहजार वर्ष |
| २ मनुष्यायु, तिर्यचायु, ३ पल्योपम | २ मनुष्यायु, तिर्यचायु, अतर्मुहूर्त्त |

## ६ नाम कर्म ९३.

### ( चार गति. )

| उत्कृष्ट. | जघन्य. |
|---|---|
| १ मनुष्यगति, १५ कोडाकोडी सागरोपम | १ मनुष्यगति एक सागरोपमना चौदीया त्रण भाग. |
| २ नरक तथा तिर्यंचगति, २० कोडाकोडी सागरोपम. | २ नरक तथा तिर्यंचगति, एक सागरोपमना सातैया वे भाग. |
| १ देवगति, १० कोडाकोडी सागरोपम. | १ देवगति, १ सागरोपमनो सातैयो१भाग. |

### ( पांच जाति. )

| उत्कृष्ट. | जघन्य. |
|---|---|
| १ एकेंद्रिय, २० कोडाकोडी सा०. | १ एकेंद्रिय, सागरोपमना सातैया वे भाग. |
| ३ विकलेंद्रिय, १८ कोडाकोडी सा०. | ३ विकलेंद्रिय, सागरोपमना पांत्रीशीया नव भाग. |
| १ पंचेंद्रिय, २० कोडाकोडी सा०. | १ पंचेंद्रिय, सागरोपमना सातैया वे भाग. |

### ( पांच शरीर, त्रण उपांग, पांच बंधन, पांच संघातन. )

| उत्कृष्ट. | जघन्य. |
|---|---|
| ४ औदारिक शरीर, उपांग, तथा संघातन, २० कोडाकोडी सा०. | ४ औदारिक शरीर, उपांग, बंधन, संघातन, १ सागरोपमना सातैया २ भाग. |
| ४ वैक्रिय शरीर, बंधन, उपांग तथा संघातन, २० कोडाकोडी सा०. | ४ वैक्रिय शरीर, बंधन, उपांग, संघातन, एक सागरोपमना सातैया वे भाग. |
| ४ आहारक चतुष्क, अंतः कोडाकोडी. | ४ आहारक चतुष्क, अंतर्मुहूर्त्त. |
| ६ तैजस तथा कार्मण शरीर, बंधन, संघातन, २० कोडाकोडी. | ६ तैजस तथा कार्मण शरीर, बंधन, संघातन, सागरोपमना सातैया वे भाग. |

### ( छ संघयण तथा छ संस्थान. )

| उत्कृष्ट. | जघन्य. |
|---|---|
| २ पहेलुं संघयण तथा संस्थान, दश कोडाकोडी. | २ पहेलुं संघयण तथा संस्थान, सागरोपमनो सातैयो एक भाग. |
| २ बीजुं संघयण तथा संस्थान, १२ कोडाकोडी. | २ बीजुं संघयण तथा संस्थान, सागरोपमना पांत्रीशीया छ भाग. |
| २ त्रीजुं संघयण तथा संस्थान, १४ कोडाकोडी. | २ त्रीजुं संघयण तथा संस्थान, सागरोपमना पांत्रीशीया सात भाग. |
| २ चोथुं संघयण तथा संस्थान, १६ कोडाकोडी. | २ चोथुं संघयण तथा संस्थान, सागरोपमना पांत्रीशीया आठ भाग. |
| २ पांचमुं संघयण तथा संस्थान, १८ कोडाकोडी. | २ पांचमुं संघयण तथा संस्थान, सागरोपमना पांत्रीशीया नव भाग. |
| २ छठ्ठुं संघयण तथा संस्थान, २० कोडाकोडी. | २ छठ्ठुं संघयण तथा संस्थान, सागरोपमना सातैया वे भाग. |

( वर्णादि वीश )

| | |
|---|---|
| ७ मृदु, लघु, स्निग्ध, उष्ण, सुरभिगंध, श्वेतवर्ण, मधुररस, १० कोडाकोडी | ७ मृदु, लघु, स्निग्ध, उष्ण, सुरभिगंध, श्वेतवर्ण, मधुररस, सागरोपमनो सातैयो एक भाग |
| २ हलिद्रवर्ण, आम्लरस, साडाबार कोडाकोडी | २ हलिद्रवर्ण, आम्लरस, सागरोपमना अठावीशीया पाच भाग |
| २ लोहितवर्ण, कषायरस, १५ कोडाकोडी | २ लोहितवर्ण, कषायरस, सागरोपमना अठावीशीया छ भाग |
| २ नीलवर्ण, कटुकरस, साडासतर कोडाकोडी सागरोपम | २ नीलवर्ण, कटुकरस, सागरोपमना अठावीशीया सात भाग |
| ७ कृष्णवर्ण, तिक्तरस, गुरुस्पर्श, कर्कश, रुक्ष, शीत, दुर्गंध, २० कोडाकोडी | ७ कृष्णवर्ण, तिक्तरस, गुरुस्पर्श, कर्कश, रुक्ष, शीत, दुरभिगंध, सागरोपमना सातैया बे भाग. |

( आनुपूर्वी चार )

| | |
|---|---|
| १ मनुष्यानुपूर्वी, १५ कोडाकोडी | १ मनुष्यानुपूर्वी, सागरोपमना चौदीया२भाग |
| १ देवानुपूर्वी, १० कोडाकोडी | १ देवानुपूर्वी, सागरोपमनो सातैयो १ भाग |
| २ तिर्यंच तथा नारकीनी आनुपूर्वी, २० कोडाकोडी | २ तिर्यंच तथा नारकीनी आनुपूर्वी, सागरोपमना सातैया बे भाग |

( विहायोगति २ )

| | |
|---|---|
| १ शुभ विहायोगति, १० कोडाकोडी. | १ शुभ विहायोगति, सागरोपमनो सातैयो एक भाग |
| १ अशुभ विहायोगति, २० कोडाकोडी. | १ अशुभ विहायोगति, सागरोपमना सातैया बे भाग |

( प्रत्येक प्रकृति ८ )

| | |
|---|---|
| ४ उच्छ्वास, उद्योत, आतप, पराघात, २० कोडाकोडी | ४ उच्छ्वास, उद्योत, आतप, पराघात, सागरोपमना सातैया बे भाग |
| ३ उपघात, अगुरुलघु, निर्माण, २० कोडाकोडी | ३ उपघात, अगुरुलघु, निर्माण, सागरोपमना सातैया बे भाग |
| १ तीर्थंकर नामकर्म, अतः कोडाकोडी | १ तीर्थंकर नामकर्म, दशहजार वर्ष |

( त्रस दशक )

| | |
|---|---|
| ४ त्रस, बादर, पर्याप्त, प्रत्येक, २० कोडाकोडी | ४ त्रस, बादर, पर्याप्त, प्रत्येक, सागरोपमना सातैया बे भाग |
| ६ स्थिरादि छ, १० कोडाकोडी | ६ स्थिरादि छ, सागरोपमनो सातैयो एक भाग परंतु जसनामनी आठ मुहूर्त्त |

| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ९ नंदीश्वरद्वीपे | ४६ | ० | १० | २ | २ | ० | २ | २ | २ | ६ | २० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० |
| १० तिरछालोके | ४२३ | ० | १० | २ | २ | २ | २ | २ | २ | ६ | २० | १५ | १५ | १५ | १६८ | ९० | ० | ० | ३२ | २० | २० | ० | ० | ० | ० | ० |
| ११ अधोलोके | ११५ | १४ | १० | २ | २ | २ | २ | २ | २ | ६ | २० | ३ | ० | ० | ० | ० | २० | ३० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० |
| १२ ऊर्ध्वलोके | १२२ | ० | १० | २ | २ | ० | २ | २ | २ | ६ | २० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ६ | २४ | १८ | १८ | १० |
| १३ मेरुपर्वते | ४८ | ० | १० | २ | २ | २ | २ | २ | २ | ६ | २० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० |
| १४ अढीद्वीपे | ३५१ | ० | १० | २ | २ | २ | २ | २ | २ | ६ | २० | १५ | १५ | १५ | १६८ | ९० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० |
| १५ बारदेवलोके | ६८ | ० | १० | २ | २ | ० | २ | २ | २ | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ६ | २४ | ० | १८ | ० |
| १६ नवग्रैवेयके | ३२ | ० | १० | २ | ० | ० | २ | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | १८ | ० | ० |
| १७ पांचअनुत्तरे | २४ | ० | १० | २ | ० | ० | २ | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | १० |
| १८ सिध्धशिलाए | १४ | ० | १० | २ | ० | ० | २ | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० |
| १९ लोकने छेडे | १२ | ० | १० | ० | ० | ० | २ | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० |
| २० अधोग्रामे | ५१ | ० | १० | २ | २ | २ | २ | २ | २ | ६ | २० | ० | ० | ३ | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० |
| २१ मुठीमां | १२ | ० | १० | ० | ० | ० | २ | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० |

| अजीव भेद ५६० | धर्मना ८(स्कंध,देश,प्रदेश,द्रव्य,क्षेत्र,काल,भाव,गुण). | | अधर्मना ८धर्मप्रमाणे. | | आकाशना ८ | | कालना ६ | | पुद्गलना ५३० | सर्वे भेद ५६० |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| भरत क्षेत्रे. | स्कंध विना | ७ | स्कंध विना | ७ | स्कंध विना | ७ | स्कंध तथा देश विना | ६ | ५३० | ५५७ |
| जंबूद्वीपे. | ,, | ७ | ,, | ७ | ,, | ७ | ,, | ६ | ५३० | ५५७ |
| लवण समुद्रे. | ,, | ७ | ,, | ७ | ,, | ७ | ,, | ६ | ५३० | ५५७ |
| नंदीश्वर द्वीपे. | ,, | ७ | ,, | ७ | ,, | ७ | ,, | ० | ५३० | ५५१ |

## अथ ६२ मार्गणा आश्री जीवना ५६३ भेदोनुं विवरण ।

| | | | |
|---|---|---|---|
| १ | देवगतिना भेद | १९८ | १० भुवनपति, १५ परमाधार्मिक १६ व्यन्तर, १० तिर्यग्जृंभक, १० ज्योतिषी, १२ देवलोक, ३ किल्बिषी, ९ लोकान्तिक, ९ ग्रैवेयक, ५ अनुत्तरविमान । ए ९९ पर्याप्ता, तथा ए ज ९९ अपर्याप्ता मळीने सर्व भेद १९८ छे |
| २ | मनुष्यगतिना भेद अढीद्वीपना मळीने | ३०३ | १५ कर्मभूमिना—५ भरत, ५ ऐरवत, अने ५ महाविदेह<br>३० अकर्मभूमिना—५ हैमवत, ५ ऐरण्यवत, ५ हरिवंश, ५ रम्यक, ५ देवकुरु, ५ उत्तरकुरु ( आ त्रीश क्षेत्र युगलीयाना छे )<br>५६ अतरद्वीप—जंबुद्वीपना हिमवंत तथा शिखरी ए बे पर्वतनी चार चार दाढाओ लवणसमुद्रमा पडे छे, ते एकेकी दाढा उपर सात सात अतरद्वीप छे, तेथी आठे दाढाओना मळीने ५६ अतरद्वीप ।<br>१०१ गर्भज पर्याप्ता, १०१ गर्भज अपर्याप्ता, १०१ संमूर्छिम अपर्याप्ता ( चौद स्थानकना )<br>कुल मळीने ३०३ |
| ३ | तिर्यंगतिना भेद | ४८ | २० तिर्यक्पञ्चेन्द्रियना, तेमा—४ जलचर—गर्भज अने संमूर्छिम ए बे पर्याप्ता तथा अपर्याप्ता<br>४ स्थलचर— ,, ,, ,, ,,<br>४ खेचर— ,, ,, ,, ,,<br>४ उरपरिसर्प—,, ,, ,, ,,<br>४ भुजपरिसर्प—,, ,, ,, ,, |

| | | | |
|---|---|---|---|
| | | | ६ विकलेन्द्रियना, तेमा—द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय ए ३ पर्याप्ता तथा ए ज ३ अपर्याप्ता ।<br>२२ एकेन्द्रियना, तेमां—पृथ्वीकायना सूक्ष्म अने बादर ए बे पर्याप्ता तथा एज बे अपर्याप्ता मळीने चार थया । तेवीज रीते ४ अप्कायना, ४ तेउकायना अने चार वायुकायना, सर्वे मळी १६ थया ।<br>वनस्पतिकायना ६, तेमां—४ साधारण वनस्पति सूक्ष्म तथा बादर. ए बे पर्याप्ता तथा अपर्याप्ता.<br>२ प्रत्येक वनस्पति पर्याप्ता तथा अपर्याप्ता ।<br>४८ |
| ४ | नरकगतिना भेद. | १४ | ७ नरक—१ रत्नप्रभा, २ शर्करप्रभा, ३ वालुकप्रभा, ४ पंकप्रभा, ५ धूमप्रभा, ६ तमःप्रभा, ७ तमस्तमःप्रभा, ए सात पर्याप्ता तथा ए ज सात अपर्याप्ता मळीने १४ भेद छे. |
| | | | **आ रीते चार गतिना मळीने ५६३ भेद जाणवा.** |

अथ बासठ (६२) मार्गणाए जीवना केटला केटला भेद पमाय ? ते कहे छे.

बासठ मार्गणा आप्रमाणे—

४ गतिनी मार्गणा.
५ इन्द्रियोनी ,,
६ कायनी ,,
३ योगनी ,,
३ वेदनी ,,
४ कषायनी ,,

८ ज्ञाननी मार्गणा.
७ संयमनी ,,
४ दर्शननी ,,
६ लेश्यानी ,,
२ भव्यनी ,,
६ सम्यक्त्वनी ,,

२ संज्ञीनी मार्गणा.
२ आहारीनी ,,

६२

ए रीते ६२ मार्गणामांनी प्रत्येक मार्गणाए जीवना भेद केटला पामे ? ते कहे छे—

# अथ ६२ मार्गणानुं विवरण.

| | मागणाना नाम | जीवना भेदनी सख्या | देवगति | मनुष्यगति | तिर्यग्गति | नरकगति. |
|---|---|---|---|---|---|---|
| १ | देवगतिनी मार्गणा | १९८ | १० भुवनपति, १५ परमाधार्मिक, १६ व्यतर, १० तिर्यग् जृभक, १० ज्योतिषि, १२ देवलोक, ३ किल्विषी, ९ लोकातिक, ९ ग्रैवेयक, ५ अनुत्तरविमान, सर्वमली ९९ पर्यासा तथा ९९ अपर्यासा | ० | ० | ० |
| २ | मनुष्यगतिनी मागणा | ३०३ | ० | १०१ गर्भजपर्यासा, १०१ गर्भज अपर्यासा, १०१ समूर्छिममनुष्य | ० | ० |
| ३ | तियग्गतिनी मार्गणा | ४८ | ० | ० | २२ एकेन्द्रिय पर्यासा अपयासा ६ विक्लेन्द्रिय पर्यासा अपर्यासा २० तिर्यक् पचेन्द्रिय गभज समूछिम पर्यासा अपर्यासा | ० |
| ४ | नारकीनी मार्गणा | १४ | ० | ० | | ७ पर्यासा ७ अपर्यासा |
| ५ | एकेंद्रियनी मार्गणा | २२ | ० | ० | ४ पृथ्वीकाय, ४ अप्काय, ४ वायुकाय, ४ तेजस्काय, ६ वनस्पतिकाय | ० |
| ६ | द्वीन्द्रियनी मार्गणा | २ | ० | ० | द्वींद्रिय पर्यासा तथा अपर्यासा | ० |
| ७ | त्रीन्द्रियनी मागणा | २ | ० | ० | त्रीन्द्रिय पर्यासा तथा अपर्यासा | ० |
| ८ | चतुरिन्द्रियनी मागणा | २ | ० | ० | चतुरिन्द्रिय पर्यासा तथा अपर्यासा | ० |
| ९ | पचेन्द्रियनी मार्गणा | ५३५ | ९९ पयासा, ९९ अपर्यासा | १०१ गर्भजपर्यासा, १०१ गर्भज-अपर्यासा, १०१ समूर्छिम मनुष्य | २० तिर्यक् पचेंद्रिय पर्यासा तथा अपर्यासा | ७ पर्यासा, ७ अपर्यासा |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| १० | पृथ्वीकायनी मार्गणा. | ४ | ० | ० | २ सूक्ष्म पर्याप्ता अपर्याप्ता.<br>२ बादर पर्याप्ता अपर्याप्ता. | ० |
| ११ | अप्कायनी मार्गणा. | ४ | ० | ० | २ अप्काय सूक्ष्म पर्याप्ता अपर्याप्ता.<br>२ अप्काय बादर पर्याप्ता अपर्याप्ता. | ० |
| १२ | तेजस्कायनी मार्गणा. | ४ | ० | ० | २ तेजस्काय सूक्ष्म पर्याप्ता अपर्याप्ता.<br>२ तेजस्काय बादर पर्याप्ता अपर्याप्ता. | ० |
| १३ | वायुकायनी मार्गणा. | ४ | ० | ० | २ वायुकाय सूक्ष्म पर्याप्ता अपर्याप्ता.<br>२ वायुकाय बादर पर्याप्ता अपर्याप्ता. | ० |
| १४ | वनस्पतिकायनी मार्गणा. | ६ | ० | ० | २ साधारण वनस्पति सूक्ष्म पर्याप्ता अपर्याप्ता.<br>२ साधारण वनस्पति बादर पर्याप्ता अपर्याप्ता.<br>२ प्रत्येक वनस्पति पर्याप्ता अपर्याप्ता. | ० |
| १५ | त्रसकायनी मार्गणा. | ५४१ | ९९ पर्याप्ता, ९९ अपर्याप्ता. | १०१ गर्भज पर्याप्ता, १०१ गर्भज अपर्याप्ता, १०१ संमूर्छिम मनुष्य. | २० तिर्यक् पंचेंद्रिय पर्याप्ताअपर्याप्ता.<br>६ विकलेंद्रिय पर्याप्ता अपर्याप्ता. | ७ पर्याप्ता, ७ अपर्याप्ता. |
| १६ | मनयोगनी मार्गणा. | २१२ | ९९ देवता पर्याप्ता. | १०१ गर्भजमनुष्य पर्याप्ता. | ५ गर्भज तिर्यंच पंचेंद्रिय पर्याप्ता. | ७ नारकी पर्याप्ता. |
| १७ | वचनयोगनी मार्गणा. | २२० | ९९ देवता पर्याप्ता. | १०१ गर्भजमनुष्य पर्याप्ता. | ५ तिर्यक् पंचेंद्रिय गर्भज पर्याप्ता, ५ तिर्यक् पंचेन्द्रिय संमूर्छिम पर्याप्ता, ३ विकलेंद्रिय पर्याप्ता. | ७ नारकी पर्याप्ता. |
| १८ | काययोगनी मार्गणा. | ५६३ | ९९ पर्याप्ता, ९९ अपर्याप्ता. | १०१ गर्भज पर्याप्ता, १०१ गर्भज अपर्याप्ता, १०१ संमूर्छिम मनुष्य. | २२ एकेंद्रिय पर्याप्ता अपर्याप्ता,<br>६ विकलेंद्रिय पर्याप्ता अपर्याप्ता,<br>२० तिर्यक् पंचेंद्रिय पर्याप्ता अपर्याप्ता. | ७ पर्याप्ता, ७ अपर्याप्ता. |
| १९ | स्त्रीवेदनी मार्गणा. | ३४० | १० भुवनपति, १५ परमाधार्मिक, १६ व्यंतर, १० तिर्यग् जृंभक, १० ज्योतिषि, २ देवलोक पहेलुं तथा वीजुं, १ किल्विषी, १ सर्व मली ६४ पर्याप्ता तथा ६४ अपर्याप्ता कुल १२८. | १०१ गर्भज पर्याप्ता, १०१ गर्भज अपर्याप्ता. | १० गर्भज पर्याप्ता अपर्याप्ता. | ० |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| २० | पुरुषवेदनी मार्गणा | ४१० | ९९ पर्याप्ता, ९९ अपर्याप्ता | १०१ गर्भज पर्याप्ता, १०१ गर्भज अपर्याप्ता | १० गर्भज तिर्यक् पचेंद्रिय पर्याप्ता अपर्याप्ता | ० |
| २१ | नपुंसकवेदनी मार्गणा | १९३ | ० | ३० कर्मभूमिमां गर्भज पर्याप्ता अपर्याप्ता, १०१ समूर्छिम मनुष्य अपर्याप्ता | २२ एकेंद्रिय पर्याप्ता अपर्याप्ता, ६ विकलेंद्रिय पर्याप्ता अपर्याप्ता, २० तिर्यक् पचेंद्रिय पर्याप्ता अपर्याप्ता | ७ पर्याप्ता, ७ अपर्याप्ता |
| २२ | क्रोधनी मार्गणा | ५६३ | ९९ पर्याप्ता, ९९ अपर्याप्ता | १०१ गर्भज पर्याप्ता, १०१ गर्भज अपर्याप्ता, १०१ समूर्छिम मनुष्य | २२ एकेंद्रिय पर्याप्ता अपर्याप्ता, ६ विकलेंद्रिय पर्याप्ता अपर्याप्ता, २० तिर्यक् पचेंद्रिय पर्याप्ता अपर्याप्ता | ७ पर्याप्ता, ७ अपर्याप्ता |
| २३ | माननी मार्गणा | ५६३ | ९९ पर्याप्ता, ९९ अपर्याप्ता | १०१ गर्भज पर्याप्ता, १०१ गर्भज अपर्याप्ता, १०१ समूर्छिम मनुष्य | २२ एकेंद्रिय पर्याप्ता अपर्याप्ता, ६ विकलेंद्रिय पर्याप्ता अपर्याप्ता, २० तिर्यक् पचेंद्रिय पर्याप्ता अपर्याप्ता | ७ पर्याप्ता, ७ अपर्याप्ता |
| २४ | मायानी मार्गणा | ५६३ | ९९ पर्याप्ता, ९९ अपर्याप्ता | १०१ गर्भज पर्याप्ता, १०१ गर्भज अपर्याप्ता, १०१ समूर्छिम मनुष्य | २२ एकेंद्रिय पर्याप्ता अपर्याप्ता, ६ विकलेंद्रिय पर्याप्ता अपर्याप्ता, २० तिर्यक् पचेंद्रिय पर्याप्ता अपर्याप्ता | ७ पर्याप्ता, ७ अपर्याप्ता |
| २५ | लोभनी मार्गणा | ५६३ | ९९ पर्याप्ता, ९९ अपर्याप्ता | १०१ गर्भज पर्याप्ता, १०१ गर्भज अपर्याप्ता, १०१ समूर्छिम मनुष्य | २२ एकेंद्रिय पर्याप्ता अपर्याप्ता, ६ विकलेंद्रिय पर्याप्ता अपर्याप्ता, २० तिर्यक् पचेंद्रिय पर्याप्ता अपर्याप्ता | ७ पर्याप्ता, ७ अपर्याप्ता |
| २६ | मतिज्ञाननी मार्गणा | ४२३ | ९९ पर्याप्ता, ९९ अपर्याप्ता ( पर माधार्मिक पूर्वसंगतिक्देवताने कारणे समकित पामे छे ) | १०१ गर्भज पर्याप्ता, १०१ गर्भज अपर्याप्ता (सञ्ज्ञी) (सञ्ज्ञी) | १० गर्भज तिर्यंच पचेंद्रिय पर्याप्ता अपर्याप्ता सञ्ज्ञी | ७ पर्याप्ता, ६ अपर्याप्ता एटले सातमी नरकनो अपर्याप्ता समकित पामे नहि |
| २७ | श्रुतज्ञाननी मार्गणा | ४२३ | ९९ पर्याप्ता, ९९ अपर्याप्ता | १०१ गर्भज पर्याप्ता, १०१ गर्भज अपर्याप्ता | १० गर्भज तिर्यंच पचेंद्रिय पर्याप्ता अपर्याप्ता | ७ पर्याप्ता, ६ अपर्याप्ता एटले सातमी नरकनो उपर प्रमाणे नहि |
| २८ | अवधिज्ञाननी मार्गणा | २४६ अथवा २५१ | ९९ पर्याप्ता, ९९ अपर्याप्ता | १५ कर्मभूमिना गर्भज पर्याप्ता १५ कर्मभूमिना गर्भज अपर्याप्ता | ५ गर्भज तिर्यंच पचेंद्रिय पर्याप्ता, अथवा ५ गर्भज तिर्यंच पचेंद्रिय अपर्याप्ता मळीने १० | ७ पर्याप्ता, ६ अपर्याप्ता उपर प्रमाणे |
| २९ | मनपर्यवज्ञाननी मार्गणा | १५ | ० | १५ कर्मभूमिना गर्भज पर्याप्ता | ० | ० |
| ३० | केवलज्ञाननी मार्गणा | १५ | ० | १५ कर्मभूमिना गर्भज पर्याप्ता | ० | ० |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| ३१ | मतिअज्ञाननी मार्गणा. | ५३५ | १० भुवनपति, १५ परमाधार्मिक, १० तिर्यग् जृंभक, १६ व्यंतर, १० ज्योतिषी, १२ देवलोक, ३ किल्विषी, ९ ग्रैवेयक. सर्वे मली ८५ पर्याप्ता तथा ८५ अपर्याप्ता कुल १७०. | १०१ गर्भज पर्याप्ता, १०१ गर्भज अपर्याप्ता, १०१ संमूर्छिम मनुष्य. | २२ एकेंद्रिय पर्याप्ता अपर्याप्ता, ६ विकलेंद्रिय पर्याप्ता अपर्याप्ता, २०तिर्यक्पंचेंद्रिय पर्याप्ता अपर्याप्ता. | ७ पर्याप्ता, ७ अपर्याप्ता. |
| ३२ | श्रुतअज्ञाननी मार्गणा. | ५३५ | १० भुवनपति, १५ परमाधार्मिक, १६ व्यंतर, १० तिर्यग् जृंभक, १० ज्योतिषी, १२ देवलोक, ३ किल्विषी, ९ ग्रैवेयक. सर्वेमली ८५ पर्याप्ता अने ८५ अपर्याप्ता. कुल १७०. | १०१ गर्भज पर्याप्ता, १०१ गर्भज अपर्याप्ता, १०१ संमूर्छिम मनुष्य. | २२ एकेंद्रिय पर्याप्ता अपर्याप्ता, ६ विकलेंद्रिय पर्याप्ता अपर्याप्ता, २०तिर्यक् पंचेंद्रिय पर्याप्ता अपर्याप्ता. | ७ पर्याप्ता, ७ अपर्याप्ता. |
| ३३ | विभंगज्ञाननी मार्गणा. | २०४ अथवा २२४ | १० भुवनपति, १५ परमाधार्मिक, १६ व्यंतर, १० तिर्यग् जृंभक, १० ज्योतिषी, १२ देवलोक, ३ किल्विषी, ९ ग्रैवेयक. सर्वेमली ८५ पर्याप्ता अने ८५ अपर्याप्ता. कुल १७०. | १५ कर्मभूमिना गर्भज पर्याप्ता. अथवा १५ कर्मभूमिना गर्भज पर्याप्ता तथा १५ कर्मभूमिना गर्भज अपर्याप्ता मली ३०. | ५ गर्भज तिर्यंच पंचेंद्रिय पर्याप्ता. अथवा ५ गर्भज तिर्यंच पंचेंद्रिय पर्याप्ता तथा ५ गर्भज तिर्यंच पंचेंद्रिय अपर्याप्ता मलीने १०. | ७ पर्याप्ता, ७ अपर्याप्ता. |
| ३४ | सामायिक चारित्रनी मार्गणा. | १५ | ० | १५कर्मभूमिना गर्भज मनुष्य पर्याप्ता | ० | ० |
| ३५ | छेदोपस्थापनिक चारित्रनी मार्गणा. | १० | ० | ५ भरत अने ५ ऐरवतना गर्भज मनुष्य पर्याप्ता. | ० | ० |
| ३६ | परिहारविशुद्धि चारित्रनी मार्गणा. | १० | ० | ५ भरत तथा ५ ऐरवतना गर्भज मनुष्य पर्याप्ता. | ० | ० |
| ३७ | सूक्ष्मसंपराय चारित्रनी मार्गणा. | १५ | ० | १५कर्मभूमिना गर्भज मनुष्य पर्याप्ता. | ० | ० |
| ३८ | यथाख्यात चारित्रनी मार्गणा. | १५ | ० | १५कर्मभूमिना गर्भज मनुष्य पर्याप्ता. | ० | ० |
| ३९ | देशविरति चारित्रनी मार्गणा. | २० | ० | १५कर्मभूमिना गर्भज मनुष्य पर्याप्ता. | ५ गर्भज तिर्यक् पंचेंद्रिय पर्याप्ता. | ० |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| ४० | अविरति चारित्रनी मार्गणा | ५६३ | ९९ पर्याप्ता, ९९ अपर्याप्ता | १०१ गर्भज मनुष्य पर्याप्ता, १०१ गर्भज मनुष्य अपर्याप्ता, १०१ समूर्छिम मनुष्य | २२ एकेंद्रिय पर्याप्ता अपर्याप्ता ६ विकलेंद्रिय पर्याप्ता अपर्याप्ता, २०तिर्यक् पचेंद्रिय पर्याप्ता अपर्याप्ता | ७ पर्याप्ता, ७ अपर्याप्ता |
| ४१ | अचक्षुर्दर्शननी मार्गणा | ५६३ | ९९ पर्याप्ता, ९९ अपर्याप्ता | १०१ गर्भज मनुष्य पर्याप्ता, १०१ गर्भज मनुष्य अपर्याप्ता, १०१ समूर्छिम मनुष्य | २२ एकेंद्रिय पर्याप्ता अपर्याप्ता, ६ विकलेंद्रिय पर्याप्ता अपर्याप्ता, २०तिर्यक् पचेंद्रिय पर्याप्ता अपर्याप्ता | ७ पर्याप्ता, ७ अपर्याप्ता |
| ४२ | चक्षुदर्शननी मार्गणा | २१८ | ९९ पर्याप्ता | १०१ गर्भज मनुष्य पर्याप्ता | १० गर्भज समूर्छिम पर्याप्ता, १ चतुरिंद्रिय पर्याप्ता | ७ पर्याप्ता |
| ४३ | अवधिदर्शननी मार्गणा | २४६ अथवा २५१ | ९९ पर्याप्ता, ९९ अपर्याप्ता | ३० कर्मभूमिना गर्भज पर्याप्ता अपर्याप्ता | ५ तिर्यक् पचेंद्रिय गर्भज पर्याप्ता अथवा ५ तिर्यक् पचेंद्रिय गर्भज पर्याप्ता अने ५ अपर्याप्ता | ७ पर्याप्ता, ६ अपर्याप्ता |
| ४४ | केवलदर्शननी मार्गणा | १५ | ० | १५कर्मभूमिना गर्भज मनुष्य पर्याप्ता | ० | ० |
| ४५ | कृष्णलेश्यानी मार्गणा | ४५९ | १० भुवनपति, १५ परमाधार्मिक, १६ व्यंतर, १० तिर्यग् जृंभक सर्वमली ५१ पर्याप्ता अने ५१ अपर्याप्ता कुल १०२ | १०१ गर्भज मनुष्य पर्याप्ता, १०१ गर्भज मनुष्य अपर्याप्ता, १०१ समूर्छिम मनुष्य | २२ एकेंद्रिय पर्याप्ता अपर्याप्ता, ६ विकलेंद्रिय पर्याप्ता अपर्याप्ता, २०तिर्यक् पचेंद्रिय पर्याप्ता अपर्याप्ता | ६ सातमी, छठ्ठी अने पांचमीना पर्याप्ता तथा अपर्याप्ता |
| ४६ | नीललेश्यानी मार्गणा | ४२९ अथवा ४५९ | १० भुवनपति, १६ व्यंतर, १० तिर्यग् जृंभक ए ३६ पर्याप्ता तथा एज ३६ अपर्याप्ता कुल ७२ अथवा १५ परमाधार्मिक पर्याप्ता तथा १५अपर्याप्ता मली १०२ | १०१ गर्भज मनुष्य पर्याप्ता, १०१ गर्भज मनुष्य अपर्याप्ता, १०१ समूर्छिम मनुष्य | २२ एकेंद्रिय पर्याप्ता अपर्याप्ता, ६ विकलेंद्रिय पर्याप्ता अपर्याप्ता, २०तिर्यक् पचेंद्रिय पर्याप्ता अपर्याप्ता | ६ पांचमी, चोथी अने त्रीजीना पर्याप्ता तथा अपर्याप्ता |
| ४७ | कापोतलेश्यानी मार्गणा | ४२९ अथवा ४५९ | १० भुवनपति, १६ व्यंतर, १० तिर्यग् जृंभक ए ३६ पर्याप्ता तथा एज ३६ अपर्याप्ता कुल ७२ अथवा १५ परमाधार्मिक पर्याप्ता तथा १५ अपर्याप्ता मली १०२ | १०१ गर्भज मनुष्य पर्याप्ता, १०१ गर्भज मनुष्य अपर्याप्ता, १०१ समूर्छिम मनुष्य | २२ एकेंद्रिय पर्याप्ता अपर्याप्ता, ६ विकलेंद्रिय पर्याप्ता अपर्याप्ता, २०तिर्यक् पचेंद्रिय पर्याप्ता अपर्याप्ता | ६ त्रीजी, बीजी अने पहेलीना पर्याप्ता तथा अपर्याप्ता |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| ४८ | तेजोलेश्यानी मार्गणा. | ३१३ | १० भुवनपति, १६ व्यंतर, १० तिर्यग् जूंभक, १० ज्योतिषि, २ देवलोक (पहेला), १ किल्बिषी. ए ४९ पर्याप्ता तथा एज ४९ अपर्याप्ता मली. ९८. | १०१ गर्भज मनुष्य पर्याप्ता, १०१ गर्भज मनुष्य अपर्याप्ता. | १० गर्भज तिर्यक् पंचेंद्रिय पर्याप्ता अपर्याप्ता, ३ पृथ्वीकाय अप्काय प्रत्येक वनस्पतिकाय ए त्रण बादर अपर्याप्ता. | ० |
| ४९ | पद्मलेश्यानी मार्गणा. | ६६ | ३ त्रीजुं, चोथुं, पाचमुं देवलोक, १ किल्बिषी, ९ लोकांतिक. ए १३ पर्याप्ता तथा एज १३ अपर्याप्ता मली. २६. | १५ कर्मभूमिना गर्भज मनुष्य पर्याप्ता, १५ कर्मभूमिना गर्भज मनुष्य अपर्याप्ता, ए मलीने.३०. | १० गर्भज तिर्यक् पंचेंद्रिय पर्याप्ता अपर्याप्ता. | ० |
| ५० | शुक्लेश्यानी मार्गणा. | ८४ | ७ छट्ठाथी बारमा सुधी सात देवलोक, १ किल्बिषी, ९ ग्रैवेयक, ५ अनुत्तर विमान, ए २२ पर्याप्ता तथा एज २२ अपर्याप्ता मली ४४. | ३० पंदर कर्मभूमिना मनुष्य पर्याप्ता तथा पंदर अपर्याप्ता. | १० गर्भज तिर्यक् पंचेंद्रिय पर्याप्ता अपर्याप्ता. | ० |
| ५१ | भव्यनी मार्गणा. | ५६३ | ९९ पर्याप्ता, ९९ अपर्याप्ता. | १०१ गर्भज मनुष्य पर्याप्ता, १०१ गर्भज मनुष्य अपर्याप्ता, १०१ संमूर्छिम मनुष्य. | २२ एकेंद्रिय पर्याप्ता अपर्याप्ता, ६ विकलेंद्रिय पर्याप्ता अपर्याप्ता, २० तिर्यक् पंचेंद्रिय गर्भज संमूर्छिम पर्याप्ता अपर्याप्ता. | ७ पर्याप्ता, ७ अपर्याप्ता. |
| ५२ | अभव्यनी मार्गणा. | ३३३ अथवा ५३५ अथवा ५०५ | १० भुवनपति, १६ व्यंतर, १० तिर्यग् जूंभक, १० ज्योतिषी, १२ देवलोक, ३ किल्बिषी, ९ ग्रैवेयक. ए ७० पर्याप्ता तथा एज ७० अपर्याप्ता मली १४०. अथवा परमाधार्मिक १५ पर्याप्ता अने १५ अपर्याप्ता मली १७०. | १०१ संमूर्छिम मनुष्य, ३० कर्मभूमिना पर्याप्ता अपर्याप्ता गर्भज मनुष्य. ए मली १३१. अथवा ६० अकर्मभूमिना गर्भज मनुष्य पर्याप्ता अपर्याप्ता, तथा ११२ अंतरद्वीपना गर्भज मनुष्य पर्याप्ता. ए सर्व मली ३०३. | २२ एकेंद्रिय पर्याप्ता अपर्याप्ता, ६ विकलेंद्रिय पर्याप्ता अपर्याप्ता, २० तिर्यक् पंचेंद्रिय गर्भज संमूर्छिम पर्याप्ता अपर्याप्ता. | ७ पर्याप्ता, ७ अपर्याप्ता. |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| ५३ | उपशमसमकितनी मागणा | २०२ | १० भुवनपति, १५ परमाधामिक, १६ व्यतर, १० तियग् जृंभक, १० ज्योतिषी, १२ देवलोक, ३ किल्विषी, ९ ग्रैवेयक ए ८५ पयाप्ता तथा ५ अनुत्तर विमान अपर्याप्ता मली ९० | १०१ गर्भज मनुष्य पर्याप्ता | ५ तिर्यंक पर्चद्रिय गर्भज पर्याप्ता | ७ पर्याप्ता |
| ५४ | क्षयोपशमसमकितनी मागणा | ४२३ | ९९ पयाप्ता, ९९ अपर्याप्ता | १०१ गभज मनुष्य पर्याप्ता, १०१ गभन मनुष्य अपयाप्ता | १० तिर्यक् पचद्रिय गभज पयाप्ता अपयाप्ता | ७ पर्याप्ता, ६ अपर्याप्ता ( सातमीना नहि ) |
| ५५ | क्षायिकसमकितनी मागणा | १६८ | १२ देवलोक, ९ लोकातिक, ९ ग्रैवेयक, ५ अनुत्तर विमान ए ३५ पर्याप्ता तथा ३५ अपयाप्ता मलीने ७० | ३० कर्मभूमिना गभन मनुष्य पर्याप्ता अपयाप्ता, ६० अकमभूमिना गर्भज मनुष्य पयाप्ता अपर्याप्ता मलीने ९० | २ तिर्यक् पचद्रिय गभज चतुष्पद युगलिया पयाप्ता अपर्याप्ता | ६ पहेली, बीजी, त्रीजीना पर्याप्ता तथा अपर्याप्ता |
| ५६ | मिश्रसमकितना मागणा | १९८ | १० भुवनपति, १५ परमाधामिक, १६ व्यतर, १० तियग् जृंभक, १० ज्योतिषी, १२ देवलोक, ३ किल्विषी, ९ ग्रैवेयक ए ८५ पयाप्ता | १०१ गभन मनुष्य पयाप्ता | ५ तिर्यक् पचद्रिय गभन पर्याप्ता | ७ पर्याप्ता |
| ५७ | सास्वादनसमकितनी मागणा | ४०० | १० भुवनपति, १५ परमाधार्मिक, १६ व्यतर, १० तियग् जृंभक, १० ज्योतिषी, १२ देवलोक, ३ किल्विषी, ९ ग्रैवेयक ए ८५ पयाप्ता, तथा ८५ अपयाप्ता मली १७० | १०१ गर्भज मनुष्य पर्याप्ता, १०१ गभन मनुष्य अपयाप्ता | १० तियक् पचद्रिय गभज पयाप्ता अपयाप्ता, ५ तियक् पर्चद्रिय समूर्छिम अपर्याप्ता, ३ विकलेंद्रिय अपर्याप्ता, ३ पृथ्वी, अप् प्रत्येकवनस्पति ए त्रण बादर अपयाप्ता कुल २१ | ७ पर्याप्ता |
| ५८ | मिथ्यात्वसमकितनी मागणा | ५३५ | १० भुवनपति, १५ परमाधामिक, १६ व्यतर, १० तियग जृंभक, १० ज्योतिषी, १२ देवलोक, ३ किल्विषी, ९ ग्रैवेयक ए ८५ पर्याप्ता तथा ८५ अपयाप्ता | १०१ गभन मनुष्य पर्याप्ता, १०१ गभज मनुष्य अपयाप्ता, १०१ समूर्छिम मनुष्य | २२ एकेंद्रिय पर्याप्ता अपर्याप्ता, ६ विकलेंद्रिय पर्याप्ता अपयाप्ता, २० तिर्यक् पचेंद्रिय पर्याप्ता अपयाप्ता कुल ४८ | ७ पर्याप्ता, ७ अपर्याप्ता |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| ५९ | संज्ञीनी मार्गणा. | ४२४ | ९९ पर्याप्ता, ९९ अपर्याप्ता. | १०१ गर्भज मनुष्य पर्याप्ता, १०१ गर्भज मनुष्य अपर्याप्ता. | १० तिर्यक् पंचेंद्रिय गर्भज पर्याप्ता अपर्याप्ता. | ७ पर्याप्ता, ७ अपर्याप्ता. |
| ६० | असंज्ञीनी मार्गणा. | १३९ | ० | १०१ संमूर्छिम मनुष्य. | १० तिर्यक् पंचेंद्रिय संमूर्छिम पर्याप्ता अपर्याप्ता, ६ विकलेंद्रिय पर्याप्ता अपर्याप्ता, २२ एकेंद्रिय पर्याप्ता अपर्याप्ता. | ० |
| ६१ | आहारीनी मार्गणा. | ५६३ | ९९ पर्याप्ता, ९९ अपर्याप्ता. | १०१ गर्भज मनुष्य पर्याप्ता, १०१ गर्भज मनुष्य अपर्याप्ता, १०१ संमूर्छिम मनुष्य. | २२ एकेंद्रिय पर्याप्ता अपर्याप्ता, ६ विकलेंद्रिय पर्याप्ता अपर्याप्ता, २० तिर्यक् पंचेंद्रिय पर्याप्ता अपर्याप्ता. | ७ पर्याप्ता, ७ अपर्याप्ता. |
| ६२ | *अनाहारीनी मार्गणा. | ३४७ | ९९ अपर्याप्ता. | १०१ गर्भज मनुष्य अपर्याप्ता, १०१ संमूर्छिम मनुष्य, १५ कर्मभूमिना गर्भज मनुष्य पर्याप्ता. | ११ एकेंद्रिय अपर्याप्ता, ३ विकलेंद्रिय अपर्याप्ता, १० तिर्यक् पंचेंद्रिय अपर्याप्ता. | ७ अपर्याप्ता. |

* जीव मरीने चव्या पछी जे ठेकाणे अवतार ले छे, ते ठेकाणे पहोंच्या पहेलां एटले आहारपर्याप्ति बांध्या पहेलां वचमां उत्कृष्ट ३–४ समयसुधी अनाहारी रहे छे, ते उपर लख्या अपर्याप्ता० । अने केवली समुद्घात करे छे, ते वखत (३) समय अनाहारी रहे छे, ते उपर लख्या कर्मभूमिना गर्भज पर्याप्ता जाणवा.

## ८३ बोलनी गतागति.

| धीगीतमस्वामिनेनम । गति आगति विषे | १ नारकी भेद १४ तेमां ७ पर्याप्ता, ७ अपर्याप्ता | २ पृथ्वीकाय ४, अप्काय ४, वनस्पतिकायना भेद ६ ते पर्याप्ता अपर्याप्ता एवीने थयेला १४ | ३ तेजस्काय ४, वायुकाय ४ पर्याप्ता अपर्याप्ता मळीने थयेला भेद ८ | ४ विकलेंद्रिय पर्याप्ता अपर्याप्ता मळीने भेद ६ | ५ जळचरादि समूर्छिम तिर्यंच पर्याप्ता अपर्याप्ता मळीने भेद १० | ६ जळचरादि गर्भज तिर्यंच पर्याप्ता अपर्याप्ता मळीने भेद १० | ७ मनुष्य गर्भज पंदर कर्मभूमिना पर्याप्ता अपर्याप्ता मळीने ३० | ८ मनुष्य संमूर्छिम अपर्याप्ताना भेद १०१ | ९ ३० अकर्मभूमिना गर्भज मनुष्य पर्याप्ता अपर्याप्ता मळीने भेद ६० | १० ५६ अंतर्द्वीपना गर्भज मनुष्य पर्याप्ता अपर्याप्ता मळीने भेद ११२ | ११ १० भवनपति, १५ परमाधार्मिक पर्याप्ता अपर्याप्ता मळीने भेद ५० | १२ १६ व्यंतर, १० तिर्यग्जृंभक पर्याप्ता अपर्याप्ता मळीने भेद ५२ | १३ १० ज्योतिषी, १ किल्बिषी, १ देवलोक, पर्याप्ता अपर्याप्ता मळी भेद २४ | १४ इशान देवलोक पर्याप्ता अपर्याप्ता मळी भेद २ | १५ त्रीजा देवलोकथी ८ मा देवलोक सुधी ६, ९ लोकांतिक, २ किल्बिषी पर्याप्ता अपर्याप्ता मळी भेद ३४ | १६ छठ्ठा ४ देवलोक, ९ ग्रैवेयक, पर्याप्ता अपर्याप्ता मळी भेद २६ | १७ ५ अनुत्तर पर्याप्ता अपर्याप्ता मळी भेद १० | १८ सर्व आगति ३७१ | १९ सर्व गति भेद ५६३ |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १ रत्नप्रभा आगति (रत्नप्रभामां परभवथी आवयु ते) | ० | ० | ० | ० | ५ | ५ | १५ | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | २५ | ० |
| २ रत्नप्रभा गति (रत्नप्रभामांथी परभवमां जायु ते) | ० | ० | ० | ० | ० | ५ | १५ | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | २० |
| ३ शर्कराप्रभा आगति | ० | ० | ० | ० | ० | ५ | १५ | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | २० | ० |
| ४ शर्कराप्रभा गति | ० | ० | ० | ० | ० | ५ | १५ | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | २० |
| ५ वालुकाप्रभा आगति | ० | ० | ० | ० | ० | ४ भुजपरि सर्प रहित | १५ | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | १९ | ० |
| ६ वालुकाप्रभा गति | ० | ० | ० | ० | ० | ५ | १५ | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | २० |
| ७ पंकप्रभा आगति | ० | ० | ० | ० | ० | ३ खेचर रहित | १५ | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | १८ | ० |
| ८ पंकप्रभा गति | ० | ० | ० | ० | ० | ५ | १५ | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | २० |
| ९ धूमप्रभा आगति | ० | ० | ० | ० | ० | २ स्थलचर रहित | १५ | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | १७ | ० |
| १० धूमप्रभा गति | ० | ० | ० | ० | ० | ५ | १५ | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | २० |
| ११ तमःप्रभा आगति | ० | ० | ० | ० | ० | १ उर परि सर्प रहित | १५ | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | १६ | ० |

| | | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १२ | तमःप्रभा गति. | ० | ० | ० | ० | ० | ५ | १५ | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | २० |
| १३ | तमस्तमःप्रभा आगति. | ० | ० | ० | ० | ० | १ जलचर. | १५ | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | १६ | ० |
| १४ | तमस्तमःप्रभा गति. | ० | ० | ० | ० | ० | ५ | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ५ |
| १५ | १० भुवनपति, १५ परमाधार्मिक आगति. | ० | ० | ० | ० | ५ | ५ | १५ | ० | ३० | ५६ | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | १११ | ० |
| १६ | १० भुवनपति, १५ परमाधार्मिक गति. | ० | ३ | ० | ० | ० | ५ | १५ | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | २३ |
| १७ | १६ व्यंतर, १० तिर्यग्जृंभक आगति. | ० | ० | ० | ० | ५ | ५ | १५ | ० | ३० | ५६ | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | १११ | ० |
| १८ | १६ व्यंतर १० तिर्यग्जृंभक गति. | ० | ३ | ० | ० | ० | ५ | १५ | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | २३ |
| १९ | १० ज्योतिषी, १ देवलोक, १ किल्विषी आगति. | ० | ० | ० | ० | ० | ५ | १५ | ० | ३० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ५० | ० |
| २० | १० ज्योतिषी, १ देवलोक, १ किल्विषी गति. | ० | ३ | ० | ० | ० | ५ | १५ | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | २३ |
| २१ | ईशान देवलोक १ आगति. | ० | ० | ० | ० | ० | ५ | १५ | ० | २० ५ हिमवत् ५ ऐरवतरहित. | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ४० | ० |
| २२ | ईशान देवलोक गति. | ० | ३ | ० | ० | ० | ५ | १५ | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | २३ |
| २३ | ६ सहस्रार सुधी, ९ लोकांतिक, २ किल्विषी आगति. | ० | ० | ० | ० | ० | ५ | १५ | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | २० | ० |
| २४ | ६ सहस्रार सुधी, ९ लोकांतिक, २ किल्विषी गति. | ० | ० | ० | ० | ० | ५ | १५ | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | २० |
| २५ | ४ देवलोक छेलां, ९ ग्रैवेयक, ५ अनुत्तर आगति. | ० | ० | ० | ० | ० | ० | १५ | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | १५ | ० |
| २६ | ४ देवलोक छेलां, ९ ग्रैवेयक, ५ अनुत्तर गति. | ० | ० | ० | ० | ० | ० | १५ | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | १५ |

| | | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| २७ | पृथ्वीकाय, अप्काय, वनस्पतिकाय आगति | ० | १४ | ८ | ६ | १० | १० | ३० | १०१ | ० | ० | २५ | २६ | १२ | १ | ० | ० | ० | २४३ | ० |
| २८ | पृथ्वीकाय, अप्काय, वनस्पतिकाय गति | ० | १४ | ८ | ६ | १० | १० | ३० | १०१ | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | १७९ |
| २९ | तेजस्काय आगति | ० | १४ | ८ | ६ | १० | १० | ३० | १०१ | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | १७९ | ० |
| ३० | तेजस्काय गति | ० | १४ | ८ | ६ | १० | १० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ४८ |
| ३१ | विकलेंद्रिय आगति | ० | १४ | ८ | ६ | १० | १० | ३० | १०१ | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | १७९ | ० |
| ३२ | विकलेंद्रिय गति | ० | १४ | ८ | ६ | १० | १० | ३० | १०१ | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | १७९ |
| ३३ | तिर्यंच समूर्छिम आगति | ० | १४ | ८ | ६ | १० | १० | ३० | १०१ | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | १७९ | ० |
| ३४ | तिर्यंच समूर्छिम गति | १ पेली नरक | १४ | ८ | ६ | १० | १० | ३० | १०१ | ० | ११२ | ० | ५२ | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ३४७ |
| ३५ | जलचर गर्भज आगति | ७ | १४ | ८ | ६ | १० | १० | ३० | १०१ | ० | ० | २५ | २६ | १२ | १ | १७ | ० | ० | २६७ | ० |
| ३६ | जलचर गर्भज गति | १४ | १४ | ८ | ६ | १० | १० | ३० | १०१ | ६० | ११२ | ५० | ५२ | २४ | २ | ३४ | ० | ० | ० | ५२७ |
| ३७ | स्थलचर आगति | ७ | १४ | ८ | ६ | १० | १० | ३० | १०१ | ० | ० | २५ | २६ | १२ | १ | १७ | ० | ० | २६७ | ० |
| ३८ | स्थलचर गति | ८ पेलेथी चार नरक | १४ | ८ | ६ | १० | १० | ३० | १०१ | ६० | ११२ | ५० | ५२ | २४ | २ | ३४ | ० | ० | ० | ५२१ |
| ३९ | खेचर आगति | ७ | १४ | ८ | ६ | १० | १० | ३० | १०१ | ० | ० | २५ | २६ | १२ | १ | १७ | ० | ० | २६७ | ० |
| ४० | खेचर गति | ६ पेलेथी त्रण नरक | १४ | ८ | ६ | १० | १० | ३० | १०१ | ६० | ११२ | ५० | ५२ | २४ | २ | ३४ | ० | ० | ० | ५१९ |
| ४१ | उरपरिसर्प आगति | ७ | १४ | ८ | ६ | १० | १० | ३० | १०१ | ० | ० | २५ | २६ | १२ | १ | १७ | ० | ० | २६७ | ० |
| ४२ | उरपरिसर्प गति | १० पेलेथी पाच नरक | १४ | ८ | ६ | १० | १० | ३० | १०१ | ६० | ११२ | ५० | ५२ | २४ | २ | ३४ | ० | ० | ० | ५२३ |
| ४३ | भुजपरिसर्प आगति | ७ | १४ | ८ | ६ | १० | १० | ३० | १०१ | ० | ० | २५ | २६ | १२ | १ | १७ | ० | ० | २६७ | ० |
| ४४ | भुजपरिसर्प गति | ४ पेलेथी बे नरक | १४ | ८ | ६ | १० | १० | ३० | १०१ | ६० | ११२ | ५० | ५२ | २४ | २ | ३४ | ० | ० | ० | ५१७ |
| ४५ | मनुष्य समूर्छिम आगति | ० | १४ | ० | ६ | १० | १० | ३० | १०१ | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | १७१ | ० |

| | | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ४६ | मनुष्य संमूर्छिम गति. | ० | १४ | ८ | ६ | १० | १० | ३० | १०१ | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | १७९ |
| ४७ | १५ कर्मभूमि आगति. | ६ | १४ | ० | ६ | १० | १० | ३० | १०१ | ० | ० | २५ | २६ | १२ | १ | १७ | १३ | ५ | २७६ | ० |
| ४८ | १५ कर्मभूमि गति. | १८ | १४ | ८ | ६ | १० | १० | ३० | १०१ | ६० | ११२ | ५० | ५२ | २४ | २ | ३४ | २६ | १० | ० | ५६३ |
| ४९ | ५ हिमवत, ५ ऐरण्यवत आगति. | ० | ० | ० | ० | ० | ५ | १५ | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | २० | ० |
| ५० | ५ हिमवत, ५ ऐरण्यवत गति. | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ५० | ५२ | २४ | ० | ० | ० | ० | ० | १२६ |
| ५१ | ५ हरिवर्ष, ५ रम्यक, ५ देवकुरु, ५ उत्तरकुरु आगति. | ० | ० | ० | ० | ० | ५ | १५ | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | २० | ० |
| ५२ | ५ हरिवर्ष, ५ रम्यक, ५ देवकुरु, ५ उत्तर कुरु गति. | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ५० | ५२ | २४ | २ | ० | ० | ० | ० | १२८ |
| ५३ | ५६ अंतरद्वीप आगति. | ० | ० | ० | ० | ५ | ५ | १५ | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | २५ | ० |
| ५४ | ५६ अंतरद्वीप गति. | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ५० | ५२ | ० | ० | ० | ० | ० | ० | १०२ |
| ५५ | तीर्थंकर आगति. | ३ | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | १ देवलोक. | १ | १५ | १३ | ५ | ३८ | ० |
| ५६ | तीर्थंकर गति. | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | १ मोक्ष. |
| ५७ | चक्रवर्ती आगति. | १ पहेली | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | १० | २६ | ११ | १ | १५ | १३ | ५ | ८२ | ० |
| ५८ | चक्रवर्ती गति. | १४ | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | २ देवलोक. | २ | ३० | २६ | १० | ० | ८४ |
| ५९ | वासुदेव आगति. | २ पहेली बीजी | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | १ | १ | १५ | १३ | ० | ३२ | ० |
| ६० | वासुदेव गति | १४ | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | १४ |
| ६१ | वलदेव आगति. | २ पहेली बीजी | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | १० | २६ | ११ | १ | १५ | १३ | ५ | ८३ | ० |
| ६२ | वलदेव गति. | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | २ | २ | ३० | २६ | १० | ० | ७० |

| | | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ६३ | केवली आगति | पैकेथी ४ चार नरक | ३ | ० | ० | ० | ५ | १५ | ० | ० | ० | १० | २६ | ११ | १ | १५ | १३ | ५ | १०८ | ० |
| ६४ | केवली गति | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | १मोक्ष |
| ६५ | साधु आगति | पैकेथी ५ पाचनरक | १४ | ० | ६ | १० | १० | ३० | १०१ | ० | ० | २५ | २६ | १२ | १ | १७ | १३ | ५ | २७५ | ० |
| ६६ | साधु गति | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | २ | २ | ३० | २६ | १० | ० | ७० |
| ६७ | श्रावक आगति | ६ | १४ | ० | ६ | १० | १० | ३० | १०१ | ० | ० | २५ | २६ | १२ | १ | १७ | १३ | ५ | २७६ | ० |
| ६८ | श्रावक गति | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | २ | २ | ३० | ८ | ० | ० | ४२ |
| ६९ | सम्यग्दृष्टि आगति | ७ | १६ | ० | ६ | १० | १० | ३० | १०१ | ३० | ५६ | २५ | २६ | १२ | १ | १७ | १३ | ५ | ३६३ | ० |
| ७० | सम्यग्दृष्टि गति | १२ | ० | ० | ३ | ५ | १० | ३० | ० | ० | ० | ५० | ५२ | २४ | २ | ३४ | २५ | १० | ० | २५८ |
| ७१ | मिश्रदृष्टि आगति | * ७ | १४ | ८ | ६ | १० | १० | ३० | १०१ | ३० | ५६ | २५ | २६ | १२ | १ | १७ | १३ | ५ | ३७१ | ० |
| ७२ | मिथ्यादृष्टि आगति | ७ | १४ | ८ | ६ | १० | १० | ३० | १०१ | ३० | ५६ | २५ | २६ | १२ | १ | १७ | १३ | ५ | ३७१ | ० |
| ७३ | मिथ्यादृष्टि गति | १४ | १४ | ८ | ६ | १० | १० | ३० | १०१ | ६० | ११२ | ५० | ५२ | २४ | २ | ३४<br>१६ | २६ | ० | ० | ५५३<br>५३५ |
| ७४ | पुरुष आगति | ७ | १४ | ८ | ६ | १० | १० | ३० | १०१ | ३० | ५६ | २५ | २६ | १२ | १ | १७ | १३ | ५ | ३७१ | ० |
| ७५ | पुरुष गति | १४ | १४ | ८ | ६ | १० | १० | ३० | १०१ | ६० | ११२ | ५० | ५२ | २४ | २ | ३४ | २६ | १० | ० | ५६३ |
| ७६ | स्त्री आगति | ७ | १४ | ८ | ६ | १० | १० | ३० | १०१ | ३० | ५१ | २५ | २६ | १२ | १ | १७ | १३ | ५ | ३७१ | ० |
| ७७ | स्त्री गति | १२ | १८ | ८ | ६ | १० | १० | ३० | १०१ | ६० | ११२ | ५० | ५२ | २४ | २ | ३४ | २६ | १० | ० | ५६१ |
| ७८ | नपुसक आगति | ७ | १४ | ८ | ६ | १० | १० | ३० | १०१ | ० | ० | २५ | २६ | १२ | १ | १७ | १३ | ५ | २८५ | ० |
| ७९ | नपुसक गति | १८ | १४ | ८ | ६ | १० | १० | ३० | १०१ | ६० | ११२ | ५० | ५२ | २४ | २ | ३४ | २६ | १० | ० | ५६३ |
| ८० | दिग्दृष्टि आगति | ७ | १४ | ८ | ६ | १० | १० | ३० | १०१ | ३० | ५६ | २५ | २६ | १२ | १ | १७ | १३ | ५ | ३७१ | ० |
| ८१ | दिग्दृष्टि गति | १४ | १४ | ८ | ६ | १० | १० | ३० | १०१ | ६० | ११२ | ५० | ५२ | २४ | २ | ३४ | २६ | १० | ० | ५६३ |

* गति नथी ए स्थितिमां मरण पामे नही माटे

देवता ९९ अपर्याप्ता, नारकी ७ अपर्याप्ता, अकर्मभूमि ३० अपर्याप्ता, अतर्द्वीपना ५६ अपर्याप्ता, ए १९२ अपर्याप्तावस्थाए मरे नहि माटे एटला आगतिमा वजवा ने ३७१ ज लेवा

# पन्नवणा सूत्रना वीशमा पदमां कहेली २३ संपदानुं विवरण.

| | | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० | २१ | २२ | २३ | २४ | २५ | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | | रत्नप्रभा पृथ्वी. | शर्कराप्रभा. | वालुकाप्रभा. | पंकप्रभा. | धूमप्रभा. | तमःप्रभा. | तमस्तमःप्रभा. | भुवनपति. | व्यंतर. | ज्योतिषी. | पृथ्वीकाय. | अप्काय. | वनस्पतिकाय. | तेजस्काय. | वायुकाय. | मनुष्य. | तिर्यंच. | द्वींद्रिय. | त्रींद्रिय. | चतुरिंद्रिय. | पहेलुं बीजुं देवलोक. | त्रीजाथी ८ मा सुधी. | ९ माथी १२ मा सुधी. | नवग्रैवेयक. | पांच अनुत्तर विमान. | |
| १ | तीर्थंकर. ... ... | थाय | थाय | थाय | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | थाय | थाय | थाय | थाय | थाय | ८ |
| २ | चक्रवर्ती ... ... | थाय | ० | ० | ० | ० | ० | ० | थाय | थाय | थाय | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | थाय | थाय | थाय | थाय | थाय | ९ |
| ३ | वासुदेव. ... ... | थाय | थाय | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | थाय | थाय | थाय | थाय | ० | ६ |
| ४ | बलदेव. ... ... | थाय | थाय | ० | ० | ० | ० | ० | थाय | थाय | थाय | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | थाय | थाय | थाय | थाय | थाय | १० |
| ५ | मांडलिक. ... ... | थाय | थाय | थाय | थाय | थाय | थाय | ० | थाय | थाय | थाय | थाय | थाय | थाय | ० | ० | थाय | थाय | थाय | थाय | थाय | थाय | थाय | थाय | थाय | थाय | २२ |
| ६ | सेनापतिरत्न. ... | थाय | थाय | थाय | थाय | थाय | थाय | ० | थाय | थाय | थाय | थाय | थाय | थाय | ० | ० | थाय | थाय | थाय | थाय | थाय | थाय | थाय | थाय | थाय | ० | २१ |
| ७ | गाथापतिरत्न. ... | थाय | थाय | थाय | थाय | थाय | थाय | ० | थाय | थाय | थाय | थाय | थाय | थाय | ० | ० | थाय | थाय | थाय | थाय | थाय | थाय | थाय | थाय | थाय | ० | २१ |
| ८ | वार्द्धिकरत्न ... | थाय | थाय | थाय | थाय | थाय | थाय | ० | थाय | थाय | थाय | थाय | थाय | थाय | ० | ० | थाय | थाय | थाय | थाय | थाय | थाय | थाय | थाय | थाय | ० | २१ |
| ९ | पुरोहितरत्न. ... | थाय | थाय | थाय | थाय | थाय | थाय | ० | थाय | थाय | थाय | थाय | थाय | थाय | ० | ० | थाय | थाय | थाय | थाय | थाय | थाय | थाय | थाय | थाय | ० | २१ |
| १० | अश्वरत्न. ... .. | थाय | थाय | थाय | थाय | थाय | थाय | थाय | थाय | थाय | थाय | थाय | थाय | थाय | थाय | थाय | थाय | थाय | थाय | थाय | थाय | थाय | थाय | ० | ० | ० | २२ |
| ११ | गजरत्न ... ... | थाय | थाय | थाय | थाय | थाय | थाय | थाय | थाय | थाय | थाय | थाय | थाय | थाय | थाय | थाय | थाय | थाय | थाय | थाय | थाय | थाय | थाय | ० | ० | ० | २२ |
| १२ | स्त्रीरत्न ... ... | थाय | थाय | थाय | थाय | थाय | थाय | ० | थाय | थाय | थाय | थाय | थाय | थाय | ० | ० | थाय | थाय | थाय | थाय | थाय | थाय | थाय | थाय | थाय | ० | २१ |
| १३ | चक्ररत्न ... ... | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | थाय | थाय | थाय | थाय | थाय | थाय | थाय | थाय | थाय | थाय | थाय | थाय | थाय | थाय | ० | ० | ० | ० | १४ |
| १४ | छत्ररत्न. ... ... | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | थाय | थाय | थाय | थाय | थाय | थाय | थाय | थाय | थाय | थाय | थाय | थाय | थाय | थाय | ० | ० | ० | ० | १४ |
| १५ | चर्मरत्न. ... ... | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | थाय | थाय | थाय | थाय | थाय | थाय | थाय | थाय | थाय | थाय | थाय | थाय | थाय | थाय | ० | ० | ० | ० | १४ |
| १६ | दंडरत्न. ... ... | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | थाय | थाय | थाय | थाय | थाय | थाय | थाय | थाय | थाय | थाय | थाय | थाय | थाय | थाय | ० | ० | ० | ० | १४ |
| १७ | खड्गरत्न. ... ... | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | थाय | थाय | थाय | थाय | थाय | थाय | थाय | थाय | थाय | थाय | थाय | थाय | थाय | थाय | ० | ० | ० | ० | १४ |
| १८ | मणिरत्न. ... . | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | थाय | थाय | थाय | थाय | थाय | थाय | थाय | थाय | थाय | थाय | थाय | थाय | थाय | थाय | ० | ० | ० | ० | १४ |
| १९ | काकिणीरत्न. ... | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | थाय | थाय | थाय | थाय | थाय | थाय | थाय | थाय | थाय | थाय | थाय | थाय | थाय | थाय | ० | ० | ० | ० | १४ |
| २० | सम्यक्त्व. ... ... | थाय | थाय | थाय | थाय | थाय | थाय | थाय | थाय | थाय | थाय | थाय | थाय | थाय | ० | ० | थाय | थाय | थाय | थाय | थाय | थाय | थाय | थाय | थाय | थाय | २३ |
| २१ | देशविरति. ... | थाय | थाय | थाय | थाय | थाय | थाय | ० | थाय | थाय | थाय | थाय | थाय | थाय | ० | ० | थाय | थाय | थाय | थाय | थाय | थाय | थाय | थाय | थाय | थाय | २२ |
| २२ | सर्वविरति. ... ... | थाय | थाय | थाय | थाय | थाय | ० | ० | थाय | थाय | थाय | थाय | थाय | थाय | ० | ० | थाय | थाय | थाय | थाय | थाय | थाय | थाय | थाय | थाय | थाय | २१ |
| २३ | केवली. ... ... | थाय | थाय | थाय | थाय | ० | ० | ० | थाय | थाय | थाय | थाय | थाय | थाय | ० | ० | थाय | थाय | ० | ० | ० | थाय | थाय | थाय | थाय | थाय | १७ |
| | एवं सर्व पदवी. २३... | १६ | १५ | १३ | १२ | ११ | १० | ३ | २१ | २१ | २१ | १९ | १९ | १९ | ९ | ९ | १९ | १९ | १८ | १८ | १८ | २३ | १६ | १४ | १४ | ८ | |

## सिद्ध द्वार.

१ पहेली नरकना नीकल्या एकसमये १० सिद्ध थाय
२ बीजी नरकना नीकल्या एकसमये १० सिद्ध थाय
३ त्रीजी नरकना नीकल्या एकसमये १० सिद्ध थाय
४ चोथी नरकना नीकल्या एकसमये ४ सिद्ध थाय
५ भवनपति देवना नीकल्या एकसमये १० सिद्ध थाय
६ भवनपति देवीना नीकल्या एकसमये ५ सिद्ध थाय
७ पृथ्वीना नीकल्या एकसमये ४ सिद्ध थाय
८ पाणीना नीकल्या एकसमये ४ सिद्ध थाय
९ वनस्पतिना नीकल्या एकसमये ६ सिद्ध थाय
१० पचेंद्रिय तिर्यच गर्भजना नीकल्या एकसमये १० सिद्ध थाय.
११ तिर्यंच स्त्रीना नीकल्या एकसमये १० सिद्ध थाय
१२ मनुष्य पुरुषना नीकल्या एकसमये १० सिद्ध थाय.
१३ मनुष्य स्त्रीना नीकल्या एकसमये २० सिद्ध थाय
१४ व्यंतर देवना नीकल्या एकसमये १० सिद्ध थाय
१५ व्यंतरनी देवीना नीकल्या एकसमये ५ सिद्ध थाय
१६ ज्योतिषी देवना नीकल्या एकसमये १० सिद्ध थाय
१७ ज्योतिषी देवीना नीकल्या एकसमये २० सिद्ध थाय
१८ वैमानिक देवना नीकल्या एकसमये १०८ सिद्ध थाय
१९ वैमानिक देवीना नीकल्या एकसमये २० सिद्ध थाय
२० स्वलिंगी सिद्ध थाय तो १०८ सिद्ध थाय
२१ अन्यलिंगी सिद्ध थाय तो १० सिद्ध थाय
२२ गृहस्थलिंगी सिद्ध थाय तो ४ सिद्ध थाय.
२३ स्त्रीलिंगे २० सिद्ध थाय
२४ पुरुषलिंगे १०८ सिद्ध थाय
२५ नपुसकलिंगे १० सिद्ध थाय.
२६ ऊर्ध्वलोके ४ सिद्ध थाय
२७ अधोलोके २० सिद्ध थाय
२८ तिर्छालोके १०८ सिद्ध थाय
२९ उत्कृष्ट अवगाहनावाला एकसमये २ सिद्ध थाय
३० जघन्य अवगाहनावाला एकसमये ४ सिद्ध थाय.

३१ मध्यम अवगाहनावाला एकसमये १०८ सिद्ध थाय.
३२ समुद्रमां २ सिद्ध थाय.
३३ नदीप्रमुख शेषजलमां ३ सिद्ध थाय.
३४ तीर्थमां १०८ सिद्ध थाय.
३५ अतीर्थमां १० सिद्ध थाय.
३६ तीर्थंकर २० सिद्ध थाय.
३७ अतीर्थंकर १०८ सिद्ध थाय.
३८ स्वयंबुद्ध ४ सिद्ध थाय.
३९ प्रत्येकबुद्ध १० सिद्ध थाय.
४० बुद्धबोधि १०८ सिद्ध थाय.
४१ एक सिद्धा ते एकसमये १ सिद्ध थाय.
४२ अनेक सिद्धा ते एकसमये उत्कृष्टा १०८ सिद्ध थाय.
४३ विजय विजय प्रत्ये एकसमये वीश वीश सिद्ध थाय.
४६ भद्रशालवन १, नंदनवन २, सोमनसवन ३, ए त्रणमां चार चार सिद्ध थाय.
४७ पंडकवनमां २ सिद्ध थाय.
४८ अकर्मभूमिमां अपहरणवडे १० सिद्ध थाय.
४९ कर्मभूमिमां १०८ सिद्ध थाय.
५३ पहेले, बीजे, पांचमे, छट्ठे ए चार आरे अपहरणथी १० सिद्ध थाय.
५५ त्रीजे, चोथे ए बे आरे १०८ सिद्ध थाय.
५७ अवसर्पिणी, उत्सर्पिणी ए बेमां १०८ सिद्ध थाय.
५८ नोउत्सर्पिणी नोअवसर्पिणीमां १०८ सिद्ध थाय.
५९ एकथी आरंभीने बत्रीश सिद्ध थाय तो ८ समय सुधी.
६० तेत्रीशथी आरंभीने अडतालीश सुधी सिद्ध थाय तो ७ समय सुधी.
६१ ओगणपचासथी आरंभीने साठ सुधी सिद्ध थाय तो ८ समय सुधी.
६२ एकसठथी आरंभीने बोंतेर सुधी सिद्ध थाय तो ५ समय सुधी.
६३ तोंतेरथी आरंभीने चोराशी सुधी सिद्ध थाय तो ४ समय सुधी.
६४ पंचाशीथी आरंभीने छन्नु सुधी सिद्ध थाय तो ३ समय सुधी.
६५ सत्ताणुथी आरंभीने एकसो ने बे सुधी सिद्ध थाय तो २ समय सुधी.
६६ एकसो त्रणथी आरंभीने एकसो आठ सुधी सिद्ध थाय तो १ समय सुधी

॥ इति सिद्ध द्वार समाप्त ॥

---

# छट्ठा कर्मग्रंथनुं संक्षिप्त विवरण.

गाथा २ मूळ प्रकृतिना वधमा ४ स्थान—८।७।६।१।

आठनो वंध जघन्य तथा उत्कृष्ट अतर्मुहूर्त आयु विनानो सातनो वध जघन्य अन्तर्मुहूर्त अने उत्कृष्ट छ मास ऊणा तेत्रीश सागरोपम पूर्व कोटी त्रिभाग अधिक छनो वध उपशम श्रेणिमा दशमे गुणस्थाने जघन्य एक समय अने उत्कृष्ट अंतर्मुहूर्त (छनो वध दशमे गुणस्थानेज छे, अने तेनी स्थिति उत्कृष्ट अतर्मुहूर्तनी ज छे) एकनो वध जघन्य एक समय ते उपशम श्रेणिमा ११ मे, त्यांथी भवक्षये देवलोकमा जता अविरति थाय एटले सातनो वध एकनो वध उत्कृष्ट देशोन पूर्व कोटी प्रमाण जेम कोई जीव गर्भावासे सात मास रही जन्म पामी आठमे वर्षे दीक्षा लई क्षपणश्रेणि माडी केवळज्ञान पामे ते सयोगी केवळी पणे देशोन पूर्व कोटि पर्यंत विचरे

हवे कई मूळ प्रकृति बाधता वधने आश्रीने केटलां स्थान पामीए, ते कहे छे —

१ आयु बाधता आठनो वध होय

२ मोहनी बाधता आठ अने सातनो वध होय

३ ज्ञानावरण, दर्शनावरण, नाम, गोत्र अने अतराय बाधतां आठ, सात अने छनो वध होय

४ वेदनी बाधता ८–७–६–१ नो वंध होय

उदय आश्री त्रण प्रकृति स्थान ८–७–४.

१ आठनो अभव्य आश्री अनादि अनंत

२ आठनो भव्य आश्री अनादि सात

३ आठनो उपशमश्रेणिए चडी पाछो पडी बीजीवार चडे, तेने आश्री सादि सात

४ सादि अनत भग लाभे ज नहीं

१ आठनो आयु मोहनी युक्त

२ सातनो मोहनी विना ११–१२ मे, ते जघन्य एक समय, उत्कृष्ट अतर्मुहूर्त

३ चारनो घाति कर्म क्षय करवाथी १३ मे गुणस्थाने ते जघन्य अतर्मुहूर्त, अने उत्कृष्ट देशोन पूर्व कोटि पर्यंत

कइ कर्म प्रकृतिना उदये केटला उदय स्थान पामीए? ते कहे छे.—

१ मोहनीना उदये आठनो १० मा गुणस्थान सुधी

२ ज्ञानावरण, दर्शनावरण अने अतरायना उदये ८ नो अने ७ नो मोहनी न होय त्यारे ११–१२ मे पामीए

३ वेदनी, आयु, नाम अने गोत्रना उदये ८–७–४ नो तेमा ८ नो १० मा गुणस्थान सुधी, ७ नो ११–१२ मे, ४ नो १३–१४ मे

हवे सत्ताने आश्रीने त्रण स्थान–८–७–४

८ नी सत्ता अभव्य आश्री अनादि अनत, भव्यने आश्री अनादि सात.

मोहनी विना ७ नी सत्ता १२ मे गुणस्थाने अतर्मुहूर्त प्रमाण

चार अघातिनी सत्ता १३–१४ मे गुणस्थाने.

कई प्रकृतीनी सत्ताए केटला सत्ता स्थान होय ? ते कहे छे.—

१ मोहनीनी सत्ता छते आठेनी सत्ता.

२ ज्ञानावरण, दर्शनावरण अने अंतरायनी सत्ता छते ८–७ नी सत्ता. तेमां ८ नी ११ मा गुणस्थान सुधी अने ७ नी १२ मे गुणस्थाने.

३ अघाति चार छते ८–७–४ नी सत्ता.

गाथा ३ हवे बंध, उदय अने सत्ताना प्रकृति स्थान आश्री संवेध कहे छे.—

८–७–६ विध बंधकमां ८ नो उदय, आठनी सत्ता.

८ विध बंधक सातमा गुणस्थान सुधी.

७ विध बंधक ९ मा सुधी.

६ विध बंधक १० मा सुधी.

अहीं त्रण विकल्प थया, ते नीचे प्रमाणे.—

१ आठनो बंध, आठनो उदय, आठनी सत्ता.

२ सातनो बंध, आठनो उदय, आठनी सत्ता.

३ छनो बंध, आठनो उदय, आठनी सत्ता.

एक विध बंधकमां त्रण विकल्प नीचे प्रमाणे.—

४. १ नो बंध, ७ नो उदय, ८ नी सत्ता. ११ मे गुणस्थाने.

५. १ नो बंध, ७ नो उदय, ७ नी सत्ता. १२ मे गुणस्थाने.

६. १ नो बंध, ४ नो उदय, ४ नी सत्ता. १३ मे गुणस्थाने.

७. अबंधक, ४ नो उदय, ४ नी सत्ता. १४ मे गुणस्थाने.

मूळ प्रकृतिना संवेध उपर प्रमाणे समजवा.

---

गाथा ४ जीवस्थाने बंध, उदय अने सत्ता घटावे छे.—

जीवना १४ स्थानमां पर्याप्त संज्ञी पंचेंद्रिय विना बाकीना १३ जीवस्थानके बे विकल्प.

१. ७ नो बंध, ८ नो उदय, ८ नी सत्ता. आयु न बांधतो होय त्यारे.

२. ८ नो बंध, ८ नो उदय, ८ नी सत्ता. आयु बांधतो होय त्यारे.

पर्याप्त संज्ञी पंचेंद्रिय आश्री ५ विकल्प—

१. ७ नो बंध, ८ नो उदय, ८ नी सत्ता. } उपर प्रमाणे.
२. ८ नो बंध, ८ नो उदय, ८ नी सत्ता. }

३, ६ नो बंध, ८ नो उदय, ८ नी सत्ता. १० मे गुणस्थाने.

४. १ नो बंध, ७ नो उदय, ८ नी सत्ता. ११ मे गुणस्थाने.

५. १ नो बंध, ७ नो उदय, ७ नी सत्ता. १२ मे गुणस्थानके.

केवळी आश्री २ विकल्प—

१. १ नो बंध, ४ नो उदय, ४ नी सत्ता. १३ मे गुणस्थाने.

२. अबंध, ४ नो उदय, ४ नी सत्ता. १४ मे गुणस्थाने.

गाथा ५ गुणस्थाने ७ भंग नीचे प्रमाणे—

३–८–९–१०–११–१२–१३–१४ आ आठ गुणस्थाने एक एक विकल्प

१ ३–८–९ मे ७ नो बध, ८ नो उदय, ८ नी सत्ता

२ १० मे ६ नो बध, ८ नो उदय, ८ नी सत्ता

३ ११ मे १ नो बध, ७ नो उदय, ८ नी सत्ता

४ १२ मे १ नो बध, ७ नो उदय, ७ नी सत्ता

५ १३ मे १ नो बध, ४ नो उदय, ४ नी सत्ता

६ १४ मे अवधक, ४ नो उदय, ४ नी सत्ता

१–२–४–५–६–७ आ छ गुणस्थाने बबे विकल्प —

७. { आयु बंध काळे ८ नो बध, आठनो उदय, आठनी सत्ता
आयु अबध काळे ७ नो बध, आठनो उदय, आठनी सत्ता }

गाथा ६–७ हवे उत्तर प्रकृति आश्री सवेध कहे छे —

५ ज्ञानावरणीय, ९ दर्शनावरणीय, २ वेदनीय, २८ मोहनीय, ४ आयुष्य, ४२ नाम, २ गोत्र, ५ अतराय कुल ९७ प्रकृति छे

नामकर्मना अवातर भेदो ५१ वधारी तेने भेळा गणता कुल १४८.

बधमा बंधन संघातन शरीर भेळा ज गणवा, वर्णादि चतुष्कना अवातर भेद न गणवा, समकित मिश्र मोहनी न गणवी एटले ५–५–१६–२ कुल २८ जता १२० नो बध उदयमा २ मोहनी वधारता १२२ अने सत्तामा घटाडेली २८ भेळवता कुल १४८

उत्तर प्रकृतिना बधादि स्थान

ज्ञानावरणीय अने अतरायनी पाच पाच उत्तर प्रकृति ध्रुवबधी होवाथी ते बंनेमा एक एक ज विकल्प

५ नो बंध, ५ नो उदय, ५ नी सत्ता १० मा गुणस्थान सुधी बंध उपरम पामे छते अबध, ५ नो उदय, ५ नी सत्ता ११–१२ मे गुणस्थाने

गाथा ८ दर्शनावरणीय

बधने सत्ता आश्री समानपणे ३ विकल्प ९–६–४

१ नवनो बध पहेले बीजे गुणस्थाने अभव्यने अनादि अनत, भव्यने अनादि सात, सम्यक्त्व पतितने सादि सात जघन्यथी अतर्मुहूर्त, उत्कृष्टथी देशे ऊणो अपार्ध पुद्गल परावर्त काळ

२ छनो बध त्रीजाथी आठमा गुणस्थानना पहेला भाग सुधी जघन्यथी अंतर्मुहूर्त, उत्कृष्टथी बे ६६ सागरोपम

मध्यमा मिश्र आनवाथी त्यारपछी कोई क्षपकश्रेणि माडे अने कोई मिथ्यात्वे जाय

३. ४ नो बध ८ माना बीजा भागथी १० मा गुणस्थान सुधी जघन्य एक समय ते ८ माने बीजे भागे पहेले समये उपशमश्रेणि माडी बीजे समये काळ करी स्वर्गे जाय उत्कृष्ट अतर्मुहूर्त

१ नवनी सत्ता अभव्यने अनादि अनंत, भव्यने अनादि सांत, सादि सांत होय ज नहीं. ते पण उपशमश्रेणि आश्री ११ मा सुधी. क्षपकश्रेणि आश्री ९ मा ना पहेला भाग सुधी.

२ छनी सत्ता ९ मा ना बीजा भागथी १२ माना द्विचरम समय सुधी अंतर्मुहूर्त प्रमाण.

३ चारनी सत्ता १२ माना चरम समये एक ज समयनी.

उदय आश्री बे स्थान ४–५.

१ चार दर्शनावरण ध्रुवउदयी होवाथी.

२ चार दर्शनावरणमां कोई पण एक निद्रा भळे त्यारे पांच थाय. केमके एकथी वधारे निद्रा उदयमां न होय. तेम ज एक पण निरंतर न होय. कदाचित् होय.

गाथा ९ हवे संवेध कहे छे.—

१. ९ नो बंध, ४ नो उदय, ९ नी सत्ता. निद्रा न होय त्यारे.

२. ९ नो बंध, ५ नो उदय, ९ नी सत्ता. निद्रा होय त्यारे.

३. ६ नो बंध, ४ नो उदय, ९ नी सत्ता. }
४. ६ नो बंध, ५ नो उदय, ९ नी सत्ता. } त्रीजाथी आठमाना प्रथम भाग सुधी.

( क्षपकने तो त्रीजो विकल्प ज होय. )

५. ४ नो बंध, ४ नो उदय, ९ नी सत्ता. }
६. ४ नो बंध, ५ नो उदय, ९ नी सत्ता. } अपूर्वकरणना बीजा भागथी दशमा गुणस्थान सुधी.

(क्षपकने तो पांचमो विकल्प ज होय.)

७. ४ नो बंध, ४ नो उदय, ६ नी सत्ता.

स्त्यानर्द्धि त्रिकनो क्षय करनार क्षपक आश्री नवमा गुणस्थाननो पहेलो भाग गया पछी दशमाना अंत सुधी.

हवे अबंधकपणाना ४ विकल्प कहे छे.—

८. अबंधके ४ नो उदय, ९ नी सत्ता. }
९. अबंध. ५ नो उदय, ९ नी सत्ता. } उपशांत मोहे.

१०. अबंध. ४ नो उदय, ६ नी सत्ता. १२ मे द्विचरम समय पर्यंत.

११. अबंध. ४ नो उदय, ४ नी सत्ता. १२ मे चरम समये.

कोई आचार्य क्षपकमां निद्रानो उदय कहे छे. तेना मते बे विकल्प वधे.

१२. ४ नो बंध, ५ नो उदय, ६ नी सत्ता.

१३. अबंध, ५ नो उदय, ६ नी सत्ता.

गाथा १० वेदनीय कर्म.

बंधस्थान १ साता के असाता.

उदयस्थान १ साता के असाता.

सत्तास्थान २. साता असाता बे, अथवा १.

तेनो संवेध नीचे प्रमाणे.—

१ असातानो बंध, असातानो उदय, साता अने असातानी सत्ता.
२ असातानो बध, सातानो उदय, बन्नेनी सत्ता
(आ बे विकल्प पहेलाथी छट्ठा सुधी पछी असातानो बंध नथी.)
३ सातानो बंध, असातानो उदय, बन्नेनी सत्ता
४ सातानो बंध, सातानो उदय, बन्नेनी सत्ता
(आ बे विकल्प १ ला थी १३ मा सुधी पछी १४ मे बंधनो अभाव छे )
५ अबंधक, असातानो उदय, बेउनी सत्ता
६ अबधक, सातानो उदय, बेउनी सत्ता.
(आ बे विकल्प १४ माना द्विचरम समय सुधी पछी बेमाथी एकनो उदय सत्तामाथी क्षय थाय )
७ अबंधक, असातानो उदय, असातानी सत्ता
८ अबधक, सातानो उदय, सातानी सत्ता
(आ बे विकल्प एक समयनी स्थितिवाळा छे )

आयुष्य कर्म

बंधस्थान १. एक ज आयुष्य बधाय
उदयस्थान १ एक गतिनु ज आयुष्य वेदाय
सत्तास्थान २ परभवनुं आयुष्य बाध्या पहेला १, बाध्या पछी २

हवे संवेध कहे छे —

आयु कर्मनी ३ अवस्था

१ नवा आयुना बधकाळनी पूर्व अवस्था
२ नवा आयुना बंधकाळनी अवस्था
३ नवु आयु बाध्या पछीनी अवस्था

नरक गति आश्री ५ विकल्प

१ अबंध काळे, नरकायु उदय, नरकायु सत्ता १ थी ४ गुणस्थान सुधी

बंध काळे

२ तिर्यगायु बंध, नरकायु उदय, तिर्यग् नरकायु सत्ता पहेले तथा बीजे गुणस्थाने आ विकल्प जाणवो
३ मनुष्यायु बंध, नरकायु उदय, नारक नरायु सत्ता, १-२-४ गुणस्थाने

बधोत्तर काळे

४ अबध, नरकायु उदय, तिर्यग् नरकायु सत्ता पहेलेथी चोथा सुधी आयु बध कर्या पछी त्रीजे चोथे गुणस्थाने जवानो संभव होवाथी
५ अबध, नरकायु उदय, नर नारकायु सत्ता आ विकल्प प्रथमना चार गुणस्थाने.

आज प्रमाणे देवायु सबधी ५ विकल्प जाणवा

हवे तिर्यगायुना ९ विकल्प कहे छे —

१ अवंध काळे, तिर्यगायु उदय, तिर्यगायु सत्ता. पहेला पाच गुणस्थाने.

वंध काळे.

२ नरकायु वंध, तिर्यगायु उदय, नारक तिर्यगायु सत्ता. पहेले गुणस्थाने.
३ तिर्यगायु वंध, तिर्यगायु उदय, तिर्यक् तिर्यगायु सत्ता. ,,
४ नरायु वंध, तिर्यगायु उदय, नर तिर्यगायु सत्ता. १–२ गुणस्थाने.
५ देवायु वंध, तिर्यगायु उदय, देवतिर्यगायु सत्ता. १–२–४–५ गुणस्थाने.

वंधोत्तर काळे.

६ अवंधक, तिर्यगायु उदय, तिर्यक् तिर्यगायु सत्ता. १ थी ५ गुणस्थान सुधी. केमके आयु वांध्या पछी २–३–४–५ मे जवानो संभवछे, तेथी.
७ अवंधक, तिर्यगायु उदय, तिर्यगायु मनुष्यायु सत्ता.
८ अवंधक, तिर्यगायु उदय, देवतिर्यगायु सत्ता.
९ अवंधक, तिर्यगायु उदय, नरक तिर्यगायु सत्ता.

( आ छेल्ला ३ विकल्प पहेलेथी पांचमा गुणस्थान सुधी होय. )

नरायुना विकल्प नीचे प्रमाणे ९.

१ अवंध काळे नरायु उदय, नरायु सत्ता. पहेलेथी चौदमा गुणस्थान सुधी.

वंध काळे.

२ नारकायु वंध, नरायु उदय, नारक नरायु सत्ता. पहेले गुणस्थाने.
३ तिर्यगायु वंध, नरायु उदय, तिर्यग् नरायु सत्ता. पहेले वीजे गुणस्थाने.
४ नरायु वंध, नरायु उदय, नर नरायु सत्ता. पहेले वीजे गुणस्थाने.
५ देवायु वंध, नरायु उदय, देव नरायु सत्ता. ७ मा गुणस्थान सुधी.

वंधोत्तर काळे.

६ अवंधक, नरायु उदय, नरक नरायु सत्ता. पहेलाथी सातमा गुणस्थान सुधी. केमके नरकायु वांध्या पछी संयम ग्रहणनो संभव छे.
७ अवंधक. नरायु उदय, तिर्यग् नरायु सत्ता. पहेलेथी सातमा सुधी.
८ अवंधक, नरायु उदय, नर नरायु सत्ता. पहेलेथी सातमा सुधी.
९ अवंधक, नरायु उदय, देव नरायु सत्ता. अगीयारमा गुणस्थान सुधी. केमके देवायु वांध्या पछी पण उपशमश्रेणिनो संभव छे तेथी.

कुल आयु कर्मना विकल्प २८ थया. ( ५–५–९–९ )

गोत्र कर्म.

वंधस्थान १. उंच के नीचनो वंध होय.
उदयस्थान १. उंच के नीचनो उदय होय.
सत्तास्थान २. वन्नेनी सत्ता होवाथी एक भंग. अने तेजस्काय तथा वायुकायमां नीच गोत्र ज सत्तामां होवाथी तथा अयोगी द्विचरम समये नीच गोत्रनो क्षय थवाथी वीजो भंग.

हवे सवेध कहे छे

१ नीचनो वंध, नीचनो उदय, नीचनी सत्ता तेजस्काय तथा वायुकायम अने तेमाथी नीकळया पछी केटलाक काळ सुधी एकेंद्रिय, विकलेंद्रिय अने तिर्यच पंचेंद्रियमा पण लाभे

२ नीचनो वध, नीचनो उदय, उंच नीचनी सत्ता

३ नीचनो वंध, उंचनो उदय, उच नीचनी सत्ता

(आ वे विकल्प पहेले वीजे गुणस्थाने होय त्रीजाथी नीच गोत्रना वंधनो अभाव छे)

४ उंचनो वंध, नीचनो उदय, वेनी सत्ता १ थी ५ गुणस्थान सुधी त्यार पछी नीच गोत्रना उदयनो अभाव छे

५ उचनो वंध, उचनो उदय, वेनी सत्ता १ थी १० गुणस्थान सुधी पछी वधनो ज अभाव छे.

६ वधाभाव, उंचनो उदय, वेनी सत्ता ११ थी १४ माना द्विचरम समय सुधी.

७ वंधाभाव, उंचनो उदय, उचनी सत्ता १४ मानी चरम समये ज.

(कुल गोत्र कर्म आश्री ७ विकल्प थया)

गाथा ११ मोहनी कर्म

वंधस्थान १० ( २२-२१-१७-१३-९-५-४-३-२-१ )

१ मिश्र मोहनी, समकित मोहनीनो वध न होवाथी ते वे, हास्य ने रति, अरति ने शोक, ए वे युगळमाथी एक वखते एक युगलनो वध होवाथी ते वे, त्रणे वेदमाथी एक वखते एकनो ज वध होवाथी वाकीना वे-एटले सर्व मळी ६ वाद थवाथी वधारेमा वधारे एक काळे २२ नो वंध मिथ्यात्व गुणस्थाने होय

२ मिथ्यात्वनो वध टळवाथी २१ नो वध वीजे गुणस्थाने

३ अनतानुवधी ४ जवाथी १७ नो वध त्रीजे चोथे गुणस्थाने

४ अप्रत्याख्यानी ४ जवाथी १३ नो वध पाचमे

५ प्रत्याख्यानी ४ जवाथी ९ नो वध ६-७-८ मे

६ हास्य, रति, भय, जुगुप्सा जवाथी ५ नो वध नवमाने पहेले भागे

७ पुरुष वेदनो वंध टळवाथी ४ नो वध नवमाने वीजे भागे

८ सज्वलन क्रोध जवाथी ३ नो वध नवमाने त्रीजे भागे

९ सज्वलन मान जवाथी २ नो वध नवमाने चोथे भागे

१० सज्वलन माया जवाथी १ नो वध नवमाने पाचमे भागे

वादर सपराय विलकुल जवाथी अवधक

गाथा १२ हवे उदय स्थान ९ कहे छे —

( १-२-४-५-६-७-८-९-१० )

नवमा गुणस्थानकथी पश्चानुपूर्वीए विचारवा

चार चोकडीमाथी एक एक ज उदयमा होवाथी वाकी १२ रहे

त्रण वेदमाथी एकनो ज उदय होवाथी वाकी २ रहे

हास्य रति, अरति शोकमांथी एक युगळनोज उदय होवाथी बाकी २ रहे.
त्रण दर्शनमोहनीमांथी एक ज उदयमां होवाथी बाकी २ रहे.
कुल १८ जवाथी उदयमां वधारेमां वधारे १० होय.

१ संज्वलनमांथी एकनो उदय होय त्यारे १ नुं उदयस्थान.
२ त्रण वेदमांथी एकनो प्रक्षेप करीए त्यारे २ नुं उदयस्थान.
३ बे युगळमांथी हास्य रतिनो प्रक्षेप करवाथी ४ नुं उदयस्थान.
४ भयनो प्रक्षेप करवाथी ५.
५ जुगुप्सानो प्रक्षेप करवाथी ६.
६ प्रत्याख्यानावरणमांथी १ नो प्रक्षेप करवाथी ७.
७ अप्रत्याख्यानावरणमांथी १ नो प्रक्षेप करवाथी ८.
८ अनंतानुबंधीमांथी १ नो प्रक्षेप करवाथी ९.
९ मिथ्यात्वनो प्रक्षेप करवाथी १० नुं उदयस्थान.

आनुं विशेष वर्णन आगळ आवशे.

गाथा १३-१४ सत्तास्थान १५.

( २८-२७-२६-२४-२३-२२-२१-१३-१२-११-५-४-३-२-१ ).

१ सर्व प्रकृति सत्तामां होय त्यारे २८.
२ समकित मोहनी जतां २७.
३ मिश्र मोहनी जतां तथा अनादि मिथ्यात्वीने पण २६.
४ अठ्ठावीशनी सत्तामांथी अनंतानुबंधी ४ जतां २४.
५ मिथ्यात्व मोहनी जतां २३.
६ मिश्र मोहनी जतां २२.
७ सम्यक्त्व मोहनी जतां २१.
८ अप्रत्याख्यानी ४ तथा प्रत्याख्यानावरणी ४ ए ८ जतां १३.
९ नपुंसकवेद जतां १२.
१० स्त्रीवेद जतां ११.
११ हास्यादि छ जतां ५.
१२ पुरुषवेद जतां ४.
१३ संज्वलन क्रोध जतां ३.
१४ संज्वलन मान जतां २.
१५ संज्वलन माया जतां १.

गाथा १५ संज्वलन लोभ जतां सत्ता शून्य.

आनो संवेध करतां घणा भंग थाय छे, ते जाणवा माटे बंधस्थानना भंग कहे छे.
प्रथम २२ ना बंधमां ६ विकल्प आ प्रमाणेः—
१६ कषाय, १ त्रण वेदमांथी एक, २ बे युगलमांथी एक, २ भय तथा जुगुप्सा, तथा १ मिथ्यात्व. कुल २२.

त्रण वेद संबंधी त्रण विकल्पने हास्य रति के अरति शोक रूप वे युगल साथे गुणतां ६ विकल्प

मिथ्यात्व विना २१ ना बंधमा ४ विकल्प —

२१ नो बंध सासादने होय त्या नपुसक वेद बंधमा न होवाथी वे वेद अने वे युगल साथे गुणता ४

अनतानुबंधी ४ विना १७ ना बंधमा २ विकल्प —

१७ नो बंध त्रीजे चोथे गुणस्थाने होवाथी त्या स्त्रीवेदनो बंध नथी, एटले स्त्रीवेदना बंधनु कारण अनंतानुबंधी छे, ते त्या नथी, तेथी एक पुरुष वेदने वे युगल साथे गुणता २.

अप्रत्याख्यानी ४ विना १३ ना बंधमा २ विकल्प —

१३ नो बंध पाचमे गुणस्थाने होय त्या पुरुष वेद एकनो ज बंध होवाथी हास्यादि वे युगल साथे गुणता २

प्रत्याख्यानी ४ जता ९ नो बंध ६–७–८ मे गुणस्थाने छे तेमा छट्ठे वे युगल होवाथी २ विकल्प सातमे अने आठमे अरति शोक बंधमा न होवाथी एक विकल्प

हास्य, रति, भय, जुगुप्सा, ए चार जता ५ ना बंधमा १ विकल्प

तेज प्रमाणे ४–३–२–१ ना बंधमा एक एक विकल्प कुल २१ विकल्प छे

हवे २२ विगेरे बंधनुं काळमान कहे छे —

२२ नो बंध अभव्यने अनादि अनंत, भव्यने अनादि सात, सम्यक्त्वथी पतितने जघन्यथी अंतर्मुहूर्त अने उत्कृष्टथी देशोन अर्ध पुद्गळ परावर्त होवाथी सादि सात

२१ नो बंध बीजे गुणस्थाने जघन्य १ समय, उत्कृष्ट ६ आवळीका

१७ नो बंध चोथे जघन्य अतर्मुहूर्त, उत्कृष्ट ३३ सागरोपमथी अधिक एटले अनुत्तर सुर चवीने मनुष्य थया पछी देशविरति के सर्वविरति न पामे त्या सुधी

१३ नो बंध पाचमे जघन्य अंतर्मुहर्त, उत्कृष्ट देशोन पूर्व कोटि

९ नो बंध पण देशोन पूर्वकोटि छट्ठे सातमे

५–४–३–२–१ नो बंध जघन्य एक समय ते कोई जीव उपशम श्रेणि माडी बीजे समये काळ करी देवता थाय, त्या चोथे गुणस्थाने आवता १७ नो बंध करे ते आश्रीने जाणवो उत्कृष्ट अतर्मुहूर्त

गाथा १६–१७ हवे २२ विगेरे बंधस्थानमा उदय स्थान केटला होय ? ते कहे छे

२२ ना बंधमा ४ उदय स्थान ७–८–९–१०.

१ मिथ्यात्व, ३ अप्रत्याख्यान, प्रत्याख्यान, सज्वलन क्रोधादि १ त्रणमाथी एक वेद, २ वे युगलमाथी एक युगल कुल ७ आना भागा २४ थाय ते आ प्रमाणे—वे युगलने त्रण वेदे गुणता ६, तेने ४ क्रोधादिके गुणता २४ आ सातना उदयमा एक चोवीशी थई

७ मां भय, वा जुगुप्सा, वा एक अनंतानुवंधी नाखतां ८ ना उदयमां उपर प्रमाणे गुणतां त्रण चोवीशी जूदी जूदी थाय.

७ ना उदयमां भय अने जुगुप्सा, वा भय अने अनंतानुवंधी, वा जुगुप्सा अने अनंतानुवंधी, एम वे वे नाखतां ९ ना उदयमां पण उपर प्रमाणे विचारतां त्रण चोवीशी थाय.

७ ना उदयमां भय, जुगुप्सा अने अनंतानुवंधी ए त्रणे क्षेपवतां १० ना उदयमां एक चोवीशी थाय.

कुल २२ ना वंधमां उदय आश्री ८ चोवीशी थई.

---

२१ ना वंधमां उदय आश्री ३ विकल्प ७–८–९.

४ प्रकारमांथी एक एक कषाय, १ त्रण वेदमांथी एक वेद, २ एक युगल, आ ७ मां पण पूर्वरीते एक चोवीशी.

७ ना उदयमां भय के जुगुप्सा नांखवाथी आठना उदयमां वे चोवीशी.

७ ना उदयमां भय अने जुगुप्सा वन्ने नांखवाथी नवना उदयमां १ चोवीशी.

कुल २१ ना वंधमां ४ चोवीशी थई.

(एकवीशनो वंध सासादने होय, तेना वे भेद—श्रेणि पतित तथा समकित पतित. तेमां श्रेणिगतने माटे तो उपर प्रमाणे भेद थाय. श्रेणिगतमां पण वे वात छे. एक आचार्य कहे छे के अनंतानुवंधीनो उपशम करी श्रेणिए चढे. तेने मते तो श्रेणिथी पडतां सासादने आवे त्यारे उपर प्रमाणे भेद थाय. वीजा आचार्य कहे छे के अनंतानुवंधीनो तो क्षय कर्या पछी ज उपशम श्रेणि मंडाय. तेने मते तो ते प्राणी श्रेणिथी पडतो सासादने न आवे. तेथी तेने आश्री उपर प्रमाणे भेद न थाय.)

---

१७ ना वंधमां ४ उदयस्थान ६–७–८–९.

१७ नो वंध त्रीजे चोथे गुणस्थाने होय. तेमां त्रीजाने त्रण उदयस्थान–७–८–९.

३ जातिनो कषाय एक एक, १ वेद, २ युगल, १ मिश्र मोहनी. आ सातना उदयमां पूर्ववत् १ चोवीशी.

७ मां भय वा जुगुप्सा क्षेपवाथी ८ ना उदयमां २ चोवीशी.

७ मां भय अने जुगुप्सा वन्ने क्षेपवाथी ९ ना उदयमां १ चोवीशी.

कुल १७ ना वंधमां त्रीजा गुणस्थानने आश्री ४ चोवीशी थई.

चोथे गुणस्थाने ४ उदयस्थान ६–७–८–९.

उपशम समकिती तथा क्षायिक समकितीने ६ नो उदय.—३ कषाय, १ वेद, २ युगळनी. तेनी १ चोवीशी.

६ ना उदयमां भय के जुगुप्सा के समकित मोहनी क्षेपवाथी ७ ना उदयमां त्रण चोवीशी.

६ ना उदयमा भय अने जुगुप्सा वा भय अने, समकित मोहनी वा जुगुप्सा अने समकित मोहनी क्षेपवता ८ ना उदयमा त्रण चोवीशी

६ ना उदयमा भय, जुगुप्सा अने समकित मोहनी त्रणे क्षेपवता ९ ना उदयमा एक चोवीशी

कुल चोथा गुणस्थान आश्री ८ चोवीशी

कुल १७ ना वंधमा १२ चोवीशी थई

---

१३ ना बधमा उदय आश्री ४ विकल्प ५–६–७–८

२ प्रत्याख्यान सज्वलन क्रोधादि, १ वेद, २ युगळ कुल पाचना उदयमा एक चोवीशी

५ ना उदयमा भय के जुगुप्सा के समकित मो० क्षेपवता ६ ना उदयमा ३ चोवीशी

५ ना उदयमा भय अने जुगुप्सा वा भय अने समकित मोहनी वा जुगुप्सा अने समकित मोहनी नाखता ७ ना उदयमा ३ चोवीशी

५ ना उदयमा भय, जुगुप्सा अने समकित मो० क्षेपवता ८ ना उदयमा एक चोवीशी-

कुल १३ ना बधमा ८ चोवीशी

---

९ ना वंधमा प्रमत्त गुणस्थाने उदय आश्री ४ स्थान ४–५–६–७

१ कषाय, १ वेद, २ युगळ आ चार आश्री १ चोवीशी

४ मा भय के जुगुप्सा के समकित मोहनी क्षेपवता ५ ना उदयमा ३ चोवीशी

४ मा भय अने जुगुप्सा के भय अने समकित मोहनी के जुगुप्सा अने समकित मोहनी क्षेपवता ६ ना उदयमा ३ चोवीशी

४ मा भय, जुगुप्सा अने समकित ए त्रणे क्षेपवता ७ ना उदयमा एक चोवीशी.

कुल ९ ना वंधमा ८ चोवीशी थई

---

५ ना वंधमा १ उदयस्थान—२ नु

१ कषाय, १ वेद तेना त्रण वेद अने चार कषाये गुणता १२ भग

४–३–२–१ ना बधमा एक उदयस्थान—१ नुं

सज्वलन ४ मांथी गमे ते एक कषायनो उदय होवाथी ४ ना बधमा चार भग थाय कोई आचार्य त्यां पण एक वेदनो उदय कहे छे, तेथी तेने मते त्रण वेदे गुणता १२ भग थाय कुल २ ना उदयमा २४ भग

गाथा १८ ३ ना बधमा उदयस्थान १ तेना भग ३

२ ना बधमा उदयस्थान १ तेना भग २

१ ना बधमा उदयस्थान १ तेनो भग १

अवधक पणामा पण दशमे उदयस्थाने १ सज्वलन लोभ सूक्ष्म किट्टीकृतने वेदवा रूप होय ११ मे गुणस्थाने उदय पण नष्ट थया छता कषायनु उपशात-

पणुं होवाथी सत्तामां रहेला होय छे, ते प्रसंगे कह्युं. बाकी एकली सत्ता होवाथी संवेधमां तेनी जरूर नथी.

गाथा १९ हवे १० थी १ सुधीना उदयस्थानमां केटला भंग संभवे? ते बतावे छे.—

१० ना उदयमां १ चोवीशी. ६ ना उदयमां ७ चोवीशी.
९ ना उदयमां ६ चोवीशी. ५ ना उदयमां ४ ,,
८ ना उदयमां ११ चोवीशी. ४ ना उदयमां १ ,,
७ ना उदयमां १० ,, कुल ४० चोवीशी.
२ ना उदयमां १ चोवीशी मतांतर साथे. १ ना उदयमां ११ भंग छुटा.

गाथा २० ४१ चोवीशी होवाथी तेने २४ शे गुणतां ९८४ थाय, तेमां ११ भेळवतां ९९५ थाय. आ उदय आश्री चोवीशीना भंग थया.

हवे जेटली प्रकृतिनो उदय छे, ते आश्री गुणतां पद संख्या नीचे प्रमाणे थाय.—

१० ने एके गुणतां १०. ६ ने साते गुणतां ४२.
९ ने छए गुणतां ५४. ५ ने चारे गुणतां २०.
८ ने अग्यारे गुणतां ८८. ४ ने एके गुणतां ४.
७ ने दशे गुणतां ७०. २ ने एके गुणतां २.

आ २९० ने चोवीशे गुणता ६९६० थाय. तेमां छूटा ११ भंग क्षेपवतां ६९७१ थाय. आ प्रमाणे भंग तो मतांतर प्रमाणे ४ ना बंधमां पण एक वेदनो उदय गणतां थाय. पण ते १२ भंग काढी नाखीए तो उदयना भंग ९८३ थाय, अने तेना पदमांथी मतांतरनी एक चोवीशीना २४ काढी नाखतां ६९४७ पदसंख्या थाय.

१० नो उदय. चोवीशी १ ( २२ ना बंधमां ).

९ नो उदय. चोवीशी ६.
चोवीशी ३ ( २२ ना बंधमां ).
चोवीशी १ ( २१ ना बंधमां ).
चोवीशी १ ( १७ ना बंधमां, त्रीजे ).
चोवीशी १ ( १७ ना बंधमां, चोथे ).

८ नो उदय. चोवीशी ११.
चोवीशी ३ ( २२ ना बंधमां ).
चोवीशी २ ( २१ ना बंधमां ).
चोवीशी २ ( १७ ना बंधमां, त्रीजे ).
चोवीशी ३ ( १७ ना बंधमां, चोथे ).
चोवीशी १ ( १३ ना बंधमां ).

७ नो उदय. चोवीशी १०.
चोवीशी १ ( २२ ना बंधमां ).
चोवीशी १ ( २१ ना बंधमां ).
चोवीशी १ ( १७ ना बंधमां, त्रीजे ).
चोवीशी ३ ( १७ ना बंधमां, चोथे ).
चोवीशी ३ ( १३ ना बंधमां ).
चोवीशी १ ( ९ ना बंधमां ).

६ नो उदय. चोवीशी ७.
चोवीशी १ ( १७ ना बंधमां, चोथे ).
चोवीशी ३ ( १३ ना बंधमां ).
चोवीशी ३ ( ९ ना बंधमां ).

५ नो उदय. चोवीशी ४.
चोवीशी १ ( १३ ना बंधमां ). चोवीशी ३ ( ८ ना बंधमां ).

४ नो उदय. चोवीशी १ ( ९ ना बंधमां ).

२ नो उदय चोवीशी १ (५–४ ना वंधमा मतातरे)

१ नो उदय छुटक भग ११

४ ना वधमा ४, ३ ना वधमा ३, २ ना वधमा २, १ ना वधमा १, अवधकमा १

गाथा २१ आ प्रमाणे उदय अने तेना भग जघन्य एक समय अने उत्कृष्ट अतर्मुहूर्त होय छे कारण के ४ थी १० सुधीना उदयमा कोई एक वेद के एक युगळ होय छे, तेथी जरूर अतर्मुहूर्ते ते पलटाय छे

वेनो उदय अने एकनो उदय तो प्रगटपणे अतर्मुहूर्तनो ज छे

आ प्रमाणे विवक्षित उदयमा के भगमा एक समय रहीने वीजे समये गुणस्थानातर थाय, त्यारे तो अवश्य वधस्थानना भेदथी, गुणस्थानना भेदथी वा स्वरूपथी उदयातर अने भगातरमा जाय छे तेथी सर्वे उदय अने सर्वे भंग जघन्य एक समयना छे

गाथा २२ आ प्रमाणे वधस्थान साथे उदयस्थाननो संवेध कह्यो हवे सत्तास्थान साथे सवेध कहे छे —

२२ ना वधमा त्रण सत्तास्थान–२८–२७–२६

२२ नो वध मिथ्यादृष्टिने होय छे, तेने उदयस्थान चार छे—७–८–९–१०

७ ना उदयमा एक ज सत्ता स्थान २८ नु छे (अनतानुवधी उदयमा न होवाथी)

८ ना उदयमा त्रण सत्ता स्थान–२८–२७–२६ अनादि मिथ्यात्वीने पण २६.

९ ना उदयमा ३ सत्ता स्थान–२८–२७–२६

(८ अने ९ मा अनतानुवधीना उदय विनानाने तो २८ नुं ज सत्तास्थान अने तेना उदयवाळाने त्रण सत्ता स्थान )

१० ना उदयमा त्रण सत्ता स्थान–२८-२७-२६उदयमा अनतानुवधी अवश्य होवाथी

२१ ना वधमा एक ज सत्ता स्थान २८ नु

२१ ना वधमा उदयस्थान ३ (७–८–९) ते त्रणेमा सम्यक्त्व गुणवडे मिथ्यात्व शुद्ध करेल होवाथी तेनी त्रणे प्रकृति सत्तामा पामीए तेथी २८ (२१ नो वध वीजे गुणस्थाने ज होवाथी )

१७ ना वधमा ६ सत्ता स्थान–२८–२७–२४–२३–२२–२१

१७ नो वध त्रीजे तथा चोथे गुणस्थाने होय छे तेमा त्रीजा गुणस्थानवाळाने ३ उदय स्थान होय छे–७–८–९ तथा चोथा गुणस्थान वाळाने ४ उदय स्थान होय छे–६–७–८–९

६ ना उदयवाळा उपशम समकितीने वे सत्तास्थान–२८–२४ समकित प्राप्ति काळे २८ उपशम श्रेणिथी पडता उपशात अनतानुबधीवाळाने २८ अने उद्धलित अनतानुबधीवाळाने सत्तामा २४ तथा क्षायिक समकितीने २१ नु ज सत्ता स्थान होय छे केमके सप्तकनो क्षय छे कुल ६ ना उदयमा त्रण सत्तास्थान छे–२८–२४–२१

७ ना उदयमा मिथ्यादृष्टिने सत्तास्थान त्रण छे–२८–२७–२४ ते २८ नी सत्ता-

वाळो त्रीजुं गुणस्थान पामे, तेने तो २८ नी सत्ता. परंतु जे मिथ्यादृष्टिए समकित मोहनी उद्वलित करी होय, मिश्र न करी होय त्यां सुधी तेने २७ नी सत्ता. अने जे पूर्वे समकिती छतो अनंतानुवंधीनी विसंयोजना करी पछी मिश्रे जाय तेने २४ नी सत्ता. तेवा जीव चारे गतिमां पामीए. चोथा पांचमा अने छठ्ठा गुणस्थानवाळा जीव अनंतानुवंधीनी विसंयोजना कर्या पछी परिणामना वशथी त्रीजे गुणस्थाने आवे तेने आश्रीने २४ छे.

७ ना उदयमां चोथा गुणस्थान वाळाने ५ सत्तास्थान–२८–२४–२३–२२–२१. तेमां २८ तथा २४ नी सत्ता उपशमवाळाने के क्षयोपशमवाळाने. पण २४ नी सत्ता तो अनंतानुवंधीनी विसंयोजना कर्या पछी. २३ अने २२ नी सत्ता क्षयोपशमवाळाने. तेमां अनंतानुवंधी अने मिथ्यात्व खपावनारने २३, तदुपरांत मिश्र खपावनारने २२. समकित मोहनी खपावतां चरम ग्रासे वर्ततो कोई जीव काळ करे तो ते चारे गतिमां पामीए, तेथी २२ नुं सत्तास्थान पण चारे गतिमां पामीए. तथा २१ नी सत्ता क्षायिक सम्यग्दृष्टिने ज होय.

८ ना उदयमां पण त्रीजा चोथा गुणस्थानवाळाने उपर प्रमाणे पांच सत्तास्थान.

९ ना उदयमां पण ते ज प्रमाणे समजवुं. विशेष एटलो छे के ९ नो उदय क्षयोपशम समकितीने ज होय, तेथी तेने ४ सत्तास्थान–२८–२४–२३–२२.

१३ ना वंधमां पांच सत्तास्थान–२८–२४–२३–२२–२१.

१३ ना वंधवाळा तिर्यंच अने मनुष्य होय छे. तेमां तिर्यंचने चार उदयस्थान–५–६–७–८. तथा सत्ता स्थान २८ अने २४ ए वे ज होय. कारणके वीजां सत्तास्थान तिर्यंचने न होय. वीजां सत्तास्थान तो क्षायिक उत्पन्न मनुष्यने होय छे. अने क्षायिकवाळो तिर्यंचमां जाय तो असंख्य आयुमां ज जाय छे; त्यां देशविरति न होवाथी तेने १३ नो वंध होतो नथी.

२८ नी सत्ता उपशम अने वेदक ( क्षयोपशम ) समकितीने होय छे. तेमां उपशम उत्पन्न काळे अंतरकरणना काळमां वर्तता जीवमां कोई देशविरतिपणुं पण पामे छे. कोई मनुष्य सर्वविरति पण अंगीकार करे छे.

२८ नी सत्ता वेदक वाळाने होय ते तो प्रगट ज छे. अने अनंतानुवंधीनी विसंयोजना कर्या पछी २४ नी सत्ता होय.

५ ना उदयमां देशविरति मनुष्यने ३ सत्तास्थान—२८–२४–२१.

६–७ ना उदयमां पांच सत्तास्थान—२८–२४–२३–२२–२१.

८ ना उदयमां २१ विना चार सत्तास्थान—२८–२४–२३–२२.

९ ना वंधमां प्रमत्त तथा अप्रमत्तने ४ ना उदयमां त्रण त्रण सत्तास्थान–२८–२४–२१.

५–६ ना उदयमां ५ सत्तास्थान.

७ ना उदयमां २१ विना ४ सत्तास्थान.

गाथा २३ ५ ना बंधमा ६ सत्तास्थान—२८–२४–२१–१३–१२–११.

२८–२४ नी सत्ता उपशम श्रेणिमा उपशम समकितीने होय

२१ नी सत्ता उपशम श्रेणिमा क्षायिक समकितीने होय (बीजी त्रीजी चोकडी न खपावी होय त्या सुधी)

१३ नी सत्ता बीजी त्रीजी चोकडी खपावे त्यारे

१२ नी सत्ता नपुंसक वेद खपाने त्यारे

११ नी सत्ता स्त्रीवेद खपावे त्यारे.

५ विगेरे सत्ता पाचना बधवाळाने न होय, कारण के त्या पुरुषवेद बधमा छे, अने पुरुषवेद बधाय त्या सुधी हास्यादि पट्कनो क्षय न थाय तेथी.

४ ना बधमा छ सत्तास्थान—२८–२४–२१–११–५–४

२८–२४ अने २१ नी सत्ता उपशम श्रेणिमा पण जो नपुसकवेदे क्षपकश्रेणि माडे तो समकाळे नपुंसकवेद अने स्त्रीवेदने खपावे तेज वखते बधमाथी पुरुषवेद खपावे पछी पुरुषवेद अने हास्यादि पट्क सत्तामाथी खपावे एटले ते न खपावे त्या सुधी ११ नी सत्ता, अने खपाव्या पछी ४ नी सत्ता. स्त्रीवेदे क्षपकश्रेणि माडनारने पण ए प्रमाणे ११ अने ४ नी सत्ता ते बन्नेने ५ नी सत्ता न होय पुरुषवेदे क्षपकश्रेणि माडनारने हास्यादि पट्कनी साथे ज पुरुषवेदनो बधमाथी क्षय थाय छे तेथी चतुर्विध बंध काळे तेने ११ नुं सत्तास्थान होतु नथी, पण पाचनु ज सत्तास्थान होय छे ते ५ नी सत्ता बे समय ऊणी बे आवलिका पर्यंत जाणवी पछी पुरुषवेद खपावता ४ नी सत्ता, ते पण अतर्मुहूर्त समजवी

३–२ अने १ ना बधमा प्रत्येके पाच पाच सत्तास्थान

३ ना बधमा ५ सत्तास्थान आ प्रमाणे–२८–२४–२१–४–३ तेमा पहेला त्रण उपशम श्रेणिमा अने छेल्ला २ क्षपक श्रेणिमा, ते आ प्रमाणे–संज्वलन क्रोधनी प्रथमनी स्थिति आवलिका मात्र रहे त्यारे तेना बंध, उदय अने उदीरणा समकाळे क्षय पामे, तेथी बध ३ नो रहे पण सत्तामाथी बे समय ऊन बे आवलिका जेटले काळे तेने खपावे नहीं त्यां सुधी सत्ता ४ नी अने खपावे त्यारे सत्ता ३ नी, ते अतर्मुहूर्त पर्यंत.

२ ना बधमा ५ सत्तास्थान आ प्रमाणे–२८–२४–२१–३–२ अहीं पण उपर प्रमाणे समजवु फक्त सज्वलन क्रोध पछी मान खपावता ३–२नी सत्ता

१ ना बधमा ५ सत्तास्थान—२८–२४–२१–२–१ अहीं पण उपर प्रमाणे समजवु विशेष एके सज्वलन मान पछी माया खपावता २–१ नी सत्ता रहे एटले पूर्ण न खपे त्या सुधी २, अने पूर्ण खपे त्यारे १

अबंधकमा सत्तास्थान ४ ते आ प्रमाणे—२८–२४–२१–१ तेमा त्रण उपशम श्रेणिमा, अने एक सज्वलन लोभ ज्या सुधी पूर्ण न खपे त्या सुधी दशमे गुणस्थाने क्षपकने १ नी सत्ता

गाथा २४ आ प्रमाणे मोहनी कर्मना बंधस्थान १०, उदयस्थान ९, अने सत्तास्थान १५ ना संवेध कह्या. हवे नाम कर्मनी व्याख्या करतां प्रथम तेना बंधादिस्थान केटलां छे? ते कहे छे.

गाथा २५ नाम कर्मना बंधस्थान ८ (२३–२५–२६–२८–२९–३०—३१–१.) तिर्यंच मनुष्यादि गति पणे ते दरेक स्थान अनेक प्रकारे छे ते कहे छे.

तिर्यंच गतिने ५ बंधस्थान–२३–२५–२६–२९–३०. तेमां एकेंद्रिय प्रायोग्य त्रण बंधस्थान—२३–२५–२६. तेमां २३ नो बंध अपर्याप्त एकेंद्रिय प्रायोग्य बांधतां तिर्यंच तथा मनुष्य मिथ्यादृष्टिने होय. ते आ प्रमाणे—

| | | |
|---|---|---|
| १ तिर्यग्गति. | ३ औदारिक, तैजस, कार्मण. | १ अगुरुलघु. |
| १ एकेंद्रिय जाति. | ४ वर्णादि चतुष्क. | १ उपघात. |
| १ तिर्यगानुपूर्वी. | १ हुंडक संस्थान. | १ स्थावर नाम. |
| १ सूक्ष्म के बादर. | १ दुर्भग नाम. | १ निर्माण. |
| १ अपर्याप्त. | १ अनादेय नाम. | १ अस्थिर नाम. |
| १ प्रत्येक के साधारण. | १ अयशःकीर्ति. | १ अशुभ नाम. |

आ २३ ना चार विकल्प थाय.

१ सूक्ष्म प्रत्येक, २ सूक्ष्म साधारण, ३ बादर प्रत्येक, ४ बादर साधारण.

आ २३ मां पराघात अने उच्छ्वास भेळवतां २५ थाय. ते एकेंद्रिय पर्याप्त प्रायोग्य बांधतां नारकी विना त्रण गतिवाळा मिथ्यादृष्टिने होय. ते २५ आ प्रमाणे.—

| | | |
|---|---|---|
| १ तिर्यंच गति, | १ तिर्यगानुपूर्वी, | १ एकेंद्रिय जाति, |
| १ औदारिक शरीर, | १ तैजस, | १ कार्मण, |
| ४ वर्णादि चतुष्क, | १ हुंडक संस्थान, | १ अगुरुलघु, |
| २ उपघात ने निर्माण, | १ पराघात, | १ उच्छ्वास, |
| १ स्थावर नाम, | १ सूक्ष्म के बादर, | १ पर्याप्त, |
| १ प्रत्येक के साधारण, | १ शुभ के अशुभ, | १ स्थिर के अस्थिर, |
| १ दुर्भग, | १ अनादेय, | १ यश के अयश, |

आ २५ भेदना २० विकल्प थाय, ते आ प्रमाणे,—

८ बादर पर्याप्त प्रत्येक आश्री स्थिर अस्थिर, शुभ अशुभ, तथा यश अयशवडे गुणता ८ विकल्प.

४ बादर पर्याप्त साधारण आश्री शुभ अशुभ, स्थिर अस्थिर वडे गुणतां ४ (तेने अयश ज होय छे).

८ सूक्ष्म पर्याप्त साधारण अने प्रत्येक ए बन्नेने शुभाशुभ अने स्थिरास्थिर साथे गुणतां ८ (तेने पण अयश ज होय छे).

आ २५ प्रकृतिमां आतप के उद्योत ए बेमांथी एक भेळवतां २६ थाय. ते पण एकेंद्रिय पर्याप्त प्रायोग्य बांधतां नारकी विना त्रणे गतिना मिथ्यादृष्टिने जाणवी. ते २६ मां सूक्ष्म अने साधारण न लेवां, कारण के तेने आतप के उद्योत नाम होतुं नथी. ते २६ ना सोळ विकल्प थाय. ते नीचे प्रमाणे.—

आतपने स्थिरास्थिर साथे गुणता २, तेने शुभाशुभ साथे गुणता ४, तेने यश अयश साथे गुणता ८, तेवाज उद्योतना पण ८ मळीने १६ थाय छे.
कुल एकेंद्रिय आश्री ( ४-२०-१६ ) ४० विकल्प थया

हवे द्वींद्रिय आश्री बंधस्थान ३ ( २५-२९-३० )

द्वींद्रिय अपर्याप्त प्रायोग्य बांधता मिथ्यादृष्टिने २५ नो बंध आ प्रमाणे —

| | | |
|---|---|---|
| १ तिर्यग्गति, | १ तिर्यगानुपूर्वी, | १ औदारिक शरीर, |
| १ औदारिक अंगोपांग, | २ तैजस अने कार्मण, | ४ वर्णादि चतुष्क, |
| १ हुंडक संस्थान, | १ छेवठुं संघयण, | १ अगुरुलघु, |
| १ उपघात, | १ त्रस नाम, | १ बादर नाम, |
| १ अपर्याप्त, | १ प्रत्येक, | १ अस्थिर, |
| १ अशुभ, | १ अनादेय, | १ अयश, |
| १ निर्माण, | १ दुर्भग, | १ द्वींद्रिय जाति |

आमा परावर्तमान प्रकृति पण अशुभ ज आवती होवाथी अहीं एकज भंग थाय छे
आ २५ मा अपर्याप्तने स्थाने पर्याप्त करीने १ पराघात, १ उच्छ्वास, १ अप्रशस्त-गति, अने १ दुःस्वर, ए चार प्रकृति भेळवता २९ नो बंध थाय
आ २९ ना स्थिरास्थिर, शुभाशुभ अने यश अयशवडे गुणता भंग ८ थाय
आ २९ मा उद्योतनाम भेळवता ३० थाय तेना पण उपर प्रमाणे ८ भंग थाय
कुल द्वींद्रिय आश्री ( १-८-८ ) भंग १७ थाय छे

तेज प्रमाणे त्रींद्रिय अने चतुरिंद्रिय आश्री मिथ्यादृष्टिने त्रण त्रण बंधस्थान तथा सत्तर सत्तर भंग समजवा मात्र इंद्रिय नाममा जूदु नाम बोलवुं
कुल विकलेंद्रिय आश्री भंग ५१

तिर्यक् पंचेंद्रिय प्रायोग्य ३ बंध स्थान ( २५-२९-३० )

तेमा २५ अपर्याप्त तिर्यंच पंचेंद्रिय संबंधी उपर द्वींद्रियमा कह्या प्रमाणे समजवा. मात्र द्वींद्रियनामने स्थाने पंचेंद्रियनाम बोलवुं तेनो भंग पण एकज छे
हवे २९ तिर्यंच पंचेंद्रिय पर्याप्त आश्री बांधे, ते आ प्रमाणे—

| | | |
|---|---|---|
| १ तिर्यग्गति, | १ तिर्यगानुपूर्वी, | २ औदारिकद्विक, |
| २ तैजस कार्मण, | १ पंचेंद्रिय जाति, | १ छमांथी एक संस्थान, |
| १ छमांथी एक संघयण, | १ प्रशस्त के अप्रशस्तगति, | १ त्रस, |
| १ बादर, | १ प्रत्येक, | १ पर्याप्त, |
| १ स्थिर के अस्थिर, | १ शुभके अशुभ, | १ सुभग के दुर्भग, |
| १ आदेय के अनादेय, | १ सुस्वर के दुःस्वर, | १ यश के अयश, |
| १ अगुरुलघु, | १ उपघात, | १ पराघात, |
| १ उच्छ्वास, | १ निर्माण | ४ वर्णादि चतुष्क |

आ प्रमाणे २९ मिथ्यादृष्टि चारे गतिना बांधे सास्वादनी पण २९ बांधे, परंतु सासादनी संघयण अने संस्थान पांचमांथी एक एक बांधे, छठ्ठुं संस्थान

अने संघयण न बांधे. आ २९ ना बंधमां भंग ४६०८ थाय. ते नीचे प्रमाणे.—

| | |
|---|---|
| छ संस्थाने गुणतां | ६ |
| तेने छ संघयणे गुणतां | ३६ |
| तेने बे विहायोगतिए गुणता | ७२ |
| तेने स्थिरास्थिरे गुणतां | १४४ |
| तेने शुभाशुभे गुणतां | २८८ |
| तेने सुभग दुर्भगे गुणतां | ५७६ |
| तेने आदेय अने अनादेये गुणतां | ११५२ |
| तेने यश अने अयशे गुणतां | २३०४ |
| तेने सुस्वर अने दुःस्वरे गुणतां | ४६०८ |

आ २९ मां उद्योतनाम भेळवतां ३० बांधे. तेना भंग पण उपर प्रमाणे ४६०८ थाय.

कुल तिर्यंच पंचेंद्रियना ( १–४६०८–४६०८ ) भंग ९२१७ थाय.

कुल तिर्यंच गति आश्री प्रथमना ४० ने ५१ मेळवतां ९३०८ भंग थाय.

मनुष्यगति प्रायोग्य बांधतां ३ बंधस्थान ( २५–२९–३० )

तेमां २५ पूर्वे द्वींद्रिय अपर्याप्तमां गणाव्या प्रमाणे. पण तेमां मनुष्यगति, मनुष्यानुपूर्वी, पंचेंद्रियजाति, एम बोलवुं. तेनो भंग १.

२९ नो बंध त्रण प्रकारे ते आ प्रमाणे.—

१ मिथ्यादृष्टि आश्री चारे गतिना जीव बांधे.

१ सास्वादन आश्री चारे गतिना जीव बांधे.

१ त्रीजा चोथा गुणस्थान आश्री देवता तथा नारकी बांधे.

तेमां पहेला बीजा गुणस्थानने आश्री तो उपर तिर्यंच पंचेंद्रिय पर्याप्तमां कह्या-प्रमाणे २९ समजवा.

त्रीजा चोथा गुणस्थानने आश्री २९ नीचे प्रमाणे.—

| | | |
|---|---|---|
| १ मनुष्यगति, | १ मनुष्यानुपूर्वी, | १ पंचेंद्रिय जाति, |
| २ औदारिकद्विक, | २ तैजस कार्मण, | ४ वर्णादि चतुष्क, |
| १ पहेलुं संघयण, | १ पहेलुं संस्थान, | १ अगुरुलघु, |
| १ उपघात, | १ पराघात, | १ उच्छ्वास, |
| १ त्रस, | १ बादर, | १ पर्याप्त, |
| १ प्रत्येक, | १ स्थिर के अस्थिर, | १ शुभ के अशुभ, |
| १ सुभग | १ सुस्वर, | १ आदेय, |
| १ यश के अयश, | १ निर्माण, | १ प्रशस्त विहायोगति, |

आ २९ आश्री स्थिरास्थिर, शुभाशुभ, अने यश अयश, आ त्रण विकल्प होवाथी आठ भंग थाय.

मिथ्यादृष्टि आश्री २९ तिर्यंचगति प्रमाणे होवाथी २९ ना बंधना मनुष्यगति आश्री पण पूर्ववत् ४६०८ भंग थाय.

सास्वादन आश्री २९ ना वधमा एक एक संघयण अने संस्थान घटवाथी भंग ३२०० थाय ते आ प्रमाणे —

५+५=२५+२=५०+२=१००+२=२००+२=४००+२=८००+२=१६००+२= ३२०० आनो समावेश ४६०८ नी अंतर्गत समजवो

त्रीजा प्रकारना २९ ना वधमा तीर्थंकर नाम भेळवता ३० नो वध सम्यग्दृष्टिने होय तेना स्थिरास्थिर, शुभाशुभ, अने यश अयश साथे गुणता ८ भंग थाय कुल मनुष्यगति आश्री ( १–४६०८–८ मळी ) ४६१७ भग थया.

हवे देवगति प्रायोग्य वाधता ४ वंधस्थान–२८–२९–३०–३१ होय तेमा २८ नो वध आ प्रमाणे.—

| | | |
|---|---|---|
| १ देवगति, | १ देवानुपूर्वी, | २ वैक्रियद्विक, |
| २ तैजस कार्मण, | ४ वर्णादिचतुष्क, | १ समचतुरस्र संस्थान, |
| १ अगुरुलघु, | १ उपघात, | १ पराघात, |
| १ उच्छ्वास, | १ प्रशस्त विहायोगति, | १ त्रस, |
| १ बादर, | १ पर्याप्त, | १ प्रत्येक, |
| १ स्थिर के अस्थिर, | १ शुभ के अशुभ, | १ सुभग, |
| १ सुस्वर, | १ आदेय, | १ यश के अयश, |
| १ निर्माण, | १ पचेंद्रिय जाति, | |

आ २८ प्रकृति १–२–३–४–५ अने ६ ठ्ठा गुणस्थान सुधी देवगति प्रायोग्य वाधता वाधे, तेना भंग स्थिरास्थिर, शुभाशुभ अने यश अयशवडे ८ थाय

आ २८ मा तीर्थंकर नाम भेळवता २९ थाय पण ते चोथा गुणस्थानथीज वं-धाय, तेना पण पूर्ववत् ८ भग थाय

पूर्वोक्त २८ मा आहारकद्विक भेळवता ३० थाय पण अहीं विकल्पवाळी त्रणे प्रकृति शुभज जाणवी तेथी तेनो भग १ ते सातमा तथा आठमा गुण-स्थानवाळानेज होय

पूर्वोक्त ३० मा तीर्थंकर नाम भेळवता ३१ थाय पण ते सातमा आठमा गुण-स्थानवाळाज वाधे अहीं पण एकज भंग

सर्व मळीने देवगति प्रायोग्य भग १८ थया

नरकगति प्रायोग्य एकज वधस्थान–२८

| | | |
|---|---|---|
| १ नरकगति, | १ नरकानुपूर्वी, | २ वैक्रियद्विक, |
| २ तैजस कार्मण, | ४ वर्णादिचतुष्क, | १ पचेंद्रिय जाति, |
| १ हुंडक सस्थान | १ अगुरुलघु, | १ उपघात, |
| १ पराघात, | १ उच्छ्वास, | १ निर्माण, |
| १ त्रस, | १ बादर, | १ पर्याप्त, |
| १ प्रत्येक, | १ अस्थिर, | १ अशुभ, |
| १ दुर्भग, | १ अनादेय, | १ अयश, |
| १ दु स्वर, | १ अप्रशस्त विहायोगति. | |

आ २८ प्रकृति अशुभ बांधे. पहेले गुणस्थाने एनो बंध होय. एनो भंग एकज थाय.
एक यशकीर्ति नामकर्मनो बंध अपूर्वकरणे थाय. ते देवगति प्रायोग्य बंध पण
व्यवच्छिन्न थया पछी ८-९-१० मा गुणस्थानवाळाने होय.

गाथा २६. कया बंधस्थाने कुल केटला भंग थया ? ते गणावे छे.

२३ ना बंधमां ४ विकल्प एकेंद्रिय अपर्याप्त प्रायोग्य.

२५ ना बंधमां २५ विकल्प. तेमां २० एकेंद्रिय पर्याप्तना तथा बे त्रण चार इंद्रिय-
वाळा, मनुष्य तथा तिर्यंच पंचेंद्रिय अपर्याप्तमां एक एक मळी पांच. कुल २५.

२६ ना बंधमां १६ विकल्प. एकेंद्रिय पर्याप्त प्रायोग्य.

२८ ना बंधमां ९ विकल्प. ८ देवगतिना, १ नरकगतिनो.

२९ ना बंधमां ९२४८ विकल्प. ४६०८ तिर्यंच पंचेंद्रिय, ४६०८ मनुष्य, २४
विकलेंद्रिय, तथा ८ देवता.

३० ना बंधमां ४६४१ विकल्प. ४६०८ तिर्यंच पंचेंद्रिय, २४ विकलेंद्रिय, ८
मनुष्य तथा १ देव प्रायोग्य.

३१ ना बंधमां १ विकल्प.

१ ना बंधमां १ विकल्प. ८-९-१० मा गुणस्थान आश्री.

कुल १३९४५ विकल्प थया.

नाम कर्मना उदयस्थान १२.

गाथा २७ ( २०-२१-२४-२५-२६-२७-२८-२९-३०-३१-९-८ ).

एकेंद्रियने उदयस्थान ५. ( २१-२४-२५-२६-२७ ).

तेमां २१ नीचे प्रमाणे.—

| | | | |
|---|---|---|---|
| २ तैजस कार्मण, | २ स्थिरास्थिर, | २ शुभाशुभ, | आ १२ |
| ४ वर्णादि चतुष्क, | १ अगुरुलघु, | १ निर्माण, | ध्रुवोदयीछे. |
| १ तिर्यग्गति, | १ तिर्यगानुपूर्वी, | १ स्थावर नाम. | |
| १ एकेंद्रिय जाति, | १ बादर के सूक्ष्म, | १ पर्याप्त के अपर्याप्त, | |
| १ दुर्भग, | १ अनादेय, | १ यश के अयश. | |

आ प्रमाणे २१ नो उदय अपांतरालगतिमां समजवो. अहीं भंग ५ छे. तेमां
स्थावर बादर अने सूक्ष्मने पर्याप्त अने अपर्याप्तवडे गुणतां मात्र अयश साथे
४ भंग थाय. तेमांना ३ ने यशनो उदय न होय तेना ३, तथा स्थावर बादर
पर्याप्त आश्री यशनो पण उदय होय तेथी तेना भंग २.

अहीं मात्र आहार पर्याप्त थतां तेमां पर्याप्तने पर्याप्त नामकर्मनो तथा अपर्या-
प्तने अपर्याप्त नामकर्मनो उदय होय, तेथी बन्ने गणाय.

आ जीवने शरीरस्थ थतां ४ प्रकृति वधे.

१ औदारिक शरीर, १ हुंडकसंस्थान, १ उपघातनाम, १ प्रत्येक के साधारण. ए
४ वधे, तथा १ तिर्यंचनी आनुपूर्वी घटे, तेथी कुल २४ नो उदय थाय.
तेना भंग १० थाय. ते नीचे प्रमाणे.—

४ वादर पर्याप्तने प्रत्येक अने साधारण तथा यश अने अयश साथे गुणता ४
२ वादर अपर्याप्तने प्रत्येक अने साधारण साथे गुणता २ तेने मात्र अयशज होय
४ सूक्ष्मने प्रत्येक तथा साधारण साथे अने पर्याप्त तथा अपर्याप्त साथे गुणता ४ तेने पण अयश ज होय
वादर वायुकायने वैक्रिय शरीर करती वखत औदारिक शरीरने ठेकाणे वैक्रिय शरीर कहेवु तेथी तेने पण २४ नो उदय थाय, पण तेनो भग एक ज थाय केमके तेजस्काय तथा वायुकायने साधारणपणे यशकीर्तिनो उदय छे ज नही वैक्रिय शरीर पर्याप्तने ज होय छे, तेथी ते आश्री पण भग जूदा न थाय
कुल २४ ना उदयमा भग ११ थाय छे
२४ ना उदयवाळा एकेंद्रिय शरीर पर्याप्तिवडे पर्याप्त थता तेमा पराघात नाम भळवाथी २५ नो उदय थाय तेना भग ६
४ वादरने प्रत्येक तथा साधारण साथे तथा यश अने अयश साथे गुणता ४.
२ सूक्ष्मने प्रत्येक तथा साधारण साथे गुणता २ तेने अयशनो ज उदय होय
अहीं पर्याप्तपणु गणी अपर्याप्तना जूदा भेद कह्या नथी
वादर वायुकायने वैक्रिय करता शरीर पर्याप्तिवडे पर्याप्त थतां पराघात क्षेपवाथी २५ थाय तेनो पण पूर्ववत् एकज भग

कुल २५ ना उदयमा ७ भंग

पूर्वोक्त २५ ना उदयवाळा एकेंद्रिय श्वासोच्छ्वास पर्याप्तिवडे पर्याप्त थतां उच्छ्वास नामकर्म मेळववाथी २६ नो उदय तेना पण उपर प्रमाणे भग ६
अथवा २५ ना उदयवाळाने श्वासोच्छ्वास पर्याप्तिए पर्याप्त थया अगाउ आतप के उद्योतनो उदय थवाथी २६ नो उदय. तेना पण भंग ६ ते आ प्रमाणे—
४ उद्योत नामवाळा वादरने प्रत्येक अने साधारण साथे तथा यश अने अयश साथे गुणता ४ थाय तथा आतप नामवाळा प्रत्येकने यश अयश साथे गुणता २ थाय आतप नाम साधारणने न होवाथी कुल ६ भग
वादर वायुकायने वैक्रिय करता २५ ना उदयमा उच्छ्वास नाम भेळवता २६ थाय तेनो पूर्ववत् जेम एकज भंग केमके तेउ वायु कायने आतप, उद्योत अने यशनो उदय नथी
कुल २६ ना उदयमा १३ भंग थाय
उच्छ्वासवाळा २६ ना उदयी एकेंद्रियने आतप के उद्योत भेळवता २७ नो उदय थाय तेना छ भग उपर आतप के उद्योतमा बताव्या प्रमाणे
कुल एकेंद्रियना उदय भंग (५–११–७–१३–६) ४२ थाय

द्वींद्रियने उदय स्थान ६ (२१–२६–२८–२९–३०–३१)

१२ ध्रुवोदयी, १ तिर्यग्गति, १ तिर्यगानुपूर्वी, १ १ द्वींद्रिय जाति,
१ त्रसनाम, १ वादरनाम, १ पर्याप्त के अपर्याप्त, १ यश के अयश,
१ दुर्भग, १ अनादेय

आ प्रमाणे २१ अपांतरालगतिमां लाभे. अहीं त्रण भंग थाय. ते आ प्रमाणे—

२ पर्याप्तने यश के अयश साथे गुणतां २.

१ अपर्याप्तने एक अयश ज होय, तेथी तेनो १.

पूर्वोक्त २१ मां शरीरस्थ थतां ६ वधे. ते आ प्रमाणे—

१ औदारिक शरीर, १ औदारिक अंगोपांग, १ हुंडक संस्थान,
१ छेवठुं संघयण, १ उपघात नाम, १ प्रत्येक नाम.

आ ६ प्रकृति वधारवी, अने १ तिर्यंचनी आनुपूर्वी काढवी. एटले २६ थाय. तेना पण पूर्वोक्त प्रकारे ३ भंग जाणवा.

शरीर पर्याप्तिवडे पर्याप्तने १ प्रशस्त विहायोगति, १ पराघात नाम, वधे एटले २८. अहीं पर्याप्तने यश अयश साथे गुणतां २ भंग थाय छे. पर्याप्तपणानो तथा प्रशस्तविहायोगतिनो सद्भाव छे माटे.

पूर्वोक्त २८ मां श्वासोच्छ्वास पर्याप्तिए पर्याप्त थतां १ उच्छ्वास नाम वधे एटले २९ थाय. तेना पण पूर्ववत् भंग २.

अथवा शरीर पर्याप्तिए पर्याप्तने उच्छ्वासनो उदय न थाय अने उद्योत नामनो उदय थाय, तो पण २९. तेना पण यश अयश साथे भंग २.

कुल २९ ना उदयमां भंग ४.

२९ मां सुस्वर के दुःस्वर भेळवतां ३० नो उदय. तेना सुस्वर दुःस्वर तथा यश अयश साथे गुणतां भंग ४.

अथवा स्वरनो उदय नहीं थतां उच्छ्वासवाळाने उद्योत नामनो उदय थतां पण ३०. तेना भंग यश अयश साथे गुणतां २.

कुल ३० ना उदयमां भंग ६.

भाषा पर्याप्तिए पर्याप्त स्वरना उदयवाळाने ३० मां उद्योतनाम भेळवतां ३१ थाय. तेना सुस्वर दुःस्वर अने यश अयश साथे गुणतां भंग ४.

कुल द्वींद्रिय आश्री भंग ( ३—३–२–४–६–४ ) २२ थाय.

त्रींद्रिय अने चतुरिंद्रियने पण उपर प्रमाणे ज छ छ उदय स्थान तथा बावीश बावीश भंग होवाथी कुल विकलेंद्रियना भंग ६६.

प्राकृत एटले वैक्रिय देह कर्याविनाना स्वाभाविक तिर्यंच पंचेंद्रियने उदयस्थान ६ ( २१–२६–२८–२९–३०–३१ )

१२ ध्रुवोदयी, १ तिर्यग्गति, १ तिर्यगानुपूर्वी, १ पंचेंद्रियजाति,
१ त्रसनाम, १ बादरनाम, १ पर्याप्त के अपर्याप्त, १ यश के अयश,
१ दुर्भग के सुभग, १ आदेय के अनादेय.

आ प्रमाणे २१ नो उदय अपांतरालगतिमां होय. तेना भंग ९.

८ पर्याप्तने यश अयश साथे, सुभग दुर्भग साथे, तथा आदेय अनादेय साथे गुणतां ८ थाय.

१ अपर्याप्तने अयश, दुर्भग अने अनादेय ज होवाथी १.

अन्य कहे छे के सुभग तथा आदेय अने दुर्भग अनादेयनुं युगळ साथे ज उदयमा होवाथी पर्याप्त आश्री ४ अने अपर्याप्त आश्री १ एम भग ५ थाय छे

पूर्वोक्त २१ माथी तिर्यचनी अनुपूर्वी काढीने छ नाखवाथी २६ थाय

१ छ सघयणमाथी एक, १ छ सस्थानमाथी एक, १ औदारिक शरीर,
१ औदारिक अंगोपाग, १ उपघात, १ प्रत्येक

आ प्रमाणे २६ प्रकृति शरीरस्थने होय तेना भंग २८९ नीचे प्रमाणे—

२८८ पर्याप्तने छ सघयण, छ सस्थान, सुभग दुर्भग, आदेय अनादेय तथा यश अयश साथे गुणता २८८ थाय, ते आ प्रमाणे—

पर्याप्तने ६ सघयणे गुणता ६
तेने ६ सस्थाने गुणता ३६
तेने सुभग दुर्भगे गुणता ७२
तेने आदेय अनादेये गुणता १४४
तेने यश अयश साथे गुणता २८८

१ अपर्याप्ता आश्री भागो एकज थाय कुल भग २८९

अपर्याप्तने छेवठु सघयण, हुंडक सस्थान, दुर्भग, अनादेय अने अयश होवाथी तेनो एकज भागो थाय छे तेथी कुल २८९ भग थाय छे

पूर्वोक्त २६ मा शरीर पर्याप्तिए पर्याप्तने २ प्रकृति उमेरता २८ थाय

१ पराघात, १ प्रशस्त के अप्रशस्त विहायोगति

आ प्रमाणे २८ ना उदयमा पूर्वोक्त २८८ भेदने बे प्रकारनी विहायोगति साथे गुणता भग ५७६ थाय ( अहीं अपर्याप्तपणुं न गणवु )

पूर्वोक्त २८ मा श्वासोच्छ्वास पर्याप्तिए पर्याप्त थता उच्छ्वास नाम भळवाथी २९ नो उदय. तेना पण भग ५७६

अथवा शरीर पर्याप्तिए पर्याप्तने उच्छ्वासनो उदय नहीं थता तथा उद्योतनामनो उदय थता २९. तेना भग पण ५७६

कुल २९ ना उदयमा भग ११५२

पूर्वोक्त २९ मा भाषापर्याप्तिए पर्याप्त थता सुस्वर के दुःस्वर भळवाथी ३० नो उदय तेना भग पूर्वोक्त ५७६ ने सुस्वर दुःस्वर साथे गुणता कुल ११५२

अथवा भाषापर्याप्तिनो उदय नहीं थता उच्छ्वासवाळाने उद्योतनो उदय थता ३० नो उदय तेना भग ५७६

कुल ३० ना उदयमा भग १७२८

स्वर सहित ३० वाळाने उद्योत नाम भळता ३१ नो उदय. तेना भग पूर्वनी जेम ११५२

कुल प्राकृत तिर्यच पचेंद्रिय आश्री भग ४९०६
( ९–२८९–५७६–११५२–१७२८–११५२ )

तिर्यंच पंचेंद्रियने वैक्रिय शरीर करता उदयस्थान ५.
( २५–२७–२८–२९–३० )

पूर्वे अपांतरालगतिमां कहेली २१ मांथी शरीरस्थ थतां तिर्यंचनी आनुपूर्वी काढीने नीचेनी ५ नांखवी.

२ वैक्रियद्विक, १ समचतुरस्र संस्थान, १ उपघात, १ प्रत्येक.

आ प्रमाणे २५ नो उदय तेना भंग पर्याप्ताने सुभग दुर्भग, आदेय अनादेय, यश अयश साथे गुणतां ८. (अहीं अपर्याप्त नामनो उदय होय ज नहीं.

पूर्वोक्त २५ मां शरीर पर्याप्तिए पर्याप्तने १ पराघात नाम अने १ प्रशस्तविहायोगति वधवाथी २७ नो उदय थाय. तेमां अप्रशस्त गति न होवाथी भंग ८.

पूर्वोक्त २७ मां श्वासोच्छ्वास पर्याप्तिए पर्याप्त थतां उच्छ्वास नाम वधवाथी २८ थाय. तेना पण भंग ८.

अथवा २७ मां उच्छ्वास न वधतां उद्योत वधे, तो पण २८ थाय. तेना पण भंग ८. कुल २८ ना उदयमां भंग १६ थाय.

२८ मां भाषापर्याप्तिए पर्याप्त थतां सुस्वर नामनो उदय थवाथी २९ थाय. तेना पण भंग ८.

अथवा २८ मां भाषापर्याप्तिए पर्याप्त न थतां सुस्वरनो उदय न थवाथी अने उद्योतनामनो थवाथी २९. तेना पण भंग ८. कुल २९ ना उदयमां भंग १६.

सुस्वर युक्त २९ मां उद्योत नाम भळवाथी ३० थाय. तेना भंग ८.

कुल वैक्रिय शरीर करतां भंग ( ८–८–१६–१६–८ ) ५६ थया.

कुल तिर्यंच पंचेंद्रियना भंग ( ४९०६–५६ ) ४९६२ थया.

कुल तिर्यंचगति आश्री विकलेंद्रियना ६६, एकेंद्रियना ४२, तथा पंचेंद्रियना ४९६२ मळी कुल ५०७० थया.

---

सामान्य मनुष्यने उदयस्थान ५ ( २१–२६–२८–२९–३० )

अहीं सर्वे भंग उपर प्रमाणे समजवा. मात्र मनुष्यने वैक्रिय आहारकविना उद्योत नामनो उदय न होवाथी २९–३० उद्योतनाम विनाना होय. तेथी २९ मां भंग ५७६, अने ३० मां भंग ११५२ थाय.

कुल सामान्य मनुष्य आश्री भंग २६०२ ( ९–२८९–५७६–५७६–११५२ )

मनुष्यने वैक्रिय करतां उदयस्थान ५ ( २५–२७–२८–२९–३० )

१२ ध्रुवोदयी, २ वैक्रियद्विक, १ समचतुरस्र, २ त्रस ने बादर,
१ पर्याप्त, १ प्रत्येक, १ उपघात, १ सुभग के दुर्भग,
१ यश के अयश, १ आदेय के अनादेय, १ मनुष्यगति, १ पंचेंद्रिय.

आ प्रमाणे २५ ना उदयमां सुभग दुर्भग, आदेय अनादेय, अने यश अयश साथे गुणतां भंग ८ थाय.

पांचमा छठ्ठा गुणस्थानवाळाने वैक्रिय करतां त्रणे शुभनो ज उदय समजवो, तेथी तेनो एकज भंग थाय. पण तेनो समावेश आ आठनी अंदर समजवो.

शरीर पर्याप्तिए पर्याप्तने १ पराघात, १ प्रशस्तविहायोगति ए वे भेळवता २७ नो उदय तेना भंग पण ८

२७ मा श्वासोच्छ्वास पर्याप्तिए पर्याप्त थता उच्छ्वास नाम भेळवता २८ नो उदय तेमा पण भंग ८

अथवा सयतने वैक्रिय करतां उच्छ्वास नामना उदय अगाउ उद्योत नामनो उदय थता पण २८ थाय परंतु तेनो भंग एकज केमके तेने त्रणे अशुभनो उदय नथी. कुल २८ ना उदयमा भंग ९

२८ मा उच्छ्वासवाळाने भाषापर्याप्तिए पर्याप्त थता सुस्वरनाम भळवाथी २९ थाय तेना भंग ८

अथवा भाषापर्याप्ति अगाउ सयतने उद्योत नाम भळनाथी पण २९ तेनो भंग पूर्ववत् १ कुल २९ ना उदयमा भग ९

पूर्वोक्त सुस्वर युक्त २९ मा सयतने उद्योत नाम भळनाथी ३० तेनो भंग १. कुल वैक्रिय आश्री भग ( ८–८–९–९–१ ) ३५

---

आहारक शरीरी मनुष्यने उदयस्थान ५ ( २५–२७–२८–२९–३० )

वैक्रियवत् २५ तेमा वैक्रियने स्थाने आहारकद्विक बोलवुं अने प्रकृति बधी शुभ ज कहेवी केमके आहारकने अशुभनो उदय होतो नथी तेथी अहीं भंग १.

२७ ना उदयमा पण भंग १

२८ ना उदयमा उच्छ्वासने उद्योतना विकल्पथी भग २

२९ ना उदयमा सुस्वर अने उद्योतना विकल्पथी भग २

३० ना उदयमा उद्योत भळता भंग १

कुल आहारक आश्री भग ( १–१–२–२–१ ) ७

केवळीना उदयस्थान १० ( २०–२१–२६–२७–२८–२९–३०–३१–९–८ )

१२ ध्रुवोदयी, २ त्रस ने बादर, १ मनुष्यगति, १ पंचेंद्रिय जाति,
१ सुभग, १ पर्याप्तनाम, १ आदेय, १ यशकीर्ति

आ २० नो उदय सामान्य केवळीने केवळी समुद्घातमा कार्मण काययोगे वर्तता ४–५–६ ठे समये होय अहीं भग १

उपरनी २० मा तीर्थकर नाम भेळवता २१ प्रकृतिनो उदय. तीर्थकरने उपर कहेले वखते ज होय अहीं पण भग १ .

पूर्वोक्त २० मा औदारिकमिश्र काययोगे वर्तता सामान्य केवळीने २–३–७ मे समये ६ उमेरता २६ नो उदय होय ते ६ आ प्रमाणे—२ औदारिक द्विक, १ छ सस्थानमाथी १, १ उपघात, १ प्रत्येक, १ वज्रर्षभनाराच सहनन अहीं ६ संस्थानवडे ६ भंग थाय पण ते सामान्य मनुष्यमा गणायेल होवाथी जूदा न गणवा

पूर्वोक्त २६ मा तीर्थकर नाम भेळवता २७ थाय. पण तेमा सस्थान समचतुरस्र ज होय तेथी तेनो भग १

पूर्वोक्त २६ मां नीचेनी चार भेळवतां ३० थाय.

१ पराघात, १ उच्छ्वास, १ सुस्वर के दुःस्वर, १ प्रशस्त के अप्रशस्त गति. आ ३० नो उदय सयोगी केवळीने औदारिक काययोगे वर्ततां कायम होय. तेमां छ संस्थान, बे गति, अने सुस्वर दुःस्वर साथे गुणतां भंग २४ थाय. पण ते सामान्य मनुष्यमां गणायेल होवाथी जूदा न गणवा.

पूर्वोक्त ३० मां तीर्थंकर नाम भळतां ३१ थाय. तेनो उदय सयोगी केवळी तीर्थंकरने औदारिक काययोगे वर्ततां होय. पण तेमां सुस्वर अने प्रशस्त विहायोगति ज होय, तेथी तेनो भंग १.

ते ज ३१ वाग्योग रुंध्ये छते सुस्वर नाम टळवाथी ३०, अने उच्छ्वास रुंधवाथी उच्छ्वास नाम टळे त्यारे २९ नो उदय तीर्थंकरने होय.

३० मांथी सामान्य केवळीने वाग्योग रुंध्ये सते २९, अने उच्छ्वास रुंध्ये सते २८ थाय. तेमां २९ ना ६ संस्थान अने बे गति साथे गुणतां १२ भंग थाय. अने २८ ना ६ संस्थान साथे ६ भंग थाय. पण ते पूर्वे सामान्य मनुष्यमां गणायेल होवाथी जूदा न गणवा.

१ मनुष्य गति, १ पंचेंद्रिय जाति, १ त्रस नाम, १ बादर नाम,
१ पर्याप्तनाम, १ सुभग नाम, १ आदेय, १ यशःकीर्ति.

आ आठनो उदय सामान्य केवळीने चरम समये होय. अहीं भंग १.

ए ८ मां तीर्थंकर नाम भेळवतां ९ नो उदय थाय. ते तीर्थंकरने चरम समये होय.

आ प्रमाणे केवळीना १० उदयस्थानमां ८ भंग (२०–२१–२७–२९–३०–३१–९–८) वधारे गणवा. तेमां पहेला छेल्ला विना ६ तीर्थंकर आश्री अने पहेलो तथा छेल्लो सामान्य केवळी आश्री.

कुल मनुष्य गतिमां उदय आश्री (२६०२–३५–७–८) भंग २६५२.

---

देवगतिमां उदयस्थान ६ (२१–२५–२७–२८–२९–३०)

१२ ध्रुवोदयी, १ देवगति, १ देवानुपूर्वी, १ पंचेंद्रियजाति,
१ त्रसनाम, १ बादर नाम, १ सुभग के दुर्भग, १ आदेय के अनादेय,
१ जश के अजश, १ पर्याप्तक नाम.

आ २१ नो उदय अपांतराल गतिमां होय. तेना सुभग दुर्भग, आदेय अनादेय, अने यश अयश साथे गुणतां ८ भंग थाय. (दुर्भग, अनादेय अने अयशनो उदय पिशाचादिने होय तेथी.)

पछी शरीरस्थने देवानुपूर्वी घटे, अने पांच वधे. ते आ प्रमाणे.—

२ वैक्रियद्विक, १ उपघात, १ प्रत्येक, १ समचतुरस्र संस्थान.

कुल २५ ना उदयमां पूर्ववत् भंग ८. (देवने समचतुरस्र विना बीजुं संस्थान न होय. तथा संघयण बिलकुल न होय.)

पूर्वोक्त २५ मां शरीर पर्याप्तने १ पराघात अने १ प्रशस्तगति भळवाथी २७ थाय. तेना पण भंग ८. (देवताने अप्रशस्त गति होती नथी.)

२७ ना उदय वाळाने श्वासोच्छ्वास पर्याप्तिए पर्याप्त थता उच्छ्वास नाम भळवाथी २८ नो उदय तेना पण भग ८

अथवा श्वासोच्छ्वास पर्याप्तिए पर्याप्त न थता उच्छ्वास नाम न भळवाथी अने उद्योत नामनो उदय थवाथी पण २८ ना उदयमा पण भंग ८.

कुल २८ ना उदयमा भग १६

उच्छ्वास वाळाने भाषापर्याप्तिए पर्याप्त थता सुस्वर भळवाथी २९ नो उदय तेना पण भग ८ ( देवताने दु स्वरनो उदय होतो नथी )

अथवा भाषापर्याप्तिए पर्याप्त न थता सुस्वर न भळवाथी अने उद्योत नाम भळवाथी पण २९ तेना पण भंग ८

कुल २९ ना उदयमा भग १६

सुस्वर युक्त २९ मा उद्योत नाम भळवाथी ३० नो उदय तेना पण भग ८

कुल देवगति आश्री भागा ६४. (८–८–८–१६–१६–८) (उद्योतनाम उत्तर वैक्रियमा होय )

---

नरकगति आश्री उदयस्थान ५ ( २१–२५–२७–२८–२९ )

१२ ध्रुवोदयी, १ नरकगति, १ नरकानुपूर्वी, १ दुर्भग,
१ अनादेय, १ अयश, १ त्रसनाम, १ बादरनाम
१ पर्याप्तनाम, १ पचेंद्रिय जाति,

आ २१ नो उदय अपातराल गतिमा समजवो तेनो भग १

२१ माथी आनुपूर्वी जता अने पाच नीचेनी वधता २५ थाय तेनो भंग १
२ वैक्रिय द्विक, १ हुड सस्थान, १ उपघात, १ प्रत्येक

ते २५ मा शरीरस्थ थता १ पराघात अने १ अप्रशस्त विहायोगति भळता २७ नो उदय अहीं पण भग १

२७ मा श्वासोच्छ्वास पर्याप्त थता उच्छ्वास नाम भळवाथी २८ थाय तेनो भंग १

२८ वाळा भाषा पर्याप्त थता सुस्वर नाम भळवाथी २९ नो उदय तेनो भग १

कुल नरकगति आश्री भग ५

चारे गति आश्री कुल उदय भग ७७९१

| | | | |
|---|---|---|---|
| तिर्यंच पचेंद्रियना | ४९६२ | नरकना | ५ |
| मनुष्यना | २६५२ | एकेंद्रियना | ४२ |
| देवना | ६४ | विकलेंद्रियना | ६६ |

गाथा २८ २९ १२ उदयस्थानमा दरेक उदयस्थाने केटला केटला भग थाय ? ते कहे छे.

२० ना उदयमा भंग १ सामान्य केवळी आश्री

२१ ना उदयमा भग ४२

५ एकेंद्रिय आश्री, ९ विकलेंद्रिय आश्री,
९ तिर्यच पचेंद्रिय, ९ मनुष्य पचेंद्रिय,
१ तीर्थंकर, ८ देवता, १ नारकी.

२४ ना उदयमां भंग ११. एकेंद्रिय आश्री.

२५ ना उदयमां भंग ३३.

७ एकेंद्रिय, ८ वैक्रिय तिर्यंच पंचेंद्रिय,
८ वैक्रिय मनुष्य, १ आहारक मनुष्य,
८ देवता, १ नारकी.

२६ ना उदयमां भंग ६००.

१३ एकेंद्रिय आश्री, ९ विकलेंद्रिय आश्री,
२८९ सामान्य तिर्यंच पंचेंद्रिय, २८९ सामान्य मनुष्य.

२७ ना उदयमां भंग ३३.

६ एकेंद्रिय आश्री, ८ वैक्रिय तिर्यंच पंचेंद्रिय,
८ वैक्रिय मनुष्य, १ आहारक संयत,
१ केवळी, ८ देवता, १ नारकी,

२८ ना उदयमां भंग १२०२.

६ विकलेंद्रिय आश्री, ५७६ सामान्य तिर्यंच पंचेंद्रिय,
१६ वैक्रिय तिर्यंच पंचेंद्रिय, ५७६ सामान्य मनुष्य,
९ वैक्रिय मनुष्य ( ८–१ ), २ आहारक,
१६ देवता, १ नारकी.

२९ ना उदयमां भंग १७८५.

१२ विकलेंद्रिय, ११५२ सामान्य तिर्यंच पंचेंद्रिय,
१६ वैक्रिय तिर्यंच पंचेंद्रिय, ५७६ सामान्य मनुष्य,
९ वैक्रिय मनुष्य ( ८–१ ), २ आहारक,
१ तीर्थंकर, १६ देवता, १ नारकी.

३० ना उदयमां भंग २९१७.

१८ विकलेंद्रिय, १७२८ सामान्य तिर्यंच पंचेंद्रिय,
८ वैक्रिय तिर्यंच पंचेंद्रिय, ११५२ सामान्य मनुष्य,
१ वैक्रिय मनुष्य ( ८–१ ), १ आहारक,
१ केवळी, ८ देवता.

३१ ना उदयमां भंग ११६५.

१२ विकलेंद्रिय, ११५२ सामान्य तिर्यंच पंचेंद्रिय, १ तीर्थंकर.

९ ना उदयमां भंग १. तीर्थंकर आश्री.

८ ना उदयमां भंग १. सामान्य केवळी आश्री.

कुल उदय भंग. ७७९१.

गाथा ३० **नामकर्मनां सत्तास्थान १२.**

( ९३–९२–८९–८८–८६–८०–७९–७८–७६–७५–९–८ )

सर्वप्रकृति सत्तामां होय त्यारे ९३.

| | |
|---|---|
| तीर्थंकर नाम विना | ९२. |
| आहारक चतुष्क ( आहारक शरीर, आहारकागोपाग, आहारक वधन, आहारक सघातन ) विना | ८९ |
| तीर्थंकर नाम विना | ८८. |
| ८८ माथी देवगति, देवानुपूर्वी अथवा नरकगति, नरकानुपूर्वी जता | ८६ |
| अथवा ८० नी सत्तावाळो नरकद्विक तथा वैक्रिय चतुष्क वाधे त्यारे | ८६ |
| अथवा ८० नी सत्तावाळो देवद्विक अने वैक्रिय चतुष्क वाधे त्यारे | ८६ |
| प्रथमना ८६ माथी नरकद्विक अने वैक्रिय चतुष्क जता | ८०. |
| अथवा बीजा ८६ माथी देवद्विक अने वैक्रिय चतुष्क जता | ८० |
| ८० माथी मनुष्यद्विक जता | ७८. |

आटला अक्षपकना सत्तास्थान जाणवा

हवे क्षपकना कहे छे—

| | |
|---|---|
| ९३ मांथी नरकद्विक, तिर्यग्द्विक, पंचेंद्रिय विना ४ जाति, स्थावरनाम, सूक्ष्मनाम, साधारण, आतप, उद्योत, ए १३ खपावे त्यारे | ८० |
| ९२ माथी पूर्वोक्त १३ खपावे त्यारे | ७९ |
| ८९ माथी ए १३ खपावे त्यारे | ७६. |
| ८८ माथी ए १३ खपावे त्यारे | ७५. |
| मनुष्यगति, पंचेंद्रियजाति, त्रस, बादर, पर्याप्त, सुभग, आदेय, यश, तीर्थंकर नाम, ए ९ प्रकृति अयोगी केवळीने चरम समये होय | ९ |
| आ ९ माथी तीर्थंकर नाम जता | ८ |

गाथा २१ हवे नामकर्मना बधस्थान ८, उदयस्थान १२ अने सत्तास्थान १२ नो संवेध कहे छे —

ओघे एटले सामान्ये अने आदेशे एटले विशेषे अमुक बंधस्थाने आटला उदय स्थान अने आटला सत्तास्थान ते सामान्य कहेवाय छे अने १४ गुणस्थानमा ६२ मार्गणाए प्रत्येकने आटला आटला बंध, उदय अने सत्तास्थान छे, एम कहेवुं ते विशेष कहेवाय छे

गाथा २२. प्रथम सामान्ये संवेध कहे छे —

२३-२५-२६ ना बंधमा ९ उदयस्थान अने ५ सत्तास्थान होय

तेमा २३ नो बध अपर्याप्त एकेंद्रिय योग्यज छे तेना बधक एकेंद्रिय, विकलेंद्रिय, तिर्यंच पचेंद्रिय अने मनुष्य छे ते २३ ना बंधने यथायोग्य सामान्ये ९ उदयस्थान होय —( २१-२४-२५-२६-२७-२८-२९-३०-३१ )

२३ ना बधमा २१ नु उदयस्थान अपातरालगतिमा वर्तता एकेंद्रिय, विकलेंद्रिय, तिर्यंच पचेंद्रिय अने मनुष्यने होय

२३ ना बंधमा २४ नो उदय अपर्याप्त तथा पर्याप्त एकेंद्रियने होय.

२३ ना बंधमां २५ नो उदय पर्याप्त एकेंद्रिय, वैक्रियतिर्यंच, मनुष्य मिथ्यादृष्टिने.

२३ ना बंधमा २६ नो उदय पर्याप्त एकेंद्रिय, पर्याप्त अपर्याप्त विकलेंद्रिय, तिर्यक् पंचेंद्रिय, तथा मनुष्य मिथ्यादृष्टिने होय.

२३ ना बंधमां २७ नो उदय पर्याप्त एकेंद्रिय, वैक्रिय तिर्यंच, मनुष्य मिथ्यात्वीने शरीर पर्याप्तिए पर्याप्तने होय.

२३ ना बंधमां २८–२९–३० नो उदय पर्याप्त विकलेंद्रिय, तिर्यंच पंचेंद्रिय, मनुष्य मिथ्यादृष्टिने होय.

२३ ना बंधमां ३१ नो उदय विकलेंद्रिय, तिर्यंच पंचेंद्रिय, मनुष्य मिथ्यादृष्टिने.

आ प्रमाणे ना २३ ना बंधमां सत्तास्थान ५ ( ९२–८८–८६–८०–७८. )

२३ ना बंधमां २१ ना उदयमां सर्वने पांचे सत्तास्थान. मात्र मनुष्यने ७८ विना चार सत्तास्थान.

२३ ना बंधमां २४ ना उदयमां पण पांचे सत्तास्थान. मात्र वायुकायने वैक्रिय करतां २४ ना उदयमां वर्ततां ८० ने ७८ विना त्रण सत्तास्थान ( कारणके वैक्रियने तो ते अनुभवे ज छे. अने वैक्रिय होवाथी देवद्विक के नरकद्विक पण वन्ने जतां नथी. तेमज वैक्रिय षट्क गया पछी ज मनुष्यद्विक सत्तामांथी जाय छे. तेथी ते पण रहे छे. )

२३ ना बंधमां २५ ना उदयमां पांचे सत्तास्थान. पण ७८ नुं सत्तास्थान वैक्रिय वायुकाय तथा तेउकाय आश्री जाणवुं. ( कारण के तेउ वाउ विना बीजा बधा पर्याप्ता जीवो नियमे करीने मनुष्यद्विक बांधी शके छे. )

२३ ना बंधमां २६ ना उदयमां पांचे सत्तास्थान. पण ७८ नुं अवैक्रिय, तेउ वाउ तथा विकलेंद्रिय अने पंचेंद्रिय पर्याप्तज के जे तेउ वाउमांथी अनंतर आवेला होय ते पर्याप्ता अपर्याप्ताने आश्रीने जाणवुं. कारण के ते मनुष्यद्विक बांधतां नथी. तेथी तेने ७८ पामीए. बीजाने नहीं.

२३ ना बंधमां २७ ना उदयमां ७८ विना चार सत्तास्थान. कारण के २७ नुं उदयस्थान तेउ वायु विना बीजा पर्याप्त बादर एकेंद्रिय तथा वैक्रिय तिर्यंच मनुष्यने छे. तेमने मनुष्यद्विकनो संभव छे माटे ७८ न पामीए.

२३ ना बंधमां २८–२९–३०–३१ ना उदयमां ७८ विना चार चार सत्तास्थान. कारण के ए चार उदयवाळा एकेंद्रिय न होवाथी बाकीना जेने ए चार उदयस्थान छे तेने मनुष्यद्विकनो संभव छे.

कुल २३ ना बंधमां ९ उदयस्थाने सत्तास्थान ४० छे.

२५ अने २६ ना बंधमां पण एज प्रमाणे नव नव उदय स्थान अने चाळीश चाळीश सत्तास्थान जाणवां. विशेष एटलो छे के–केवळ पर्याप्त एकेंद्रिय प्रायोग्य २५–२६ बांधतां देवताओने २१–२५–२७–२८–२९–३० ए छ

उदयस्थानमा ९२ अने ८८ ए वे ज सत्तास्थान कह्या छे केमके अपर्याप्त विकलेंद्रिय, तिर्यंच, मनुष्य प्रायोग्य २५ नो वंध देवता वाधता नथी, केमके अपर्याप्त एकेंद्रिय के विकलेंद्रियादिमा उपजवानो तेमने अभाव छे

२८ ना वंधमा ८ उदयस्थान अने ४ सत्तास्थान छे

ते ८ उदयस्थान आ प्रमाणे–२१–२५–२६–२७–२८–२९–३०–३१

२८ नो वध देव प्रायोग्य तथा नरक प्रायोग्य होय. तेमा देव प्रायोग्य २८ नो वध करता आठे उदयस्थान होय अने नरक प्रायोग्य २८ नो वंध करता २ उदयस्थान ( ३०–३१ )

तेमा देवगति प्रायोग्य २८ ना वंधमा ८ उदयस्थान कहे छे —

२८ ना वंधमा २१ नो उदय क्षायिक सम्यग्दृष्टि अने वेदक सम्यग्दृष्टि तिर्यंच मनुष्यने अपातराल गतिमा होय

„ २५ नो उदय आहारक संयतने तथा वैक्रिय तिर्यंच मनुष्य सम्यग्दृष्टि वा मिथ्यादृष्टिने होय

„ २६ नो उदय क्षायिक के वेदक सम्यग्दृष्टि, पंचेंद्रिय तिर्यंच, मनुष्य शरीरस्थने होय

„ २७ नो उदय आहारक संयतने तथा वैक्रिय तिर्यंच मनुष्य समकिती के मिथ्यादृष्टिने होय.

„ २८–२९ नो उदय शरीर अने श्वासोच्छ्वास पर्याप्तिवाळा तिर्यंच मनुष्य क्षायिक के वेदक समकितीने तथा आहारक संयतने तथा वैक्रिय तिर्यंच मनुष्य समकिती के मिथ्यात्वीने होय

„ ३० नो उदय तिर्यंच मनुष्य समकिती, मिथ्यात्व, मिश्र, तथा आहारक संयतने अने वैक्रिय सयतने होय

„ ३१ नो उदय पंचेंद्रिय तिर्यंच समकिती तथा मिथ्यात्वीने होय

( हवे नरकगति प्रायोग्य २८ ना वधमा ३०–३१ ए वन्ने उदय स्थान कहे छे )

२८ ना वधमा ३० नो उदय पचेंद्रिय तिर्यंच अने मनुष्य मिथ्यात्वीने होय

२८ ना वंधमां ३१ नो उदय पचेंद्रिय तिर्यंच मिथ्यात्वीने होय

२८ ना वधमा सामान्ये ४ सत्तास्थान ( ९२–८९–८८–८६ ) ते आ प्रमाणे—

देवगति प्रायोग्य २८ ना वधमा २१ ना उदयमा सत्तास्थान २ ( ९२–८८ )

देवगति प्रायोग्य २८ ना वधमा २५ नो उदय आहारकनी सत्तावाळा तेमज आहारकनी सत्ता विनाना होय, तेथी तेने पण वे सत्तास्थान (९२–८८) विशेष एटलो छे के आहारक सयतने आहारकनी सत्तामा नियमे करीने ९२ नुं ज सत्तास्थान होय

देवगति प्रायोग्य ८८ ना वधमा २६–२७–२८–२९ ना उदयमा पण सामान्य वे वे सत्तास्थान ( ९२–८८ )

देवगति अने नरकगति प्रायोग्य २८ ना बंधमां ३० ना उदयमां सामान्य ४ सत्तास्थान ( ९२–८९–८८–८६ ). तेमां ९२–८८ पूर्ववत्. अने ८९ नी सत्ता तो कोई तीर्थंकर नामकर्म बांधेल मनुष्य वेदक समकिती पूर्वबद्ध नरकायुवाळो नरकाभिमुख थये सते समकितथी प्रच्युत थइ मिथ्यात्वे जतां तीर्थंकर नामकर्मनो बंध न करे, त्यारे नरक प्रायोग्य २८ बांधे ते वखते होय. अने ८६ नी सत्ता आ प्रमाणे—आहारक चतुष्क, तीर्थंकर नाम, देवद्विक, नरकद्विक, वैक्रिय चतुष्क, ए १३ विना ८० नी सत्तावाळो पंचेंद्रिय तिर्यंच के मनुष्य थयेल होय, ते सर्व पर्याप्ति वडे पर्याप्त थया पछी जो विशुद्ध थाय, तो देवगति प्रायोग्य २८ बांधतां देवद्विक अने वैक्रिय चतुष्क बांधे त्यारे सत्ता ८६ नी थाय. अथवा संक्लिष्ट पणे नरकगति प्रायोग्य २८ बांधे त्यारे पण ८६ नी थाय.

देवगति अने नरकगति प्रायोग्य २८ ना बंधमां ३१ ना उदयमां ३ सत्तास्थान ( ९२–८८–८६ ). ८९ नी सत्ता अहीं न होय. कारण के ३१ नो उदय तिर्यंच पंचेंद्रियने होय. तेमां तीर्थंकर नाम सत्ताए होय नहीं. ८६ नुं सत्तास्थान उपर प्रमाणे थाय.

कुल २८ ना बंधमां ८ उदयस्थाने मळी सत्तास्थान १९.

२९ तथा ३० ना बंधमां नव नव उदयस्थान अने सात सात सत्तास्थान. तेमां उदयस्थान ९ आ प्रमाणे—२१–२४–२५–२६–२७–२८–२९–३०–३१.

२९ ना बंधमां २१ नो उदय तिर्यग् मनुष्य प्रायोग्य २९ बांधतां पर्याप्तापर्याप्त एकेंद्रिय, विकलेंद्रिय, पंचेंद्रिय, तिर्यंच, मनुष्य, देवता तथा नारकीने होय.

„ २४ नो उदय पर्याप्तापर्याप्त एकेंद्रियने होय.

„ २५ नो उदय पर्याप्त एकेंद्रिय, देवता, तथा नारकीने होय. तथा वैक्रिय तिर्यंच मनुष्य मिथ्यात्वीने होय.

„ २६ नो उदय पर्याप्त एकेंद्रियने, पर्याप्तापर्याप्त विकलेंद्रिय, तिर्यंच पंचेंद्रिय तथा मनुष्यने होय.

„ २७ नो उदय पर्याप्त एकेंद्रियने, देवताने, नारकीने, वैक्रिय तिर्यंच तथा मनुष्य मिथ्यादृष्टिने होय.

„ २८–२९ नो उदय विकलेंद्रिय, तिर्यंच पंचेंद्रिय, मनुष्य, वैक्रिय तिर्यंच मनुष्य, देवता तथा नारकीने होय.

„ ३० नो उदय विकलेंद्रिय तिर्यंच पंचेंद्रिय, मनुष्य, उद्योतवाळा देवने होय.

„ ३१ नो उदय पर्याप्त विकलेंद्रिय तथा तिर्यंच पंचेंद्रिय उद्योतना वेदकने होय.

देवगति प्रायोग्य २९ बाधता अविरत सम्यग्दृष्टि मनुष्यने उदयस्थान पाच होय—२१–२६–२८–२९–३०

आहारक सयत तथा वैक्रियसयतने उदयस्थान पाच–२५–२७–२८–२९–३०
असयतने तथा संयतासंयतने चोथा पाचमा गुणठाणावाळाने वैक्रिय करता उदयस्थान चार–२५–२७–२८–२९

संयत सिवाय बीजाने वैक्रिय करता उद्योतनामनो अभाव होवाथी ३० न होय.
सामान्ये २९ ना बंधमा सत्तास्थान ७ ( ९३–९२–८९–८८–८६–८०–७८ )
विकलेंद्रिय, तिर्यच पंचेंद्रिय प्रायोग्य २९ बाधता पर्याप्तापर्याप्त एकेंद्रिय, विकलेंद्रिय, तिर्यच पचेंद्रियने २१ ना उदयमा वर्तता सत्तास्थान पाच—९२–८८–८६–८०–७८

तेजप्रमाणे २४–२५–२६ ना उदयमा पण पाच पाच सत्तास्थान जाणवा
२७–२८–२९–३०–३१ ना उदयमा ७८ विना चार सत्तास्थान तेनी भावना २३ ना बधमा पूर्वे करी छे, तेम अहीं पण समजवी
मनुष्यगति प्रायोग्य २९ बाधता एकेंद्रिय, विकलेंद्रिय, तिर्यच पंचेंद्रियने तथा तिर्यग्गति मनुष्यगति प्रायोग्य फरीने बाधता मनुष्यने पोतपोताना उदय स्थानमा यथायोग्य वर्तता ७८ विना चार सत्तास्थान
देवता नारकीने तिर्यक् पंचेंद्रिय तथा मनुष्य प्रायोग्य २९ बाधता पोतपोताने उदये वर्तता बे बे सत्तास्थान ( ९२–८८ )
नारकी मिथ्यादृष्टि तीर्थकर नाम सत्तावाळाने मनुष्यगति प्रायोग्य २९ बांधता पोताना उदयस्थान पाचमा यथायोग्य वर्तता ८९ नु एकज सत्तास्थान केमके तीर्थकर सहित आहारक चतुष्क रहित होय, तेज मिथ्यात्वे जाय छे. बन्ने सहित होय ते जता नथी
देवगति प्रायोग्य २९ तीर्थकर नामसहित बाधता अविरत सम्यग्दृष्टि मनुष्यने २१ ना उदयमा वर्तता बे सत्तास्थान ( ९३–८९ )
ए प्रमाणे २५–२६–२७–२८–२९–३० ना उदयमा पण बे बे सत्तास्थान (९३–८९)
आहारक संयतने पोतपोताना उदयमा वर्तता ९३ नुं ज सत्तास्थान
सामान्ये २९ ना बधमा २१ ना उदयमा ७ सत्तास्थान

,, २४ ना उदयमा ५ सत्तास्थान

,, २५ ना उदयमा ७ ,,

सामान्ये २९ ना बधमा २६ ना उदयमा ७ सत्तास्थान.

,, २७ ना उदये ६ ,,

,, २८ ना उदये ६ ,,

, २९ ना उदये ६ ,,

, ३० ना उदये ६ ,,

,, ३१ ना उदये ४ ,,

३० ना वंधमां उदयस्थान ९, अने सत्तास्थान ७, पूर्वे तिर्यंगति प्रायोग्य २९ वांधतां एकेंद्रियादिकने जे प्रमाणे उदयस्थान अने सत्तास्थान कह्यां छे तेज प्रमाणे उद्योतनाम सहित ३० वांधतां पण समजवां. तेना भंग ४ थाय. उपरांत मनुष्यगति प्रायोग्य तीर्थंकर नाम सहित ३० वांधतां देव नारकीने आ प्रमाणे—

२१ ना उदयमां देवताने सत्तास्थान २ ( ९३–८९ ).

२१ ना उदयमां नारकीने सत्तास्थान १ ( ८९ ).

आहारक तीर्थंकर वंनेनी सत्तावाळा नरके जता नथी.

एज प्रमाणे २६–२७–२८–२९–३० ना उदयमां पण समजवुं. फक्त नारकीने ३० नो उदय नहीं. कारण के ३० ना उदयमां उद्योतनाम होय छे, ते नारकीने होतुं नथी.

सामान्ये ३० ना वंधमां ९ उदये सत्तास्थानना भंग ५२. ते नीचे प्रमाणे-

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| २१ | ना उदये | ७ | सत्तास्थान. | २८ | ना उदये | ६ | सत्तास्थान. |
| २४ | ,, | ५ | ,, | २९ | ,, | ६ | ,, |
| २५ | ,, | ७ | ,, | ३० | ,, | ६ | ,, |
| २६ | ,, | ५ | ,, | ३१ | ,, | ४ | ,, |
| २७ | ,, | ६ | ,, | | कुल. | ५२ | |

गाथा २३. ३१ ना वंधमां उदयस्थान १ ( ३० नुं ).

३१ नो वंध देवगति प्रायोग्य तीर्थंकर आहारक नाम सहित वांधतां सातमा आठमा गुणस्थानवाळाने होय. तेओ वैक्रिय आहारक करता नथी. तेथी तेओने २५ विगेरे उदय स्थान होय नहीं.

सत्तास्थान पण एक ९३ नुं ज होय. तीर्थंकर आहारक वन्नेनो संभव होवाथी. एकना वंधमां एक ज उदयस्थान (३०).

एक नो वंध अपूर्वकरणादिने छे, तेने अति विशुद्धि होवाथी ते वैक्रिय आहारक करता नथी. तेथी तेने वीजां उदयस्थान न होय.

एक ना वंधमां सत्तास्थान ८ ( ९३–९२–८९–८८–८०–७९–७६–७५ ). तेमां पहेला ४ सत्तास्थान उपशमश्रेणिवाळाने वा क्षपकने ९ मे गुणस्थाने ज्या सुधी १३ प्रकृति खपावी न होय त्यांसुधी अने १३ खपाव्या पछी छेला चार सत्तास्थान लाभे. ते १० मा गुणस्थान सुधी. केमके पछी तो अवंधक पणुं थाय.

अवंधकपणामां उदयस्थान १० अने सत्तास्थान १०.

उदयस्थान १० आप्रमाणे—२०–२१–२६–२७–२८–२९–३०–३१–९–८.

२०–२१ नो उदय तीर्थंकर अतीर्थंकरने केवळी समुद्घातमां कार्मणकाययोगे वर्ततां होय.

२६–२७ नो उदय पण ते बन्नेने ज औदारिकमिश्र काययोगे वर्तता होय
सामान्य केवळीने स्वभावे ३० नो उदय, स्वरनाम रुधता २९ नो, अने उच्छ्वास रुंधे त्यारे २८ नो
तीर्थंकरने स्वभावे ३१ नो उदय, स्वरनाम रुधे त्यारे ३० नो, अने उच्छ्वास रुंधे त्यारे २९ नो ( ए प्रमाणे ३०–२९ मा बे बे विकल्प )
तीर्थंकरने अयोगीपणामा चरम समये उदय ९ नो
सामान्य केवळीने अयोगीपणामा चरम समये उदय ८ नो
अबधकपणामा सत्तास्थान १० (९३–९२–८९–८८–८०–७९–७६–७५–९–८)
२० ना उदयमा सत्तास्थान २ ( ७९–७५ )
२६–२८ ना उदयमा सत्तास्थान २ ( ७९–७५ )
२१ ना उदयमां सत्तास्थान २ ( ८०–७६ )
२७ ना उदयमा पण सत्तास्थान २ ( ८०–७६ )
२९ ना उदयमा सत्तास्थान ४ ( ८०–७६–७९–७५ )
३० ना उदयमा सत्तास्थान ८ ( ९३–९२–८९–८८–८०–७९–७६–७५ )
तेमा पहेला ४ उपशम श्रेणिवाळाने तथा क्षपकवाळाने ज्यासुधी १३ न अपावी होय त्यासुधी अने पाछळना ४ क्षपकवाळाने तथा सयोगीने तेमा आहारक सत्कर्मा तीर्थंकरने ८०, एवा ज अतीर्थंकरने ७९, आहारक ४ विना तीर्थंकरने क्षीणकषाय वा सयोगी केवळीपणे ७६ तथा अतीर्थंकरने ७५
३१ ना उदय मा पण ए प्रमाणे बे सत्तास्थान (८०–७६) ते तीर्थंकरने ज होय
९ ना उदयमा त्रण सत्तास्थान ( ८०–७६–९ ) तेमा पहेला बे द्विचरम समय सुधी अयोगी केवळी तीर्थंकरने होय चरम समये ९ नी सत्ता होय
८ ना उदयमा त्रण सत्तास्थान ( ७९–७५–८ ) तेमा पहेला बे द्विचरम समय सुधी अयोगी केवळी अतीर्थंकरने होय चरम समये ८ नी सत्ता होय
आ प्रमाणे अबधकपणामा १० उदयस्थान आश्रीने सत्तास्थानना विकल्प ३०.

---

गाथा ३४–३५ हवे गुणस्थान जीवस्थानने आश्रीने उक्त संवेधना स्वामी कहे छे —
आठ मूल कर्मप्रकृतिओना बध उदय अने सत्ताना स्वामी प्रथम जीवस्थानके कहे छे
पर्याप्त सज्ञी पचेंद्रियविना १३ जीवस्थानमा बध, उदय अने सत्ता
ज्ञानावरणी अने अतराय आश्री ३ विकल्प —
५ नो बध, ५ नो उदय, ५ नी सत्ता ( ध्रुव बंधोदय सत्ता होवाथी )
पर्याप्त सज्ञी पचेंद्रिय आश्री ३ के २ विकल्प—
त्रण विकल्प उपर प्रमाणे १० मा गुणस्थान सुधी.
बे विकल्प ते ११–१२ मे बंध नहीं, ५ उदय, ५ नी सत्ता
केवळीने मनोविज्ञान नथी, पण द्रव्यमन आश्री संज्ञी कहेवाय छे. तो तेने त्रणे विकल्पमा शून्य

गाथा २६. दर्शनावरणी आश्री १३ जीवस्थानके वे विकल्प.—

९ नो वंध, ४ नो उदय, ९ नी सत्ता.

९ नो वंध, ५ नो उदय, ९ नी सत्ता.

संज्ञी पंचेंद्रिय पर्याप्त आश्री ११ विकल्प पूर्ववत्.

१) ९नो वंध, ४नो उदय, ९नी सत्ता.
२) ९नो वंध, ५नो उदय, ९नी सत्ता.
३) ६नो वंध, ४नो उदय, ९नी सत्ता.
४) ६नो वंध, ५नो उदय, ९नी सत्ता.
५) ४नो वंध, ४नो उदय, ९नी सत्ता.
६) ४नो वंध, ५नो उदय, ९नी सत्ता.
७) ४नो वंध, ४नो उदय, ६नी सत्ता.
८) अवंधक, ४नो उदय, ९नी सत्ता.
९) अवंधक, ५नो उदय, ९नी सत्ता.
१०) अवंधक, ४नो उदय, ६नी सत्ता.
११) अवंधक, ४नो उदय, ४नी सत्ता.

वेदनीय कर्म—

संज्ञीपर्याप्त आश्री ८ विकल्प.—

१ असातानो वंध, असातानो उदय, साता असाता सत्ता.

२ असातानो वंध, सातानो उदय, साता असाता सत्ता.

( आ वे विकल्प पहेलाथी छट्ठा गुणस्थान सुधी. )

३ सातानो वंध, असातानो उदय, वन्नेनी सत्ता.

४ सातानो वंध, सातानो उदय, वन्नेनी सत्ता.

( आ वे भंग पहेलाथी तेरमा गुणस्थान सुधी. )

५ वंधाभाव, असातानो उदय, वन्नेनी सत्ता.

६ वंधाभाव, सातानो उदय, वन्नेनी सत्ता.

( चौदमा गुणस्थानना द्वीचरम समय सुधी. )

७ वंधाभाव, असातानो उदय, असातानी सत्ता. } छेले समये.
८ वंधाभाव, सातानो उदय, सातानी सत्ता. }

( वाकीना १३ जीवस्थानमां प्रथमना ४ भंग. )

गोत्र कर्म—

संज्ञी पर्याप्त आश्री ८ भंग.—

१ नीच गोत्रनो वंध, नीच गोत्रनो उदय, नीचगोत्रनी सत्ता.

( तेउ वायुमांथी नीकळ्या पछी संज्ञी तिर्यंच पंचेंद्रियमां केटलाक काळ सुधी आ पहेलो भंग रहे. )

२ नीचनो वंध, नीचनो उदय, उंच नीचनी सत्ता.

३ नीचनो वंध, उंचनो उदय, उंच नीचनी सत्ता.

( आ वे भंग पहेला वीजा गुणस्थान सुधी. )

४ उंचनो वंध, नीचनो उदय, वन्नेनी सत्ता.

( आ भंग पहेलेथी पांचमा सुधी. )

५ उचनो वध, उचनो उदय, बन्नेनी सत्ता
( आ भग दशमा गुणस्थान सुधी )
६ अवध, उचनो उदय, बन्नेनी सत्ता
( आ भग ११ माथी १४ माना द्विचरम समय सुधी )
७ अवध, उचनो उदय, उंचनी सत्ता
( आ भग १४ माना चरम समये होय )
वाकी १२ जीवस्थानके त्रण भंग नीचेप्रमाणे —
१ नीचनो वध, नीचनो उदय, नीचनी सत्ता
( आ भग तेउ वायुमा उचनुं उद्वलन कर्या पछी सर्वदा होय, अने तेमांथी नीकळ्या पछी पृथ्व्यादिकमा तेम ज विकलेंद्रियमा केटलोक काळ पामीए )
२ नीचनो वध, नीचनो उदय, बन्नेनी सत्ता
३ उंचनो वध, नीचनो उदय, बन्नेनी सत्ता
( वीजा भंग न लाभे तिर्यच गतिमा उच गोत्रना अभावथी )
आयुकर्म —
संज्ञी पर्याप्तमा २८ भग, सन्नी अपर्याप्तमा १० भग, पंचेंद्रिय असंज्ञी पर्याप्तमा ९ भंग, वाकीना ११ जीवस्थानके ५ भग
प्रथम २८ आ प्रमाणे—(नरकायु सबंधी पाच भग )
१ अवध काळे, नरकायु उदय, नरकायु सत्ता
२ बधकाळे, तिर्यगायु बंध, नरकायु उदय, नरक तिर्यगायु सत्ता
३ वंधकाळे, मनुष्यायु वंध, नरकायु उदय, नरक मनुजायु सत्ता
४ वंधोत्तरकाळे, नरकायु उदय, तिर्यच नरकायु सत्ता
५ वंधोत्तरकाळे, नरकायु उदय, मनुज नरकायु सत्ता
( आ प्रमाणे देवगति आश्री पण पाच भंग जाणवा कुल भग १० )
तिर्यचायु आश्री ९ भंग नीचे प्रमाणे —
१ अवध काळे, तिर्यगायु उदय, तिर्यगायु सत्ता
२ वंधकाळे, देवायुवध, तिर्यगायु उदय, देवतिर्यगायु सत्ता
३ वधकाळे नरकायु वध, तिर्यगायु उदय, नरकतिर्यगायु सत्ता
४ वधकाळे मनुजायु वध, तिर्यगायु उदय, मनुज तिर्यगायु सत्ता
५ वधकाळे तिर्यगायु वंध, तिर्यगायु उदय, तिर्यक्तिर्यगायु सत्ता
६ वधोत्तर काळे, तिर्यगायु उदय, देवतिर्यगायु सत्ता.
७ वधोत्तर काळे, तिर्यगायु उदय, नरकतिर्यगायु सत्ता
८ वधोत्तर काळे, तिर्यगायु उदय, मनुजतिर्यगायु सत्ता
९ वधोत्तर काळे, तिर्यगायु उदय, तिर्यक्तिर्यगायु सत्ता
( आ प्रमाणे मनुष्यायु आश्री पण ९ भग जाणवा कुल भग १८ )
कुल सन्नी पर्याप्तना भग २८

संज्ञी अपर्याप्त आश्री १० भंग नीचे प्रमाणे.—

१ अबंध काळे, तिर्यगायु उदय, तिर्यगायु सत्ता.

२ बंधकाळे, तिर्यगायु बंध, तिर्यगायु उदय, तिर्यक्तिर्यगायु सत्ता.

३ बंधकाळे, मनुजायु बंध, तिर्यगायु उदय, मनुजतिर्यगायु सत्ता.

४ बंधोत्तरकाळे, तिर्यगायु उदय, तिर्यक्तिर्यगायु सत्ता.

५ बंधोत्तरकाळे, तिर्यगायु उदय, मनुजतिर्यगायु सत्ता.

( आ प्रमाणे मनुष्यगति आश्री पण पांच भंग जाणवा. )

कुल भंग १०. ( देव नारकी थवानुं न होवाथी. )

असंज्ञी पर्याप्त तिर्यंच पंचेंद्रियना ९ भंग संज्ञी तिर्यंचना आयु आश्री जे कह्या छे ते जाणवा. ( आ जीवभेद नरक, देव अने मनुष्यमां न होवाथी बीजा भंग नहीं. )

बाकीना ११ जीवस्थानके संज्ञी अपर्याप्तने तिर्यंचगति आश्री पांच भंग कह्या छे, तेज पांच भंग समजवा. तेमने तिर्यंचपणुं ज होवाथी अने देव नारकीमां जवापणुं न होवाथी.

ते ११ जीवस्थान नीचे प्रमाणे.—

४ जीवभेद एकेंद्रिय सूक्ष्म बादर, पर्याप्ता तथा अपर्याप्ता.

६ जीवभेद विकलेंद्रियना त्रणे पर्याप्ता तथा अपर्याप्ता.

१ जीवभेद असंज्ञी पंचेंद्रिय अपर्याप्ता.

गाथा ३७. हवे मोहनीकर्मनी वात कहे छे.—

मोहनी कर्मना बंधस्थान जीवस्थान उपर कहे छे.—

८ पर्याप्तापर्याप्त सूक्ष्म अने अपर्याप्त बाकीना ६, एम कुल आठ जीवस्थाने बंधस्थान १ ( २२ नुं ) ते २२ आ प्रमाणे—१ मिथ्यात्व, १६ कषाय, २ युगलनी, १ वेद, २ भय जुगुप्सा. अहीं त्रण वेद अने बे युगलवडे मिथ्यात्व गुणस्थाने विकल्प ६.

५ पर्याप्त संज्ञी पंचेंद्रिय विना बाकीना पांच पर्याप्त जीवस्थाने बंध स्थान २ (२२–२१) तेमां २२ मिथ्यात्वे. उपर प्रमाणे. तेना भंग ६.

२१ सासादने ( मिथ्यात्व विना ) त्यां नपुंसक वेदनो बंध न होवाथी बे वेद अने बे युगळ साथे ४ भंग.

१ पर्याप्तसंज्ञी पंचेंद्रियने १० बंधस्थान पूर्ववत्.

उदय स्थान—

८ जीवभेदे २२ ना बंधे उदयस्थान ३ ( ८–९–१० ) १ मिथ्यात्व, ४ कषाय, १ नपुंसक वेद, २ युगळ, आ ८ ना उदयमा ४ कषाय अने २ युगळ आश्री भंग ८.

८ मां भय के जुगुप्सा भळवाथी ९ ना उदयमां बन्ने प्रकारे आठ आठ भंग थवाथी कुल भंग १६.

८ मा भय जुगुप्सा बन्ने भळवाथी १० ना उदयमा ८ भंग.
कुल ८ जीवस्थाने उभय आश्री भग ३२

५ जीवभेदे २२-२१ ना बधमा उदयस्थान ४ ( ७-८-९-१० )
२१ ना बंधमा सासादने ७-८-९
२२ ना बंधमा मिथ्यात्वे ८-९-१०

सासादने मिथ्यात्व उदयमा न होवाथी ७ नो उदय तेना पण ७-८-९ मा भग उपर प्रमाणे ३२ ( ८-१६-८ )

२२ ना बधमा त्रण उदय स्थाने भग उपर प्रमाणे ३२

असंज्ञी एवा लब्धि पर्याप्त पचेंद्रियने चूर्णिकार त्रणे वेदनो उदय माने छे तेथी २२ ना बधमा अने २१ ना बधमा बधा उदयस्थानमा त्रण त्रण वेद आश्री गुणता २४-७४ भंग थाय

१ सज्ञी पचेंद्रिय पर्याप्ता आश्री नवे उदयस्थान पूर्ववत्

सत्तास्थान —

८ जीवस्थाने सत्तास्थान ३ ( २८-२७-२६ )
५ जीवस्थाने पण तेज ३ सत्तास्थान
१ जीवस्थाने १५ सत्तास्थान पूर्ववत्

हवे सवेध कहे छे —

८ जीवस्थाने २२ ना बधस्थानमा उदयस्थान ३ ( ८-९-१० ) ते दरेकमा त्रण त्रण सत्तास्थान तेथी तेना कुल भग ९

५ जीवस्थाने बे बंधस्थान ( २२-२१ ) तेमा २२ ना बधे त्रण उदयस्थान ( ८-९-१० ) ते त्रणेमा उपर प्रमाणे त्रण त्रण सत्तास्थान ( २८-२७-२६ ) तेथी तेना भग ९

तथा २१ ना बधमा त्रण उदयस्थान ( ७-८-९ ) ते त्रणमा सत्तास्थान १ ( २८ नु ज ) तेना भग ३

कुल ५ जीवस्थाने दरेकने सत्तास्थान भंग १२

१ पर्याप्त सज्ञी पचेंद्रिय जीवस्थाने सवेध पूर्ववत्.

गाथा ३८-३९ नामकर्म जीवस्थाने कहे छे—

७ अपर्याप्त जीवस्थाने ५ बध स्थान, २ उदय स्थान, ५ सत्तास्थान

५ बधस्थान आ प्रमाणे—२३-२५-२६-२९-३० अपर्याप्त जीवो तिर्यंच मनुष्यगति आश्री ज बध करे छे त्या एक एक अपर्याप्तने विषे १३९१७ भग तथा देव नारकी आश्रीने बध न करे तेथी तेने आ पाच पाच ज बध स्थान होय तेनी व्याख्या पूर्ववत् करी लेवी

२ उदय स्थान-ए ज सात जीवस्थानमा अपर्याप्त बादर सूक्ष्म एकेंद्रियने उदय स्थान २ ( २१-२४ ) तेमा २१ मा बादर अने सूक्ष्म बन्नेने एक एक भंग

अने २४ मां प्रत्येक तथा साधारण साथे वे वे भंग. कुल वन्ने जीवस्थानमां उदय आश्री ३–३ भंग.

५विकलेंद्रिय तथा संज्ञी असंज्ञी पंचेंद्रिय ए पांच अपर्याप्ताने उदयस्थान२(२१–२६) पूर्ववत्. तेमां विकलेंद्रिय तथा असंज्ञी अपर्याप्तने वे वे उदय स्थान आश्री वे वे भंग, अने संज्ञी अपर्याप्तने चार भंग–वे तिर्यंच आश्री, वे मनुष्य आश्री.

५ सत्तास्थान—साते अपर्याप्ताने सत्तास्थान ५.—

( ९२–८८–८६–८०–७९ ) पूर्ववत्.

१ सूक्ष्म पर्याप्ताने वंधस्थान ५ ( २३–२५–२६–२९–३० ).

तेनुं स्वरूप पूर्ववत्. आ पांचे वंधस्थान तिर्यग्मनुष्यगति आश्री छे. अहीं बंधना भांगा १३९१७.

४ उदय स्थान ( २१–२४–२५–२६ ).

२१ अपांतराल गतिमां, २४ शरीरस्थ थतां.

२५ पराघात क्षेपवतां, २६ उच्छ्वास भळतां.

प्रथम २१ मां एक ज भंग. वाकीना त्रणमां प्रत्येक अने साधारण आश्री वे वे भंग कुल भंग ७.

५ सत्ता स्थान ( ९२–८८–८६–८०–७८ ).

तेमां केवळ २५–२६ ना उदयमां साधारण पद साथे भंग छे. तेमां ७८ नुं सत्तास्थान नहीं. कारण के शरीर पर्याप्तिए पर्याप्त तेउ वायु विना बीजा सर्वे मनुष्यगति वांधी शके छे.

प्रत्येक पदमां तेउ वायु भळवाथी पांचे सत्तास्थान होय, तेथी २५–२६ वाळा साधारणमां वे भांगे ४ सत्तास्थान अने वीजा पांच भांगे ५ सत्तास्थान.

१ पर्याप्त वादर एकेंद्रियने वंधस्थान ५ ( २३–२५–२६–२९–३० ) पूर्ववत्.

आ पांचे वंधस्थान मनुष्य तिर्यक् प्रायोग्य ज होय.

५ उदयस्थान ( २१–२४–२५–२६–२७ ). अपांतराल गतिमां पूर्ववत् २१ पण तेमां यश अयशमांथी एक ज उदयमां होवाथी तेना भंग २. २१ मां पूर्ववत् ३ वधवाथी २४ ना उदयमां प्रत्येक साधारण यश अयश साथे गुणतां भंग ४. तेमां पण वायुकाय आश्री वैक्रिय करतां एक भंग वधे, तेने यशनो उदय न होवाथी, वळी प्रत्येकपणुं ज होवाथी कुल २४ ना उदयमां भंग ५. २४ मां पराघात नाखवाथी २५ ना उदयमां पण पूर्ववत् भंग ५. २५ मां उच्छ्वास क्षेपवतां २६ ना उदयमां भंग ५. अथवा उच्छ्वासना उदय अगाउ आतप के उद्योत क्षेपवतां २६. तेमां आतप प्रत्येक पृथ्वीकायने ज होवाथी तेना यश अयश साथे भंग २. उद्योतना प्रत्येक साधारण बन्ने आश्री यश अयश साथे गुणतां भंग ४. वैक्रिय करतां वायुने आतप उद्योत कांई पण न होवाथी तेनो भंग नहीं. कुल २६ मां भंग ११. उच्छ्वास युक्त २६ मां

आतप के उद्योत भळवाथी २७ नो उदय तेना भग उपर प्रमाणे आतप साथे २ अने उद्योत साथे ४ कुल भग ६

कुल बादर पर्याप्तने उदय आश्री भग २९ ( २-५-५-११-६ )

५ सत्तास्थान ( ९२-८८-८६-८०-७८ )

उदयस्थान कुल २९ माथी २५-२६ ने उदये प्रत्येक अयशकीर्ति साथेनो एक एक भंग २१ ना उदयना वे भग अने वैक्रिय वायु विनाना २४ ना उदये भग ४ कुल भग ८ ने विषे पाचे सत्तास्थान. वाकीना २१ भंगमा ७८ विना चार चार सत्तास्थान

३ विकलेंद्रिय पर्याप्ताने वंधस्थान ५ ( २३-२५-२६-२९-३० )

तिर्यग्मनुष्य प्रायोग्य पूर्ववत्. अहीं भग १३९१७

६ उदयस्थान—२१-२६-२८-२९-३०-३१

२१ नो उदय पूर्ववत् तेने यश अयश साथे गुणता भंग २.

२१ मा औदारिक द्विक, हुडक सस्थान, सेवार्त संघयण, प्रत्येक तथा उपघात भळता अने आनुपूर्वी जता २६ तेना पण भंग २

२६ मा पराघात अने अप्रशस्तगति भळता २८ तेना पण भंग २

२८ मा उच्छ्वास नाम भळता २९ तेना पण भग २ अथवा २८ मा उच्छ्वासविना उद्योत भेळवता २९ तेना पण भग २ कुल २९ ना उदयमा भंग ४

उच्छ्वास सहित २९ मा भाषापर्याप्तिए पर्याप्त थता सुस्वर के दु:स्वर भळवाथी ३० तेना वे स्वर अने यश अयश साथे गुणता भंग ४ अथवा २९मा उद्योत भळता ३० तेमा यश अयश साथे भग २ कुल ३० ना उदयमा भग ६

स्वर सहित ३० मा उद्योत भळता ३१ तेमा वे स्वर तथा यश अयश साथे गुणता भग ४

कुल विकलेंद्रियने उदय आश्री भंग २०

५ सत्तास्थान—९२-८८-८६-८०-७८

तेमा २१-२६ना उदयवाळाने तेजो वायुमाथी आवेलाने केटलोक वखत मनुष्यद्विक सत्तामा न होवाथी ७८ नु सत्तास्थान लाभे तेथी ते वे उदयना चार भगे पाच सत्तास्थान वाकीना १६ उदयने भागे चार सत्तास्थानक केमके तेजो वायु विना शरीर पर्याप्ति थया पछी सर्व जीवने मनुष्यद्विक वाधवानो सभव छे, तेथी २७ विगेरे उदयस्थानमा ७८ नी सत्ता न लाभे

१ असज्ञी पर्याप्ता तिर्यंच पचेंद्रियने वधस्थान ६ ( २३-२५-२६-२८-२९-३० )

आ जीवो नरकगतिनो पण वध करे छे तेथी २८ नु वधस्थान तेने लाभे अहीं वधना भग १३९२६

६ उदय स्थान २१-२६-२८-२९-३०-३१

तेमा २१ नो उदय आ प्रमाणे —

२ तैजस कार्मण, १ अगुरुलघु, २ स्थिर अस्थिर, २ शुभाशुभ,

४ वर्णचतुष्क, १ निर्माण, २ तिर्यग्द्विक, १ पंचेंद्रियजाति,
१ त्रसनाम, १ वादरनाम, १ पर्याप्तनाम, १ सुभग के दुर्भग,
१ आदेय के अनादेय, १ यश के अयश.

आ २१ अपांतराळ गतिमां होय. तेना सुभग दुर्भग, आदेय अनादेय, यश अयश साथे गुणतां भंग ८.

उपरना २१ मां २ औदारिकद्विक, १ छमांथी एक संस्थान, १ छमांथी एक संघयण, १ उपघात, १ प्रत्येक, आ ६ भळतां अने तिर्यंचानुपूर्वी जतां २६ नो उदय. तेना भंग ६ संघयण, ६ संस्थान, सुभग दुर्भग, आदेय अनादेय, यश अयश साथे गुणतां २८८.

२६ मां पराघात तथा वेसांथी एक विहायोगति भळतां २८. तेना भंग पूर्ववत् २८८ ने वे गति साथे गुणतां ५७६.

२८ मां उच्छ्वास नाम भळतां २९. तेना भंग पण पूर्ववत् ५७६. अथवा २८ मां उद्योतनाम भळतां २९. तेना पण भंग ५७६. कुल २९ मां भंग ११५२.

उच्छ्वास युक्त २९ मां भाषापर्याप्तिए पर्याप्त थतां सुस्वर के दुःस्वर भळवाथी ३०. तेना भंग पूर्ववत् ५७६ ने वे स्वरे गुणतां ११५२. अथवा स्वर न वधे अने उद्योत नाम वधे तो ३०. तेना भंग पूर्ववत् ५७६. कुल ३० मां भंग१७२८. स्वरसहित ३० मां उद्योतनाम भळवाथी ३१. तेना भंग पूर्ववत् ११५२.

कुल उदय आश्री भंग ४९०४. ( ८–२८८–५७६–११५२–१७२८–११५२ ).
असंज्ञी पंचेंद्रिय वैक्रिय करता नथी. तेथी ते आश्री भंग नहीं.

५ सत्तास्थान—९२–८८–८६–८०–७८.

तेमां २१–२६ ना उदयवाळा ८–२८८ कुल २९६ भंगमां सत्तास्थान ५. वाकीना भांगामां सत्तास्थान ४. युक्ति पूर्ववत्.

१ संज्ञी पंचेंद्रिय पर्याप्ताने बंधस्थान ८ छे. ते वधा होय. अहीं बंधना भांगा १३९४५ थाय.

उदयस्थान १२ मांथी २०–२४—८–९ ए चार जतां वाकीना ८ उदयस्थान होय. तेमां २०–८–९ आ त्रण उदयस्थान केवळी आश्री छे. तेने अहीं संज्ञीमां गण्या नथी. तेथी ते बाद करवा. अने २४ नो उदय एकेंद्रियने होय छे. तेथी ते वाद करतां वाकी ८ उदयस्थान होय.

सत्तास्थान १२ मांथी केवळी आश्री ८–९ ए वे सत्तास्थान जतां वाकी १० सत्तास्थान होय.

२१ ना उदयमां भंग ८. अहीं पांच सत्तास्थान.

२६ ना उदयमां भंग २८८. अहीं ४ सत्तास्थान.

वाळाववोधवाळा उदयना ७७९१ कुल भांगामांथी २८ ने आ प्रमाणे बाद करे छे.

२१ ना उदयमांथी ७ अपर्याप्ता, १ संज्ञी असंज्ञी पंचेंद्रिय तिर्यंच, १ मनुष्य अपर्याप्त, कुल ९.

२६ ना उदयमाथी ३ विकलेंद्रिय, २ असंज्ञी पंचेंद्रिय तिर्यच तथा मनुष्य कुल ५
२४ नो उदय ज न होवाथी तेना भंग ११
२०-८-९ ना उदयना एक एक मळी भग ३
कुल २८ जता ७७६३ सज्ञी पर्याप्त पंचेंद्रियमा पामीए, एम लखे छे पण ७७९१ मा तो विकलेंद्रिय, एकेंद्रिय विगेरे बीजा घणा उदयभग बाद करवा जेवा लागे छे, तेथी ते विचारवा योग्य छे टीकामा आ बाबत बिलकुल नथी वळी बाळावबोधमा २१ ना उदयना ४० अने २६ ना उदयना ५९५ कुल ६३५ उदय भंगे पाच सत्तास्थान बाकीना भगे चार सत्तास्थान लखे छे ते पण चितववा योग्य छे कारण के २१ ना उदयमा ४२ भग छे. तेमाथी उपर काइ बाद करेल नथी, तो ४० केम ? अने बाद करवा योग्य जोइए तो घणा छे २६ ना उदयना कुल भंग ६०० छे तेमा उपर पाच बाद कर्या छे तेथी ५९५ तो बराबर थाय पण उदय आश्री तेमाथी बाद करवा जोइए तेथी ते पण विचारवा योग्य छे

हवे सवेध कहे छे —

१ सूक्ष्म एकेंद्रिय अपर्याप्ताने २३ ना बंधमा २१ तथा २४ ए बे उदयस्थान अने सत्तास्थान ९२-८८-८६-८०-७८ ए पाच पाच होवाथी भग १०
ते ज प्रमाणे २५-२६-२९-३० ना बधमा पण बे बे उदयस्थाने पाच पाच सत्तास्थानना दश दश भग होवाथी कुल भग ५०
२ थी ७ एज प्रमाणे बीजा ६ अपर्याप्तने पण ५०-५० भग समजवा वळी उदय स्थान पण पोतपोताना होय ते बे बे समजवा कुल भग ३००
८ सूक्ष्म एकेंद्रिय पर्याप्ताने २३ ना बंधे चार उदयस्थान अने दरेक उदयस्थाने पाच पाच सत्तास्थान कुल भग २०
ए ज प्रमाणे २५-२६-२९-३० ना बधमा पण २०-२० भग कुल भंग १००
९ बादर एकेंद्रिय पर्याप्ताने २३ ना बधमा २१-२४-२५-२६ ना उदयमा पाच पाच सत्तास्थान होवाथी भग २०, अने २७ ना उदयमा चार सत्तास्थान मळी भग २४ ए प्रमाणे पाचे बधस्थानना मळीने भग १२०
१० द्वींद्रिय पर्याप्ताने २३ ना बधमा २१-२६ ना उदये पाच पाच सत्तास्थान, अने २८-२९-३०-३१ ना उदये चार चार सत्तास्थान होवाथी कुल भग २६ ए प्रमाणे पाचे बंधस्थानना मळी कुल भंग १३०
११-१२ त्रींद्रिय अने चतुरिंद्रिय पर्याप्ताने पण द्वींद्रिय प्रमाणे ज १३०-१३० सत्तास्थानना भग होवाथी कुल भंग २६०
१३ असज्ञी पचेंद्रिय पर्याप्ताने २३ना बधमा २१-२६ ना उदये पाच पाच सत्तास्थान तथा २८-२९-३०-३१ ना उदये चार चार सत्तास्थान कुल भग २६
एज प्रमाणे २५-२६-२९-३० ना बधमा पण २६-२६ भग जाणवा
२८ ना बधमा बे ज उदयस्थान ( ३०-३१ ) तेमा त्रण त्रण सत्तास्थान—

९२–८८–८६. तेना कुल भंग ६. ते प्रथमना पांच बंधस्थानना कुल भंग १३० मां भेळवतां सर्व भंग १३६.

१४ संज्ञी पर्याप्तने २३ ना बंधमां उपर प्रमाणे २६ सत्तास्थान ते आ प्रमाणे—२१–२६ ना उदये पांच पांच सत्तास्थान. तथा २८–२९–३०–३१ ना उदये चार चार सत्तास्थान. तेथी भंग २६.

ए ज प्रमाणे २५ ना बंधमां सत्तास्थानना भंग २६. पण २५ ना बंधक देवताने २५–२७ ना उदयमां ९२–८८ आ बे सत्तास्थान होवाथी चार भंग वधे. एटले २५ ना बंधमां कुल भंग ३०.

एज प्रमाणे २६ ना बंधमां पण सत्तास्थानना भंग ३०.

२८ ना बंधमां ८ उदयस्थान—२१–२५–२६–२७–२८–२९–३०–३१ तेमां २१ ना उदये तेमज २५–२६–२७–२८–२९ ना उदये ९२–८८ आ बे सत्तास्थान, ३० ना उदये चार सत्तास्थान–९२–८९–८८–८६. तेनी व्याख्या पूर्वे संवेधमां विस्तारथी करी छे. तथा ३१ ना उदये त्रण सत्तास्थान—९२–८८–८६. एकंदर २८ ना बंधमां १९ सत्तास्थान.

२९ ना बंधमां २५ना बंध प्रमाणे सत्तास्थानना भंग ३०. पण एटलुं विशेष छे के चोथा गुणस्थानवाळाने देवगति प्रायोग्य २९ बांधतां २१–२६–२८–२९–३० ना उदयमां प्रत्येके बे बे सत्तास्थान—९३–८९. अने २५–२७ ना उदयमां वैक्रिय संयत अने असंयतने आश्रीने ते ज बे सत्तास्थान. अथवा आहारक संयत आश्री २५–२७ ना उदयमां ९३ नुं सत्तास्थान तथा नारकी तीर्थंकर सत्कर्मा मिथ्यात्वी आश्री ८९ नुं सत्तास्थान. कुल १४ वधतां २९ ना बंधमां एकंदर ४४ भंग थाय.

३० ना बंधमां २५ ना बंध प्रमाणे सत्तास्थानना भंग ३०. तेमां एटलुं विशेष के देवताने मनुष्यगति प्रायोग्य तीर्थंकर नाम सहित ३० बांधतां २१–२५–२७–२८–२९–३० ना उदयमां प्रत्येके ९३ अने ८९ ए बे सत्तास्थान. तेथी कुल १२ वधतां ३० ना बंधमां कुल सत्तास्थान ४२ थाय.

३१ ना बंधमां एक ९३ नुं सत्तास्थान. कारण के ३१ नो बंध तीर्थंकर नामकर्म अने आहारक सहित ज करे. तेथी सत्तास्थान १.

१ एकविध बंधने सत्तास्थान ८ (९३–९२–८९–८८–८०–७९–७६–७५) तेमां पहेला चार सत्तास्थान उपशमश्रेणिवाळाने अथवा क्षपकने ज्यांसुधी नामकर्मनी १३ प्रकृति खपावी न होय त्यांसुधी. १३ प्रकृति खपावे त्यारे पाछला चार सत्तास्थान. कुल सत्तास्थान ८.

अबंधक संज्ञी पर्याप्तने सत्तास्थान ८ उपर कह्या ते ज. तेमां पहेला चार अग्यारमे गुणस्थाने अने पाछला चार बारमे गुणस्थाने. कुल ८.

कुल संज्ञी पर्याप्ताने सत्तास्थान २०८ (२६–३०–३०–१९–४४–४२–१–८–८)

द्रव्यमनने लइने केवळीने पण सञ्ज्ञी गणीए तो केवळी आश्री २६ सत्तास्थान वधे ते आ प्रमाणे —

केवळीने १० उदयस्थान—२०–२१–२६–२७–२८–२९–३०–३१–९–८.

२०–२६–२८ ना उदयमा सत्तास्थान बने—७९–७५

२१–२७ ना उदयमा बे बे सत्तास्थान—८०–७६

२९ ना उदयमा ४ सत्तास्थान—८०–७६–७९–७५ कारण के २९ नो उदय तीर्थंकर अतीर्थंकर बन्नेने होवाथी बन्नेना बे बे सत्तास्थान तेथी कुल ४

३० ना उदयमा पण उपर प्रमाणे ४

३१ ना उदयमा सत्तास्थान २ ( ८०–७६ )

९ ना उदयमा सत्तास्थान ३ ( ८०–७६–९ ) तेमा पहेला २ तीर्थंकर अयोगी केवळीने द्विचरम समय सुधी चरम समये ९

८ ना उदयमा त्रण सत्तास्थान ( ७९–७५–८ ) ते अतीर्थंकर आश्री उपर प्रमाणे समजवा

कुल केवळी आश्री सत्तास्थानना भंग २६ (२–२–२–२–२–४–४–२–३–३)

केवळीने सञ्ज्ञी गणता कुल संज्ञी पचेंद्रिय पर्याप्त आश्री सत्तास्थानना भग २३४

## जीवस्थान आश्री संवेध संपूर्ण

---

गाथा ४०

## गुणस्थाने कर्मप्रकृतिना भंग.

ज्ञानावरणीय तथा अतराय आश्री पहेलाथी दशमा गुणस्थान सुधी पांच विध वंध, पाच विध उदय, पाच विध सत्ता त्यार पछी ११–१२ मे बधनो विच्छेद होवाथी पाचविध उदय, पाचविध सत्ता त्यारपछी उदय अने सत्तानो पण छेद जाणवो

दर्शनावरणीय कर्म —

पहेले बीजे गुणस्थाने—९ विधबध, ४–५ विध उदय, ९नी सत्ता तेना भग २.

गाथा ४१ त्रीजाथी सातमासुधी बधमाथी त्रण निद्रानो क्षय तेथी ६ विध बध, ४–५ विध उदय, ९ विध सत्ता

अपूर्वकरणनो प्रथमनो संख्यातमो भाग गये सते रहेली बे निद्रानो पण बंधमाथी विच्छेद थाय तेथी ८–९–१० मे गुणस्थाने ४ विध बध, ४–५ विध उदय, ९ विध सत्ता आ उपशमश्रेणि आश्री समजवु क्षपकश्रेणि आश्री ८–९–१० मे गुणस्थाने ५ विध उदय नहीं, अने दशमे ९ विध सत्ता नहीं क्षपकवाळाने अनिवृत्तिबादरनो घणो भाग गये सते अने सख्यातमो भाग रहे सते स्त्यानर्धि त्रिकनो सत्तामाथी क्षय थाय छे तेथी नवमाने अते तथा दशमे गुणस्थाने छ विध सत्ता होय अने क्षपकने अत्यत विशुद्धि होवाथी निद्रानो उदय न होय. जेथी ४ विध उदय होय

गाथा ४२. अग्यारमे बंधाभाव होवाथी ४–५ विध उदय, ९ विध सत्ता. उपशांतमोह-वाळा अत्यंत विशुद्ध न होवाथी तेने निद्राद्धिकना उदयनो संभव छे.

बारमे ( क्षपकमोहे ) ४ विध उदय, ६ विध सत्ता. आ विकल्प बारमाना द्विचरम समय सुधी. चरम समये बे निद्रानो पण सत्तामांथी क्षय थवाथी ४ विध उदय, ४ विध सत्ता. पछी उदय अने सत्तामांथी तदन क्षय थाय.

वेदनीयकर्म—

पहेलाथी छठ्ठा गुणस्थान सुधी ४ विकल्प.—

१ असातानो बंध, असातानो उदय, बन्नेनी सत्ता.
२ असातानो बंध, सातानो उदय, बन्नेनी सत्ता.
३ सातानो बंध, असातानो उदय, बन्नेनी सत्ता.
४ सातानो बंध, सातानो उदय, बन्नेनी सत्ता.

सातमाथी तेरमा सुधी त्रीजो अने चोथो बे विकल्प. तेमने असातानो बंध न होय.

चौदमे गुणस्थाने ४ भंग. ( त्यां बंधनो अभाव छे. )

१ असातानो उदय, बन्नेनी सत्ता.
१ सातानो उदय, बन्नेनी सत्ता.

आ बे भंग द्विचरम समय सुधी अने द्विचरम समये जो सातानो क्षय करे तो—

३ असातानो उदय, असातानी सत्ता.
अने असातानो क्षय करे तो—
४ सातानो उदय, सातानी सत्ता.
पछी सर्वथा क्षय.

गोत्र कर्म—

पहेले गुणस्थाने ५ भंग.—

१ नीचनो बंध, नीचनो उदय, नीचनी सत्ता.
आ भंग तेजो वायुमां तथा त्यांथी नीकळ्या पछी थोडा काळ सुधी होय
२ नीचनो बंध, नीचनो उदय, बन्नेनी सत्ता.
३ नीचनो बंध, उंचनो उदय, बन्नेनी सत्ता.
४ उंचनो बंध, नीचनो उदय, बन्नेनी सत्ता.
५ उंचनो बंध, उंचनो उदय, बन्नेनी सत्ता.

बीजे गुणस्थाने पाछला ४ भंग. (तेजो वायुने आ गुणस्थाननो अभाव होवाथी).

त्रीजे, चोथे, पांचमे गुणस्थाने चोथो अने पांचमो ए बे भंग. केमके तेमने नीच गोत्रना बंधनो अभाव छे. कोइ आचार्य पांचमे गुणस्थाने पांचमो एक ज विकल्प कहे छे.

६–७–८–९–१० मे गुणस्थाने केवळ पांचमो भंग.

११-१२-१३ मे बंधाभाव होवाथी छठ्ठो विकल्प —

६ उच्चनो उदय, बन्नेनी सत्ता

१४ मे गुणस्थाने उपरनो विकल्प द्विचरम समय सुधी द्विचरमे सत्तामाथी नीचनो क्षय थाय तेथी त्या ७ मो विकल्प—

७ उच्चनो उदय, उच्चनी सत्ता

आयु कर्मना भंग २८

( ५ नारकी आश्री, ९ तिर्यच आश्री, ९ मनुष्य आश्री, ५ देव आश्री आनुं विवरण अगाउ आवेल छे )

मिथ्यात्वी चारे गतिमा होवाथी ते गुणस्थाने विकल्प २८

बीजे गुणस्थाने विकल्प २६ सासादने रहेलो मनुष्य तथा तिर्यच नरकायु न बाधे तेथी आयुबंध काळे ते बे गतिमा बे भग ओछा थाय

त्रीजे गुणस्थाने विकल्प १६ त्रीजे आयुबध थतो नथी तथी आयुबध काळना नरक आश्री २, तिर्यच आश्री ४, मनुष्य आश्री ४, देव आश्री २, आ १२ भंग त्या न लाभे

चोथे गुणस्थाने विकल्प २० चोथे वर्तता मनुष्य तथा तिर्यच देवायु ज बाधे तेथी तेना बधकाळना अन्य गति आश्री त्रण त्रण भंग बाद करवा अने नरक तथा देवता चोथे वर्तता मनुष्यायुज बाधे तेथी तेना बधकाळनो तिर्यच आश्री एक एक भग बाद करवो कुल ८ जता बाकी भग २०.

पाचमे गुणस्थाने विकल्प १२ (पाचमु मनुष्य तिर्यचने ज होय.) ते देवायु ज बाधे छे तेथी बंध अगाउ एक एक, बंध समये पण एक एक, अने बंधोत्तर काळे चार चार कुल १२ भंग चार गतिमाथी कोइ अन्य गतिनु आयु बाध्या पछी देशविरति पामनारनी अपेक्षाए बंधोत्तरना चार चार भंग लाभे

छठ्ठे तथा सातमे गुणस्थाने विकल्प ६ (ए गुणस्थान मनुष्य आश्री ज छे) तेथी बध अगाउ १, बंध काळे १, बधोत्तर काळे उपर कहेली युक्ति प्रमाणे ४, कुल भग ६

८-९-१०-११ मे गुणस्थाने उपशमश्रेणि आश्री विकल्प २

१ मनुष्यायु उदय, देव मनुष्यायु सत्ता ( बंधोत्तर काळे )

१ मनुष्यायु उदय, मनुष्यायु सत्ता ( बधथी पूर्वे )

आ चार गुणस्थाने तो आयुबध नथी पण पूर्व बद्धायु उपशमश्रेणि माडे छे ते पण देवायु बाधेल होय तो ज तेथी उपर प्रमाणे बे भग. अने पूर्वबद्धायुवाळो क्षपकश्रेणि माडतो नथी तेथी क्षपक आश्री ८-९-१०-११-१२-१३-१४ ए सर्वे गुणस्थाने एक ज भग मनुष्यायुउदय, मनुष्यायु सत्ता. पछी सर्वथा क्षय.

कुल भग १२५ थया. ( २८-२६-१६-२०-१२-१२-४-७ )

गाथा ४३

## मोहनीकर्म.

बंधस्थान पहेलाथी आठमा सुधी एक एक.

पहेले २२, बीजे २१, त्रीजे, चोथे, १७, पांचमे १३, छट्ठे, सातमे, आठमे ९. आनो विस्तार प्रथम करेलो छे, विशेष एटलुं के प्रमत्त गुणस्थानके अरति शोकनो बंध विच्छेद थवाथी सातमे आठमे बंध तो नवनो होय. पण तेमां विकल्प एक ज. बे नहीं.

नवमे गुणस्थाने बंधस्थान ५, ४, ३, २, १. तथा दशमा गुणस्थानथी बंधनो विच्छेद.

गाथा ४४

### उदयस्थान.

२२ ना बंधवाळा मिथ्यात्वीने उदयस्थान ४ ( ७-८-९-१० ).

१ मिथ्यात्व, ३ अप्रत्याख्यान, प्रत्याख्यान अने संज्वलन ए त्रण जातिनो कषाय,
१ त्रणमांथी एक वेद, २ युगळमांथी एक युगळ.

आ सातना उदयमां ४ कषाय अने त्रण वेदे गुणतां १२. तेने २ युगळे गुणतां चोवीशी १ थाय.

७ मां अनंतानुबंधी कषाय, अथवा भय, अथवा जुगुप्सा नाखता उदय ८ नो, तेनी चोवीशी ३.

७ मां अनंतानुबंधी अने भय, अनंतानुबंधी अने जुगुप्सा, अथवा भय अने जुगुप्सा नांखतां ९ नो उदय. तेनी चोवीशी ३.

७ मां ते त्रणे नांखतां १० नो उदय. तेनी चोवीशी १.

कुल पहेले गुणस्थाने चोवीशी ८ थाय.

बीजे गुणस्थाने उदयस्थान ३. ( ७-८-९ ).

४ चार जातिनो एक एक कषाय, १ त्रणमांथी एक वेद, २ एक युगळ.

७ ना उदयमां कुल चोवीशी १.

७ मां भय के जुगुप्सा नांखतां ८ नो उदय. तेनी चोवीशी २.

७ मां भय अने जुगुप्सा नांखतां ९ नो उदय. तेनी चोवीशी १.

कुल बीजे गुणस्थाने चोवीशी ४.

त्रीजे गुणस्थाने उदयस्थान ३ ( ७-८-९ ).

३ त्रण जातिनो एक एक कषाय, १ त्रणमांथी एक वेद, २ युगळ, १ मिश्रमोहनी.

७ ना उदयमां चोवीशी १.

७ मां भय के जुगुप्सा नांखतां ८ ना उदयमां चोवीशी २.

७ मां भय जुगुप्सा बन्ने नांखतां ९ ना उदयमां चोवीशी १.

कुल त्रीजे गुणस्थाने चोवीशी ४.

चोथे गुणस्थाने उदयस्थान ४ ( ६-७-८-९ ).

३ त्रण जातिनो एक एक कषाय, १ त्रणमांथी एक वेद, २ बेमांथी एक युगळ.

आ ६ नो उदय क्षायिक के उपशमिकने होय. तेनी चोवीशी १.

६ मा भय के जुगुप्सा के समकितमोहनी नाखता ७ ना उदयमा चोवीशी ३
६ मा भय जुगुप्सा, के भय समकितमोहनी, के जुगुप्सा समकितमोहनी नाखता ८ ना उदयमा चोवीशी ३
६ मा भय, जुगुप्सा अने समकितमोहनी ए त्रणे नाखतां ९ ना उदयमां चोवीशी १

कुल चोथे गुणस्थाने चोवीशी ८.

पांचमे गुणस्थाने उदयस्थान ४ ( ५–६–७–८ )
२ वे जातिना कषाय, १ वेद, २ युगळ एक
आ ५ नो उदय क्षायिक के उपशम समकितवाळा देशविरतिने होय. तेनी चोवीशी १.
५ मा भय, जुगुप्सा के वेदक ( समकित मोहनी ) नाखता ६. तेनी चोवीशी ३.
५ मा त्रणमाथी वे नाखता ७ तेनी चोवीशी ३.
५ मां त्रणे नाखतां ८ तेनी चोवीशी १

कुल पाचमे गुणस्थाने चोवीशी ८

गाथा ४५ छठ्ठे सातमे गुणस्थाने ४–४ उदय स्थान ( ४–५–६–७ )
श्रेणि न माडे त्यासुधी क्षयोपशम भावनी ज विरति होवाथी छठ्ठा सातमा-वाळा क्षयोपशम विरति कहेवाय छे
१ एक जातिनो कषाय, १ एक वेद, २ एक युगळ
आ ४ ना उदयमा चोवीशी १ क्षायिक ने उपशम समकितीने होय
४ ना उदयमा भय, जुगुप्सा के वेदक नाखता पाचमा चोवीशी ३.
४ मां त्रणमाथी वबे नाखतां ६ तेनी चोवीशी ३.
४ मा त्रणे नाखता ७ तेनी चोवीशी १
कुल छठ्ठे अने सातमे गुणस्थाने चोवीशी ८–८
आठमे गुणस्थाने उदयस्थान ३ ( ४–५–६ )
१ एक जातिनो कषाय, १ वेद, २ एक युगळ
आ ४ ना उदयमा चोवीशी १
४ मा भय के जुगुप्सा नाखता ५ तेनी चोवीशी २
४ मा भय जुगुप्सा बन्ने नाखता ६ तेनी चोवीशी १.
कुल आठमे गुणस्थाने चोवीशी ४
नवमे गुणस्थाने उदयस्थान २ ( २–१ )
१ कषायोदय, १ वेदोदय होय त्यासुधी एक वेद
तेमा ४ कषायने त्रण वेद साथे गुणता भग १२
वेदनो क्षय थये कषायनो ज उदय तेना भेद–४–३–२–१ एम १० भेद थाय बंधस्थान ४ आश्री

गाथा ४६. दशमे गुणस्थाने बधविच्छेदे किट्टीकृत लोभनो उदय होय तेथी १ ना उदयमा भग १ कुल १ ना उदयमा भंग ५

११–१२–१३–१४ गुणस्थानवाळा मोहनीना उदय रहित छे.

आ उदयस्थानना भंग पूर्वे कह्याप्रमाणे जाणवा.

गाथा ४७. अहीं मिथ्यादृष्टयादिने आश्रीने १० थी १ सुधीना उदयस्थानना भंगनी संख्या कहेछे.—

१ दशना उदयमां पहेले ज गुणस्थाने.

६ नवना उदयमां पहेले ३, वीजे, त्रीजे अने चोथे एक एक.

११ आठना उदयमां पहेले चोथे त्रण त्रण, वीजे त्रीजे वबे, पांचमे एक.

११ सातना उदयमां १–२–३–६–७ मे एक एक, ४–५ मे त्रण त्रण.

११ छना उदयमां १–८ मे एक एक, ५–६–७ मे त्रण त्रण.

९ पांचना उदयमां ५ मे एक, ६–७ मे त्रण त्रण, ८ मे वे.

३ चारना उदयमां ६–७–८ मे एक एक.

वेना उदयमां भांगा १२.

एकना उदयमां भांगा ५.

गाथा ४८. उपर प्रमाणे ५२ चोवीशी थवाथी तेने चोवीशे गुणतां १२४८ मां द्विकोदयना १२ तथा एकोदयना ५ मळी १७ भेळवतां १२६५ भंग थाय.

---

उपर कहेली चोवीशी विगेरे भंगमां जेटली जेटली प्रकृतिओ उदयमां आवे तेने पद कहीए. तेनी संख्या कहे छे.—

| | | | |
|---|---|---|---|
| १०×१ =१० | ८×११=८८ | ६×११=६६ | ४× ३=१२ |
| ९×६ =५४ | ७×११=७७ | ५× ९=४५ | ३५२ |

आ ३५२ ने चोवीशे गुणतां ८४४८ तेमां १२ द्विकोदयना पद २४, अने पांच एकोदयनां पद ५ कुल २९ नांखतां ८४७७ थाय. आटली प्रकृतिए मोह पामेलो प्राणी संसारमां परिभ्रमण कर्या करे छे.

गुणस्थान आश्री उदय चोवीशी नीचे प्रमाणे—

८ मिथ्यादृष्टि गुणस्थाने, ४ सास्वादने, ४ मिश्रे, ८ अविरते, ८ देशविरते, ८ प्रमत्ते, ८ अप्रमत्ते, ४ अपूर्वकरणे, अनिवृत्तिबादरे द्विकोदय भांगा १२, एकोदयना भांगा ४, सूक्ष्म संपराये भांगो १.

गाथा ४९. उपर जणावेला उदयस्थाने योग कहे छे.—

४ मनोयोग, ४ वचनयोग, १ औदारिक काययोग, कुल ९ योगमां १२६५ भंग लाभे. ( पहेला गुणस्थानथी दशमा सुधी. ) तेथी १२६५ ने नवे गुणतां ११३८५.

वैक्रियमिश्र, औदारिकमिश्र अने कार्मण काययोगमां आठना उदयनी १, ९ ना उदयनी २, १० ना उदयनी १, मळी चार चार चोवीशी (कुल. १२) पहेले गुणस्थाने लाभे. अनंतानुवंधीना उदय विनानी चार न लाभे. अनंतानुवंधीना उदय विना मिथ्यादृष्टि काळ करता न होवाथी. कार्मण काययोग

अपातराल गतिमा होय अने वैक्रियमिश्र औदारिकमिश्र भवातरमा प्रथम उत्पन्न थता होय अहीं वैक्रियमिश्र भवातरे उत्पन्न थता कह्यो पण तिर्यच मनुष्यने वैक्रिय करता मध्यमा पण होय परतु बाहुल्यता आश्री ए कथन समजवु ( नारकी अने देवता सर्वने उत्पन्न थता होवाथी ) मिथ्यादृष्टिने वैक्रियकाययोगे आठे चोवीशी होय

कुल पहेले गुणस्थाने चोवीशी २० होय

सासादने ९ योग आश्री तो उपर कहेल छे बाकीना कार्मण काययोगे, वैक्रिय काययोगे, अने औदारिकमिश्रे चार चार चोवीशी होवाथी कुल चोवीशी १२

मिश्रे वैक्रिय काययोगे चोवीशी ४

अविरतने वैक्रिय काययोगमा चोवीशी ८

देशविरतने वैक्रिय अने वैक्रियमिश्रमा आठ आठ होवाथी कुल चोवीशी १६

प्रमत्तने वैक्रिय अने वैक्रियमिश्रमा आठ आठ होवाथी कुल चोवीशी १६

अप्रमत्तने वैक्रियमा चोवीशी ८

उपर प्रमाणे ९ योग विना बीजा योगमा ८४ चोवीशी होय

( २०-१२-४-८-१६-१६-८ ) ८४

आ ८४ ने २४ वडे गुणता २०१६ थाय ते पूर्वली ११३८५ नी राशिमां नाखवाथी कुल १३४०१

हवे सासादने वैक्रियमिश्र योगमा नपुंसक वेदनो उदय न होय तेने सातनो उदय एकविध, आठनो उदय द्विविध अने नवनो उदय एकविध छे ते चारविधमा चोवीशीने बदले ४ कषाय, २ वेद अने २ युगळ साथे गुणता १६ भेद थाय केमके वैक्रियमिश्र काययोगी नपुसक वेदीमा सासादननो अभाव छे तेथी

अविरत सम्यग्दृष्टिने कार्मण काययोगमा तथा वैक्रियमिश्र योगमा स्त्रीवेदनो उदय न होय वैक्रिय काययोगी स्त्रीवेदीमा अविरत सम्यग्दृष्टिने उपजवानो अभाव होवाथी आ वचन पण बाहुल्यता आश्री जाणवु बाकी कदाचित् तो स्त्रीवेदीमा पण अविरत समकितदृष्टिने उपजवानो सभव छे स्त्रीवेद विना चोथा गुणस्थानना आठे उदय प्रकारमा भंग १६-१६ थाय.

प्रमत्त सयतने आहारक अने आहारकमिश्रमा तथा अप्रमत्तने आहारकमा स्त्रीवेदनो उदय न होय कारणके आहारक शक्ति चौद पूर्वीने होय छे. अने स्त्रीने चौद पूर्वनो अभाव छे अहीं पण भग १६-१६ थाय छे

आ प्रमाणे ४४ ( ४-१६-१६-८ ) योगविकल्प एक एक वेद विना होवाथी १६-१६ भग (षोडशक)वाळा थया तेथी ४४ ने १६ साथे गुणता ७०४ थाय ते पूर्वनी ( १३४०१ ) राशिमा नाखवाथी कुल १४१०५ भग थया

हवे अविरत समकितीने औदारिकमिश्रमा पुवेदनो उदय ज होय केमके स्त्रीवेदमा अने नपुंसकवेदमा उपजवानो तेने अभाव छे ( आ वचन पण

बहुलता आश्री जाणवुं. केमके मल्लीनाथ विगेरेने स्त्रीवेदमां उत्पादनो संभव छे) तेथी औदारिकमिश्रे एक ज वेद गणतां ४ कषाय अने २ युगळसाथे आठ आठ भंग (अष्टक) अष्टविध उदय प्रकारे होय. तेना भंग ६४ थाय ते पूर्वनी (१४१०५) राशिमां नांखवाथी कुल भंग १४१६९ (११३८५–२० १६–७०४–६४) योग आश्री भंग थाय.

हवे उदय आश्री पद संख्या कहे छे–

पूर्वे जे पद संख्या करी छे तेमां १०–९–८ विगेरेना उदयने एकंदर करी गुण्या छे तेम आ दरेक गुणस्थाने गुणवा. एटले पहेले गुणस्थाने ६८ नीचे प्रमाणे—
१०×१=१०, ९×३=२७, ८×३=२४, ७×१=७.

एज प्रमाणे बीजे गुणस्थाने ३२—
९×१=९, ८×२=१६, ७×१=७.

एज प्रमाणे त्रीजे ३२, चोथे ६०, पांचमे ५२, छट्ठे ४४, सातमे ४४, आठमे २० कुल ३५२ ने २४ साथे गुणतां ८४४८ तेमां नवमाना द्विकोदयना १२×२= २४, अने नवमा दशमाना एकोदयना ५, कुल २९ नांखतां ८४७७ थया. तेने ४ मनयोग, ४ वचनयोग, १ औदारिक काययोग, ए ९ साथे गुणतां कुल ७६२९३.

वैक्रिय काययोगमां मिथ्यादृष्टिने उपर प्रमाणे ६८ अने वैक्रियमिश्र, औदारिक-मिश्र, अने कार्मण काययोगमां प्रत्येके ३६–३६ थाय कुल १०८.
( १०×१=१०, ९×२=१८, ८×१=८, =३६. )
अनंतानुबंधी रहित चोवीशीओ न पामवाथी.

सासादनने कार्मण काययोग, वैक्रिय काययोग अने औदारिक मिश्रमां उपर प्रमाणे ३२–३२ होवाथी कुल ९६.

मिश्रने वैक्रिय काययोगमां पूर्ववत् ३२.

अविरतने वैक्रिय काययोगमां पूर्ववत् ६०.

देशविरतने वैक्रिय अने वैक्रियमिश्रमां पूर्ववत् ५२–५२ कुल १०४.

प्रमत्तने वैक्रिय अने वैक्रियमिश्रमां पूर्ववत् ४४–४४–कुल ८८.

अप्रमतने वैक्रियमां पूर्ववत् ४४.

कुल ६८–१०८–९६–३२–६०–१०४–८८–४४ सर्व मळी ६००.

आ ६०० ने २४ वडे गुणतां १४४०० ते पूर्वराशिमां नांखवा.

सासादनने वैक्रियमिश्रमां ३२ पद. नपुंसकवेद विना.

अविरतने कार्मण अने वैक्रियमिश्रमां ६०–६० पद. स्त्रीवेद विना.

प्रमत्त संयतने आहारक अने आहारक मिश्रमां ४४–४४ पद. स्त्रीवेद विना.

अप्रमत्तने आहारकमां ४४ पद. स्त्रीवेद विना.

कुल ३२–१२०–८८–४४ मळी २८४ तेने एक एक वेद विना १६–१६ प्रकृतिए गुणतां ४५४४ थाय ते पर्वराशिमां नांखवा.

अविरतने औदारिक मिश्रमां ६० पद मात्र पुंवेदे होवाथी ८-८ प्रकृतिवडे गुणता ४८० थाय ते पण पूर्वराशिमा नाखवा

कुल ७६२९३-१४४००-४५४४-४८० मळी ९५७१७

आटला उदय आश्री योग विचारता पदो थाय.

---

हवे मोहनी कर्मना उदयना भंग उपयोग साथे गुणावे छे —

पहेले, बीजे गुणस्थाने उपयोग ५ तेमा ३ अज्ञान, २ दर्शन

त्रीजे, चोथे, पाचमे उपयोग ६ तेमा ३ ज्ञान, ३ दर्शन

६-७-८-९-१० ए गुणस्थाने उपयोग ७ तेमा ४ ज्ञान ३ दर्शन

उदयस्थानना विकल्पसाथे तेने गुणवा

पहेले गुणस्थाने उदयस्थाननी ८ चोवीशी अने बीजे गुणस्थाने उदयस्थाननी ४ चोवीशी तेने पाचे गुणता कुल उदय भागानी चोवीशी ६० थाय

त्रीजे गुणस्थाने ४, चोथे ८, पाचमे ८, कुल २० तेने ६ साथे गुणता १२०

छट्ठे ८, सातमे ८, आठमे ४, कुल २० तेने ७ वडे गुणता १४०

कुल आठे गुणस्थाने थईने ३२० तेमा प्रत्येके चोवीशी लभ्य होवाथी तेने २४ वडे गुणता ७६८०

द्विकोदय भागा १२ अने एकोदयना भंग ५ कुल १७ ने ७ उपयोगे गुणतां ११९ ते पूर्वराशिमा नाखता ७७९९

कोइ आचार्य मिश्रमा ५ उपयोग कहे छे तेने मते ४ भंग घटे एटले तेनी चोवीशी करता ९६ घटे जेथी मूळ भंग ३१६ चोवीशीवाळा ७५८४ थाय अने कुल ७७०३ थाय

हवे तेनी पद संख्या कहे छे —

पहेलाना ६८, बीजाना ३२, मळी कुल १०० तेने पाचे गुण्या, एटले ५०० थया.

त्रीजाना ३२, चोथाना ६० पाचमाना ५२, कुल १४४ गुण्या ६- थया ८६४

छट्ठाना ४४, सातमाना ४४, आठमाना २०, कुल १०८ गुण्या ७- थया ७५६.

कुल पद सख्या २१२० तेने चोवीशे गुणता ५०८८० तेमा द्विकोदयना २४, एकोदयना ५ कुल २९ तेने साते गुण्या एटले थया २०३ कुल ५१०८३.

मतातरे त्रीजे पाच उपयोग गणता मूळ पदना ३२ ने २४ वडे गुणता ७६८ घटे एटले ५०३१५ थाय

---

हवे लेश्या आश्री उदयस्थान कहे छे —

१-२-३-४ गुणस्थाने छ छ लेश्या होय

५-६-७ ए गुणस्थाने त्रण त्रण लेश्या (शुभ)

८ मा गुणस्थानथी एक शुक्ल लेश्या ज होय

हवे उदयस्थानना प्रकार साथे गुणता —

पहेले ८, बीजे ४, त्रीजे ४, चोथे ८ कुल २४ चोवीशी तेने ६ साथे गुणतां १४४ चोवीशी थइ.

पांचमे ८, छठ्ठे ८, सातमे ८ कुल २४ चोवीशी तेने गुण्या ३ थया ७२.

आठमे ४ चोवीशी तेने गुण्या १ थया ४.

कुल उदयस्थाने लेश्याना प्रकार २२० तेने २४ वडे गुणतां ५२८० थया तेमां द्विकोदयना १२ अने एकोदयना ५ कुल १७ भेळवतां ५२९७.

हवे लेश्या गुणित पदवृंद कहे छे.—

पहेले ६८, बीजे ३२, त्रीजे ३२, चोथे ६० कुल १९२ तेने छए गुणतां ११५२.

पांचमे ५२, छठ्ठे ४४, सातमे ४४, कुल १४० तेने गुण्या ३ थया ४२०.

आठमे २० तेने गुण्या १ थया २०.

कुल पदवृंद १५९२ तेने चोवीशे गुणतां ३८२०८ थया. तेमां द्विकोदयना २४ अने एकोदयना ५ कुल २९ नांखवाथी ३८२३७ थया.

गाथा ५०. उदयस्थान योग, उपयोग, लेश्या, सहित कह्या. हवे सत्तास्थान कहे छे.—

पहेले गुणस्थाने सत्तास्थान ३ ( २८–२७–२६ ).

बीजे सत्तास्थान १ ( २८ ).

त्रीजे सत्तास्थान ३ ( २८–२७–२४ ).

४–५–६–७ ए सत्तास्थान ५ ( २८–२४–२३–२२–२१ ).

८ मे सत्तास्थान ३ ( २८–२४–२१ ) तेमां पहेला २ उपशमश्रेणिमा अने त्रीजुं क्षायिक समकित दृष्टिने बन्ने श्रेणिमां.

९ मे सत्तास्थान १४ (२८–२४–२१–१३–१२–११–५–४–३–२–१) तेमां पहेला बे उपशमश्रेणिमां. २१ नुं सत्तास्थान क्षायिक समकिती उपशमश्रेणिगतने अथवा कषायाष्टक क्षय न करतां सुधी क्षपक वाळाने.

कषायाष्टक क्षय करतां १३ नुं सत्तास्थान.

नपुंसक वेदनो क्षय करतां १२ नुं.

स्त्रीवेदना क्षये ११ नुं.

हास्यादि छना क्षये ५ नुं.

पुरुषवेद क्षये ४ नुं.

संज्वलन क्रोध क्षये ३ नुं.

संज्वलन मान क्षये २ नुं.

संज्वलन माया क्षये १ नुं.

१० मे सत्तास्थान ४ ( २८–२४–२१–१ ) तेमां पहेला त्रण उपशममां अने छेल्लुं क्षपकमां.

११ मे सत्तास्थान ३ ( २८–२४–२१ ) उपशमश्रेणिवाळाने.

हवे मोहनी कर्मना बंध, उदय अने सत्तास्थाननो संवेध कहे छे —
पहेले गुणस्थाने २२ ना बंधमा उदयस्थान ४ ( ७–८–९–१० ).
७ ना उदयमा १ सत्तास्थान–२८ नुं
८–९–१० ना उदयमा त्रण त्रण सत्तास्थान–२८–२७–२६ कुल सत्तास्थान १०
बीजे २१ ना बंधमा ३ उदयस्थान—७–८–९
तेमा प्रत्येके एक सत्तास्थान–२८ नुं कुल ३ सत्तास्थान
त्रीजे १७ ना बंधमा ३ उदयस्थान—७–८–९
प्रत्येक उदये त्रण त्रण सत्तास्थान–२८–२७–२४ कुल ९ सत्तास्थान
चोथे १७ ना बंधमा ४ उदयस्थान–६–७–८–९
६ ना उदयमा ३ सत्तास्थान–२८–२४–२१
७–८ ना उदयमा ५ सत्तास्थान—२८–२४–२३–२२–२१
९ ना उदयमा ४ सत्तास्थान—२८–२४–२३–२२
कुल सत्तास्थान १७
पाचमे १३ ना बंधमा ४ उदयस्थान—५–६–७–८
५ ना उदयमा ३ सत्तास्थान—२८–२४–२१
६–७ ना उदयमा ५ सत्तास्थान—२८–२४–२३–२२–२१
८ ना उदयमा ४ सत्तास्थान—२८–२४–२३–२२
कुल सत्तास्थान १७.
छट्ठे गुणस्थाने ९ ना बंधमा ४ उदयस्थान—४–५–६–७
४ ना उदयमा ३ सत्तास्थान—२८–२४–२१
५–६ ना उदयमा ५ सत्तास्थान–२८–२४–२३–२२–२१
७ ना उदयमा ४ सत्तास्थान—२८–२४–२३–२२
कुल सत्तास्थान १७
सातमे छट्ठाप्रमाणे बंध, उदय होवाथी सत्तास्थान १७ जाणवा
आठमे ९ ना बंधमा ३ उदयस्थान—४–५–६
दरेकमा ३ सत्तास्थान—२८–२४–२१
कुल सत्तास्थान ९
नवमे ५ बंधस्थान—५–४–३–२–१
५ ना बंधमा बेना उदयमा ६ सत्तास्थान—२८–२४–२१–१३–१२–११
४ ना बंधमा १ ना उदयमा ६ सत्तास्थान—२८–२४–२१–११–५–४
३ ना बंधमा १ ना उदयमा ५ सत्तास्थान—२८–२४–२१–४–३
२ ना बंधमा १ ना उदयमा ५ सत्तास्थान—२८–२४–२१–३–२
१ ना बंधमा १ ना उदयमा ५ सत्तास्थान—२८–२४–२१–२–१
कुल सत्तास्थान २७
दशमे अबंधकपणामा १ ना उदयमा ४ सत्तास्थान—२८–२४–२१–१.

अग्यारमे बंध तथा उदय नथी. ३ सत्तास्थान—२८–२४–२१.

सर्व मळी सत्तास्थान १३३.

आनी विशेष व्याख्या पूर्वे कहेली छे ते प्रमाणे समजवी.

---

## हवे चौद गुणस्थाने नाम कर्म.

गाथा ५१. पहेले गुणस्थाने ६ बंधस्थान—२३–२५–२६–२८–२९–३०.

अपर्याप्त एकेंद्रिय प्रायोग्य बांधतां २३ नो बंध. तेमां बादर, सूक्ष्म, प्रत्येक अने साधारण रूप ४ भंग.

पर्याप्त एकेंद्रिय तथा अपर्याप्त विकलेंद्रिय, तिर्यंच पंचेंद्रिय अने मनुष्य योग्य बांधतां २५ नो बंध. तेमां पर्याप्त एकेंद्रिय आश्री बंधना भंग २०. बाकीना पांचमां एक एक भंग कुल भंग २५.

पर्याप्त एकेंद्रिय प्रायोग्य बांधतां २६ नो बंध तेमां भंग १६.

देव नरकगति प्रायोग्य बांधतां २८ नो बंध तेमां देवगति आश्री भंग ८, अने नरकगति आश्री १ कुल भंग ९.

पर्याप्त विकलेंद्रिय, तिर्यक् पंचेंद्रिय, तथा मनुष्य आश्री बांधतां २९ नो बंध तेमां विकलेंद्रिय आश्री बांधतां ८–८–८, तिर्यंच ने मनुष्य पंचेंद्रिय आश्री बांधतां ४६०८–४६०८ भंग. कुल भंग ९२४०.

देवगति प्रायोग्य तीर्थंकर नाम सहित २९ बांधे छे पण ते पहेले गुणस्थाने न होय.

पर्याप्त विकलेंद्रियने तिर्यंच पंचेंद्रिय प्रायोग्य बांधतां ३० नो बंध तेमां विकलेंद्रिय आश्री ८–८–८ भंग, तिर्यंच पंचेंद्रिय आश्री ४६०८ कुल ४६३२.

कुल छ बंधस्थाने थईने मिथ्यात्व गुणस्थाने भंग १३९२६.

( बन्ने प्रकारे ३० नो बंध छे ते अहीं न लाभे. )

पहेले गुणस्थाने ९ उदयस्थान २१–२४–२५–२६–२७–२८–२९–३०–३१.

उदयस्थाननुं विवरण पूर्व प्रमाणे जाणवुं. तेमां फक्त आहारक वैक्रिय संयतना ने केवळीना उदय भंग न गणवा. बाकी पहेले गुणस्थाने उदय भंग ७७७३.

२१ ना उदयमां ४१ ते पूर्वे कहेला ४२ मांथी एक तीर्थंकर संबंधी बाद करतां ४१

२४ ना उदयमां ११ ते एकेंद्रिय आश्री ज छे.

२५ ना उदयमां ३२ ते पूर्वे कहेला ३३ मांथी आहारक आश्री १ बाद करतां ३२.

२६ ना उदयमां ६०० पूर्ववत्.

२७ ना उदयमां ३१ ते पूर्वे कहेला ३३ मांथी आहारक संयत तथा केवळी आश्री एक एक जतां बाकी ३१.

२८ ना उदयमां ११९९ ते पूर्वे कहेला १२०२ मांथी वैक्रिय संयतनो १, आहारकना २, कुल ३ जतां ११९९.

२९ ना उदये १७८१ ते पूर्वे कहेला १७८५ मांथी वैक्रिय संयतनो १, आहारकना २, तीर्थंकरनो १, कुल ४ जतां १७८१.

३० ना उदयमा २९१४ ते पूर्वे कहेला २९१७ माथी वैक्रियसंयत, आहारक तथा केवळीनो एक एक–कुल ३ जता २९१४

३१ ना उदयमा ११६४ ते पूर्वे कहेला ११६५ माथी तीर्थंकर आश्री १ जता ११६४

प्रथम गणावेला ७७९१ माथी उपर प्रमाणे १५ अने २०–८–९ ना उदयनो एक एक कुल १८ जता कुल उदय भग ७७७३

पहेले गुणस्थाने ६ सत्तास्थान—९२–८९–८८–८६–८०–७८

९२ नु सत्तास्थान चारे गतिमा होय

८९ नु सत्तास्थान पूर्वे नरक बद्धायु तीर्थंकरने अंतर्मुहूर्त मात्र होय.

८८ नु सत्तास्थान चारे गतिना मिथ्यात्वीने होय

८६–८० नुं सत्तास्थान एकेंद्रियमा लाभे देवगति नरकगति प्रायोग्य वैक्रिय षट्क उद्वलित कर्यु होय त्यारे अने एकेंद्रियमाथी नीकळया पछी विकलेंद्रियमा तथा तिर्यंच पचेंद्रिय मनुष्यमा उपजता पण सर्व पर्याप्तिए पर्याप्त थया पछी अतर्मुहूर्त सुधी लाभे पछी तो जरुर वैक्रिय शरीरादिना बधनो संभव होवाथी न पामे

७८ नु सत्तास्थान तेजो वायुने मनुष्यद्विक उद्वलित कर्या पछी लाभे. अने तेजो वायुमाथी विकलेंद्रियमा तथा तिर्यंच पंचेंद्रियमा उपज्या पछी पण अतर्मुहूर्त सुधी लाभे पछी तो जरुर मनुष्यद्विकना बधनो संभव छे

पहेले गुणस्थाने बध, उदय अने सत्तास्थान कह्या हवे तेनो सवेध कहे छे —

२३ बाधता ९ उदयस्थान पण तेमा २१–२५–२७–२८–२९–३० ए छ उदयस्थानमा देवगति अने नरकगति आश्री जे भग छे ते न सभवे, कारणके २३ नो बध अपर्याप्त एकेंद्रिय आश्री छे ने देवता अपर्याप्त एकेंद्रियमा उपजता नथी, अने नारकी तो बिलकुल एकेंद्रियमा जता ज नथी तेथी ते आश्री ६० भग न लाभे बाकी ७७१३ लाभे

२३ ना बंधमा सत्तास्थान ५ ९२–८८–८६–८०–७८

२१–२४–२५–२६ ना उदयमा पाचे सत्तास्थान. पण एटलु विशेष के २५ ना उदयमा तेजो वायुने आश्रीने ७८ नुं सत्तास्थान लाभे अने २६ ना उदयमा तेजो वायुने तथा तेजो वायुमाथी नीकळी विकलेंद्रियमा अने तिर्यंच पचेंद्रियमा तरतना उपजेला आश्री लाभे

२७–२८–२९–३०–३१ आ पाच उदयमा ७८ विना चार चार सत्तास्थान कुल २३ ना बधमा सत्तास्थान ४०

२५–२६ ना बधमा ए ज प्रमाणे मात्र तेमा देवता सबंधी उदयस्थानमा वर्तता पर्याप्त एकेंद्रिय आश्री २५–२६ बाधता उपर प्रमाणे सत्तास्थान कहेवा तेमा पण २५ ना बधमा बादर पर्याप्त प्रत्येकने स्थिरास्थिर, शुभाशुभ, दुर्भग, अनादेय, यश अयशपदे ८ भग थाय बाकीना भग थाय नहीं कारणके सूक्ष्म साधारण तथा अपर्याप्तमा देवताने उपजवानो अभाव छे

२५–२६ ना बंधमां सत्ता स्थान उपर प्रमाणे ४०–४० जाणवा.

२८ ना बंधमां बे उदय स्थान—३०–३१. तेमां

३० तिर्यंच पंचेंद्रिय तथा मनुष्य आश्री.

३१ तिर्यंच पंचेंद्रिय आश्री.

२८ ना बंधमां सत्ता स्थान ४ ( ९२–८९–८८–८६ ). तेमां

३० ना उदयमां चारे सत्ता स्थान. तेनी अंदर पूर्वबद्ध नरकायु तीर्थंकर नामवाळा आश्री ८९ नुं सत्तास्थान, मनुष्यमां ज. अने बाकीनां त्रण तिर्यंच अने मनुष्य बन्नेमां.

३१ ना उदयमां ८९ विना ३ सत्तास्थान. कारणके तीर्थंकर नामवाळा तिर्यंच गतिमां जता नथी.

कुल २८ ना बंधमां सत्तास्थान ७.

२९ नो बंध देवगति प्रायोग्य छे. ते सिवाय विकलेंद्रिय, तिर्यंच पंचेंद्रिय तथा मनुष्य आश्री २९ बांधतां सामान्ये ९ उदय स्थान अने ६ सत्तास्थान—( ९२–८९–८८–८६–८०–७८ ).

२१ ना उदयमां आ बधां सत्तास्थान पामीए. तेमां ८९ नुं तो तीर्थंकर नाम बांधेल पूर्वबद्धायुपणाथी नरकमां जतां अंतर्मुहूर्त मिथ्यात्वे रहे, ते आश्री लाभे. ९२ अने ८८ देव, नारकी, मनुष्य, विकलेंद्रिय, तिर्यंच पंचेंद्रिय तथा एकेंद्रिय आश्री लाभे. ८६ अने ८० विकलेंद्रिय, तिर्यंच पंचेंद्रिय, मनुष्य तथा एकेंद्रिय आश्री लाभे. ७८ एकेंद्रिय, विकलेंद्रिय तथा तिर्यंच पंचेंद्रिय आश्री लाभे.

२४ ना उदयमां ८९ विना पांच सत्तास्थान. ते एकेंद्रिय आश्री ज लाभे.

२५ ना उदयमां ६ सत्तास्थान २१ ना उदयवत्.

२६ ना उदयमां ८९ विना पांच सत्तास्थान. केमके ८९ नुं सत्तास्थान उपर कह्या प्रमाणे नारकीमां लाभे. अने नारकीने २६ नुं उदयस्थान नथी.

२७ ना उदयमां ७८ विना पांच सत्तास्थान. तेमां ८९ नुं उपर कह्या प्रमाणे नारकीमां. ९२–८८ देव, नारकी, मनुष्य, तिर्यंच पंचेंद्रिय, एकेंद्रिय अने विकलेंद्रिय आश्री. ८६–८० एकेंद्रिय, विकलेंद्रिय, तिर्यंच पंचेंद्रिय अने मनुष्य आश्री. ७८ नुं सत्तास्थान अहीं न लाभे. कारण के २७ नो उदय तेजो वायु विनाना एकेंद्रिय आतपोद्योतवाळाने तथा नारकीने छे. तेने मनुष्यद्विकनो संभव छे.

२८ ना उदयमां उपर प्रमाणे ज पांच सत्तास्थान. तेमां ८९–९२–८८ तो पूर्ववत्. अने ८६–८० विकलेंद्रिय, तिर्यंच पंचेंद्रिय अने मनुष्य आश्री.

२९ ना उदयमां ए ज पांच सत्तास्थान.

३० ना उदयमां चार सत्तास्थान–९२–८८–८६–८०. ते विकलेंद्रिय, तिर्यंच

पंचेंद्रिय तथा मनुष्य आश्री ८९ नुं सत्तास्थान नारकीमा लाभे छे तेने ३० नु उदय स्थान नथी तेथी अहीं ते बाद कर्युं छे

३१ ना उदये पण ते ज चार सत्तास्थान. विकलेंद्रिय, तिर्यंच पंचेंद्रिय आश्री सर्व मळी २९ ना बंधमा मिथ्यात्वी आश्री सत्तास्थान ४५

देवगति आश्री २९ नु बधस्थान छे ते आ गुणस्थाने नँ लाभे कारण के तीर्थंकर नाम युक्त २९ होय छे मिथ्यात्वे तीर्थंकर नामनो बध थतो नथी

३० नो बध मनुष्य अने देवगति विना बाकी विकलेंद्रिय, तिर्यंच पंचेंद्रिय आश्री छे त्या ९ उदयस्थान अने ८९ विना पाच सत्तास्थान छे ८९ नु अहीं संभवतु नथी तेनु कारण उपर कह्यु छे ८९ नी सत्तावाळाने तिर्यग्गति प्रायोग्य बधनो ज असंभव छे

२१–२४–२५–२६ ना उदयमा पाचे सत्तास्थान पूर्ववत् जाणवा

२७–२८–२९–३०–३१ ना उदयमा ७८ सिवाय चार चार सत्तास्थान छे ७८ वर्जवानु कारण उपर जणाव्यु छे

३० बाधता मिथ्यादृष्टिने कुल सत्तास्थान ४० थाय

मनुष्य गति प्रायोग्य ३० ना बधमा तीर्थंकर नाम होवाथी अने देवगति प्रायोग्य ३० मा आहारक ने तीर्थंकर नाम होवाथी ते अहीं न लाभे

कुल २१२ सत्तास्थान थया

हवे बीजा गुणस्थान आश्री कहे छे —

सासादने बधस्थान ३ ( २८–२९–३० )

२८ नो बध बे प्रकारे छे –देवगति प्रायोग्य अने नरकगति प्रायोग्य तेमा नरकगति प्रायोग्य अहीं न लाभे देवगति प्रायोग्य बाधनार तिर्यंच पचेंद्रियने तथा मनुष्यने आ २८ बाधता भंग ८

२९ नो बध एकेंद्रिय, विकलेंद्रिय, तिर्यक् पचेंद्रिय, मनुष्य, देवता अने नारकीने सासादने वर्तता तिर्यक् पचेंद्रिय अने मनुष्य प्रायोग्य थाय पण ते हुडक संस्थान अने छेवट्ठु सघयण न बाधे. तेथी पूर्वे गणाव्या प्रमाणे तिर्यक् पंचेंद्रिय अने मनुष्य बन्ने आश्री ३२००–३२०० एटले कुल भग ६४००

३० नो बध एकेंद्रिय, विकलेंद्रिय, तिर्यक् पंचेंद्रिय, मनुष्य, देवता अने नारकी सासादने वर्तता करे तो तिर्यक् पचेंद्रिय प्रायोग्य उद्योत नाम सहित ज करे. तेना भग पूर्ववत् ३२०० थाय.

सासादने उदय स्थान ७ ( २१–२४–२५–२६–२९–३०–३१ )

२१ नो उदय एकेंद्रिय, विकलेंद्रिय, तिर्यंच पचेंद्रिय, मनुष्य, तथा देवता आश्री जाणवो नारकीमा सासादनी उपजतो नथी तेमा पण एकेंद्रियमा बादर पर्याप्तना यश अयश साथेना २ भग ज लाभे, बीजा नहीं. केमके सूक्ष्म ने अपर्याप्तमा सासादने वर्तता उपजवानु होय नहीं

विकलेंद्रिय, तिर्यंच पचेंद्रिय अने मनुष्य आश्री पण अपर्याप्त संबधी एक

एक भंग छे ते न लाभे. एटले विकलेंद्रियना ६, तिर्यंच पंचेंद्रियना ८, मनुष्यना ८, देवताना ८, तथा एकेंद्रियना २, कुल ३२ भेद लाभे.

२४ ना उदयमां एकेंद्रिय बादर पर्याप्तना यश अयश साथे २ भंग लाभे, बाकीना नहीं. सूक्ष्ममां, साधारणमां अने तेजो वायुमां सासादनीने उपजवानो अभाव छे तेथी.

२५ नो उदय देवगतिमां उत्पन्न थवा आश्री ज लाभे. तेना भंग ८.

२६ नो उदय विकलेंद्रिय, तिर्यंच पंचेंद्रिय तथा मनुष्यमां उपजतां लाभे. तेमां पण अपर्याप्त साथेनो एक एक भंग छे ते न लाभे. बाकीना विकलेंद्रियना ६, तिर्यंचना २८८ तथा मनुष्यना २८८. कुल ५८२ भंग लाभे.

( २७-२८ नो उदय तो उत्पत्ति पछी अंतर्मुहूर्त जाय त्यारे लाभे छे. सासादन भावतो उत्पत्ति पछी छ आवलिका सुधी ज होय छे. तेथी ते बे उदयस्थान अहीं न लाभे. )

२९ नो उदय देवता नारकीने पोताना स्थानमां रह्या सता पर्याप्तपणामां समकितथी प्रच्युत थतां लाभे. तेना देवता आश्री ८, अने नारकी आश्री १. कुल भंग ९ लाभे.

३० नो उदय तिर्यंच अने मनुष्य पर्याप्ताने प्रथम समकितथी प्रच्युत थतां लाभे. तेम ज उत्तर वैक्रिय करतां देवताने लाभे. तेना भंग तिर्यंच अने मनुष्य आश्री ११५२-११५२, अने देवता आश्री ८. कुल २३१२ भंग लाभे.

३१ नो उदय पर्याप्त तिर्यंच पंचेंद्रियने समकितथी पडतां लाभे. तेना भंग ११५२ थाय.

कुल सासादने ७ उदयस्थाने भंग ४०९७ (३२-२-८-५८२-९-२३१२-११५२). सासादने सत्तास्थान २ ( ९२-८८ ).

९२ नुं सत्तास्थान आहारक सत्कर्माने उपशमश्रेणिथी पडतां सासादने आवनार आश्री लाभे.

८८ नुं सत्तास्थान चारे गतिमां लाभे.

हवे तेनो संवेध कहे छे.—

२८ बांधतां २ उदयस्थान—३०-३१.

२८ नो बंध देवगति विषय ज सासादनने लाभे. कारण के करण अपर्याप्त सासादनी तो देवगति प्रायोग्य बांधता नथी. तेथी अहीं बीजां उदयस्थान न लाभे. तेमां पण मनुष्यने आश्रीने ३० ना उदयमां बन्ने सत्तास्थान. उपशमश्रेणिनो तिर्यंचमां असंभव ज होवाथी. ३१ ना उदयमां ८८ नुं सत्तास्थान छे. कारण के ३१ नो उदय मनुष्यने नथी.

२९ तिर्यंच पंचेंद्रिय तथा मनुष्य आश्री बांधतां सासादने साते उदयस्थान. तेमां एकेंद्रिय, विकलेंद्रिय, तिर्यंच पंचेंद्रिय, मनुष्य, देवता अने नारकी

सासादनीने पोतपोताना उदयस्थाने वर्तता एक ८८ नु सत्तास्थान फक्त मनुष्यने ३० ना उदयमा ९२ नु सत्तास्थान होय

३० ना बंधमा पण उपर प्रमाणे सात उदयस्थाने एक ८८ नु ज सत्तास्थान जाणवु कुल सर्व उदयस्थान आश्री १८ सत्तास्थान (टीकामा ८ लखे छे).

हवे त्रीजा गुणस्थाने बंध, उदय अने सत्तास्थान कहे छे —

त्रीजा गुणस्थाने बंधस्थान २ ( २८–२९ )

२८ नो बंध मिश्रवाळा तिर्यंच अने मनुष्य देवगति प्रायोग्य बांधे छे तेथी तेना भंग ८

२९ नो बंध मनुष्यगति प्रायोग्य देव नारकी बांधे छे तेमा पण भंग ८ शुभाशुभ स्थिरास्थिर यशअयश आश्री जाणवा परावर्तमान प्रकृति बाकीनी मिश्रवाळाने शुभ ज आवे छे

मिश्रगुणस्थाने उदयस्थान ३ ( २९–३०–३१ )

२९ ना उदयमा देव आश्री भंग ८ अने नरक आश्री १ कुल भंग ९

३० ना उदयमा तिर्यंच पचेंद्रिय आश्री १७२८ मनुष्य आश्री ११५२ कुल भंग २८८०

३१ नो उदय तिर्यंच पचेंद्रिय आश्री छे तेना भंग ११५२

सर्व उदय भंग ४०४१.

मिश्र गुणस्थाने सत्तास्थान २ ( ९२–८८ )

मिश्र गुणस्थाने संवेध कहे छे —

२८ बांधता २ उदयस्थान—३०–३१ दरेक उदयमा बे बे सत्तास्थान

२९ बांधता १ उदयस्थान—२९ अहीं पण बन्ने सत्तास्थान–९२–८८

ए प्रमाणे दरेक उदयस्थानमा बे बे सत्तास्थान होवाथी कुल सत्तास्थान ६

हवे चोथे गुणस्थाने कहे छे —

बंधस्थान ३ ( २८–२९–३० )

२८ नो बंध देवगति प्रायोग्य तिर्यंच तथा मनुष्यने होय छे तेना भंग ८ ( नरकगति प्रायोग्य बांधता नथी )

२९ मनुष्य ने देवगति प्रायोग्य तीर्थंकर नाम रहित बांधता २९ तेना पण भंग ८

२९ देवता नारकी जे मनुष्यगति प्रायोग्य बांधे तेना पण भंग ८ ( तिर्यंच-प्रायोग्य बांधता नथी )

३० देवता नारकीने मनुष्यगति प्रायोग्य तीर्थंकर नाम सहित बांधता ३०. तेना भंग ८

कुल भंग ३२

चोथे गुणस्थाने उदयस्थान ८ ( २१–२५–२६–२७–२८–२९–३०–३१ )

२१ नो उदय नारकी, तिर्यंच पचेंद्रिय, देवता अने मनुष्य आश्री जाणवो. केमके पूर्व बद्धायु क्षायिक समकितीने ते बंधामा उपजवानो संभव छे

पण तेमां अपर्याप्ताना भंग न लेवा. कारण के अपर्याप्तमां समकिती जीव उपजता नथी. तेथी कुल भंग २५ ( ८ देवताना, ८ तिर्यंच पंचेंद्रियना, ८ मनुष्यना अने १ नारकीनो ).

२५-२७ नो उदय देवता, नारकी, वैक्रिय तिर्यंच अने मनुष्य आश्री जाणवो. तेमां देवता त्रिविध समकिती जाणवा. नारकी वेदक अने क्षायिकवाळा जाणवा. तेना उदय भंग पोतपोताने आश्री समजी लेवा. नारकीमां उपशमवाळा होता नथी.

२६ नो उदय क्षायिक अने वेदक समकिती तिर्यंच तथा मनुष्यने जाणवो. उपशम समकिती तिर्यंच मनुष्यमां उपजता नथी. तिर्यंचनुं वेदक समकितीपणुं मोहनीनी २२ प्रकृतिवाळुं जाणवुं.

२८-२९ नो उदय नारकी, तिर्यंच, मनुष्य, तथा देवताने जाणवो.

३० नो उदय तिर्यंच, मनुष्य अने देवताने जाणवो.

३१ नो उदय तिर्यंच पंचेंद्रियने होय.

आ सर्वना उदय भंग पोतपोता आश्री समजवा.

चोथे गुणस्थाने सत्तास्थान ४. ( ९३-९२-८९-८८ ).

अप्रमत्त संयती के अपूर्वकरणी तीर्थंकर अने आहारक सहित ३१ बांधीने पछी देवता थाय. त्यां सत्ता ९३ नी होय.

आहारक बांधीने परिणामना परावर्तनथी मिथ्यात्वे जइ चारे गतिमां उपजे, तेने त्यां गया पछी समकित पामतां ९२ नी सत्ता. देव मनुष्यमां मिथ्यात्व नहीं पामेलने पण ९२ पामीए.

देव, नारकी अने मनुष्य अविरतने ८९ नी सत्ता. ते त्रणे जिननाम बांधे छे. तिर्यंच बांधता नथी.

८८ नी सत्ता चारे गतिमां समकितीने होय.

हवे संवेध कहे छे.—

२८ ना बंधक तिर्यंच मनुष्यने ८ उदयस्थान. तेमां २५-२७ नुं उदयस्थान वैक्रिय तिर्यंच मनुष्य आश्री जाणवुं. एक एक उदयस्थाने बे बे सत्तास्थान ( ९२-८६ ).

२९ नो बंध बे प्रकारे देवगति प्रायोग्य अने मनुष्यगति प्रायोग्य. तेमां देवगति प्रायोग्य ते जिननाम सहित अने मनुष्य ज बांधे छे. तेने उदयस्थान ३१ विना साते होय. तेमां दरेक उदये बे बे सत्तास्थान ९३-८९.

मनुष्यगति प्रायोग्य २९ देवता अने नारकी बांधे छे. तेमां नारकीने उदयस्थान पांच-२१-२५-२७-२८-२९. तथा देवताने ए पांच उपरांत ३० नुं अधिक जाणवुं. ते उद्योत नाम वेदतां समजवुं. उत्तर वैक्रियपणामां ते छए उदयस्थानने बे बे सत्तास्थान—९२-८८.

मनुष्यगति प्रायोग्य ३० देवता अने नारकी जिननाम सहित बांधे छे. तेमां देव-

ताने उदयस्थान ६ पूर्ववत् अने सत्तास्थान २ ( ९३-८९ ). तथा नारकीने उदयस्थान ५ पूर्ववत् अने सत्तास्थान १ ( ८९ )

सामान्ये २१ थी ३० सुधीना, ७ उदयस्थानमा सत्तास्थान चार चार—९३-९२-८९-८८

३१ ना उदयमा सत्तास्थान २ ( ९२-८८ )

कुल सत्तास्थान ३०

हवे देशविरति आश्री कहे छे —

देशविरतिने बंधस्थान २ ( २८-२९ )

२८ नो बध मनुष्य तिर्यंचने देवगति प्रायोग्य थाय तेना भग ८

ते ज २८ तीर्थंकर नाम सहित २९ नो बध मनुष्य ज करे तेना पण भग ८.

देशविरति गुणस्थाने उदयस्थान ६ ( २५-२७-२८-२९-३०-३१ ).

तेमां पहेला ४ उदयस्थान वैक्रिय तिर्यंच मनुष्यने होय तेनो मनुष्य आश्री एक ज भग सर्व पद प्रशस्त होवाथी तथा तिर्यच आश्री पहेला बेमा एक एक भंग अने बीजा बेमा बे बे भग ( कुल (४-६=१०) भग )

३० नो उदय स्वभावस्थ तिर्यंच मनुष्यने होय तेना भग १४४-१४४ आ भंग ६ सघयण, ६ सस्थान, २ सुस्वरदु स्वर, तथा २ प्रशस्ताप्रशस्त गति वडे थाय छे. दुर्भग, अनादेय अने अयशनो उदय अहीं नथी वैक्रिय तिर्यंच आश्री भंग १ कुल भग २८९

३१ नो उदय तिर्यचने होय तेना उदयस्थान पूर्ववत् ५. तथा भंग १४४. सर्व मळी भग ४४३ ( ४-६-२८९-१४४ )

देशविरति गुणस्थाने सत्तास्थान ४ ( ९३-९२-८९-८८ )

तेमा अप्रमत्त अने अपूर्वकरणी परिणामना ह्रासथी देशविरति थाय, ते आश्री ९३ नी सत्ता पामीए बाकी चोथा प्रमाणे.

हवे देशविरतिए सवेध कहे छे —

देशविरति मनुष्य २८ ना बधकने पाच उदयस्थान—२५-२७-२८-२९-३०, तेमा प्रत्येके बे बे सत्तास्थान—९२-८८

तिर्यंचने उदयस्थान ६ तथा सत्तास्थान २ ( ९२-८८ )

२९ नो बध मनुष्यने ज होय. तेने पाच उदयस्थान तथा बे बे सत्तास्थान ९३ ८९ आ प्रमाणे देशविरतिने पाच उदयस्थानमा ४-४ सत्तास्थान तथा ३१ ना उदयमा बे सत्तास्थान कुल सत्तास्थान २२

हवे प्रमत्त सयत गुणस्थान आश्री कहे छे —

प्रमत्त सयतने बधस्थान २ ( २८-२९ ) उपर प्रमाणे

प्रमत्त संयतने उदयस्थान ५ ( २५-२७-२८-२९-३० )

तिर्यचने आ गुणस्थान न होवाथी ३१ नु उदयस्थान नथी.

आ पांचे उदयस्थान आहारक अने वैक्रिय संयती आश्री जाणवा. तेमां ३० नुं
उदयस्थान स्वाभाविक संयतीने पण होय.

२५–२७ ना उदये भंग एक एक. कुल ४.

२८–२९ ना उदये भंग बे बे. कुल ८.

३० ना उदये एक एक. कुल २.

३० ना उदये स्वाभाविक संयती आश्री देशविरतीवत् भंग १४४.
कुल भंग १५८.

प्रमत्त संयतने सत्तास्थान ४ ( ९३–९२–८९–८८ ).

प्रमत्त संयत गुणस्थाने संवेध कहे छे.—

२८ ना बंधकने पांच उदयस्थानमां बे बे सत्तास्थान—९२–८८. तेमां आहारक संयतीने ९२ नुं ज सत्तास्थान. वैक्रियने बन्ने. तीर्थकर नाम सत्कर्मा २८ बांधतो नथी. तेथी ९३ नुं सत्तास्थान न होय.

२९ ना बंधकने पांचे उदयस्थाने बे बे सत्तास्थान—९३–८९. तेमां आहारकने एक ९३ नुं ज.

कुल पांचे उदयस्थाने चार चार सत्तास्थान होवाथी २०.

हवे अप्रमत्त संयत गुणस्थान आश्री कहे छे.—

अप्रमत्त संयत गुणस्थाने बंधस्थान ४ ( २८–२९–३०–३१ ).

२८–२९ उपर प्रमाणे.

२८ ने आहारक द्विक युक्त करतां ३०.

२८ ने आहारक द्विक अने जिननाम कर्म युक्त करतां ३१.

चारेमां भंग एक एक. केमके अप्रमत्त संयतने अस्थिर, अशुभ अने अयशना बंधनो अभाव छे.

उदयस्थान २ ( २९–३० ).

जे प्रमत्तपणामां आहारक के वैक्रिय करीने पछी अप्रमत्ते जाय, ते आश्री २९. तेना आहारक अने वैक्रियना मळीने बे भंग. तथा ३० ना उदयमां पण आहारक अने वैक्रियना बे भंग.

स्वभावस्थ संयतीने पण ३० नो उदय होय. तेना भंग १४४ पूर्ववत्.
कुल भंग १४८.

सत्तास्थान ४ ( ९३–९२–८९–८८ ).

हवे संवेध कहे छे.—

२८ ना बंधकने बन्ने उदयस्थाने ८८ नी सत्ता.

२९ ना बंधकने बन्ने उदयस्थाने ८९ नी सत्ता.

३० ना बंधकने बन्ने उदयस्थाने ९२ नी सत्ता.

३१ ना बंधकने बन्ने उदयस्थाने ९३ नी सत्ता.

आहारक अने तीर्थंकर नामनी सत्तावाळा जरूर तेनो वंध करे छे तेथी एक एक वधे एक एक सत्तास्थान पामीए

कुल ४ उदये सत्तास्थान ८

हवे अपूर्वकरणे वधादिक कहे छे —

अपूर्वकरणे वधस्थान ५ ( २८–२९–३०–३१–१ )

प्रथमना चार उपर प्रमाणे

देवगति प्रायोग्य वधव्यवच्छेदे एक यशकीर्तिनो ज वंध छे

उदयस्थान १ ( ३० ) तेमा वज्रर्षभनाराच, छ सस्थान, सुस्वरदु:स्वर अने प्रशस्तप्रशस्त गति आश्री भंग ७४

केटलाक आचार्य त्रण सघयणे उपशमश्रेणि माने छे ते आश्री भंग ७२ ते ज प्रमाणे ९–१०–११ गुणस्थाने पण भग ७२ समजवा

सत्तास्थान ४ ( ९३–९२–८९–८८ )

हवे सवेध कहे छे —

२८–२९–३०–३१ ना वधकने ३० ना उदयमा यथाक्रमे ८८–८९–९२–९३ नुं एक एक सत्तास्थान

१ विध वधकने चारे सत्तास्थान कारण के २८–२९–३०–३१ वंधक देवगति प्रायोग्य वधव्यवच्छेदे एक विध वधक थाय तेथी ते चारेना चार सत्तास्थान पामीए

गाथा ५२ हवे अनिवृत्ति वादर गुणस्थान आश्री कहे छे —

वधस्थान १ एकविध

उदयस्थान १ ( ३० )

सत्तास्थान ८ ( ९३–९२–८९–८८–८०–७९–७६–७५ )

पहेला चार उपशमश्रेणिमा अथवा क्षपकश्रेणिमा नामकर्मनी १३ प्रकृति खपाव्या अगाउ अने नामनी १३ खपाव्या पछी पाछला ४ सत्तास्थान ते उपर कह्या प्रमाणे ज जाणवा

अहीं वंध अने उदयमा एक एक ज स्थान होवाथी सवेध नथी

हवे सूक्ष्मसंपराय आश्री कहे छे —

वधस्थान १ एकविध

उदयस्थान १ ( ३० )

सत्तास्थान ८ उपर प्रमाणे

छद्मस्थ जिन ११–१२ मा गुणस्थानवाळा कहेवाय तेमा

उपशात मोहे वधस्थान नथी

उदयस्थान १ ( ३० )

सत्तास्थान ४ ( ९३–९२–८९–८८ )

क्षीणमोहे

उदयस्थान १ ( ३० ). तेना भंग २४. केमके क्षपकश्रेणि पहेला संघयणवाळा ज मांडे छे. अने तीर्थंकर नामनी सत्तावाळा क्षीणमोहीने तो एक ज भंग. केमके तेने सर्व प्रकृति शुभ ज होय छे.

सत्तास्थान ४ ( ८०–७९–७६–७५ ).

तेमां पहेलुं अने त्रीजुं ए बे सत्तास्थान तीर्थंकर सत्कर्माने होय.

तथा बीजुं अने चोथुं सामान्य जिनने होय.

हवे सयोगी केवळी आश्री कहे छे.—

उदयस्थान ८ ( २०–२१–२६–२७–२८–२९–३०–३१ ).

आनुं विवरण सामान्य नाम कर्मना उदय भंग वखते सविस्तर आव्युं छे.

सत्तास्थान ४ ( ८०–७९–७६–७५ ).

संवेध संज्ञी पर्याप्त जीवद्वारमां कर्या प्रमाणे अहीं पण जाणवो.

हवे अयोगी केवळी आश्री कहे छे.—

उदयस्थान २ ( ८–९ ).

८ नुं अतीर्थंकर केवळीने.

९ नुं तीर्थंकर केवळीने.

सत्तास्थान ६ ( ८०–७९–७६–७५–९–८ ).

८ ना उदयमां त्रण सत्तास्थान—७९–७५–८.

पहेला बे द्विचरम समय सुधी, अने आठनुं चरम समये ( अतीर्थंकरने ).

९ ना उदयमां त्रण सत्तास्थान—८०–७६–९.

पहेला बे द्विचरम समय सुधी, अने नवनुं चरम समये ( तीर्थंकरने ).

## इति गुणस्थाने बंधोदय सत्ता संवेध.

---

गाथा ५३. हवे गत्यादि मार्गणाए बंधादिक कहे छे.—

प्रथम गतिमार्गणा आश्री कहे छे.—

नरकगतिने बंधस्थान २ ( २९–३० ).

२९ तिर्यंच अने मनुष्य गति प्रायोग्य.

३० तिर्यंच पंचेंद्रिय प्रायोग्य उद्योत सहित. मनुष्य गति प्रायोग्य तीर्थंकर नाम सहित.

तिर्यंच गतिने बंधस्थान ६ ( २३–२५–२६–२८–२९–३० ) पूर्ववत्. विशेष एटलुं के—२९–३० तीर्थंकर आहारक सहित छे, ते अहीं न जाणवा.

मनुष्य गतिमां बंधस्थान ८ ( २३–२५–२६–२८–२९–३०–३१–१ ).

देवगतिमां बंधस्थान ४ ( २५–२६–२९–३० ).

२५–२६ एकेंद्रिय पर्याप्त बादर प्रत्येक आश्री समजवा. तेना भंग स्थिरास्थिर, शुभाशुभ, यश अयश आश्री ८ थाय. तेमां २६ आतप उद्योत सहित थाय, तेथी आठने बमणा करतां १६ भंग थाय.

२९ मनुष्य अने तिर्यंच पंचेंद्रिय प्रायोग्य थाय
३० तिर्यंच पंचेंद्रिय प्रायोग्य उद्योत सहित थाय तेना भंग ४६०८ थाय तथा मनुष्य गति प्रायोग्य तीर्थंकर नाम सहित थाय तेना स्थिरास्थिर, शुभाशुभ, यश अयश वडे भग ८ थाय

हवे चारे गति आश्री उदयस्थान कहे छे —

नारकीने उदयस्थान ५ ( २१–२५–२७–२८–२९ )

तिर्यंचने उदयस्थान ९ ( २१–२४–२५–२६–२७–२८–२९–३०–३१ ) ते एकेंद्रिय, विकलेंद्रिय, सवैक्रियअवैक्रियतिर्यंचपचेंद्रिय आश्री समजी लेवा

मनुष्यने उदयस्थान ११ (२०–२१–२५–२६–२७–२८–२९–३०–३१–९–८) ते स्वभावस्थ मनुष्य, वैक्रिय मनुष्य, आहारक संयत, तीर्थंकर अतीर्थंकर सयोगी अयोगी केवली आश्री समजवा

देवताने उदयस्थान ६ ( २१–२५–२७–२८–२९–३० )

हवे चारे गतिना सत्तास्थान कहे छे —

नारकीने सत्तास्थान ३ ( ९२–८९–८८ )
तेमा ८९ नु तीर्थंकर नामकर्मयुक्त जीव मिथ्यात्वे गयेल होय तेने आश्रीने समजवु ९३ नुं तो अहीं होय ज नहीं कारण के आहारक अने तीर्थंकर ए बन्नेनी सत्तावाळा नारकीमा जता ज नथी

तिर्यंच गतिमा सत्तास्थान ५ ( ९२–८८–८६–८०–७८ )
तीर्थंकर नामवाळा तथा क्षपकवाळा सत्तास्थान न होय

मनुष्यने सत्तास्थान ११ (९३–९२–८९–८८–८६–८०–७९–७६–७५–९–८)
७८ वाळुं १ सत्तास्थान होय नहीं कारण के मनुष्य द्विक अहीं तो नियमा सत्तामा होय

देवगतिमा सत्तास्थान ४ (९३–९२–८९–८८) बाकीना सत्तास्थान अहीं न सभवे.

हवे चारे गतिमा संवेध कहे छे —

नारकीने तिर्यक् गति प्रायोग्य २९ बाधता पाचे उदयस्थाने सत्तास्थान २ (९२–८८) तीर्थंकर सत्कर्मावाळु ८९ नुं सत्तास्थान न संभवे

नारकीने मनुष्य गति प्रायोग्य २९ बाधता पाचे उदयस्थाने त्रणे सत्तास्थान ( ९२–८९–८८ ) तीर्थंकर सत्कर्मा ज्यासुधी मिथ्यादृष्टि होय त्यासुधी २९ बाधे पछी समकिती थये सते तीर्थंकर नाम सहित ३० बाधे

तीर्यंच गति प्रायोग्य उद्योत सहित ३० बाधता पाचे उदयस्थाने बे बे सत्तास्थान ९२–८८

मनुष्य गति प्रायोग्य तीर्थंकर नाम सहित ३० बाधता पाचे उदयस्थाने एक सत्तास्थान ८९ नुं

सर्वे मळी सत्तास्थान ४०.

हवे तिर्यंच गतिनो संवेध कहे छे.—

२३ ना बंधमां नवे उदयस्थान. तेमां प्रथमना चार उदयस्थाने पाच पांच सत्तास्थान. ते तेजोवायु आश्री अने तेमांथी तरतना नीकळेला आश्री जाणवा पाछळना पांच उदयस्थाने चार चार सत्तास्थान. ७८ विना. तेमने मनुष्यद्विकनी सत्तानो सद्भाव होवाथी.

आ प्रमाणे २५–२६–२९–३० ना बंधमां पण समजवुं. फक्त मनुष्य गति प्रायोग्य २९ ना बंधमां नवे उदयस्थाने चार चार सत्तास्थान जाणवां.

२८ ना बंधमां ८ उदयस्थान, २४ विना. तेमां २१–२६–२८–२९–३० आ पांच उदयस्थान क्षायिक समकितीने तथा २२ मोहनीनी सत्तावाळा वेदक समकिती जे पूर्वबद्धायु होय तेने होय. तेने सत्तास्थान २ (९२–८८).

२५–२७ नो उदय वैक्रिय तिर्यंचआश्री जाणवो. तेने पण बे बे सत्तास्थान ९२–८८.

३०–३१ नो उदय सर्व पर्याप्तिए पर्याप्त समकिती वा मिथ्यात्वी आश्री जाणवो. ते बन्ने उदयस्थाने त्रण त्रण सत्तास्थान—९२–८८–८६. तेमां ८६ नुं मिथ्यात्वी आश्रीने ज समजवुं. समकितीने तो अवश्य देवायुना बंधनो संभव होवाथी तेने आश्रीने नहीं.

( पांच बंधस्थाने ४०–४० ने २८ ना बंधमां १८ मळी कुल सत्तास्थान २१८ ).

हवे मनुष्य गतिनो संवेध कहे छे.—

२३ ना बंधमां उदयस्थान ७ ( २१–२५–२६–२७–२८–२९–३० ). बाकीना केवली आश्री चार उदयस्थान न होय. तेमां २५–२७ नो उदय वैक्रियवाळाने समजवो. तेथी २५–२७ विनाना पांच उदयस्थाने चार चार सत्तास्थान—९२–८८–८६–८०.

२५–२७ ना उदयमां बे बे सत्तास्थान ९२–८८. बाकीनां सत्तास्थान न संभवे. २३ ना बंधमां कुल सत्तास्थान २४.

२५–२६ ना बंधमां उपर प्रमाणे समजवुं.

२९–३० मनुष्य अने तिर्यक् गति प्रायोग्य बांधतां पण ए प्रमाणे.

२८ ना बंधमां सात उदयस्थान उपर प्रमाणे. तेमां २१–२६ नो उदय अविरति करण अपर्याप्ताने, २५–२७ नो उदय वैक्रिय आहारक संयतिने, २८–२९ नो उदय अविरतिने तथा वैक्रियने अने आहारक संयतने, ३० नो उदय समकिती वा मिथ्यात्वीने, ३० विनाना ६ उदयस्थानमां बे बे सत्तास्थान ९२–८८. तेमां आहारकने तो एक ज ९२ नुं. तथा ३० ना उदयमां चार सत्तास्थान ९२–८९–८८–८६. तेमां ८९ नुं नरकगति प्रायोग्य २८ बांधतां मिथ्यादृष्टिने समजवुं. कुल २८ ना बंधमां सत्तास्थान १६.

२९ देवगति प्रायोग्य तीर्थंकर नाम सहित बांधतां ७ उदयस्थान २८ ना बंध प्रमाणे समजवां. तेमां ३० नो उदय समकित दृष्टिने ज जाणवो. कारण के आ २९ ना बंधमां तीर्थंकर नामकर्मनो बंध होय छे. ते साते उदय-

स्थाने बे बे सत्तास्थान ९३-८९ अने आहारकने ९३ नुं एक ज. सर्व मळीने सत्तास्थान १४

आहारक सहित ३० बाधता बे उदयस्थान—२९-३० तेमां जे आहारक संयती अंतिमकाळे अप्रमत्त होय तेने आश्रीने २९, प्रमत्त आश्रीने ३०. आहारक बंध हेतु सिवाय बीजा २९ ना उदयमा विशिष्ट संयमनो अभाव होवाथी बन्ने उदयस्थानमा सत्तास्थान ९२ नुं

३१ ना बंधमा एक ज उदयस्थान ३० नु तेमा एक सत्तास्थान ९३ नुं

एकविध बंधमा एक उदयस्थान ३० नु तेमा सत्तास्थान ८ छे (९३-९२-८९-८८-८०-७९-७६-७५)

सर्व बंधस्थाने मळीने सत्तास्थान १५९

( २३-२५-२६-२९-३० मा २४-२४, २८ मा १६, देवगतिप्रायोग्य जिननाम युक्त २९ मा १४, ३१ मा १, १ मा ८, कुल १५९ ).

बंध अभावे उदय अने सत्तास्थाननो संवेध पूर्वे सामान्य संवेधमा कह्या प्रमाणे समजवो.

हवे देवगति आश्री संवेध कहे छे—

२५ ना बंधमा ६ उदयस्थाने २ सत्तास्थान—९२-८८.

२६-२९ ना बंधमा पण ए ज प्रमाणे

उद्योत सहित तिर्यक् गति प्रायोग्य ३० बाधता पण ए ज प्रमाणे ९२-८८.

तीर्थंकर नाम सहित मनुष्य गति प्रायोग्य ३० बाधता छए उदयस्थाने बे बे सत्तास्थान—९३-८९

सर्व मळी सत्तास्थान ६०.

गाथा ५४ हवे इंद्रिय आश्री कहेता प्रथम बंध कहे छे—

एकेंद्रियने ५ बंधस्थान—२३-२५-२६-२९-३०

तेमा देवगति प्रायोग्य २९-३० विना बाकी सर्व गति प्रायोग्य सर्व भेद जाणवा.

विकलेंद्रियने ते ज ५ बंधस्थान

पचेंद्रियने आठे बंधस्थान

हवे उदयस्थान कहे छे—

एकेंद्रियने उदयस्थान ५ ( २१-२४-२५-२६-२७ )

विकलेंद्रियने उदयस्थान ६ ( २१-२६-२८-२९-३०-३१ ).

पचेंद्रियने उदयस्थान ११ (२०-२१-२५-२६-२७-२८-२९-३०-३१-९-८).

हवे सत्तास्थान कहे छे—

एकेंद्रियने सत्तास्थान ५ ( ९२-८८-८६-८०-७८ )

विकलेंद्रियने ए ज पाच सत्तास्थान.

पचेंद्रियने बारे सत्तास्थान

हवे संवेध कहे छे.

एकेंद्रिय आश्री संवेध.—

२३ ना बंधमा पहेला चार उदयस्थानमा पाचे सत्तास्थान. २७ ना उदयमा ७८ विनाना ४ सत्तास्थान.

२५–२६–२९–३० ना बंधमां पण ए ज प्रमाणे.

कुल सत्तास्थान १२०.

विकलेंद्रिय आश्री.—

२३ ना बंधमां २१–२६ ना उदयमां पांच पांच सत्तास्थान. बाकीना चार उदयमां ७८ विना चार चार सत्तास्थान.

२५–२६–२९–३० ना बंधमां पण ए ज प्रमाणे.

कुल सत्तास्थान १२०.

पंचेंद्रिय आश्री.—

२३ ना बंधमां ६ उदयस्थान—२१–२६–२८–२९–३०–३१ तिर्यंच पंचेंद्रिय अने मनुष्य आश्री समजवा. तेमां २१–२६ ना उदयमां पांच पांच सत्तास्थान. बाकीना चार उदयमां ४–४ सत्तास्थान. कुल २६.

२५ बंधमां ८ उदयस्थान—२१–२५–२६–२७–२८–२९–३०–३१. तेमां २१–२६ ना उदयमां पूर्वोक्त ५ सत्तास्थान. २५–२७ ना उदयमां बे बे सत्तास्थान—९२–८८. बाकीना ४ उदयमां ७८ विना चार चार सत्तास्थान. कुल सत्तास्थान ३०.

२६ ना बंधमां ए ज प्रमाणे ३० सत्तास्थान.

२८ ना बंधमां ८ उदयस्थान—२१–२५–२६–२७–२८–२९–३०–३१. तिर्यंच पंचेंद्रिय अने मनुष्य आश्री समजवा. तेमां २१ थी २९ सुधीना ६ उदयस्थानमां बे बे सत्तास्थान–९२–८८. ३० ना उदयमां ४ सत्तास्थान–९२–८९–८८–८६. तेमां ८९ तीर्थंकर सत्कर्मा मिथ्यादृष्टिने नरकगति प्रायोग्य बांधतां होय. बाकीनां सत्तास्थान सामान्ये तिर्यंच पंचेंद्रिय आश्री जाणवां. ३१ ना उदयमां त्रण सत्तास्थान–९२–८८–८६. तिर्यंच पंचेंद्रिय आश्री जाणवां. बीजा पंचेंद्रियने ३१ ना उदयनो अभाव छे. तेमां ८६ नुं मिथ्यादृष्टि तिर्यंचपंचेंद्रियने जाणवुं. समकितदृष्टिने तो देवद्विकना बंधनो ज संभव होवाथी तेने ८८ नुं ज होय. कुल सत्तास्थान १९.

२९ ना बंधमां उपर प्रमाणे ८ उदयस्थान. तेमां २१–२६ ना उदयमां ७–७ सत्तास्थान–९२–८८–८६–८०–७८–९३–८९. तिर्यंच गति प्रायोग्य २९ बांधतां प्रथमना ५. मनुष्य गति प्रायोग्य २९ बांधतां प्रथमना ४. देवगति प्रायोग्य २९ बांधतां छेल्लां २. २८–२९–३० ना उदयमां ७८ वर्जीने ६ सत्तास्थान. ३१ ना उदयमां प्रथमनां ४ सत्तास्थान. २५–२७ ना उदयमां ९२–८८–९३–८९ आ चार सत्तास्थान.

कुल सत्तास्थान ४४

३० ना बंधमा ते ज ८ उदयस्थान अने उपर प्रमाणे ज सत्तास्थान तेमा २१ ना उदयमा तिर्यंच गति प्रायोग्य ३० बाधता ९२–८८–८६–८०–७८ आ ५ सत्तास्थान मनुष्य गति प्रायोग्यमा तो तीर्थंकर नाम होय तेथी सत्तास्थान नथ छे देवगति प्रायोग्यमा आहारक द्विक होय ते २१ ना उदयमा संभवे नहीं ९३–८९ नुं सत्तास्थान मनुष्य गति प्रायोग्य ३० बाधता देवताने होय. २६ ना उदयमा पण ते ज पाच सत्तास्थान २६ नो उदय तिर्यंच मनुष्यने अपर्याप्त अवस्थामा होय, ते वखते देव गति के मनुष्य गति प्रायोग्य ३० नो वध न होय तेथी ९३–८९ सत्तास्थान न लाभे बाकी उपर प्रमाणे होवाथी सत्तास्थान कुल ४२ केमके २६ ना उदयमा उपर करता वे घट्या तेथी

३१ ना तथा १ ना बधमा पूर्वे मनुष्य गति आश्री संवेध कह्या प्रमाणे समजवा

गाथा ५५ आ प्रमाणे गत्यादि १४ मार्गणाद्वडे सत्पदप्ररूपणा विगेरे ८ अनुयोगद्वारमा समजी लेवु तेमा सत्पदप्ररूपणाद्वडे संवेध सामान्ये गुणस्थानकमा कह्यो, विशेषे गति इंद्रियमा कह्यो ए ज प्रमाणे काययोग विगेरे मार्गणामा पण समजवो बाकी द्रव्य प्रमाणादि ७ अनुयोगद्वार कर्मप्रकृतिप्राभृत विगेरे ग्रंथोथी जाणवा ते ग्रंथ अधुना लभ्य न होवाथी लेशथी पण ते अमे वतावी शकता नथी परतु साप्रत काळमा पण जे कोइ सम्यक् प्रकारे ते अनुयोग द्वारना जाणनार होय, तेमणे अवश्य ते द्वार वतावबा कारण के बुद्धिनी विशिष्टता अत्यारे पण तीव्र तीव्रतर क्षयोपशमथी असीम जणाय छे

वळी अमारा लखाणमा काइ भूलवाळु होय, ते पण तेवा विद्वाने दूर करीने समीचीन वतावबु केमके सज्जनो तो परोपकारमा ज रसिक होय छे ते अनुयोगद्वारमा बंधोदयसत्तास्थान, प्रकृति, स्थिति, अनुभाग ने प्रदेश रूप जाणवा तेमा प्रकृति बध सबधी तो प्राये अहीं कहेल छे बाकीना त्रण बध सबंधी तदनुसार कहेवु

अहीं बंधोदय सत्तास्थाननो सवेध कह्यो छे, तेमा उदयनी साथे उदीरणा पण ग्रहण करी छे एम समजवु. केमके उदय सते उदीरणा अवश्य होय छे. ते विषे कहे छे के —

गाथा ५६ ज्या उदय त्या उदीरणा. अने ज्या उदीरणा त्या उदय. ते बन्नेना स्वामित्वमा भेद नथी

गाथा ५७ तेमा पण अपवाद वतावे छे —नीचेनी ४१ प्रकृतिमा उदीरणा विना पण उदय होय

१४ ज्ञानावरणीय ५, अंतराय ५, दर्शनावरण ४, तेनी उदीरणा बारमुं गुणस्थाननी आवळिका शेष होय त्या सुधी पछी मात्र उदय

५ शरीर पर्याप्ति पूरी कर्या पछी ज्यासुधी इन्द्रिय पर्याप्ति पूरी न करे त्या-

सुधी पांच निद्रानो उदय होय, पण उदीरणा न होय. पछी बन्ने साथे प्रवर्ते, अने साथे निवर्ते.

२ सातासात वेदनीनो उदय अने उदीरणा प्रमत्त गुणस्थान सुधी. पछी मात्र उदय ज.

१ प्रथम समकित प्राप्त करतां अंतरकरणमां प्रथमनी स्थिति आवलिका शेप रहे त्यारपछी मिथ्यात्वनो उदय ज होय, उदीरणा न होय.

१ क्षयोपशम समकितीने क्षायिक समकित उपार्जन करतां मिथ्यात्वमोहनी अने मिश्रमोहनी खपाव्या पछी समकितमोहनीने सर्व अपवर्तनाए अपवर्ती अंतर्मुहूर्त स्थितिनी करे. पछी उदय उदीरणावडे तेने अनुभवतां आवलिका शेप रहे त्यारे उदय ज होय, उदीरणा न होय. अथवा उपशमश्रेणि अंगीकार करनारने अंतरकरण करतां प्रथमनी स्थिति आवलिका शेप रहे त्यारे समकित मोहनीनो उदय ज होय. उदीरणा न होय.

१ संज्वलन लोभनो उदय अने उदीरणा सूक्ष्मसंपराय आवलिका शेप रहे त्यांसुधी. पछी उदय ज होय, उदीरणा नहीं.

३ त्रण वेदमांथी जे वेदे श्रेणि मांडी होय, ते वेदनी प्रथम स्थिति आवलिका शेप रहे त्यारे उदय ज होय, उदीरणा नहीं.

४ आयुमां पोतपोताना भवना पर्यंत भागे आवलिका शेप रहे त्यारे उदय ज होय, उदीरणा नहीं. तेमां पण मनुष्यायुनी प्रमत्त गुणस्थान पछी उदीरणा न होय, मात्र उदय ज होय.

गाथा ५८. ९ मनुष्य गति, पंचेंद्रिय जाति, त्रस, बादर, पर्याप्त, सुभग, आदेय, यशःकीर्ति, अने तीर्थंकर ए ९ प्रकृतिनो सयोगी गुणस्थान सुधी उदय अने उदीरणा बन्ने होय. अयोगीमां मात्र उदय ज होय.

१ उच्च गोत्रनो पण अयोगीमां उदय ज होय.

गाथा ५९. हवे १४ गुणस्थाने केटली केटली प्रकृति बंधमां होय ? ते कहे छे.—

आनो विस्तार बीजा कर्मग्रंथमां तथा तेना यंत्रमां होवाथी अहीं कर्यो नथी. मात्र दरेक गुणस्थाने संख्या ज बतावी छे.—

| | गुणस्थान. | प्रकृति. |
|---|---|---|
| | १ | ११७ तीर्थंकर अने आहारक द्विक विना. |
| | २ | १०१ मिथ्यात्व आश्री १६ विना. |
| गाथा ६०. | ३ | ७४ अनंतानुबंधी आश्री २५ तथा २ आयु बाद. |
| | ४ | ७७ तीर्थंकर नाम तथा देव मनुज आयु वधे. |
| | ५ | ६७ अविरति संबंधी १० बाद. |
| गाथा ६१. | ६ | ६३ प्रत्याख्यानावरणी ४ बाद. |
| | ७ | ५९ ६ घटे तथा आहारक द्विक वधे. |

८ ५८ देवायु वाद करता ते पण अपूर्वकरणनो संख्यातमो भाग जता सुधी

५६ निद्रा प्रचला वाद करतां ते पण एक संख्यातमो भाग रहे त्या सुधी

२६ त्रीश प्रकृतिनो क्षय थवाथी अपूर्वकरण चरमसमये

गाथा ६२ ९ २२ ४ नो क्षय थवाथी. ते नवमाना संख्यात भाग जता सुधी

१८ अनुक्रमे पुरुष वेद तथा संज्वलन क्रोध, मान अने माया एक एक नो क्षय थवाथी १८ रहे

१०. १७ सज्वलन लोभ घटवाथी ते दशमाना चरम समय सुधी.

१ दशमाना चरम समये १६ प्रकृतिनो क्षय थवाथी १ साता वेदनी ज वाधे.

११-१२-१३ १ साता वेदनी नो वंध

१४ ० वंधाभाव वध हेतु न रहेवाथी

गाथा ६३ उपर जे वंध भेद वताव्यो, ते वंधस्वामित्वना संवंधमां ओघ समजवो अने तेमा पछी गत्यादि मार्गणा आश्री जे जे मार्गणामा जे जे प्रकारे घटे, ते प्रकार कहेवो ते विशेषपणु समजवुं

गाथा ६४ पूर्वे वतावेली प्रकृतिओ सर्व गतिमां सर्वदा लाभे के केम? तेनो उत्तर —

तीर्थंकर नाम तिर्यच गति विना त्रण गतिमा लाभे

देवायु नरक गति विना त्रण गतिमा लाभे

नरकायु देवगति विना त्रण गतिमा लाभे.

आ प्रमाणे सत्ता आश्री लाभे वाकी तो सर्व प्रकृतिओ चारे गतिमा लाभे

गाथा ६५. पूर्वे जे गुणस्थानकोमां वध, उदय अने सत्तानो संवेध कह्यो, ते गुणस्थानको प्राये उपशम श्रेणिमा अने क्षपक श्रेणिमा वन्नेमा संभवे माटे वन्ने श्रेणिनुं स्वरूप जणाववु जरूरनु छे ते आ प्रमाणे —

उपशममा—४–५–६–७–८–९–१०–११ ए आठ गुणस्थान

क्षपकमा—४–५–६–७–८–९–१०–१२. ए आठ गुणस्थान

उपशम श्रेणिनुं स्वरूप —

प्रथम ४ अनतानुवंधी अने ३ समकितादि मोहनी, ए सात प्रकृतिनो उपशम करनार चोथाथी आठमा गुणस्थान सुधी जाणवा तेमा ४–५–६–७ वाळा यथायोग्य तेने उपशमावे छे अने ८ मे तो निश्चये उपशमावे ज छे.

तेमां प्रथम अनंतानुवंधी चतुष्कनी उपशमना करे छे, तेथी ते कहे छे —

४–५–६–७ मा गुणस्थानमाथी कोइ पण स्थानके कोइ पण योगमा वर्ततो, त्रण शुभ लेश्यामाथी कोइ पण लेश्या युक्त, कोटाकोटी सागरोपमनी अंदरनी स्थितिवाळा कर्मोनी सत्तावाळो जीव त्रण करण कर्या अगाउ

अंतर्मुहूर्त काळ सुधी चित्तवृत्तिना शांतपणे वर्ते. ते वखते परावर्तमान प्रकृति शुभ ज वांधे, अशुभ न वांधे. अशुभ प्रकृतिनो रस चोठाणीयो होय ते वेठाणीयो करे, अने शुभनो रस वेठाणीयो होय तेने चोठाणीयो करे. स्थितिवंध पण जेनो पूर्ण थाय तेनो नवो पल्योपमना संख्यात भाग जेटलो हीन करे. आ प्रमाणे एक अंतर्मुहूर्तसुधी हीनवंध करे. पछी त्रण करण दरेक अंतर्मुहूर्त प्रमाणना करे. १ यथाप्रवृत्ति करण, २ अपूर्व करण, ३ अनिवृत्ति करण. पछी ४ थो उपशांत काळ.

तेमां प्रथम यथाप्रवृत्ति करणमां प्रतिसमये अनंतगुण वृद्धि पामती विशुद्धि-युक्त प्रवेश करे. अने उपर प्रमाणे शुभ प्रकृतिना वंधादिक करे. परंतु स्थितिघात, रसघातादिक तथाप्रकारनी विशुद्धि न होवाथी न करे. प्रति-समय घणा जीवनी अपेक्षाए असंख्येय लोकाकाशना प्रदेश प्रमाण अध्य-वसाय स्थानक लाभे. ते दरेक स्थानकमां पण छठाणवडीया होय. वळी पहेला समयना अध्यवसाय स्थानक करतां वांजा समयना अध्यवसाय स्थानक विशेषाधिक होय. एम त्यां सुधी समजवुं के ज्यां सुधी यथाप्रवृत्ति करणनो चरम समय आवे. तेमां पण प्रथम समये जघन्य विशुद्धि सौथी थोडी. वीजे समये जघन्य विशुद्धि अनंतगुणी. त्रीजे समये जघन्य विशुद्धि तेथी अनंतगुणी. ए प्रमाणे यथाप्रवृत्ति करणना काळनो संख्या-तमो भाग जतां सुधी समजवुं. त्यार पछी तेना करतां पहेले समये उत्कृष्ट विशुद्धि अनंतगुणी. तेनाथी पूर्वे निवर्तेली जघन्य विशुद्धिनी पछीनी जघन्य विशुद्धि अनंतगुणी. तेनाथी वीजा समयनी उत्कृष्ट विशुद्धि अनं-तगुणी. तेथी वळी उपली पछीनी जघन्य विशुद्धि अनंतगुणी. एम यथाप्रवृत्ति करणना चरम समये जघन्य विशुद्धि अनंतगुणी कहेवी. पछी जेटला उत्कृष्ट विशुद्धि स्थान रह्या, त्यां अनंत अनंतगुणी विशुद्धि प्रति-समये कहेवी. ते यथाप्रवृतिना चरम समय सुधी. आ प्रमाणे पहेलुं करण समजवुं.

हवे बीजुं अपूर्वकरण कहे छे.—

तेमां प्रतिसमये असंख्य लोकाकाशना प्रदेशप्रमाण अध्यवसाय स्थान जाणवां. तेमां पण प्रतिसमये छठाणवडीया जाणवा. तेमां प्रथम समये जघन्य विशुद्धि सर्वथी थोडी. पण यथाप्रवृत्ति करणना चरम समयना उत्कृष्ट विशुद्धि स्थानथी अनंतगुणी. ते पहेला समयनी जघन्य विशुद्धिथी पहेला समयनी उत्कृष्ट विशुद्धि अनंतगुणी. तेनाथी बीजा समयनी जघन्य वि-शुद्धि अनंतगुणी. तेनाथी वीजा समयनी उत्कृष्ट विशुद्धि अनंतगुणी. एम प्रतिसमये जघन्य अने उत्कृष्ट विशुद्धि अनंतगुणी अपूर्वकरणना चरम समय सुधी जाणवी.

आ अपूर्वकरणना प्रथम समयथी १ स्थितिघात, २ रसघात, ३ गुणश्रेणि, ४ गुणसंक्रम अने ५ अन्य स्थितिबंध, आ पाच शरु थाय छे

स्थितिघातमा स्थितिसबधी कर्मना अग्रभागमाथी उत्कृष्ट घणा सागरोपमना सेंकडा प्रमाण अने जघन्य पल्योपमना संख्यातमा भाग मात्र स्थितिखंडनी उत्कीर्णना करे अने तेने जे नीचेनी स्थिति अतर्मुहूर्तमा उत्कीर्णना करवा जेटली होय तेमां नाखे, अने तेना भेळी उकेरी नाखे वळी उपली स्थितिमाथी पल्योपमना असख्यातमा भाग जेटली ले, अने नीचेमा नाखे एम अपूर्वकरणना काळमा घणा हजारो स्थितिखंडने नीचे लावी लावीने खपावी दे तेथी अपूर्वकरणना पहेला समय करता छेल्ले समये सख्यातगुणहीन स्थितिसत्कर्मा थाय

रसघातमा अशुभ प्रकृतिनो जेटलो अनुभाग होय, तेनो अनंतमो भाग मूकीने बाकी बधो अतर्मुहूर्तमा विनाश पमाडे वळी पूर्वे मूकेला अनंतमा भागमाथी अनंतमो भाग मूकीने बाकीना अनुभागना अनत भाग अतर्मुहूर्तमा खपावे एम हजारो अनुभागना खड एक स्थितिखडे व्यतिक्रमावे, तेवा अनेक हजारो स्थितिखंड व्यतिक्रमावता अपूर्वकरण पूर्ण करे

गुणश्रेणि—अंतर्मुहूर्त प्रमाण स्थितिनी उपर जे स्थिति वर्ते छे, तेमाथी दळीया लईने उदयावळीकानी उपली स्थितिमा प्रतिसमये असख्यातगुण वधता क्षेपन करे ते प्रमाणे अंतर्मुहूर्तना चरम समय सुधी करे आ अंतर्मुहूर्त अपूर्वकरण अनिवृत्तिकरणना अतर्मुहूर्तथी काइक मोटुं जाणवुं. आ प्रमाणे पहेले समये लीधेला दळ माटे करे तेज प्रमाणे प्रतिसमये ग्रहण करे अने समये समये असंख्यातगुण वधतो उपली स्थितिमा क्षेपन करे जेटला जेटला समय शेप रहेता जाय तेटला समयमा एम करे आ प्रमाणे अपूर्वकरण अने अनिवृत्तिकरण ए बन्नेमा समजवु

गुणसक्रम—अनतानुबंध्यादि अशुभ प्रकृतिना दळ परप्रकृतिमा सक्रमाववा रूप समजवो तेवो सक्रम प्रथम समय करता समये समये असंख्यातगुणो समजवो

अन्यस्थितिबंध—अपूर्वकरणना प्रथम समयथी ज प्रथम कोइवार नहीं करेलो एवो ओछो स्थितिबध करे आवो स्थितिबध अने स्थितिघात साथेज शरु करे, अने साथे ज पूर्ण करे

आ पाचे अपूर्वकरणमा तेमज अनिवृत्तिकरणमा पण प्रवर्ते. हवे त्रीजु अनिवृत्तिकरण कहे छे

अनिवृत्तिकरणमा प्रतिसमये वर्तता जीवना अध्यवसाय स्थानक सरखा ज होय फक्त प्रथम समय करता बीजे समये विशुद्धि अनतगुणी होय. ए

प्रमाणे प्रतिसमये अनिवृत्तिकरणना चरम समय सुधी अनंतगुण वृद्धि समजवी. तेना अंतर्मुहूर्तना जेटला समय छे, तेटला ज तेना अध्यवसायनां स्थान जाणवां.

अनिवृत्तिकरणनो संख्यातमो भाग गया पछी एक भाग रहे त्यारे अनंतानुबंधीनी नीचेनी स्थितिमांथी आवलिका मात्र स्थितिने मूकीने अंतर्मुहूर्तप्रमाण काळनुं अंतरकरण करे. पछी अंतरकरण संबंधी दळने उकेरी वध्यमान प्रकृतिमां क्षेपन करे. अने पहेली स्थितिमांथी उकेरेल आवलिका मात्र दळ वेद्यमान परप्रकृतिमां स्तिबुक संक्रमे पाणीना परपोटानी जेम संक्रमावे. अंतरकरण कर्या पछी बीजे ज समये उपली अनंतानुबंधीनी स्थितिने उपशमाववा मांडे छे तेमां पण समये समये असंख्यातगुण वधता वधता स्थितिदळने उपशमावे छे. यावत् अंतर्मुहूर्त काळमां सर्व अनंतानुबंधीना दळने उपशमावी नांखे छे. जेम धूळ उपर पाणी छांटी छांटीने घणवडे करी न उडे तेवी करे, तेम कर्मरूप रेणुने परिणामविशुद्धिरूप जळवडे सिंची अनिवृत्तिकरणरूप घणवडे उदय, उदीरणा, निधत्त अने निकाचनाने अयोग्य करी दे, तेनुं नाम उपशमना समजवी. आ प्रमाणे अनंतानुबंधीने उपशमावे.

अन्य आचार्य कहे छे के—अनंतानुबंधीनी तो विसंयोजना एटले क्षपणा ज थाय. पण उपशमना न थाय. ते आप्रमाणे—चोथा गुणस्थानवाळा वेदक समकिती च्यारे गतिमां, पांचमा गुणठाणावाळा बे गतिमां, छठ्ठा सातमावाळा मनुष्यगतिमां पर्याप्तावस्थामां अनंतानुबंधी खपाववामाटे प्रथम यथाप्रवृत्ति विगेरे त्रण करण करे. करणनी वक्तव्यता उपर प्रमाणे जाणवी. विशेष एटलो के अनिवृत्तिकरणमां अंतरकरण न करे, अने अनंतानुबंधीने उपशमावे नहीं. पण कम्मपयडी ग्रंथमां कह्या प्रमाणे उद्वलना संक्रमणवडे नीचेनी स्थितिमांथी आवलिकामात्र मूकीने बाकीना सर्व अनंतानुबंधीने खपावे, अने आवलिकाने स्तिबुक संक्रमे अन्य वेदाती प्रकृतिमां संक्रमावे. त्यारपछी अंतर्मुहूर्त पूर्ण थये अनिवृत्तिकरणने अंते शेष कर्मना स्थितिघात, रसघात अने गुणश्रेणि न होय, जीव स्वभावस्थ ज होय. आप्रमाणे अनंतानुबंधीनी विसंयोजना जाणवी.

हवे दर्शन त्रिकनी उपशमना कहे छे.—तेमां मिथ्यात्व मोहनीनी उपशमना मिथ्यादृष्टिने अने वेदक समकितीने होय. अने मिश्रमोहनी तथा समकित मोहनीनी उपशमना वेदक समकितीनेज होय.

मिथ्यादृष्टिने मिथ्यात्वनी उपशमना प्रथम समकित प्राप्त करतां होय ते आप्रमाणे—संज्ञी पंचेंद्रिय पर्याप्त करणकाळनी अगाउ अंतर्मुहूर्त काळ सुधी प्रतिसमय अनंतगुण वधती विशुद्धिए वधतो अभव्यथी अनंतगुण विशु-

ढ़िवाळो त्रण अज्ञानमांथी कोइ पण अज्ञानना साकार उपयोगमा वर्ततो, कोइ पण योगमा वर्ततो, जघन्य परिणामे तेजोलेश्यामा, मध्यम परिणामे पद्मलेश्यामा अने उत्कृष्ट परिणामे शुक्ललेश्यामा वर्ततो, चारे गतिमा रहेल अत सागरोपम कोटाकोटी सत्कर्मा यथाप्रवृत्ति विगेरे त्रण करण करे तेमा प्रथमना वे करणनी वक्तव्यता उपर प्रमाणे समजवी पण अपूर्वकरणमा गुणसक्रम न होय, वाकी स्थितिघात, रसघात, अपूर्व स्थितिबंध अने गुणश्रेणि पूर्ववत् होय गुणश्रेणिना दळिकनी रचना पण उदय समयथी माडीने कहेवी अनिवृत्तिकरणमा एज प्रमाणे समजवुं अनिवृत्तिकरणना काळनो संख्यातमो भाग गया पछी एक भाग रहे त्यारे अंतर्मुहूर्तमात्र नीचे मूकीने मिथ्यात्वनु अंतर्मुहूर्त स्थितिनु अतरकरण करे अंतरकरण संवंधी दळीया उकेरीने पहेली तथा वीजी स्थितिमा क्षेपवे पहेली स्थितिमा वर्ततो सतो उदीरणा प्रयोगवडे प्रथम स्थितिगत दळने आकर्षीने उदयमा क्षेपवे, तेने उदीरणा कहीए अने वीजी स्थितिमाथी उदीरणा प्रयोगवडे दळ आकर्षीने उदयमा क्षेपवे तेने आगाल कहीए उदीरणा अने आगाल ए वन्ने एकार्थ वाची ज छे

उदय अने उदीरणावडे पहेली स्थितिने अनुभवतो अनुभवतो वे आवळीका शेप रहे, त्यारपछी आगाल विच्छेद पामे मात्र उदीरणा प्रवर्ते आवळीका शेप रहे त्यारे उदीरणा पण विच्छेद पामे, मात्र उदयवडे आवळीका वेदे तेना चरम समये वीजी स्थितिमां रहेला दळीयाने अनुभाग भेदवडे त्रिधा करे, एटले तेना रसभेदवडे त्रण पुंज करे तेना अनंतर समये मिथ्यादळिकना उदयनो अभाव होवाथी उपशम समकित पामे आ प्रथम समकितनो लाभ मिथ्यात्वनी सर्व उपशमनाथी थाय ते समकितनी साथे ज कोई जीव देशविरतिपणुं पामे, अने कोई जीव सर्वविरतिपणु पण पामे, तेथी ४–५–६–७ मा गुणस्थान सुधी मिथ्यात्वनी उपशमना होय

हवे क्षयोपशम समकिती त्रणे मोहनीनी उपशमना करे, ते आ प्रमाणे—वेदक समकिती सयममा वर्ततो सतो अंतर्मुहूर्त काळवडे दर्शनत्रिकने उपशमावे, ते उपशमावता त्रण करण करे छे तेनी विधि पूर्ववत् अनिवृत्तिकरण अद्धानो सख्यातमो भाग जाय त्यारे अंतरकरण करे छे अंतरकरण करतो सतो समकित मोहनीनी प्रथम स्थिति अंतर्मुहूर्तनी स्थापे अने मिथ्यात्व मिश्रनी आवलिका मात्र स्थापे, अने उकेरेला दळीया त्रणेना समकित मोहनीनी पहेली स्थितिमा क्षेपवे मिथ्यात्व ने मिश्रना प्रथम स्थितिना दलिक स्तिवुक सक्रमे सम्यक्त्वनी प्रथमनी स्थितिमा संक्रमावे सम्यक्त्वनी प्रथम स्थितिने विपाकवडे अनुभवी क्षीण करे, त्यारे उपशम समकित थाय पछी उपली स्थितिना दळनी उपशमना त्रणे प्रकृतिनीअनतानुवंधीना उपरना दळनी जेम जाणवी आप्रमाणे दर्शन त्रिकने उपशमाव्या पछी चारित्र

मोहनीने उपशमाववा इच्छनार फरीने पाछा ते संबंधी त्रण करण करे. ते करणनुं स्वरूप तो पूर्ववत् समजवुं. अहीं विशेष एटलुं के पहेलुं करण सातमे, बीजुं करण आठमे अने त्रीजुं करण नवमे गुणस्थाने जाणवुं. तेमां अपूर्वकरणमां स्थितिघातादि पूर्ववत् जाणवुं. फक्त सर्व अशुभ प्रकृतिना अबध्यमानपणामां गुणसंक्रम प्रवर्ते.

अपूर्वकरणनो संख्यातमो भाग गये सते निद्रा प्रचलाना बंधनो विच्छेद थाय. पछी घणा स्थितिखंड व्यतिक्रमे सते अपूर्वकरणना संख्यात भाग जाय, मात्र एक भाग रहे ते वखते ३० प्रकृतिओ अगाउ कहेवायेल छे तेनो बंध विच्छेद थाय. पछी अपूर्वकरणना चरम समये हास्य, रति, भय अने जुगुप्सानो बंध विच्छेद थाय. ते साथे हास्यादि षट्कनो उदयमांथी पण विच्छेद थाय, अने सर्व कर्मनी देश उपशमना, निधत्ति अने निकाचना करण पण विच्छेद थाय. पछी अनंतर समये अनिवृत्तिकरणमां प्रवेश करे. त्यांपण स्थितिघातादि पूर्ववत् करे. त्रीजा करणनो संख्यातमो भाग गया पछी दर्शन सप्तक विना बाकी रहेली २१ चारित्र मोहनीनुं अंतरकरण करे. तेमां वेदाता संज्वलन ४ कषायमांथी जे कषाय होय तेनी तथा त्रण वेदमांथी वेदाता वेदनी प्रथम स्थिति स्वउदय काळ प्रमाणे अने बाकीना ११ कषाय, २ वेद तथा ६ हास्यादिकनी प्रथम स्थिति आवलिका मात्र जूदी पाडे. स्वउदयकाळ आ प्रमाणे.—

स्त्रीवेद अने नपुंसक वेदनो उदयकाळ सर्व स्तोक स्वस्थाने तुल्य.
तेथी पुरुष वेदनो संख्यात गुणो.
तेथी संज्वलन क्रोधनो विशेषाधिक.
तेथी संज्वलन माननो विशेषाधिक.
तेथी संज्वलन मायानो विशेषाधिक.
तेथी संज्वलन लोभनो विशेषाधिक.

तेमां संज्वलन क्रोधे उपशमश्रेणि मांडी होय तेने ज्यां सुधी अप्रत्याख्यानी तथा प्रत्याख्यानी क्रोधनो उपशम न थाय त्यांसुधी संज्वलन क्रोधनो उदय समजवो. ए प्रमाणे जे कषायना उदयमां श्रेणी मांडी होय ते जातिना अप्रत्याख्यानी अने प्रत्याख्यानी कषायनो उपशम थतां सुधी ते जातिना संज्वलन कषायनो उदय समजवो. ए प्रमाणे अंतरकरणना उपला भागनी अपेक्षाए सम अने नीचेना भागनी अपेक्षाए विषम स्थिति होय, ते जेटलो काळ स्थितिखंडनो घात करे अथवा जेटला काळनो अन्य स्थितिबंध करे, तेटला ज काळनुं अंतरकरण करे. त्रणे समकाळे आरंभे अने समकाळे पूर्ण करे.

अंतरकरण संबंधी दळीयांनो प्रक्षेप विधि आ प्रमाणे.—जे जे कर्मनो ते वखते बंध अने उदय वर्ततो होय, तेना अंतरकरण संबंधी दळीयां पहेली अने

बीजी बन्ने स्थितिमा नाखे. जेम पुरुषवेदे श्रेणि माडनार पुरुषवेदनां दळीयां माटे करे तेम अने जे कर्मनो उदय होय, बध न होय, तेना अंतरकरण संबधी दळीया प्रथम स्थितिमा नाखे, बीजीमा नहीं, जेम स्त्री वेदारूढ होय ते स्त्रीवेद माटे करे तेम स्त्रीवेदनो बध टळी गयेल होवाथी तथा जे कर्मनो बध होय, पण उदय न होय, तेना अतरकरण संबंधी दळीया उपली स्थितिमा नाखे, पहेलीमा नहीं जेम संज्वलन क्रोधोदये श्रेणि आरूढ थयेल सज्वलन मान विगेरेना नाखे तेम तथा जे कर्मनो बंध अने उदय बन्ने न होय, तेना अंतरकरण संबधी दळिया परप्रकृतिमा क्षेपवे. जेम अप्रत्याख्यानी प्रत्याख्यानी कषायना दळीक संज्वलनमा नांखे तेम

अहीं अनिवृत्तिकरणविषे घणु कहेवा जेवु छे, पण ग्रंथ वधी जवाना भयथी कहेता नथी विशेषार्थीए कर्मप्रकृतिनी टीका विगेरेथी जाणी लेवु

हवे अंतरकरण कर्या पछी प्रथम नपुंसक वेद उपशमावे ते प्रथम समये थोडा दळ उपशमावे, बीजे समये असख्यात गुणा, त्रीजे समये तेथी असंख्यात गुणा, एम चरम समय सुधी उपशमावे तेमा पण उपशमावता करता परप्रकृतिमा क्षेपवाना असख्यात गुणा प्रतिसमये समजवा ए प्रमाणे क्षेपन द्विचरम समय सुधी करे, अने चरम समये क्षेपन करता असंख्यात गुण उपशमावे. आ प्रमाणे अंतर्मुहूर्तमा नपुसकवेद उपशमावे एटले कुल आठ प्रकृति उपशमावी पछी पूर्वोक्त प्रकारे अतर्मुहूर्तकाळे स्त्रीवेद उपशमावे एटले ९ उपशमावी त्यार पछी उक्त प्रकारे अंतर्मुहूर्ते हास्यादि षट्क उपशमावे एटले कुल १५ प्रकृति उपशमावी हास्यादि षट्क उपशमे तेज समये पुरुषवेदना बध, उदय, उदीरणा अने प्रथम स्थिति विच्छेद पामे प्रथम स्थिति बे आवलिका शेष रहे एटले पूर्वे कह्या प्रमाणे उपली स्थितिमाथी उदीरणा करवा रूप आगाल न थाय अने ते समयथी आरंभीने छ नोकषायना दळ पण पुरुषवेदमा न क्षेपवे, पण सज्वलन क्रोधादिकमा क्षेपवे हास्यादि षट्क उपशमाव्या पछी समयोन बे आवलिका मात्रे पुरुषवेद उपशमे, ते पण प्रथम समये स्तोक, बीजे समये असंख्यात गुण, त्रीजे समये तेथी असंख्यात गुण, एम बे समय ऊन आवलिका द्विकना चरम समय सुधी उपशमावे अने तेटला ज काळ सुधी प्रतिसमये परप्रकृतिमा सक्रमावे पण ते प्रथम समये वहु सक्रमावे, बीजे समये तेथी ओछा, त्रीजे समये तेथी ओछा, एम चरम समय सुधी जाणवु आ प्रमाणे पुरुषवेद उपशमावे सते मोहनीनी १६ प्रकृति उपशमी

हास्यादि षट्क उपशमाव्या, अने पुरुषवेदनी प्रथम स्थिति क्षीण थई, तेना बीजा समयथी ज अप्रत्याख्यान प्रत्याख्यान अने संज्वलन क्रोधने समकाळे उपशमावबा माडे, तेने पूर्वनी पेठे उपशमावता ज्यारे सज्वलन क्रोधनी

प्रथम स्थिति एक समय ऊणी त्रण आवलिका रहे, त्यारे अप्रत्याख्यान अने प्रत्याख्यान ए बन्ने क्रोधनां दळ संज्वलन मानमां क्षेपवे. संज्वलन क्रोधमां क्षेपवा बंध करे. संज्वलन क्रोधनी प्रथम स्थिति बे आवलिका शेष रहे त्यारपछी आगाल विच्छेद थाय, उदीरणा ज रहे. अने एक आवलिका रहे त्यारे उदीरणानो पण विच्छेद थाय. आवलिका शेषे संज्वलन क्रोधना बंध, उदय अने उदीरणानो विच्छेद थाय. अने अप्रत्याख्यान तथा प्रत्याख्यान क्रोध उपशमी जाय, एटले कुल १८ प्रकृतिनो उपशम थाय.

ते वखते संज्वलन क्रोधनी प्रथम स्थितिगत एक आवलिका अने समयोन *आवलिकाद्विकबद्ध उपली स्थितिगत दळीयां* ज होय. तेमांथी प्रथम स्थितिगत आवलिकाने तो स्तिवुक संक्रमे संज्वलन मानमां संक्रमावे. अने समयोन आवलिकाद्विकबद्ध दलिक पुरुषवेदमां उपर कह्याप्रमाणे उपशमावे अने संक्रमावे. एटले समयोन आवलिकाद्विक काळे संज्वलन क्रोध उपशमी जाय, त्यारे कुल १९ प्रकृतिनो उपशम थाय.

जे समये संज्वलन क्रोधना बंध, उदय अने उदीरणा व्यवच्छेद थाय तेना अनंतर समयथी ज संज्वलन माननी बीजी स्थितिमांथी दळीयां आकर्षीने प्रथम स्थिति करे अने वेदे. तेमां उदय समये थोडा प्रक्षेपे, बीजे समये तेथी *असंख्यातगुणा, त्रीजे समये तेथी असंख्यातगुणा*, एम प्रथम स्थितिना चरम समय सुधी कहेवुं. प्रथम स्थिति करवाना प्रथम समयथी ज संज्वलन, अप्रत्याख्यान अने प्रत्याख्यान मानने उपशमाववा मांडे. संज्वलन माननी प्रथम स्थिति समयोन आवलिका त्रिक शेष रहे त्यार पछी अप्रख्यान प्रत्याख्यान माननां दळीयां संज्वलन मानमां न प्रक्षेपे. पण संज्वलन मायादिमां प्रक्षेपे. पछी उपर संज्वलनादि क्रोध उपशमाववानी जे रीत कही छे तेज प्रमाणे त्रणे मानने उपशमावे. एटले कुल २२ प्रकृति उपशमे.

संज्वलन मानना बंध, उदय अने उदीरणा व्यवच्छेद पामे त्यारथी त्रण प्रकारनी *माया* उपशमाववा मांडे. ते उपरनी रीते उपशमावे. एटले कुल २५ प्रकृति उपशमी. संज्वलन मायाना बंध, उदय अने उदीरणा व्यवच्छेद पामे त्यारथी संज्वलनादि त्रणे लोभ उपशमाववा मांडे. तेना अनंतर समयथीज संज्वलन लोभनी बीजी स्थितिमांथी दळीयां आकर्षीने लोभ वेदवाना काळना $\frac{2}{3}$ भाग प्रमाण पहेली स्थिति पूर्वोक्त प्रकारे करे अने वेदे. तेमां पहेलो त्रिभाग अश्वकर्णकरणाद्धा नामनो अने बीजो त्रिभाग किट्टीकरणाद्धा नामनो कहेवाय छे. तेमांना पहेला त्रिभागमां वर्ततो सतो पूर्व स्पर्धकमांथी दळीयां आकर्षीने अपूर्व स्पर्धक करे. ते स्पर्धक ते शुं? ते कहेछे.– अनंतानंत परमाणुवडे निष्पन्न स्कंधोने जीव कर्मपणे ग्रहण करे छे, तेमांना एक एक स्कंधमां जे सर्व जघन्य रसवाळा परमाणु छे तेनो

रस पण केवळीनी बुद्धिए छिद्यमान कर्या सतो सर्व जीवथी अनंतगुणा रसविभाग आपे बीजा तेना करता एक रसविभाग अधिकवाळा परमाणु, त्रीजा तेनाथी बे रसविभाग अधिकवाळा परमाणु, एम एक एकनी वृद्धिए त्यासुधी जवु के केटलाक परमाणु सिद्धना अनंत भाग जेटला अधिक रस विभाग आपे. हवे जे उपर कह्याप्रमाणे जघन्य रसवाळा परमाणुओ छे तेनो जे समुदाय तेनी एक वर्गणा, बीजा एक रसविभाग अधिकवाळा परमाणुओनी बीजी वर्गणा एवी रीते सिद्धना अनंता भाग जेटली अने अभव्यथी अनंतगुणी जे वर्गणाओ तेनो समुदाय ते स्पर्धक कहीए त्यारपछी एक रसविभागे अधिक परमाणु न पामीए, पण सर्व जीवथी अनतगुण रसविभागे अधिक परमाणु पामीए तेनी पाछी उपर प्रमाणे वर्गणाओ अने तेनो समूह ते बीजुं स्पर्धक एम अनता स्पर्धको थाय ते पूर्वे कहेला होवाथी तेने पूर्व स्पर्धक कहीए तेमाथी प्रतिसमय दळीया ग्रहण करीने अत्यंत हीन रसवाळा करी तेना स्पर्धक बनावे ते नवा होवाथी अपूर्व स्पर्धक कहेवाय संसारमा भमता आ जीवे पूर्वे कदी पण बंध आश्री आवा स्पर्धक करेला न होवाथी अपूर्व कहेवाय छे

अश्वकर्ण करणाद्धा वीत्या पछी किट्टीकरणाद्धामा प्रवेश करे, तेमा पूर्व स्पर्धक अने अपूर्व स्पर्धकमाथी दळीया लईने प्रति समय तेनी अनती किट्टी करे कीट्टी एटले बन्ने प्रकारना स्पर्धकमाथी लीधेला दळने अनंतगुण हीन रसवाळा करी मोटे मोटे आंतरे स्थापे ते दृष्टात तरिके १००–१०१–१०२ रसविभागवाळा परमाणु होय, तेना ५–१५–२५ रसविभागवाळा करी नाखवा ते

किट्टीकरणाद्धाने चरम समये अप्रत्याख्यान प्रत्याख्यान लोभ समकाळे उपशमे ते समये संज्वलन लोभनो बध विच्छेद थाय अने बादर सज्वलन लोभना उदय उदीरणा पण विच्छेद थाय तेमज नवमुं गुणस्थान पण समाप्त थाय आ प्रमाणे नवमामा ७ थी माडीने कुल २५ प्रकृति उपशात थाय २७ नी उपशातावस्था दशमा गुणस्थानना प्रारभमा पामीए दशमा गुणस्थाननी स्थिति अतर्मुहूर्त प्रमाण छे तेमा प्रवेश करता उपली स्थितिमाथी केटलीक किट्टी आकर्षीने प्रथम स्थिति ते गुणस्थानना काळतुल्य करे अने वेदे बाकीना सूक्ष्म किट्टीकृत दळीया समयोन बे आवलिका बद्ध रहे, तेने उपशमावे दशमाने चरम समये सज्वलन लोभ उपशमी जाय. ते समये ज ज्ञानावरण ५, दर्शनावरण ४, अंतराय ५, उच्चगोत्र १, यशकीर्ति १, आ १६ प्रकृतिनो बध विच्छेद थाय तेना अनतर समये उपशम कषायी कहेवाय अर्थात् अग्यारमु गुणस्थान पामे त्या मोहनीनी २८ प्रकृति उपशात थई कहेवाय आ गुणस्थान जघन्य एक समय अने उत्कृष्ट अतर्मुहूर्त सुधी रहे त्यारपछी जरुर त्याथी पडे ते पडवु बे प्रकारे छे– आयु क्षये तथा गुणस्थाननो काळ पूर्ण थये. तेमा जे आयुक्षये पडे ते

पहेले ज समये उपशम करेला सर्व बंध उदयादि प्रवर्तावे, अने अनुत्तर विमाने जाय. ते जीव चोथे गुणस्थाने टके.

जे जीव गुणस्थानना काळ क्षये पडे ते जेम श्रेण्यारुढ थयो होय तेम पडे. एटले ज्यां ज्यां जेना जेना बंध, उदय अने उदीरणा उपशमाव्या, विच्छेद पमाड्या, त्यां त्यां शरु करतो छट्ठे, पांचमे, चोथे अथवा बीजे गुणस्थाने जाय.

आ प्रमाणेनी उपशम श्रेणि एक भवमां बे वार मांडी शके. जे बे वार मांडे तेने ते भवमा क्षपकश्रेणि न होय. एकवारवाळो क्षपकश्रेणि करे तो करे. सिद्धांतकार कहे छे के-एक भवमां बे प्रकारनी श्रेणि न होय. तत्त्व केवळी गम्य.

## इति उपशमश्रेणि स्वरूप.

गाथा ६६. हवे क्षपकश्रेणिनुं स्वरूप कहे छे.—

ओछामां ओछो आठ वर्षनो मनुष्य क्षपकश्रेणि मांडे, तेथी नानो न मांडे. क्षपकश्रेणि मांडनार प्रथम अनंतानुबंधी चतुष्क खपावे ( पूर्ववत् ), पछी दर्शन मोहनी त्रिकने साथे खपावे, तेने खपावतो यथाप्रवृत्तादि त्रण करण करे, ते पूर्वे कहेल छे. तेमां विशेष एटलुं के—अपूर्वकरणना प्रथम समये अनुदित मिथ्यात्वनां तथा मिश्रनां दळीयांने गुणसंक्रमवडे समकित मोहनीमां क्षेपवे. उद्धलना संक्रम पण ए बेनो ज आरंभे ते आ प्रमाणे.—

पहेलां मोटा स्थितिखंडनुं उद्धलन करे. त्यार पछी समये समये विशेष हीन विशेष हीन स्थितिखंडनी उद्धलना करे. एम अपूर्वकरणना चरम समय सुधी करे. एम करवाथी अपूर्वकरणना प्रथम समये जेटलो स्थितिसत्कर्मा होय, तेना करतां चरम समये संख्यातगुणहीन सत्कर्मा थाय. पछी अनिवृत्तिकरणमां प्रवेश करे. त्यां पण स्थितिघातादि अपूर्वकरणवत् करे. तेना प्रथम समये दर्शनत्रिकनी देशोपशमना, निधत्ति अने निकाचना विच्छेद पामे. दर्शनमोहनी सत्कर्मा जीव अनिवृत्तिकरणना प्रथम समयथी मांडीने स्थितिघातादिवडे हजारो स्थितिखंड नष्ट थवाथी असंज्ञी पंचेंद्रिय समान स्थितिसत्कर्मा थाय. वळी बीजा हजारो स्थितिखंड गये सते चतुरिंद्रिय समान स्थिति सत्कर्मा थाय. ए प्रमाणे स्थितिखंड घटवाथी यावत् त्रींद्रिय, द्वीन्द्रिय, एकेंद्रिय समान स्थितिसत्कर्मा थाय.

वळी बीजा स्थितिखंड घटतां पल्योपमना असंख्यातमा भाग समान स्थिति रहे. पछी त्रणेनो एक एक संख्यातमो भाग मूकीने बाकीनो सर्व खपावे (घात करे). वळी पछ्या मूकेला संख्यातमा भागमांथी एक संख्यातमो भाग मूकीने बाकीनानो विनाश करे. एम हजारो स्थितिघात थाय. त्यारपछी मिथ्यात्वना असंख्यात भागोने खंडित करे अने समकित तथा मिश्रना संख्यात भागोने खंडित करे. एप्रमाणे घणा स्थितिखंड गये सते मिथ्यात्वना दळीयां

आवलिका मात्र रहे अने समकित मिश्रना पल्योपमनो असंख्यातमा भाग जेटला रहे उपर प्रमाणे जे स्थितिखंड खंडित करे, तेमा मिथ्यात्वना दळिया समकित ने मिश्रमा नाखे, मिश्रना समकीतमा नाखे अने समकितना तेनी नीचली स्थितिमा नांखे पछी बाकी रहेला मिथ्यात्वना आवलिका मात्र दळने स्तिबुक सक्रमे समकितमा संक्रमावे पछी समकित मिश्रना असख्याता भागनी खडना करे, ज्यारे एक भाग रहे त्यारे तेना असंख्याता भाग करी तेने खंडे, अने एक राखे एम घणा स्थितिखंड गये सते मिश्र आवलिका मात्र रहे ते वखते समकितमोहनीनी स्थिति आठ वर्ष प्रमाण होय ते वखते सर्व संकट दूर थवाथी निश्चय नयने मते ते जीवने दर्शनमोहनीनो क्षपक कहीए त्यारपछी समकितना स्थितिखडमाथी अतर्मुहूर्त प्रमाणे उकेरे, अने तेना दळीयाने उदय समयथी माडीने प्रक्षेप करवा माडे, ते उदय समये थोडा, बीजे समये तेनाथी असख्यातगुणा, एम गुणश्रेणिना शिर (छेडा) सुधी प्रक्षेप करे त्यारपछी विशेप विशेप हीन प्रतिसमये प्रक्षेपे, ते चरम समय सुधी ए प्रमाणे अतर्मुहूर्त अतर्मुहूर्तना अनेक स्थितिखड उकेरे अने क्षेपन करे ते छेल्ला बे स्थितिखंड रहे त्यासुधी करे तेमा पहेला चरमखड करता बीजो चरमखड असंख्यातगुणो होय ज्यारे छेल्लो स्थितिखड उकेरे त्यारे ते क्षपक कृतकरण कहेवाय ते कृतकरण अद्धामा वर्ततो कोई जीव काळ करीने चारे गतिमाथी कोइ पण गतिमा उपजे लेश्या पण प्रथम तो शुक्ल होय पछी तो गमे ते लेश्या थाय एटले क्षायिकनो प्रस्थापक तो मनुष्य ज होय, पण निष्ठापक चारे गतिमा होय

जो पूर्वबद्धायु क्षपकश्रेणि माडे तो ते अनतानुबधीना क्षय पछी कदी मरण पामे तो मिथ्यात्वना उदयथी पाछो अनतानुबंधी बाधे केमके तेना बीज-रूप मिथ्यात्व रहेल छे पण जो मिथ्यात्व क्षय थयेल होय तो अनतानुबधी फरीने न बाधे, बीज जवाथी

क्षीण सप्तकवाळो अप्रतिपतित परिणामे अवश्य देवगतिमा उपजे, अने प्रति-पतित परिणामी तो जेवा परिणाम तेवी गतिमा उपजे पूर्वबद्धायुष्क कदी ते वखते काळ न करे, तो पण सप्तक क्षीण कर्या पछी आगळ चारित्रमोह खपाववानो उद्यम न करे

प्रश्न—क्षीण सप्तक कदी ते भवमा मोक्षे न जाय अने अन्यगतिमा जाय तो केटला भवे मोक्षे जाय ?

उत्तर—त्रीजे चोथे भवे जाय एटले देवता नारकी थाय तो त्याथी नीकळी मनुष्य थइ मोक्षे जाय ते त्रीजे भवे, ने जो मनुष्य तिर्यच थाय तो जुग-लीयामा ज जाय, त्याथी देवता थई, चवी, मनुष्य थई, मोक्षे जाय, तो चोथे भवे ए प्रमाणे समजवु

सात प्रकृतिना क्षपक ४-५-६-७ मे गुणस्थाने पामीए अबद्ध पूर्व आयुवाळो

जीव परिणामथी पतित थया विना चारित्रमोहनी खपाववा मांडे एटले तेने माटे त्रण करण करे, तेनुं स्वरुप पूर्ववत्. ते करणमां पहेलुं सातमे, वीजुं आठमे अने त्रीजुं नवमे गुणस्थाने होय.

अपूर्वकरणमां स्थितिघातादिवडे अप्रत्याख्यान प्रत्याख्यानावरण (८) कषायने एवा खपावे के अनिवृत्तिकरणना पहेले समये पल्योपमना असंख्यातमा भाग जेटला रहे. अनिवृत्तिकरणनो संख्यातमो भाग गये सते स्त्यानर्द्धि त्रिक, नरकद्विक, तिर्यग्द्विक, जातिचतुष्क ( पंचेंद्रिय विना ), स्थावर, आतप, उद्योत, सूक्ष्म अने साधारण ए १६ प्रकृतिओने उद्वलनासंक्रमवडे उद्वल्यमान करी सती पल्योपमना असंख्यातमा भाग जेटली करे. पछी वध्यमान परप्रकृतिमां गुणसंक्रमवडे प्रतिसमये क्षेपवतां क्षेपवतां सर्वथा क्षय करे. कषायाष्टकने क्षीण करवा मांडेला तेना अंतराळे आ १६ प्रकृति तो खपावी दे, पछी कषायाष्टक खपावे. कोइ कहे छे के–'पहेलां १६ प्रकृति खपाववा मांडे, तेना अंतराळे कषायाष्टक खपावे अने पछी १६ खपावे.' पछी नव नोकषाय अने चार संज्वलन खपाववा अंतरकरण करे. ते करीने प्रथम नपुंसक वेदनां दळीयां उपली स्थितिना उद्वलन विधिए खपाववा मांडे. अंतर्मुहूर्तमां पल्योपमना असंख्यातमा भाग जेटला राखे. पछी वध्यमान शुभ प्रकृतिमां गुणसंक्रमवडे तेनां दळीयां खेपवे, अंतर्मुहूर्ते वधा क्षीण करे. पछी नीचेनी आवलिका मात्र रहे, ते दळिकने नपुंसकवेदे श्रेणि मांडी होय तो अनुभव थकी वेदीने खपावे. अन्य वेदे श्रेणी मांडी होय तो वेद्यमान प्रकृतिमां स्तिवुक संक्रमे संक्रमावे. ए प्रमाणे नपुंसकवेद खपावे. पछी अंतर्मुहूर्तमां स्त्रीवेद पण एज प्रमाणे खपावे. पछी हास्यादि षट्क खपाववा मांडे. त्यारथी तेनां उपली स्थितिनां दळीयां पुरुषवेदमां न क्षेपवे, पण संज्वलन क्रोधमां क्षेपवे. पूर्वोक्त विधिवडे तेने संज्वलन क्रोधमां क्षेपवतां अंतर्मुहूर्तमां निःशेष करे ( खपावे ). ते ज समये पुरुषवेदना वंध, उदय अने उदीरणा विच्छेद पामे. अने समयोन आवलिकाद्विक वद्ध सिवाय वीजां दळीयां विच्छेद जाय. ते वखतथी ते अवेदी कहेवाय. पुरुषवेदे श्रेणि मांडनार माटे आ प्रमाणे समजवुं.

जो नपुंसकवेदे श्रेणि मांडी होय तो स्त्रीवेद अने नपुंसकवेद समकाळे खपावे. अने तेना खपाववानी साथे पुरुषवेदना वंधनो क्षय थाय. एटले ते अवेदी थाय. अने पछी पुरुषवेद तथा हास्यादि षट्क समकाळे खपावे.

जो स्त्रीवेदे श्रेणि मांडे तो पहेलां नपुंसकवेद खपावे. पछी स्त्रीवेद खपावे. स्त्रीवेदना क्षय काळे ज पुरुषवेदनो वंध खपावे. एटले अवेदी थाय. पछी समकाळे पुरुषवेद अने हास्यादि षट्क खपावे.

हवे अहीं पुरुषवेदीने अधिकृत करीने प्रस्तुत वात कहे छे.—संज्वलन क्रोध वेदतां ते क्रोधनी स्थितिना त्रण विभाग करे.—१ अश्वकर्णकरणाद्धा, २ किट्टी-

करणाद्धा, २ किट्टी वेदनाद्धा तेमा अश्वकर्ण करणाद्धामां वर्तता चार संज्वलनना अंतरकरणथी उपली स्थितिमा अनंता अपूर्व स्पर्धको करे. तेमज पुरुषवेद पण समयोन वे आवलिका काळे गुणसक्रमवडे क्रोधमा संक्रमावता चरम समये सर्व संक्रमावी दे, एटले पुरुषवेद समग्र क्षीण थइ जाय अश्वकर्णकरणाद्धा संपूर्ण थये किट्टीकरणाद्धामा प्रवेश करे, एटले चार संज्वलननी उपली स्थितिगतदलिकनी किट्टी करे ते किट्टी परमार्थे तो अनंती होवा छता स्थूळ जाति अपेक्षाए तेने १२ कल्पीए चार कषायनी त्रण त्रण--पहेली, बीजी, त्रीजी आ प्रमाणे क्रोधना उदयमा वर्तता क्षपक श्रेणि माडनार माटे समजवु

जो माने श्रेणि माडी होय तो उद्वलन विधिवडे क्रोध खपावी पछी नवकिट्टी करे
मायाए श्रेणि माडी होय तो उद्वलन विधिवडे क्रोध, मान खपावी छ किट्टी करे.
लोभे श्रेणि माडी होय तो क्रोध, मान, माया उद्वलन विधिए खपावी मात्र लोभनी त्रण किट्टी करे

हवे क्रोधे श्रेणि माडनार पहेली किट्टीना दलिया जे बीजी स्थितिगत होय तेने पहेली स्थितिगत करे अने वेदे समयाधिक आवलिका शेप रहे त्या सुधी पछी तेना अनन्तर समये ज बीजी किट्टीना दळीया बीजी स्थितिगत होय तेने पहेली स्थितिगत करे अने वेदे ते पण समयाधिक आवलिका शेप रहे त्या सुधी पछी त्रीजी किट्टीना दळीया बीजी स्थितिगत होय तेने पहेली स्थितिगत करे अने वेदे ते पण समयाधिक आवलिका शेप सुधी पछी त्रणे प्रकारनी किट्टीना वेदनाद्धामा प्रवेश करी उपली स्थितिगत दलिकने गुणसक्रमवडे प्रति समय असख्यात गुण वधता सज्वलन मानमा क्षेपवे त्रीजी किट्टीना वेदनाद्धाने चरम समये संज्वलन क्रोधना बंध, उदय अने उदीरणा व्यवच्छेद पामे सत्ता पण समयोन आवलिकाद्विक मूकीने बीजी न रहे बध्यमानमा क्षेपवी दीधेली होवाथी पछी तेना अनतर समये मानना प्रथम किट्टीना बीजी स्थितिगत दलिकने प्रथम स्थितिगत करे अने वेदे ते अंतर्मुहूर्त सुधी. क्रोधना बंधादि व्यवच्छेद थता तेना सत्तागत रहेल दलिकने समयोन आवलिकाद्विक मात्र काळे गुणसक्रमवडे सक्रमावता चरम समये सर्व सक्रमवडे सक्रमावी दे

मानना पण पहेली किट्टीना प्रथम स्थितिगत करेला दलिकने वेदता समयाधिक आवलिका मात्र शेप रहे एटले बीजी किट्टीना बीजी स्थितिगत दलिकने पहेली स्थितिगत करे अने वेदे. ते समयाधिक आवलिका शेप रहे त्या सुधी

आ प्रमाणे मान मायाना त्रणे किट्टीना दलिकने बीजी स्थितिगतमाथी पहेली स्थितिगत करवानु अने वेदवानु पण जाणवु मान मायाना बंधादिकनो क्षय उपर प्रमाणे ज समजवो

लोभना सबंधमा एटलु विशेष के--बीजी किट्टीना दळीया बीजी स्थितिगतने

पहेली स्थितिगत करीने वेदता सत्ता त्रीजी किट्टीना दलिकने ग्रहण करीने तेनी सूक्ष्म किट्टी करे. ते बीजी किट्टीना प्रथम स्थितिगत दळीयांने वेदतां समयाधिक आवलिका शेष रहे त्यां सुधी. ते वखते ज संज्वलन लोभनो बंध विच्छेद थाय. अने बादर कषायना उदय तथा उदीरणानो विच्छेद थाय. अनिवृत्तिबादर गुणस्थाननो काळ पण पूर्ण थाय.

पछी त्रीजी किट्टीना सूक्ष्मकिट्टी करेलां बीजी स्थितिगत दलीयांने पहेली स्थितिगत करे अने वेदे. ते वखते तेने सूक्ष्मसंपराय कहीए. त्रीजी किट्टीने वेदतां आवलिका शेष रहेल होय ते स्तिबुकसंक्रमे बीजी वेद्यमान प्रकृतिमां संक्रमावे. प्रथम बीजी किट्टीने वेदतां जे आवलिका शेष रहेल होय ते तो बीजी त्रीजी किट्टीनी अंतर्गत वेदाई जाय. सूक्ष्मसंपराये वर्त्ततो जीव लोभनी सूक्ष्म किट्टीने वेदतो सतो समयोन आवलिकाद्विक बद्ध सूक्ष्म किट्टीनां दळीयांने प्रतिसमय स्थितिघातादिवडे सूक्ष्मसंपरायना काळमां संख्याता भाग जतां सुधी खपावे. पछी एक संख्यातो भाग रहे. ते संख्याता भागमां संज्वलन लोभने सर्व अपवर्तनावडे अपवर्ती सूक्ष्मसंपरायना काळ जेटलो बाकी राखे. ते वखते पण सूक्ष्मसंपरायनो काळ अंतर्मुहूर्त होय. पछी तेना स्थितिघातादि निवर्त्ते—शेष कर्मप्रकृतिना प्रवर्ते.

लोभनी अपवर्तित करेली स्थितिने उदय उदीरणावडे वेदतां समयाधिक आवलिका मात्र शेष रहे, एटले उदीरणा बंध थाय. पछी मात्र उदयवडे चरम समय सुधी वेदे. चरम समये ज्ञानावरण ५, दर्शनावरण ४, उच्चगोत्र यशकीर्ति, अने अंतराय ५, कुल १६ प्रकृतिनो बंध विच्छेद थाय. अने मोहनी कर्मनी तो उदय अने सत्ता बन्ने विच्छेद थाय.

गाथा ६७. आ वात संक्षेपथी फरीने कहे छे.—

पुरुषवेदना बंधादि क्षय थये सते शेष रहे ते संज्वलन क्रोधमां संक्रमावे. संज्वलन क्रोधना बंधादि क्षय थये शेष रहे ते संज्वलन मानमां गुणसंक्रमवडे संक्रमावे. संज्वलन मानने मायामां संक्रमावे, मायाने लोभमां संक्रमावे, लोभना बंधादि विच्छेद थये सते सूक्ष्म रहेला लोभने पण स्थितिघातादिवडे हणे.

लोभनो सर्वथा क्षय थये सते क्षीणकषायी (बारमा) गुणस्थानगत थाय. क्षीणकषायीपणामां मोहनी सिवाय बीजा कर्मोना स्थितिघातादि पूर्ववत् प्रवर्ते, ते क्षीणकषाय काळना संख्याता भाग जाय अने एक भाग रहे त्यां सुधी. ते संख्याता भागमां ज्ञानावरण ५, दर्शनावरण ४, अंतराय ५, अने निद्रा २, कुल १६ प्रकृतिनी सत्ताने सर्व अपवर्तनाए अपवर्ती क्षीणकषायना काळसमान करे. स्वरूपनी अपेक्षाए निद्राद्विकने समयन्यून स्थितिवाळी करे. क्षीणकषायनो काळ अद्यापि पण अंतर्मुहूर्त होय. पछी ते १६ प्रकृतिना स्थितिघातादि बंध पडे, बीजी प्रकृतिओना प्रवर्ते. पछी ते १६

प्रकृतिमाथी निद्रा २ सिवाय १४ ने उदय उदीरणावडे वेदता समयाधिक आवलिका मात्र रहे त्यारे उदीरणा वध पडे पछी उदय मात्रवडे वेदे ते क्षीणकपायना द्विचरम समय सुधी द्विचरम समये वे निद्रानो सत्तामाथी क्षय थाय अने चरम समये वाकीनी १४ प्रकृतिनो सत्तामाथी क्षय थाय पछी अनतर समये केवळज्ञान पामे

सयोगी केवळी लोक अलोक सर्व सर्वात्मवडे परिपूर्ण देखे एवुं त्रण काळमा काइ पण नथी के जे केवळी भगवान न देखे आ सयोगी केवळी जघन्य अंतर्मुहूर्त अने उत्कृष्ट देशोनपूर्व कोटी विहार करे पछी जेने वेदनीयादि कर्म आयुकर्म करता अधिक होय ते तेने सरखा करवामाटे केवळी समुद्घात करे, वीजा न करे समुद्घात करीने पछी भवोपग्राही कर्मनो क्षय करवा माटे लेश्यातीत, अत्यत अप्रकप अने परम निर्जराना कारणभूत ध्यानने अंगीकार करवा माटे योगनिरोध करवा उपक्रम करे ते आ प्रमाणे —

प्रथम वादर काययोगवडे वादर मनयोगने रुधे, पछी वादर वाग्योगने रुधे, पछी सूक्ष्म काययोगवडे वादर काययोगने रुंधे पछी तेनावडे ज सूक्ष्म मनयोगने रुंधे, पछी सूक्ष्म वाग्योगने रुधे, छेवटे सूक्ष्म काययोगने रुधतां सूक्ष्मक्रियाअप्रतिपाती ध्याने आरोहण करे तेना सामर्थ्यथी वदनोदरादि विवर पूरीने त्रिभागोनवर्ती आत्मप्रदेशवाळो थाय ते ध्यानमा ( शुक्लध्यानना त्रीजा पायामा ) वर्तता स्थितिघातादिवडे आयु विनाना त्रण कर्मनी सयोगी अवस्थाना चरम समय सुधी अपवर्तना करे अने सयोगी अवस्थानी स्थितिजेटली स्थितिवाळा राखे तेमा पण जे प्रकृतिनो अयोगीमां उदय नथी ते एक समय उण स्थितिनी राखे सयोगी अवस्थाने चरम समये एक वेदनी, औदारिक तैजस कार्मण शरीर, सस्थान ६, पहेलु सघयण, वर्णादि चतुष्क, औदारिक अगोपाग, अगुरुलघु, उपघात, पराघात, उच्छ्वास, शुभाशुभविहायोगति, प्रत्येक, स्थिरास्थिर, शुभाशुभ, सुस्वरदु स्वर, अने निर्माण, आ ३० प्रकृतिना उदय उदीरणा व्यवच्छेद पामे तेने अनतर समये अयोगी केवळी थाय तेनी भवस्थपणामा अतर्मुहूर्तनी स्थिति छे ते अवस्थामा वर्तता भवोपग्राही कर्मोने खपाववा माटे व्युपरतक्रियअप्रतिपाति ध्यान ( शुक्लना चोथा पाया )मा आरोहण करे त्या स्थितिघातादि विना उदयवती प्रकृतिओने स्थिति क्षये अनुभवीने खपावे अने अनुदयवतीने उदयवतीमा स्तिवुक सक्रमे संक्रमावीने भेळी वेदे ए प्रमाणे अयोगीना द्विचरम समय सुधी वर्ते

गाथा ६८ द्विचरम समये ५७ प्रकृतिने सत्तामाथी खपावे

१० देवगति सहगत ( उदय विनानी ) १० प्रकृति आ प्रमाणे—

२ आहारक वैक्रिय शरीर, २ आहारक वैक्रिय वधन,

२ आहारक वैक्रिय संघातन, २ आहारक वैक्रिय अंगोपाग,

१ देवगति, १ देवानुपूर्वी.

४७ विपाक उदय विनानी

३ औदारिक तैजस कार्मण शरीर, ३ औदारिक तैजस कार्मण बंधन,

३ औदारिक तैजस कार्मण संघातन, १ औदारिक अंगोपांग.

| | | | |
|---|---|---|---|
| ६ संस्थान, | ६ संघयण, | ४ वर्णादि, | १ मनुजानुपूर्वी, |
| १ अगुरुलघु, | १ उपघात, | १ पराघात, | २ शुभाशुभगति, |
| १ प्रत्येक, | १ अपर्याप्त, | १ उच्छ्वास, | २ स्थिरास्थिर, |
| २ शुभाशुभ, | २ सुस्वरदुःस्वर, | १ दुर्भग, | १ अनादेय, |
| १ अयश, | १ निर्माण. | | |

आ ४५ नामनी, तथा १ नीचगोत्र, अने १ अनुदित वेदनी कुल ४७.

गाथा ६९–७०. पछी चरम समये बाकीनी ११ उदयवती खपावे.—

| | | | |
|---|---|---|---|
| १ मनुष्यायु, | १ उच्चगोत्र, | १ मनुजगति, | १ पंचेंद्रिय जाति, |
| १ त्रस, | १ बादर, | १ पर्याप्त, | १ आदेय, |
| १ सुभग, | १ यशःकीर्ति, | १ वेदनी. | |

आ ११ अने तीर्थंकर होय ते तीर्थंकर नाम सहित १२ खपावे.

गाथा ७१–७२. अहीं कोई आचार्य कहे छे के—मनुजानुपूर्वी चरम समये खपावे, ते प्रमाणे गणतां १२ नी १३ थाय. आ बाबतमां प्रथम मतवाळा आचार्य कहे छे के—उदयवती प्रकृति ज चरम समये खपावे, मनुजानुपूर्वी उदयवती नथी, तेथी ते द्विचरम समये खपे.

पछी सर्व प्रकृति बंध उदय उदीरणा सत्ताथी क्षय पामतां अनंतर समये कोश-बंधमोक्षलक्षण सहकारी स्वभाववडे जीव ते ज समये बीजा समयने स्पर्श्या विना सिद्धिस्थानमा जाय. अने जेटला आकाशप्रदेशने अहीं फरस्या होय तेटलाने ज फरसीने त्यां शाश्वतपणे रहे.

गाथा ७३. सिद्धिनुं सुख अवर्णनीय छे. तो पण कर्ताए टीकामां विस्तारथी वर्णव्युं छे.

१ ते सुख एकांत शुद्ध छे, रागद्वेष व्यामिश्रित न होवाथी तथा संपूर्ण छे तेथी.

२ जगतना सर्व सुखमां शिखरभूत छे.—जगतनां सुख आधि व्याधि सहित होवाथी. अहीं व्याधि के आधि कांई नथी.

३ निरूपम छे.—तेनी उपमा आपीए तेवुं सुख संसारमां छे ज नहीं.

४ स्वाभाविक छे.—संसारनां सुखनी जेम कृत्रिम नथी.

५ ते सुख अनंत छे.—कारण के तेने बाधा थई शके तेम नथी. बाधा करवाने समर्थ रागादि छे, ते क्षीण थया छे. वळी क्षीण थया छतां पण फरी उभा थाय, पण तेनां कारणभूत कर्मपुद्गलो पण नथी. पुद्गलो फरीने

कदाच वंधाय, पण तेना कारणभूत संक्लेशनो अभाव छे तेथी ते सुख शाश्वत ( अविनाशी ) छे

६ ज्ञान, दर्शन, चारित्र,—रत्नत्रयीना सारभूत छे–ज्ञानादि ज कर्मक्षयना कारणभूत होवाथी

आवा अप्रतिम सुखने तेओ अनुभवे छे

आ कर्मग्रंथमा वधोदयसत्तानो संवेध सामान्यथी कह्यो छे विशेष जाणवानी इच्छावाळाए दृष्टिवादथी जाणवो

आमा जे जे खामी होय ते वहुश्रुत गीतार्थोए पूरी करीने मारापर तथा शिष्यवर्गपर उपकार करवो

॥ इति शम् ॥

# ॥ ६२ मार्गणासु मोहनीयकर्मणो बन्धोदयसत्तास्थानानि तद्भंगाश्च पदानि पदवृन्दानि च ज्ञेयानि ॥

( षष्ठकर्मग्रन्थान्तर्वर्ती )

| | मार्गणासु | | वंधस्थानानि १० | भंगाः २१ | | उदयस्थानानि ९ | वंधनेआश्री उदय चोवीशी ४० | तद्भंगाः ९८३ | उदय-स्थान-पदानि २८८ | पदवृंदानि ६९४७ | | सत्तास्थानानि १५ |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १ | नरकगति | ३ | २२।२१।१७। | १२ | ५ | १०।९।८।७।६। | अष्टक २४ | १९२ | १९२ | १५३६ | ६ | २८।२७।२६।२४।२२।२१। |
| २ | तिर्यंचगति | ४ | २२।२१।१७।१३। | १४ | ६ | १०।९।८।७।६।५ | चोवीशी ३२ | ७६८ | २४४ | ५८५६ | ६ | २८।२७।२६।२४।२२।२१। |
| ३ | मनुष्यगति | १० | २२।२१।१७।१३।९।५।४।३। | २१ | ९ | १०।९।८।७।६।५।४।२।१ | चोवीशी ४० | ९८३ | २८८ | ६९४७ | १५ | २८।२७।२६।२४।२३।२२।२१।१३।१२।११।५।४।३। |
| | | | २।१। | | | | भांगा २३-१२ | ९९५ | २९० | ६९७१ | | २।१। |
| ४ | देवगति | ३ | २२।२१।१७ | १२ | ५ | १०।९।८।७।६। | षोडशक २४ | ३८४ | १९२ | ३०७२ | ६ | २८।२७।२६।२४।२२।२१। |
| ५ | एकेंद्रिय | २ | २२।२१। | १० | ४ | १०।९।८।७। | अष्टक ८ | ६४ | ६८ | ५४४ | ३ | २८।२७।२६। |
| ६ | द्वींद्रिय | २ | २२।२१। | १० | ४ | १०।९।८।७। | अष्टक ८ | ६४ | ६८ | ५४४ | ३ | २८।२७।२६। |
| ७ | त्रींद्रिय | २ | २२।२१। | १० | ४ | १०।९।८।७। | अष्टक ८ | ६४ | ६८ | ५४४ | ३ | २८।२७।२६। |
| ८ | चतुरिंद्रिय | २ | २२।२१। | १० | ४ | १०।९।८।७। | अष्टक ८ | ६४ | ६८ | ५४४ | ३ | २८।२७।२८। |
| ९ | पंचेंद्रिय | १० | २२।२१।१७।१३।९।५।४।३। | २१ | ९ | १०।९।८।७।६।५।४।२।१ | चोवीशी ४० | ९८३ | २८८ | ६९४७ | १५ | २८।२७।२६।२४।२३।२२।२१।१३।१२।११।५।४।३। |
| | | | २।१। | | | | भांगा २३-१२ | ९९५ | २९० | ६९७१ | | २।१। |
| १० | पृथ्वीकाय | २ | २२।२१। | १० | ४ | १०।९।८।७। | अष्टक ८ | ६४ | ६८ | ५४४ | ३ | २८।२७।२६। |
| ११ | अप्काय | २ | २२।२१। | १० | ४ | १०।९।८।७। | अष्टक ८ | ६४ | ६८ | ५४४ | ३ | २८।२७।२६। |
| १२ | तेजस्काय | १ | २२। | ६ | ३ | १०।९।८। | अष्टक ४ | ३२ | ३६ | २८८ | ३ | २८।२७।२६। |
| १३ | वायुकाय | १ | २२। | ६ | ३ | १०।९।८। | अष्टक ४ | ३२ | ३६ | २८८ | ३ | २८।२७।२६। |
| १४ | वनस्पतिकाय | २ | २२।२१। | १० | ४ | १०।९।८।७। | अष्टक ८ | ६४ | ६८ | ५४४ | ३ | २८।२७।२६। |
| १५ | त्रसकाय | १० | २२।२१।१७।१३।९।५।४।३। | २१ | ९ | १०।९।८।७।६।५।४।२।१ | चोवीशी ४० | ९८३ | २८८ | ६९४७ | १५ | २८।२७।२६।२४।२३।२२।२१।१३।१२।११।५।४।३। |
| | | | २।१। | | | | भांगा २३-१२ | ९९५ | २९० | ६९७१ | | २।१। |
| १६ | मनोयोगी | १० | २२।२१।१७।१३।९।५।४।३। | २१ | ९ | १०।९।८।७।६।५।४।२।१ | चोवीशी ४० | ९८३ | २८८ | ६९४७ | १५ | २८।२७।२६।२४।२३।२२।२१।१३।१२।११।५।४।३। |
| | | | २।१। | | | | भांगा २३ | ९९५ | २९० | ६९७१ | | २।१। |
| १७ | वचनयोगी | १० | २२।२१।१७।१३।९।५।४।३। | २१ | ९ | १०।९।८।७।६।५।४।२।१ | चोवीशी ४० | ९८३ | २८८ | ६९४७ | १५ | २८।२७।२६।२४।२३।२२।२१।१३।१२।११।५।४।३। |
| | | | २।१। | | | | भांगा २३-१२ | ९९५ | २९० | ६९७१ | | २।१। |

| | | | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १८ | काययोगी | १० | २२।२१।१७।१३।९।५।४।३।२। ११ | २१ | ९ | १०।९।८।७।६।५।४।२। ११ | चोवीशी ४० भांगा २३ १२ | ९८३ ९९५ | २८८ २९० | ६९४७ ६९७१ | १५ | २८।२७।२६।२४।२३।२२।२१।१३।१२।११।५।४।३। २।१। |
| १९ | पुरुषवेदी | ६ | २२।२१।१७।१३।९।५। | १७ | ८ | १०।९।८।७।६।५।४।२। | अष्टक ४० भांगा ४ | ३२४ | २८८ | २३१२ | ११ | २८।२७।२६।२४।२३।२२।२१।१३।१२।११।५। |
| २० | स्त्रीवेदी | ६ | २२।२१।१७।१३।९।५। | १७ | ८ | १०।९।८।७।६।५।४।२। | अष्टक ४० भांगा ४ | ३२४ | २८८ | २३१२ | ११ | २८।२७।२६।२४।२३।२२।२१।१३।१२।११।५। |
| २१ | नपुंसकवेदी | ६ | २२।२१।१७।१३।९।५। | १७ | ८ | १०।९।८।७।६।५।४।२। | अष्टक ४० भागा ४ | ३२४ | २८८ | २३१२ | ११ | २८।२७।२६।२४।२३।२२।२१।१३।१२।११।५। |
| २२ | क्रोधकषायी | ७ | २२।२१।१७।१३।९।५।४। | १८ | ९ | १०।९।८।७।६।५।४।२। ११ | छट ४० भागा ४ | २४४ | २८८ | १७३५ | ११ | २८।२७।२६।२४।२३।२२।२१।१३।१२।११।५। |
| २३ | मानकषायी | ८ | २२।२१।१७।१३।९।५।४।३। | १९ | ९ | १०।९।८।७।६।५।४।२। ११ | छट ४० भांगा ५ | २४५ | २८८ | १७३६ | १३ | २८।२७।२६।२४।२३।२२।२१।१३।१२।११।५।४।३। |
| २४ | मायाकषायी | ९ | २२।२१।१७।१३।९।५।४।३।२। | २० | ९ | १०।९।८।७।६।५।४।२। ११ | छट ४० भांगा ६ | २४६ | २८८ | १७३७ | १४ | २८।२७।२६।२४।२३।२२।२१।१३।१२।११।५।४। ३।२। |
| २५ | लोभकषायी | १० | २२।२१।१७।१३।९।५।४।३।२। ११ | २१ | ९ | १०।९।८।७।६।५।४।२। ११ | छट ४० भांगा ७ | २४७ | २८८ | १७३८ | १५ | २८।२७।२६।२४।२३।२२।२१।१३।१२।११।५।४।३। २।१। |
| २६ | मतिज्ञानी | ८ | १७।१३।९।५।४।३।२।१। | ११ | ८ | ९।८।७।६।५।४।२।१। | चोवीशी २४ भांगा २३ | ५९९ | १५६ | ३७७९ | १३ | २८।२४।२३।२२।२१।१३।१२।११।५।४।३।२।१ |
| २७ | श्रुतज्ञानी | ८ | १७।१३।९।५।४।३।२।१। | ११ | ८ | ९।८।७।६।५।४।२।१। | चोवीशी २४ भांगा २३ | ५९९ | १५६ | ३७७९ | १३ | २८।२४।२३।२२।२१।१३।१२।११।५।४।३।२।१। |
| २८ | अवधिज्ञानी | ८ | १७।१३।९।५।४।३।२।१। | ११ | ८ | ९।८।७।६।५।४।२।१। | चोवीशी २४ भागा २३ | ५९९ | १५६ | ३७७९ | १३ | २८।२४।२३।२२।२१।१३।१२।११।५।४।३।२।१। |
| २९ | मन पर्यवज्ञानी | ६ | ९।५।४।३।२।१। | ७ | ६ | ७।६।५।४।२।१। | चोवीशी ८ भागा २३ | २९५ | ४४ | १०९१ | १३ | २८।२४।२३।२२।२१।१३।१२।११।५।४।३।२।१। |
| ३० | केवलज्ञानी | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० |
| ३१ | मतिअज्ञानी | ३ | २२।२१।१७। | १२ | ४ | १०।९।८।७। | चोवीशी १६ | ३८४ | १३२ | ३१०८ | ४ | २८।२७।२६।२४। |
| ३२ | श्रुतअज्ञानी | ३ | २२।२१।१७। | १२ | ४ | १०।९।८।७। | चोवीशी १६ | ३८४ | १३२ | ३१६८ | ४ | २८।२७।२६।२४। |
| ३३ | विभंगज्ञानी | ३ | २२।२१।१७। | १२ | ४ | १०।९।८।७। | चोवीशी १६ | ३८४ | १३२ | ३१६८ | ८ | २८।२७।२६।२४। |
| ३४ | सामायिक | ६ | ९।५।४।३।२।१। | ७ | ६ | ७।६।५।४।२।१। | चोवीशी ८ भागा २२ | २९४ | ४४ | १०९० | १३ | २८।२४।२३।२२।२१।१३।१२।११।५।४।३।२।१। |

| | | | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ३५ | छेदोपस्थापनीय | ६ | ९।५।४।३।२।१। | ७ | ६ | ७।६।५।४।२।१। | चोवीशी ८ भांगा २२ | २१४ | ४४ | १०९० | १३ | २८।२४।२३।२२।२१।१३।१२।११।५।४।३।५।१। |
| ३६ | परिहारविशुद्धि | १ | ९ | २ | ४ | ७।६।५।४। | षोडशक ८ | १२८ | ४४ | ७०४ | ५ | २८।२४।२३।२२।२१। |
| ३७ | सूक्ष्मसंपराय | ० | ० | ८ | १ | १ | ० | १ | ० | १ | ४ | २८।२४।२१।१। |
| ३८ | यथाख्यात | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ३ | २८।२४।२१। |
| ३९ | देशविरति | १ | १३ | २ | ४ | ८।७।६।५। | चोवीशी ८ | १९२ | ५२ | १२४८ | ५ | २८।२४।२३।२२।२१। |
| ४० | अविरति | ३ | २२।२१।१७। | १२ | ५ | १०।९।८।७।६। | चोवीशी २४ | ५७६ | १९२ | ४६०८ | ७ | २८।२७।२६।२४।२३।२२।२१। |
| ४१ | चक्षुर्दर्शन | १० | २२।२१।१७।१३।९।५।४।३।२। १। | २१ | ९ | १०।९।८।७।६।५।४।२। १। | चोवीशी ४० भांगा २३-१२ | ९८३ ९९५ | २८८ २९० | ६९४७ ६९७१ | १५ | २८।२७।२६।२४।२३।२२।२१।१३।१२।११।५।४।३। २।१। |
| ४२ | अचक्षुर्दर्शन | १० | २२।२१।१७।१३।९।५।४।३।२। १। | २१ | ९ | १०।९।८।७।६।५।४।२। १। | चोवीशी ४० भांगा २३-१२ | ९८३ ९९५ | २८८ २९० | ६९४७ ६९७१ | १५ | २८।२७।२६।२४।२३।२२।२१।१३।१२।११।५।४।३। २।१। |
| ४३ | अवधिदर्शन | ८ | १७।१३।९।५।४।३।२।१। | ११ | ८ | ९।८।७।६।५।४।२।१। | चोवीशी २४ भांगा २३-१२ | ५९९ | १५६ | ३७७९ | १३ | २८।२४।२३।२२।२१।१३।१२।११।५।४।३।२।१। |
| ४४ | केवळदर्शन | १० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० |
| ४५ | कृष्णलेश्या | ५ | २२।२१।१७।१३।९। | १६ | ७ | १०।९।८।७।६।५।४। | चोवीशी ४० | ९६० | २८८ | ६९१२ | ७ | २८।२७।२६।२४।२३।२२।२१। |
| ४६ | नीललेश्या | ५ | २२।२१।१७।१३।९। | १६ | ७ | १०।९।८।७।६।५।४। | चोवीशी ४० | ९६० | २८८ | ६९१२ | ७ | २८।२७।२६।२४।२३।२२।२१। |
| ४७ | कापोतलेश्या | ५ | २२।२१।१७।१३।९। | १६ | ७ | १०।९।८।७।६।५।४। | चोवीशी ४० | ९६० | २८८ | ६९१२ | ७ | २८।२७।२६।२४।२३।२२।२१। |
| ४८ | तेजोलेश्या | ५ | २२।२१।१७।१३।९। | १६ | ७ | १०।९।८।७।६।५।४। | चोवीशी ४० | ९६० | २८८ | ६९१२ | ७ | २८।२७।२६।२४।२३।२२।२१। |
| ४९ | पद्मलेश्या | ५ | २२।२१।१७।१३।९। | १६ | ७ | १०।९।८।७।६।५।४। | चोवीशी ४० | ९६० | २८८ | ६९१२ | ७ | २८।२७।२६।२४।२३।२२।२१। |
| ५० | शुक्ललेश्या | १० | २२।२१।१७।१३।९।५।४।३।२। १। | २१ | ९ | १०।९।८।७।६।५।४।२। १। | चोवीशी ४० भांगा २३-१२ | ९८३ ९९५ | २८८ २९० | ६९४७ ६९७१ | १५ | २८।२७।२६।२४।२३।२२।२१।१३।१२।११।५।४।३। ४।१। |
| ५१ | भवसिद्धिक | १० | २२।२१।१७।१३।९।५।४।३।२। १। | २१ | ९ | १०।९।८।७।६।५।४।२। १। | चोवीशी ४० भांगा २३-१२ | ९८३ ९९५ | २८८ २९० | ६९४७ ६९७१ | १५ | २८।२७।२६।२४।२३।२२।२१।१३।१२।११।५।४।३। २।१। |
| ५२ | अभवसिद्धिक | १ | २२ | ६ | ३ | १०।९।८। | चोवीशी ४ | ९६ | ३६ | ८६४ | १ | २६। |
| ५३ | औपशमिकसम्यक्त्व | ८ | १७।१३।९।५।४।३।२।१। | ११ | ७ | ८।७।६।५।४।२।१। | चोवीशी १२ भांगा २३-१२ | ३११ | ७२ | १७६३ | २ | २८।२४। |
| ५४ | क्षायिकसम्यक्त्व | ८ | १७।१३।९।५।४।३।२।१। | ११ | ७ | ८।७।६।५।४।२।१। | चोवीशी १२ भांगा २३-१२ | ३११ | ७२ | १७६३ | ९ | २१।१३।१२।११।५।४।३।२।१। |
| ५५ | क्षायोपशमसम्यक्त्व | ३ | १७।१३।९। | ६ | ६ | ९।८।७।६।५।४। | चोवीशी १२ | २८८ | ८४ | २०१६ | ४ | २८।२४।२३।२२। |
| ५६ | मिश्रदृष्टि | १ | १७ | २ | ३ | ९।८।७। | चोवीशी ४ | ९६ | ३२ | ७६८ | ३ | २८।२७।२४। |

| | | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ५७ | सास्वादनसम्यक्त्व | १ | २१ | ४ | ३ | ९।८।७ | चोवीशी ४ | ९६ | ३२ | ७६८ | १ २८। |
| ५८ | मिथ्यादृष्टि | १ | २२ | ६ | ४ | १०।९।८।७ | चोवीशी ८ | १९२ | ६८ | १६३२ | ३ २८।२७।२६। |
| ५९ | सज्ञी | १० | २२।२१।१७।१३।९।५।४।३।२।१ | २१ | ९ | १०।९।८।७।६।५।४।२।१ | चोवीशी ४० भागा २३-१२ | ९८३ ९९५ | २८८ २९० | ६९४७ ६९७१ | १५ २८।२७।२६।२४।२३।२२।२१।१३।१२।११।५।४।३।२।१। |
| ६० | असंज्ञी | २ | २२।२१। | १० | ४ | १०।९।८।७ | अष्टक ८ | ६४ | ६८ | ५४४ | ३ २८।२७।२६। |
| ६१ | आहारी | १० | २२।२१।१७।१३।९।५।४।३।२।१ | २१ | ९ | १०।९।८।७।६।५।४।२।१ | चोवीशी ४० भागा २४ १२ | ९८३ ९९० | २८८ २९० | ६९४७ ६९७१ | १५ २८।२७।२६।२४।२३।२२।२१।१३।१२।११।५।४।३।२।१। |
| ६२ | अनाहारी | ३ | २२।२१।१७ | १२ | ५ | १०।९।८।७।६। | चोवीशी १६ | ३८४ | १२८ | ३०७२ | ६ २८।२७।२६।२४।२२।२१। |

## ६२ मार्गणागतगुणस्थानेषु मोहनीयकर्मणो बन्धोदयस्थानानि तद्भंगाश्च पदानि पदवृन्दानि च लिख्यन्ते ॥

| मार्गणा | | बंधस्थान | बंधभांगा | उदयस्थान | उदय चोवीशी | कुल | उदयभंग | कुल | उदयपद | कुल | उदयपदवृंद | कुल |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १ नरकगति | | ३ | १२ | ५ | | २४ अ | | १९२ | | १९२ | | १५३६ |
| | मिथ्यात्व | २२ | ६ | ७।८।९।१० | १।३।३।१ अष्टक | ८ | ८।२४।२४।८ | ६४ | ७।२४।२७।१० | ६८ | ५६।१९२।२१६।८० | ५४४ |
| | सास्वादन | २१ | ४ | ७।८।९ | १।२।१ अ | ४ | ८।१६।८ | ३२ | ७।१६।९ | ३२ | ५६।१२८।७२ | २५६ |
| | मिश्र | १७ | २ | ७।८।९ | १।२।१ अ | ४ | ८।१६।८ | ३२ | ७।१६।९ | ३२ | ५६।१२८।७२ | २५६ |
| | अविरत | १७ | | ६।७।८।९ | १।३।३।१ अ | ८ | ८।२४।२४।८ | ६४ | ६।२१।२४।९ | ६० | ४८।१६८।१९२।७२ | ४८० |
| २ तिर्यंचगति | | ४ | १४ | ६ | | ३२ | | ७६८ | | २४४ | | ५८५६ |
| | मिथ्यात्व | २२ | ६ | ७।८।९।१० | १।३।३।१ चोवीशी | ८ चो | २४।७२।७२।२४ | १९२ | ७।२४।२७।१० | ६८ | १६८।५७६।६४८।२४० | १६३२ |
| | सास्वादन | २१ | ४ | ७।८।९ | १।२।१ चो | ४ | २४।४८।२४ | ९६ | ७।१६।९ | ३२ | १६८।३८४।२१६ | ७६८ |
| | मिश्र | १७ | २ | ७।८।९ | १।२।१ चो | ४ | २४।४८।२४ | ९६ | ७।१६।९ | ३२ | १६८।३८४।२१६ | ७६८ |
| | अविरत | १७ | | ६।७।८।९ | १।३।३।१ चो | ८ | २४।७२।७२।२४ | १९२ | ६।२१।२४।९ | ६० | १४४।५०४।५७६।२१६ | १४४० |
| | देशविरति | १३ | २ | ५।६।७।८ | १।३।३।१ चो | ८ | २४।७२।७२।२४ | १९२ | ५।१८।२१।८ | ५२ | १२०।४३२।५०४।१९२ | १२४८ |
| ३ मनुष्यगति | | १० | २१ | ९ | | ४० चो २३ भा | | ९८३ क | | २८८ ख | | ६९४७ ग |

क चारना बंधमां असंक्रमणकाळना चार उदय भांगा अहीं गणेला छे तेमां संक्रमण काळना चार भांगा बीजा उमेरीए त्यारे उदयभांगा सर्व मळी ९९५ थाय

ख मतांतरे बेना उदयनी एक चोवीशीना बे पद नांखीए त्यारे २९० पद थाय छे

ग मतांतरे बेना उदयनी एक चोवीशी नाखीए त्यारे ६९७१ थाय छे

| | | | | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | | मिथ्यात्व | २२ | ६ | ७।८।९।१० | १।३।३।१ चो. | ८ चो. | २४।७२।७२।२४ | १९२ | ७।२४।२७।१० | ६८ | १६८।५७६।६४८।२४० | १६३२ |
| | | साखादन | २१ | ४ | ७।८।९ | १।२।१ चो. | ४ | २४।४८।२४ | ९६ | ७।१६।९ | ३२ | १६८।३८४।२१६ | ७६८ |
| | | मिश्र | १७ | २ | ७।८।९ | १।२।१ | ४ | २४।४८।२४ | ९६ | ७।१६।९ | ३२ | १६८।३८४।२१६ | ७६८ |
| | | अविरत | १७ | | ६।७।८।९ | १।३।३।१ | ८ | २४।७२।७२।२४ | १९२ | ६।२१।२४।९ | ६० | १४४।५०४।५७६।२१६ | १४४० |
| | | देशविरत | १३ | २ | ५।६।७।८ | १।३।३।१ | ८ | २४।७२।७२।२४ | १९२ | ५।१८।२१।८ | ५२ | १२०।४३२।५०४।१९२ | १२४८ |
| | | प्रमत्त-अ-प्रमत्त-नि-वृत्ति | ९ | २ | ४।५।६।७ | १।३।३।१ | ८ | २४।७२।७२।२४ | १९२ | ४।१५।१८।७ | ४४ | ९६।३६०।४३२।१६८ | १०५६ |
| | | अनिवृत्ति | ५ | १ | २ | १२ भांगा | १२ भां. | १२ | १२ | | | २४ | २४ |
| | | | ४ | १ | १ | ४ भां. | ४ | ४ | ४ | | | ४ | ४ |
| | | | ३ | १ | १ | ३ भां. | ३ | ३ | ३ | | | ३ | ३ |
| | | | २ | १ | १ | २ भां. | २ | २ | २ | | | २ | २ |
| | | | १ | १ | १ | १ भां. | १ | १ | १ | | | १ | १ |
| | | | ० | ० | १ | १ भां. | १ | १ | १ | | | १ | १ |
| ४ | देवगति | | ३ | १२ | ५ | | २४ षो. | | ३८४ | | १९२ | | ३०७२ |
| | | मिथ्यात्व | २२ | ६ | ७।८।९।१० | १।३।३।१ षोडश | ८ | १६।४८।४८।१६ | १२८ | ७।२४।२७।१० | ६८ | ११२।३८४।४३२।१६० | १०८८ |
| | | साखादन | २१ | ४ | ७।८।९ | १।२।१ | ४ | १६।३२।१६ | ६४ | ७।१६।९ | ३२ | ११२।२५६।१४४ | ५१२ |
| | | मिश्र | १७ | २ | ७।८।९ | १।२।१ | ४ | १६।३२।१६ | ६४ | ७।१६।९ | ३२ | ११२।२५६।१४४ | ५१२ |
| | | अविरत | १७ | | ६।७।८।९ | १।३।३।१ | ८ | १६।४८।४८।१६ | १२८ | ६।२१।२४।९ | ६० | ९६।३३६।३८४।१४४ | ९६० |
| ५ | एकेंद्रिय | | २ | १० | ४ | | ८ अ. | | ६४ | | ६८ | | ५४४ |
| | | मिथ्यात्व | २२ क. | ६ | ८।९।१० | १।२।१ अ. | ४ | ८।१६।८ | ३२ | ८।१८।१० | ३६ | ६४।१४४।८० | २८८ |
| | | साखादन | २१ | ४ | ७।८।९ | १।२।१ | ४ | ८।१६।८ | ३२ | ७।१६।९ | ३२ | ५६।१२८।७२ | २५६ |
| ६-८ | विकलेंद्रिय | एकेंद्रियप्रमाणे | | | | | | | | | | | |
| ९ | पंचेंद्रिय | मनुष्यगतिप्रमाणे | | | | | | | | | | | |
| १० | पृथ्वीकाय | एकेंद्रियप्रमाणे | | | | | | | | | | | |
| ११ | अप्काय | एकेंद्रियप्रमाणे | | | | | | | | | | | |
| १२ | तेजस्काय | | १ | २ | ३ | | ४ अष्टक | | ३२ | | ३६ | | २८८ |
| | | मिथ्यात्व | २२ | २ | ८।९।१० | १।२।१ अ. | ४ | ८।१६।८ | ३२ | ८।१८।१० | ३६ | ६४।१४४।८० | २८८ |
| १३ | वायुकाय | तेजस्कायप्रमाणे | | | | | | | | | | | |
| १४ | वनस्पतिकाय | एकेंद्रियप्रमाणे | | | | | | | | | | | |

क. २२ ना बंधस्थानमां सातनुं उदयस्थानक छट्टा कर्मग्रंथमा ८४५ मे पाने कहेलुं छे. परंतु एकेंद्रियने ते उदयस्थान असंभवित छे. कारण के ते अनंतानुबंधि विनानुं तथा श्रेणिथी पडताने होय छे. अने एकेंद्रियने श्रेणि नथी. तत्त्व केवळी जाणे.

| | | | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १५ त्रसकाय | मनुष्यगतिप्रमाणे | | | | | | | | | | | |
| १६ मनयोग | मनुष्यगतिप्रमाणे | | | | | | | | | | | |
| १७ वचनयोग | मनुष्यगतिप्रमाणे | | | | | | | | | | | |
| १८ काययोग | ,, | | | | | | | | | | | |
| १९ पुरुषवेद<br>२० स्त्रीवेद-<br>२१ नपुसकवेद | | ६ | १७ | ८ | | ४० अ<br>४ मां | | ३२४ | | २८८ | | २३९२ |
| | मिथ्यात्व | २२ | ६ | ७।८।९।१० | १।२।२।१ अ | ८ | ८।२४।२४।८ | ६४ | ७।२४।२७।१० | ६८ | ५६।१९२।२१६।८० | ५४४ |
| | साखादन | २१ | ४ | ७।८।९ | १।२।१ | ४ | ८।१६।८ | ३२ | ७।१६।९ | ३२ | ५६।१२८।७२ | २५६ |
| | मिश्र अ<br>विरत | १७ | २ | ६।७।८।९ | १।४।५।२ | १२ | ८।३२।४०।१६ | ९६ | ६।२८।४०।१८ | ९२ | ४८।२२४।३२०।१४४ | ७३६ |
| | देशविरत | १३ | २ | ५।६।७।८ | १।२।२।१ | ८ | ८।२४।२४।८ | ६४ | ५।१८।२१।८ | ५२ | ४०।१४४।१६८।६४ | ४१६ |
| | प्रमत्त अ<br>प्रमत्त नि<br>वृत्ति | ९ | २ | ४।५।६।७ | १।२।२।१ | ८ | ८।२४।२४।८ | ६४ | ४।१५।१८।७ | ४४ | ३२।१२०।१४४।५६ | ३५२ |
| | अनिवृत्ति | ५ | १ | २ | भांगा ४ | भांगा ४ | ४ | ४ | | | ८ | ८ |
| २२ क्रोध | | ७ | १८ | ९ | | ४० पष्टक<br>४ भा | | २४४ | | २८८ | | १७३५ |
| | मिथ्यात्व | २२ | ६ | ७।८।९।१० | १।२।२।१ पष्टक | ८ | ६।१८।१८।६ | ४८ | ७।२४।२७।१० | ६८ | ४२।१४४।१६२।६० | ४०८ |
| | साखादन | २१ | ४ | ७।८।९ | १।२।१ | ४ | ६।१२।६ | २४ | ७।१६।९ | ३२ | ४२।९६।५४ | १९२ |
| | मिश्र अ<br>विरत | १७ | २ | ६।७।८।९ | १।४।५।२ | १२ | ६।२४।३०।१२ | ७२ | ६।२८।४०।१८ | ९२ | ३६।१६८।२४०।१०८ | ५१२ |
| | देशविरत | १३ | २ | ५।६।७।८ | १।२।२।१ | ८ | ६।१८।१८।६ | ४८ | ५।१८।२१।८ | ५२ | ३०।१०८।१२६।४८ | ३१२ |
| | प्रमत्त अ | | | ४।५।६।७ | १।२।२।१ | ८ | ६।१८।१८।६ | ४८ | ४।१५।१८।७ | ४४ | २४।९०।१०८।४२ | २६४ |
| | प्रमत्त नि-<br>वृत्ति | ९ | २ | | | | | | | | | |
| | अनिवृत्ति | ५ | १ | २ | ३ भांगा | ३ भां | ३ | ३ | ० | | ६ | ६ |
| | अनिवृत्ति | ४ | १ | १ | १ भां | १ भां | १ | १ | ० | | १ | १ |
| २३ मान | क्रोधमार्गणाप्रमाणे विशेष ए के अनिवृत्ति गुणस्थानना त्रीजा भागे त्रणनु बंधस्थान होय तेनो भांगो एक उदयस्थान एक तेनो भांगो एक उदयभंग एक, उदयपद एक अने पदवृंद एक होय छे तेथी करीने कुल बंधस्थान विगेरे नीचेप्रमाणे जाणवु | | | | | | | | | | | |
| | | ८ | १९ | ९ | | ४० प<br>५ भां | | २४५ | | २८८ | | १७३६ |

| | | | | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| २४ | माया | मानानी मार्गणाप्रमाणे जाणवुं. विशेष ए के अनिवृत्ति गुणस्थानने चोथे भागे बेनुं बंधस्थानक होय. तेमां उपरप्रमाणे एक एक भांगो, उदयस्थान विगेरे वधारवा तेथी करीने कुल बंधस्थानक विगेरे नीचेप्रमाणे जाणवुं. | | | | | | | | | | | |
| | | | ९ | २० | ९ | | ४० प. ६ भां. | | २४६ | | २८८ | | १७३७ |
| २५ | लोभ | मायानी मार्गणाप्रमाणे. विशेष ए के अनिवृत्ति गुणस्थानकने पांचमे भागे एकनुं बंधस्थान होय. तेमां उपर प्रमाणे एक एक भांगो, उदयस्थान विगेरे वधारवां नीचे प्रमाणे कुल बंध स्थानक विगेरे जाणवा. | | | | | | | | | | | |
| | | | १० | २१ | ९ | | ४० प. ७ भां. | | २४७ | | २८८ | | १७३८ |
| २६ | मतिज्ञान | | ८ | ११ | ८ | | २४ नो. २३ भां. | | ३५९ | | ३५६ | | ३५७३ |
| | | अविरत | १७ | २ | ६।७।८।९ | १।३।३।१ नोीनी | ८ | २४।७२।७२।२४ | १९२ | ६।२१।२४।९ | ६० | १४४।५०४।५७६।२१६ | १४४० |
| | | देशविरत | १३ | २ | ५।६।७।८ | १।३।३।१ | ८ | २४।७२।७२।२४ | १९२ | ५।१८।२१।८ | ५२ | १२०।४३२।५०४।१९२ | १२४८ |
| | | प्रमत्त, अप्रमत्त, निवृत्ति | ९ | २ | ४।५।६।७ | १।३।३।१ | ८ | २४।७२।७२।२४ | १९२ | ४।१५।१८।७ | ४४ | ९६।३६०।४३२।१६८ | १०५६ |
| | | अनिवृत्ति भाग १ | ५ | १ | २ | १२ भांगा | १२ | १२ | १२ | | | २४ | २४ |
| | | २ | ४ | १ | १ | ४ | ४ | ४ | ४ | | | ४ | ४ |
| | | ३ | ३ | १ | १ | ३ | ३ | ३ | ३ | | | ३ | ३ |
| | | ४ | २ | १ | १ | २ | २ | २ | २ | | | २ | २ |
| | | ५ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | | | १ | १ |
| | | सूक्ष्मसंपराय | ० | ० | १ | १ | १ | १ | १ | | | १ | १ |
| २७ | श्रुतज्ञान | मतिज्ञानप्रमाणे. | | | | | | | | | | | |
| २८ | अवधिज्ञान | मतिज्ञाननी मार्गणाप्रमाणे | | | | | | | | | | | |
| २९ | मनःपर्यवज्ञान | | ६ | ७ | ६ | | ८ नो. २३ भां. | | २१५ | | ४४ | | १०९१ |
| | | प्रमत्त, अप्रमत्त, निवृत्ति | ९ | २ | ४।५।६।७ | १।३।३।१ नो. | ८ | २४।७२।७२।२४ | १९२ | ४।१५।१८।७ | ४४ | ९६।३६०।४३२।१६८ | १०५६ |

| | | | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | अनिवृत्ति भा १ | ५ | १ | २ | १२भा | १२ | १२ | १२ | | | २४ | २४ |
| | २ | ४ | १ | १ | ४ | ४ | ४ | ४ | | | ४ | ४ |
| | ३ | ३ | १ | १ | ३ | ३ | ३ | ३ | | | ३ | ३ |
| | ४ | २ | १ | १ | २ | २ | २ | २ | | | २ | २ |
| | ५ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | | | १ | १ |
| | अवध | ० | ० | १ | १ | ० | ० | १ | | | १ | १ |
| ३० केवलज्ञान | | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | | | ० | ० |
| ३३ मत्यज्ञान, श्रुताज्ञान, विभंगज्ञान | | २ | १२ | | | १६ चो | | ३८४ | | १३२ | | ३१६८ |
| | मिथ्यात्व | २२ | ६ | ७।८।९।१० | १।३।३।१ चो | ८ | २४।७।७।२४ | १९२ | ७।२४।२७।१० | ६८ | १६८।५७६।६४८।२४० | १६३२ |
| | सासादन | २१ | ४ | ७।८।९ | १।२।१ | ४ | २४।४८।२४ | ९६ | ७।१६।९ | ३२ | १६८।३८४।२१६ | ७६८ |
| | मिश्र | १७ | २ | ७।८।९ | १।२।१ | ४ | २४।४८।२४ | ९६ | ७।१६।९ | ३२ | १६८।३८४।२१६ | ७६८ |
| ३५ सामायिक चारित्र, छेदोपस्थापनीय चारित्र | | ६ | ७ | ६ | | ८ चो १२ भा | | २१४ | | ४४ | | १०९० |
| | प्रमत्त, अप्रमत्त, निवृत्ति, अनिवृत्ति | ९ | २ | ४।५।६।७ | १।३।३।१ चो | ८ चो | २४।७।७।२४ | १९२ | ४।१५।१८।७ | ४४ | ९६।३६०।४३२।१६८ | १०५६ |
| | भा १ | ५ | १ | २ | १२ भागा | १२ भा | १२ | १२ | | | २४ | २४ |
| | २ | ४ | १ | १ | ४ | ४ | ४ | ४ | | | ४ | ४ |
| | ३ | ३ | १ | १ | ३ | ३ | ३ | ३ | | | ३ | ३ |
| | ४ | २ | १ | १ | २ | २ | २ | २ | | | २ | २ |
| | ५ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | | | १ | १ |
| ३६ परिहारविशुद्धि | | १ | २ | | | ८ चो | | १२८ | | ४४ | | ७०४ |
| | प्रमत्त, अप्रमत्त | ९ | २ | ४।५।६।७ | १।३।३।१ चो | ८ | १६।४८।४८।१६ | १२८ | ४।१५।१८।७ | ४४ | ६४।२४०।२८८।११२ | ७०४ |
| ३७ सूक्ष्मसांपराय | | ० | ० | १ | ० | ० | १ | १ | ० | ० | १ | १ |

| | | | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | यथाख्यात | | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० |
| ३८ | देशविरति | | १ | २ | | | ८ चो. | | १९२ | | ५२ | | १२४८ |
| | | देशविरत | १३ | २ | ५।६।७।८ | १।३।३।१ चो. | ८ | २४।७२।७२।२४ | १९२ | ५।१८।२।१८ | ५२ | १२०।४३२।५०४।१९२ | १२४८ |
| ३९ | अविरति | | ३ | १२ | ५ | | २४ चो. | | ५७६ | | १९२ | | ४६०८ |
| ४० | | मिथ्यात्व | २२ | ६ | ७।८।९।१० | १।३।३।१ चो. | ८ | २४।७२।७२।२४ | १९२ | ७।२४।२७।१० | ६८ | १६८।५७६।६४८।२४० | १६३२ |
| | | सास्वादन | २१ | ४ | ७।८।९ | १।२।१ | ४ | २४।४८।२४ | ९६ | ७।१६।९ | ३२ | १६८।३८४।२१६ | ७६८ |
| ० | | मिश्र | १७ | २ | ७।८।९ | १।२।१ | ४ | २४।४८।२४ | ९६ | ७।१६।९ | ३२ | १६८।३८४।२१६ | ७६८ |
| | | अविरत | १७ | | ६।७।८।९ | १।३।३।१ | ८ | २४।७२।७२।२४ | १९२ | ६।२१।२४।९ | ६० | १४४।५०४।५७६।२१६ | १४४० |
| ४२ | चक्षुदर्शन, अचक्षुदर्शन | मनुष्यगतिप्रमाणे | | | | | | | | | | | |
| ४३ | अवधिदर्शन | अवधिज्ञानप्रमाणे | | | | | | | | | | | |
| ४४ | केवळदर्शन | | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० |
| ४९ | कृष्ण, नील, कापोत, तेजो, पद्म-लेश्या | | ५ | १६ | ७ | | ४० चो. | | ९६० | | २८८ | | ६९१२ |
| | | मिथ्यात्व | २२ | ६ | ७।८।९।१० चो. | १।३।३।१ | ८ | २४।७२।७२।२४ | १९२ | ७।२४।२७।१० | ६८ | १६८।५७६।६४८।२४० | १६३२ |
| | | सास्वादन | २१ | ४ | ७।८।९ | १।२।१ | ४ | २४।४८।२४ | ९६ | ७।१६।९ | ३२ | १६८।३८४।२१६ | ७६८ |
| | | मिश्र | १७ | २ | ७।८।९ | १।२।१ | ४ | २४।४८।२४ | ९६ | ७।१६।९ | ३२ | १६८।३८४।२१६ | ७६८ |
| | | अविरत | १७ | | ६।७।८।९ | १।३।३।१ | ८ | २४।७२।७२।२४ | १९२ | ६।२१।२४।९ | ६० | १४४।५०४।५७६।२१६ | १४४० |
| | | देशविरत | १३ | २ | ५।६।७।८ | १।३।३।१ | ८ | २४।७२।७२।२४ | १९२ | ५।१८।२१।८ | ५२ | १२०।४३२।५०४।१९२ | १२४८ |
| | | प्रमत्त | ९ | २ | ४।५।६।७ | १।३।३।१ | ८ | २४।७२।७२।२४ | १९२ | ४।१५।२८।७ | ४४ | ९६।३६०।४३२।१६८ | १०५६ |
| ५१ | शुक्ललेश्या, भव्य | मनुष्यगतिप्रमाणे | | | | | | | | | | | |
| ५२ | अभव्य | | १ | ६ | ३ | | ४ चो. | | ९६ | | ३६ | | ८६४ |
| | | मिथ्यात्व | २२ | ६ | ८।९।१० | १।२।१ | ४ | २४।४८।२४ | ९६ | ८।१८।१० | ३६ | १९२।४३२।२४० | ८६४ |
| ५४ | उपशम सम्यक्त्व, क्षायिक सम्यक्त्व | | ८ | ११ | ७ | | १२ चो. २३ भां. | | ३११ | | ७२ | | १७६३ |
| | | अविरत | १७ | २ | ६।७।८ | १।२।१ चो. | ४ चो. | २४।४८।२४ | ९६ | ६।१४।८ | २८ | १४४।३३६।१९२ | ६७२ |

| | | | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | | देशविरत | १३ | २ | ५।६।७ | १।२।१ | ४ | २४।४८।२४ | ९६ | ५।१२।७ | २४ | १२०।२८८।१६८ | ५७६ |
| | | प्रमत्त अप्रमत्त निवृत्ति | ९ | २ | ४।५।६ | १।२।१ | ४ | २४।४८।२४ | ९६ | ४।१०।६ | २० | ९६।२४०।१४४ | ४८० |
| | | अनिवृत्ति भाग १ | ५ | १ | २ | १२ भा | १२ भा | १२ | १२ | | | २४ | २४ |
| | | २ | ४ | १ | १ | ४ | ४ | ४ | ४ | | | ४ | ४ |
| | | ३ | ३ | १ | १ | ३ | ३ | ३ | ३ | | | ३ | ३ |
| | | ४ | २ | १ | १ | २ | २ | २ | २ | | | २ | २ |
| | | ५ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | | | १ | १ |
| | | सूक्ष्मसंपराय अबंध | ० | ० | १ | १ | १ | १ | १ | | | १ | १ |
| १५ | क्षयोपशम सम्यक्त्व | | ३ | ६ | ५ | | १२ चो | | २८८ | | ८४ | | २०१६ |
| | | अविरत | १७ | २ | ७।८।९ | १।२।१ | ४ | २४।४८।२४ | ९६ | ७।१६।९ | ३२ | १६८।३८४।२१६ | ७६८ |
| | | देशविरत | १३ | २ | ६।७।८ | १।२।१ | ४ | २४।४८।२४ | ९६ | ६।१४।८ | २८ | १४४।३३६।१९२ | ५७२ |
| | | प्रमत्त, अप्रमत्त | ९ | २ | ५।६।७ | १।२।१ | ४ | २४।४८।२४ | ९६ | ५।१२।७ | २४ | १२०।२८८।१६८ | ५७६ |
| १६ | मिश्र सम्यक्त्व | | १ | २ | ३ | | ४ चो | | ९६ | | ३२ | | ७६८ |
| | | मिश्र | १७ | २ | ७।८।९ | १।२।१ | ४ | २४।४८।२४ | ९६ | ७।१६।९ | ३२ | १६८।३८४।२१६ | ७६८ |
| १७ | सास्वादन | | १ | ४ | ३ | | ४ चो | | ९६ | | ३२ | | ७६८ |
| | | सास्वादन | २१ | ४ | ७।८।९ | १।२।१ | ४ | २४।४८।२४ | ९६ | ७।१६।९ | ३२ | १६८।३८४।२१६ | ७६८ |
| १८ | मिथ्यात्व | | १ | ६ | ४ | | ८ | | १९२ | | ६८ | | १६३२ |
| | | मिथ्यात्व | २२ | ६ | ७।८।९।१० | १।२।२।१ | ८ | २४।७२।७२।२४ | १९२ | ७।२४।२७।१० | ६८ | १६८।५७६।६४८।२४० | १६३२ |
| १९ | संज्ञी | मनुष्यगति प्रमाणे | | | | | | | | | | | |
| २० | असंज्ञी | | २ | १० | ४ | | ८ अ | | ६४ | | ६८ | | ५४४ |
| | | मिथ्यात्व | २२ | ६ | ८।९।१० अ | १।२।१ | ४ | ८।१६।८ | ३२ | ८।१८।१० | ३६ | ६४।१४४।८० | २८८ |
| | | सास्वादन | २१ | ४ | ७।८।९ | १।२।१ | ४ | ८।१६।८ | ३२ | ७।१६।९ | ३२ | ५६।१२८।७२ | २५६ |
| २१ | आहारी | मनुष्यगति प्रमाणे | | | | | | | | | | | |

| | | | | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ६२ | अनाहारी क० | | ३ | १२ | ५ | | १६ चो. | | ३८४ | | १२८ | | ३०७२ |
| | | मिथ्यात्व | २२ | ६ | ८।९।१० | १।२।१ चो. | ४ | २४।४८।२४ | ९६ | ८।१८।१० | ३६ | १९२।४३२।२४० | ८६४ |
| | | सास्वादन | २१ | ४ | ७।८।९ | १।२।१ | ४ | २४।४८।२४ | ९६ | ७।१६।९ | ३२ | १६८।३८४।२१६ | ७६८ |
| | | अविरत | १७ | २ | ६।७।८।९ | १।३।३।१ | ८ | २४।७२।७२।२४ | १९२ | ६।२१।२४।९ | ६० | १४४।५०४।५७६।२१६ | १४४० |

## ॥ ६२ मार्गणासु नामकर्मणो बन्धोदयसत्तास्थानानि तद्भंगाश्च ज्ञेयाः ॥

### ( षष्ठकर्मग्रन्थान्तर्वर्ती )

| | ६२ मार्गणासु | | नाम्नो बन्धस्थानानि ८ | तद्भंगाः १३९४५ | | उदय स्थानानि १२ | तद्भंगाः ७७९१ | | सत्तास्थानानि १२ |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १ | नरकगति | २ | २९।३०। | १३८३२ | ५ | २१।२५।२७।२८।२९। | ५ | ३ | ९२।८९।८८। |
| २ | तिर्यंचगति | ६ | २३।२५।२६।२८।२९।३०। | १३९२६ | ९ | २१।२४।२५।२६।२७।२८।२९।३०।३१। | ५०७० | ५ | ९२।८८।८६।८०।७८। |
| ३ | मनुष्यगति | ८ | २३।२५।२६।२८।२९।३०।३१।१। | १३९३७ | ११ | २०।२१।२५।२६।२७।२८।२९।३०।३१। ९।८। | २६५२ | ११ | ९३।९२।८९।८८।८६।८०।७९।७६।७५।९।८। |
| ४ | देवगति | ४ | २५।२६।२९।३०। | १३८५६ | ६ | २१।२५।२७।२८।२९।३०। | ६४ | ४ | ९३।९२।८९।८८। |
| ५ | एकेंद्रिय | ५ | २३।२५।२६।२९।३०। | १३९१७ | ५ | २१।२४।२५।२६।२७। | ४२ | ५ | ९२।८८।८६।८०।७८। |
| ६ | द्वीद्रिय | ५ | २३।२५।२६।२९।३०। | १३९१७ | ६ | २१।२६।२८।२९।३०।३१। | २२ | ५ | ९२।८८।८६।८०।७८। |
| ७ | त्रीद्रिय | ५ | २३।२५।२६।२९।३०। | १३९१७ | ६ | २१।२६।२८।२९।३०।३१। | २२ | ५ | ९२।८८।८६।८०।७८। |
| ८ | चतुरिंद्रिय | ५ | २३।२५।२६।२९।३०। | १३९१७ | ६ | २१।२६।२८।२९।३०।३१। | २२ | ५ | ९२।८८।८६।८०।७८। |
| ९ | पंचेंद्रिय. | ८ | २३।२५।२६।२८।२९।३०।३१।१। | १३९४५ | ११ | २०।२१।२५।२६।२७।२८।२९।३०।३१। ९।८। | ७६८३ | १२ | ९३।९२।८९।८८।८६।८०।७९।७८।७६।७५।९।८। |
| १० | पृथ्वीकाय | ५ | २३।२५।२६।२९।३०। | १३९१७ | ५ | २१।२४।२५।२६।२७। | २४ | ५ | ९२।८८।८६।८०।७८। |
| ११ | अप्काय | ५ | २३।२५।२६।२९।३०। | १३९१७ | ५ | २१।२४।२५।२६।२७। | २० | ५ | ९२।८८।८६।८०।७८। |
| १२ | तेजस्काय | ५ | २३।२५।२६।२९।३०। | ९३०८ | ४ | २१।२४।२५।२६। | १२ | ५ | ९२।८८।८६।८०।७८। |

क० बावीशना बंधे उदय स्थानक चार छे ७–८–९–१०. ए चार उदयस्थानक मध्ये अनाहारीनी मार्गणाए त्रण उदयस्थानक संभवे. सातनुं उदय स्थानक अनंतानुबंधी रहित छे ने अनाहारीनी मार्गणा अनंतानुबंधी विना संभवे नहीं तेथी सातनुं उदय स्थान काढी नांख्युं छे अने त्रण उदय स्थानक यंत्रमां लख्यां छे. सातरना बंधे उदय स्थानक यंत्रमां ४ लख्या छे. तेनी चोवीशी ८ लखी छे. ते मध्ये ४ चोवीशी क्षायिक आश्री संभवे छे अने चार क्षयोपशम आश्री संभवे छे. अनाहारीनी मार्गणामां जीव वाटे वहेतां होय छे. तेथी तेमां क्षायिक अने क्षायोपशमिक ए बन्नेनो संभव छे

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ४४ | केवलदर्शनी | ० | ० | ० | १० | २०।२१।२६।२७।२८।२९।३०।३१।१।९।८ | ६२ | ६ | ८०।७९।७६।७५।९।८। |
| ४५ | कृष्णलेश्यावंत | ६ | २३।२५।२६।२८।२९।३०। | १३९३४ | ९ | २१।२४।२५।२६।२७।२८।२९।३०।३१। | ७७७३ ७७८३ | ६ | ९२।८९।८८।८६।८०।७८। |
| ४६ | नीललेश्यावंत | ६ | २३।२५।२६।२८।२९।३०। | १३९४२ | ९ | २१।२४।२५।२६।२७।२८।२९।३०।३१। | ७७७३ ७७८३ | ६ | ९२।८९।८८।८६।८०।७८। |
| ४७ | कापोतलेश्यावंत | ६ | २३।२५।२६।२८।२९।३०। | १३९४२ | ९ | २१।२४।२५।२६।२७।२८।२९।३०।३१। | ७७७३ ७७८३ | ६ | ९२।८९।८८।८६।८०।७८। |
| ४८ | तेजोलेश्यावंत | ६ | २५।२६।२८।२९।३०।३१। | १३८७४ | ९ | २१।२४।२५।२६।२७।२८।२९।३०।३१। | ७६७० | ४ | ९३।९२।८९।८८। |
| ४९ | पद्मलेश्यावंत | ४ | २८।२९।३०।३१। | १३८५० | ८ | २१।२५।२६।२७।२८।२९।३०।३१। | ७६६६ | ४ | ९३।९२।८९।८८। |
| ५० | शुक्ललेश्यावंत | ५ | २८।२९।३०।३१।१। | ४६३५ | ९ | २०।२१।२५।२६।२७।२८।२९।३०।३१। | ७६७२ | ८ | ९३।९२।८९।८८।८०।७९।७६।७५। |
| ५१ | भवसिद्धिक | ८ | २३।२५।२६।२८।२९।३०।३१।१।१। | १३९४५ | १२ | २१।२४।२५।२६।२७।२८।२९।३०।३१। २०।८।९। | ७७९१ | १२ | ९३।९२।८९।८८।८६।८०।७९।७८।७६।७५।९।८। |
| ५२ | अभवसिद्धिक | ६ | २३।२५।२६।२८।२९।३०। | १३९२६ | ९ | २१।२४।२५।२६।२७।२८।२९।३०।३१। | ७७७३ | ४ | ८८।८६।८०।७८। |
| ५३ | औपशमिक | ५ | २८।२९।३०।३१।१। | ३५ | ८ | २१।२५।२६।२७।२८।२९।३०।३१। | १७६९ | ४ | ९३।९२।८९।८८। |
| ५४ | क्षायिकसम्यक्त्व | ५ | २८।२९।३०।३१।१। | ३५ | ११ | २०।२१।२५।२६।२७।२८।२९।३०।३१।९। ८। | ६२३ | १० | ९३।९२।८९।८८।८०।७९।७६।७५।९।८। |
| ५५ | क्षायोपशमसम्यक्त्व | ४ | २८।२९।३०।३१। | ३४ | ८ | २१।२५।२६।२७।२८।२९।३०।३१। | ७६७१ | ४ | ९३।९२।८९।८८। |
| ५६ | मिश्रदृष्टि | २ | २८।२९। | १६ | ३ | २९।३०।३१। | ३४६५ | २ | ९२।८८। |
| ५७ | सास्वादनसम्यक्त्व | ३ | २८।२९।३०। | ९६०८ | ७ | २१।२४।२५।२६।२९।३०।३१। | ४०९७ | २ | ९२।८८। |
| ५८ | मिथ्यादृष्टि | ६ | २३।२५।२६।२८।२९।३०। | १३९२६ | ९ | २१।२४।२५।२६।२७।२८।२९।३०।३१। | ७७७३ | ६ | ९२।८९।८८।८६।८०।७८। |
| ५९ | सञ्ज्ञी | ८ | २३।२५।२६।२८।२९।३०।३१।१।१। | १३९४५ | ८ ११ | २१।२५।२६।२७।२८।२९।३०।३१। | ७६७५ ७६८३ | १२ | ९३।९२।८९।८८।८६।८०।७९।७८।७६।७५।९।८। |
| ६० | असंज्ञी | ६ | २३।२५।२६।२८।२९।३०। | १३९२६ | ९ | २१।२४।२५।२६।२७।२८।२९।३०।३१। | १३२ १०१६ | ५ | ९२।८८।८६।८०।७८। |
| ६१ | आहारी | ८ | २३।२५।२६।२८।२९।३०।३१।१।१। | १३९४५ | ९ | २१।२४।२५।२६।२७।२८।२९।३०।३१। | ७७४६ | १० | ९३।९२।८९।८८।८६।८०।७९।७८।७६।७५। |
| ६२ | अनाहारी | ६ | २३।२५।२६।२८।२९।३०। | १३९४१ | ४ | २०।२१।९।८। | ४५ | १२ | ९३।९२।८९।८८।८६।८०।७९।७८।७६।७५।९।८। |

| | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | योग १५ | उत्तरबंधहेतु ५७ | अल्पबहुत्व | मूळभाव ५ | उपशम २ | क्षायिक ९ | क्षयोपशम १८ | औदयिक २१ |
| १ मिथ्यात्व | १३ | ५५ | अयोगी करता अनंत गुण १४ | ३ | ० | ० | १० दानादिक लब्धि ५, अज्ञान ३, दर्शन २ | २१ |
| २ सास्वादन | १३ | ५० | देशविरतिथी असख्यात गुण १० | ३ | ० | ० | १० पूर्वोक्त | २० मिथ्यात्वविना |
| ३ मिश्र | १० | ४३ | सास्वादनथी असंख्यात गुण ११ | ३ | ० | ० | १२ दानादिलब्धि ५, अज्ञानमिश्रित ज्ञान ३, दर्शन ३, मिश्रसमकित १ | १९ मिथ्यात्व तथा अज्ञानविना |
| ४ अविरति | १३ | ४६ | मिश्रथी असंख्यात गुण १२ | ५।४।४।३ | ०–१ उपशम समकित | ०–१ क्षायिक समकित | १२ दानादिलब्धि ५, ज्ञान ३, दर्शन ३, क्षयोपशम समकित १ | १९ ,, |
| ५ देशविरति | ११ | ३९ | प्रमत्तथी असंख्यात गुण ९ | ५।४।४।३ | ०–१ | ०–१ | १३ पूर्वोक्त १२ तथा देशविरति १ | १७ पूर्वोक्त १९ मांथी देवगति तथा नरकगतिविना |
| ६ प्रमत्त | १३ | २६ | अप्रमत्तथी संख्यात गुण ८ | ५।४।४।३ | ०–१ | ०–१ | १४ पूर्वोक्त १२ तथा सर्वविरति १, मनःपर्यवज्ञान १ | १५ पूर्वोक्त १७ मांथी असयम तथा तिर्यंचगतिविना |
| ७ अप्रमत्त | ११ | २४ | सयोगीथी सख्यात गुण ७ | ५।४।४।३ | ०–१ | ०–१ | १४ ,, | १२ पूर्वोक्त १५ माथी पहेली त्रण लेश्याविना |
| ८ अपूर्वकरण | ९ | २२ | क्षीणमोहथी विशेपाधिक ५ | ५।४।४ | ०–१ | ०–१ | १३ पूर्वोक्त १४ मांथी क्षयोपशम समकितविना | १० पूर्वोक्त १२ मांथी तेजो तथा पद्मलेश्याविना |
| ९ अनिवृत्तिकरण | ९ | १६ | क्षीणमोहथी विशेपाधिक ४ | ५।४ | २ | १–० | १३ पूर्वोक्त | १० पूर्वोक्त |
| १० सूक्ष्मसपराय | ९ | १० | क्षीणमोहथी विशेपाधिक ३ | ५।४ | २ | १–० | १३ | ४ पूर्वोक्त १० मांथी वेद ३, कपाय ३ विना |
| ११ उपशांतमोह | ९ | ९ | सर्वथी थोडा १ | ५।४ | २ | १–० | १२ पूर्वोक्त १३ मांथी क्षयोपशम चारित्रविना | ३ मनुष्यगति १, शुक्ललेश्या १, असिद्धत्व १ |
| १२ क्षीणमोह | ९ | ९ | उपशांतथी सख्यात गुणा २ | ४ | ० | २ समकित तथा चारित्र | १२ पूर्वोक्त | ३ पूर्वोक्त |
| १३ सयोगी केवळी | ७ | ७ | अपूर्वकरणथी संख्यात गुणा ६ | ३ | ० | ९ | ० | ३ ,, |
| १४ अयोगी केवळी | ० | ० | अविरतिथी अनंत गुण १३ (सिद्धरहित) | ३ | ० | ९ | ० | २ पूर्वोक्त ३ मांथी शुक्ललेश्याविना |

| | १७ | १८ | १९ | २० | २१ | २२ | २३ | २४ | २५ | २६ |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | पारिणामिक ३ | उत्तर भाव ५३ | सांनिपातिक मूळ ६ | द्विकसंयोगी सातमोभंग | त्रिकसंयोगी नवमो भंग | त्रिकसंयोगी दशमो भंग | चतु संयोगी चोथो भंग | चतु संयोगी पांचमो भंग | पंचसंयोगी १ | सांनिपातिक उत्तर १५ |
| १ मिथ्यात्व | ३ भव्यत्व, अभव्यत्व जीवत्व | ३४ | १ | ० | ० | $\frac{1}{4}$ गतिआश्री | ० | ० | ० | ४ |
| २ सासादन | २ अभव्यत्व विना | ३२ | १ | ० | ० | $\frac{1}{4}$ | ० | ० | ० | ४ |
| ३ मिश्र | २ ,, | ३३ | १ | ० | ० | $\frac{1}{4}$ | ० | ० | ० | ४ |
| ४ अविरति | २ ,, | ३५।३४।३४।३३ | २ | ० | ० | $\frac{1}{4}$ | $\frac{1}{4}$ | $\frac{1}{4}$ | ० | १२ |
| ५ देशविरति | २ ,, | ३४।३३।३३।३२ | २ | ० | ० | $\frac{1}{2}$ मनुष्यतिर्यंच आश्री | $\frac{1}{2}$ | $\frac{1}{2}$ | ० | ६ |
| ६ प्रमत्त | २ ,, | ३३।३२।३२।३१ | ३ | ० | ० | १ मनुष्यगति आश्री | १ | १ | ० | ३ |
| ७ अप्रमत्त | २ ,, | ३०।२९।२९।२८ | ३ | ० | ० | १ | १ | १ | ० | ३ |
| ८ अपूर्वकरण | २ ,, | २७।२६।२६ | ३ | ० | ० | ० | १ | १ | १ | ३ |
| ९ अनिवृत्तिकरण | २ ,, | २८।२७ | ३ | ० | ० | ० | १ | १ | १ | ३ |
| १० सूक्ष्मसंपराय | २ ,, | २२।२१ | ३ | ० | ० | ० | १ | १ | १ | ३ |
| ११ उपशांतमोह | २ ,, | २०।१९ | ३ | ० | ० | ० | १ | १ | १ | ३ |
| १२ क्षीणमोह | २ ,, | १९ | १ | ० | ० | ० | ० | १ | ० | १ |
| १३ सयोगी केवली | १ जीवत्व | १३ | १ | ० | १ | ० | ० | ० | ० | १ |
| १४ अयोगी केवली | १ जीवत्व | १२ | १ | ० | १ | ० | ० | ० | ० | १ |

| | | २७ | २८ | २९ | ३० | ३१ | ३२ | ३३ | ३४ |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | | जीवायोनी चोराशी लाख | कुल कोटी १९७५०००० | समुद्घात ७ | दंडक २४ | ध्यान १६ | चारित्र ७ | परीसह २२ | समकित ६ |
| १ | मिथ्यात्व | ८४००००० | १९७५०००० | ५ केवळी तथा आहारक वर्जीने | २४ | ८ आर्तध्यान ४, तथा रौद्रध्यान ४ | १ अविरति | २२ | १ मिथ्यात्व |
| २ | साखादन | ५६००००० ३२००००० | १८७५०००० | ५ ,, | २२ तेजस्काय तथा वायुकायविना | ८ ,, | १ ,, | २२ | १ साखादन |
| ३ | मिश्र | २६००००० | ११६५०००० | २ वेदनी तथा कपाय | १६ पांच स्थावर तथा त्रण विकलेंद्रियविना | ८ ,, | १ ,, | २२ | १ मिश्र |
| ४ | अविरति | २६००००० | ११६५०००० | ५ मिथ्यात्वप्रमाणे | १६ ,, | ८।९ धर्मध्यानना पहेला पाया सहित | १ ,, | २२ | ३ उपशम, क्षयोपशम, क्षायिक |
| ५ | देशविरति | १८००००० | ६५५०००० | ५ ,, | मनुष्य तथा तिर्यंच | ८।१० धर्मध्यानना बे पाया सहित | १ देशविरति | २२ | ३ ,, |
| ६ | प्रमत्त | १४००००० | १२०००००० | ६ केवळीविना | १ मनुष्य | ७ धर्मध्यानना ४, निदानार्त विना आर्तध्यानना पाया ३ | ३ पहेला त्रण | २२ | ३ ,, |
| ७ | अप्रमत्त | १४००००० | १२०००००० | ५।३।१ | १ ,, | ४ धर्मध्यानना ४ | ३ ,, | २२ | ३ ,, |
| ८ | अपूर्वकरण | १४००००० | १२०००००० | ३।१ | १ ,, | ५ धर्मध्यानना ४ अथवा शुक्लध्याननो १ | २ पहेला बे | २२ | २ उपशम, क्षायिक |
| ९ | अनिवृत्तिकरण | १४००००० | १२०००००० | ३।१ | १ ,, | १ शुक्लध्याननो पहेलो पायो | २ ,, | २२ | २ ,, |
| १० | सूक्ष्मसंपराय | १४००००० | १२०००००० | २।१ | १ ,, | १ ,, | १ सूक्ष्मसंपराय | १४ क्षुधादि ५, चर्या, शय्या, वध, अलाभ, रोग, तृण, मल, प्रज्ञा, अज्ञान. | २ ,, |
| ११ | उपशांतमोह | १४००००० | १२०००००० | २।१ | १ ,, | १ ,, | १ यथाख्यात | १४ ,, | १ उपशम |
| १२ | क्षीणमोह | १४००००० | १२०००००० | ० | १ ,, | १ शुक्लध्याननो बीजो पायो | १ ,, | १४ ,, | १ क्षायिक |
| १३ | सयोगी केवळी | १४००००० | १२०००००० | १ केवळी | १ ,, | १ शुक्लध्याननो त्रीजो पायो १३ माने अंते | १ ,, | ११ पूर्वोक्त १४ मांथी अलाभ, अज्ञान, प्रज्ञारहित | १ ,, |
| १४ | अयोगी केवळी | १४००००० | १२०००००० | ० | १ ,, | २ शुक्लध्यानना छेला बे पाया | १ ,, | ११ ,, | १ ,, |

| | | ४३ | ४४ | ४५ | ४६ | ४७ | ४८ | ४९ | ५० | ५१ |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | | उदीरणा ८ | आठ कर्मनी सत्ता | देवताना भेद१९८ | नारकीना भेद १४ | मनुष्यना भेद ३०३ | तिर्यचना भेद ४८ | जीवना भेद ५६३ | ध्रुवबंधी ४७ | अध्रुवबंधी ७३ |
| १ | मिथ्यात्व | ८।७ | ८ | १७०(९ लोकातिक,५ अनुत्तर=१४ पर्याप्त, १४ अपर्याप्त=२८ विना) | १४ | ३०३ | ४८ | ५३५ | ४७ | ७० जिननाम तथा आहारक द्विक विना |
| २ | सास्वादन | ८।७ | ८ | १७० | ७ पर्याप्ता | २०२ समूर्छिम १०१ विना | २१ | ४०० | ४६ मिथ्यात्व विना | ५५ जाति ४,स्थावर ४,नरक ३ संघयण १, सस्थान १, आताप १,नपुंसक वेद १, विना |
| ३ | मिश्र | ८ | ८ | ८५ पर्याप्ता | ७ ,, | १०१ पर्याप्ता | ५ पर्याप्ता जळचर | १९८ | ३९ स्त्यानर्द्धित्रिक ३ तथा अनतानुबंधी ४ विना | ३५ संघयण ४, संस्थान ४, नीचगोत्र १, उद्योत १,अशुभ विहायोगति १, स्त्रीवेद १, दुर्भग ३, तिर्यंच ३, आयु २, विना |
| ४ | अविरति | ८।७ | ८ | १९८ | १३ सातमीना अपर्याप्ता विना | २०२ समूर्छिम विना | १० | ४२३ | ३९ ,, | ३८ जिननाम तथा देव अने मनुष्य आयु सहित |
| ५ | देशविरति | ८।७ | ८ | ० | ० | १५ कर्मभूमिना पर्याप्ता | ५ | २० | ३५ उपरमांथी बीजा कषायनी चोकडी विना | ३२ वज्रऋषभनाराच १, मनुष्य त्रिक ३, औदारिक द्विक २, विना |
| ६ | प्रमत्त | ८।७ | ८ | ० | ० | १५ ,, | ० | १५ | ३१ त्रीजा कषायनी चोकडी विना | ३२ ,, |
| ७ | अप्रमत्त | ६ | ८ | ० | ० | १५ | ० | १५ | ३१ ,, | २६ शोक,अरति,अस्थिर द्विक २, अयश, अशाता विना २६. देवायुसहित २७. आहारक द्विक सहितरा |
| ८ | अपूर्वकरण | ६ | ८ | ० | ० | १५ | ० | १५ | ३१।२९।२९।२९।२९ २९।२० | २७।२७।२७।२७।२७।२७।६ |
| ९ | अनिवृत्तिकरण | ६ | ८ | ० | ० | १५ | ० | १५ | १८।१८।१७।१६।१५ | ४।३।३।३।३ |
| १० | सूक्ष्मसंपराय | ६।५ | ८ | ० | ० | १५ | ० | १५ | १४ | ३ |
| ११ | उपशांतमोह | ५ | ८ | ० | ० | १५ | ० | १५ | ० | १ साता |
| १२ | क्षीणमोह | ५।२ | ७ | ० | ० | १५ | ० | १५ | ० | १ |
| १३ | सयोगीकेवळी | २ | ४ | ० | ० | १५ | ० | १५ | ० | १ |
| १४ | अयोगी केवळी | ० | ४ | ० | ० | १५ | ० | १५ | ० | ० |

| | | ५२ | ५३ | ५४ | ५५ | ५६ | ५७ |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | | ध्रुवोदयी २७ | अध्रुवोदयी ९५ | ध्रुवसत्ता १२६ | अध्रुवसत्ता २२ | परावर्तमान बंध ९१ | अपरावर्तमान बंध २९ |
| १ | मिथ्यात्व | २७ | ९० आहारकद्विक २, जिननाम, समकित मोहनी, मिश्रमोहनीविना | १२६ | २२ | ८९ आहारक द्विक विना | २८ जिननाम विना |
| २ | सास्वादन | २७ | ८५ सूक्ष्मत्रिक ३, आतप, नरकानुपूर्वी, विना | १२६ | २१ जिननाम विना | ७४ पंदर विना | २७ मिथ्यात्व विना |
| ३ | मिश्र | २६ मिथ्यात्वविना | ७४ बाररहित तथा मिश्र सहित करवाथी | १२६ | २१ ,, | ४७ सत्तावीश विना | २७ ,, |
| ४ | अविरति | २६ | ७८ समकित मोहनी १, तथा अनुपूर्वी ४, सहित तथा मिश्र मोहनी रहित | १२६।१२६।१२१।१२१ | २२।१९।२०।१७ | ४९ सुर अने मनुष्य आयुसहित | २८ जिननाम सहित |
| ५ | देशविरति | २६ | ६१ सतर विना | १२६।१२६।१२१।१२१ | २२।१९।२०।१७ | ३९ मनुष्य त्रिक ३, अनतानुबंधी ४, औदारिक द्विक २, संघयण १, विना | २८ ,, |
| ६ | प्रमत्त | २६ | ५५ आठ रहित तथा आहारक द्विक सहित करवाथी | १२६।१२६।१२१।१२१ | २२।१९।२०।१७ | ३५ अप्रत्याख्यान ५ विना | २८ ,, |
| ७ | अप्रमत्त | २६ | ५० स्त्यानर्द्धि त्रिक ३, आहारक द्विक २, विना | १२६।१२६।१२१।१२१ | २२।१९।२०।१७ | २९।२८।३१।३० आहारक द्विक सहित | २८ ,, |
| ८ | अपूर्वकरण | २६ | ४६ छेल्ला संघयण ३, समकित मोहनी १, विना | १२६।१२६।१२१।१२१ | २२।२०।१८।१७ | पहेले भागे ३० पाच भागे २८ सातमे भागे १० | २८।२८।१६ |
| ९ | अनिवृत्तिकरण | २६<br>२६ | ४० हास्यादि छ विना | पहेले भागे उपर प्रमाणे छेल्ले भागे ८८ | पहेले भागे उपर प्रमाणे छेल्ले भागे १५ | ८।७।६।५।४ | १४।१४।१४।१४।१४ |
| १० | सूक्ष्मसंपराय | २६ | ३४ वेद ३, सज्वलन ३, विना | १२६।१२२।१२१।८७ | २२।२०।१८।१५ | ३ लोभ विना | १४ |
| ११ | उपशांतमोह | २६ | ३३ लोभ विना | १२६।१२२।१२१।८६ | २२।२०।१८।१५ | १ साता | ० |
| १२ | क्षीणमोह | २६ | ३१ बे संघयण विना अथवा २९ बे निद्रा विना | ८६।८४ | १५।१५ | १ ,, | ० |
| १३ | सयोगीकेवली | १२ ज्ञानावरण ५, दर्शनावरण ५, अंतराय ४, विना | ३० जिननाम सहित करवाथी | ७४ | ११ | १ ,, | ० |
| १४ | अयोगीकेवली | १ सुभ | ११ ओगणीश विना | ७४।८ | ११।५।४ | १ ,, | ० |

| | | ५८ | ५९ | ६० | ६१ | ६२ | ६३ |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | | सर्वघाती वंध २० | देशघाती वंध २५ | अघाती वंध ७५ | दर्शनावरणीना वंधस्थान उदय स्थान अने सत्तास्थान | मोहनीय कर्मना वंध स्थान | मोहनीय कर्मना उदय स्थान |
| १ | मिथ्यात्व | २० | २५ | ७२ जिननाम तथा आहारक द्विक विना | ९ वंध, ४।५ उदय, ९ सत्ता | २२ समकित तथा मिश्र मोहनी विना | ७।८।९।१० |
| २ | सास्वादन | १९ मिथ्यात्व विना | २४ नपुंसकवेद विना | ५८ चौद विना | ९ वंध, ४।५ उदय, ९ सत्ता | २१ मिथ्यात्व विना | ७।८।९ |
| ३ | मिश्र | १२ अनंतानुवंधी ४, स्त्यानर्धि ३, विना | २३ स्त्रीवेद विना | ३९ नाम कर्मनी १५, आयु ३, नीच गोत्र, विना | ६ वंध, ४।५ उदय, ९ सत्ता | १७ अनंतानुवंधी चार विना | ७।८।९ |
| ४ | अविरति | १२ ,, | २३ ,, | ४२ जिननाम, देवायु, मनुजायु सहित | ६ वंध, ४।५ उदय, ९ सत्ता | १७ ,, | ६।७।८।९ |
| ५ | देशविरति | ८ वीजा कषायनी चोकडी विना | २३ ,, | ३६ वज्रर्षभनाराच, मनुष्य त्रिक ३, औदारिक द्विक २, विना | ६ वंध, ४।५ उदय, ९ सत्ता | १३ अप्रत्याख्यानी चार विना | ५।६।७।८ |
| ६ | प्रमत्त | ४ त्रीजा कषायनी चोकडी विना | २३ ,, | ३६ ,, | ६ वंध, ४।५ उदय, ९ सत्ता | ९ प्रत्याख्यानी चार विना | ४।५।६।७ |
| ७ | अप्रमत्त | ४ ,, | २१ शोक ने अरति विना | ३२ ४ विना ३१ पांच विना ३२।३३ आहारकद्विक सहित | ६ वंध, ४।५ उदय, ९ सत्ता | ९ ,, | ४।५।६।७ |
| ८ | अपूर्वकरण | ४।२।२।२।२।२।२ निद्राद्विक विना | २१।२१।२१।२१।२१।२१।२१ | ३३।३३।३३।३३।३३।३३।३३ | ६।४ वंध, ४।५ उदय, ९ सत्ता | ९ ,, | ४।५।६ |
| ९ | अनिवृत्तिकरण | २।२।२।२।२ | १७।१६।१५।१४।१३ | ३।३।३।३।३ | ४ वंध, ४।५ उदय, ९।६ सत्ता | ५ हास्य, रति, कुत्स, भय ४।३।२।१ | २।१ |
| १० | सूक्ष्मसंपराय | २ | १२ लोभविना | ३ | ४ वंध, ४।५ उदय, ९।६ सत्ता | ० | १ |
| ११ | उपशांतमोह | ० | ० | १ | ४।५ उदय, ९ सत्ता | ० | , |
| १२ | क्षीणमोह | ० | ० | १ | ४ उदय, ६।४ सत्ता | ० | ० |
| १३ | सयोगी केवळी | ० | ० | १ | ० | ० | ० |
| १४ | अयोगी केवळी | ० | ० | ० | ० | ० | ० |

| | | ६४ | ६५ | ६६ | ६७ | ६८ |
|---|---|---|---|---|---|---|
| | | मोहनीय कर्मना सत्तास्थान | नाम कर्मना बंधस्थान | नाम कर्मना उदयस्थान | नाम कर्मना सत्तास्थान | आत्मा ८ |
| १ | मिथ्यात्व | २८।२७।२६ | २३।२५।२६।२८।२९।३० | २१।२४।२५।२६।२७।२८।२९।३०।३१ | ९२।८९।८८।८६।८०।७८ | ६ ज्ञानात्मा तथा चारित्रात्मा विना |
| २ | सास्वादन | २८ | २८।२९।३० | २१।२४।२५।२६।२९।३०।३१ | ८८।९२ | ७ ज्ञानात्मासहित |
| ३ | मिश्र | २८।२७।२४ | २८।२९ | २९।३०।३१ | ८८।९२ | ६ मिथ्यात्व प्रमाणे |
| ४ | अविरति | २८।२४।२३।२२।२१ | २८।२९।३० | २१।२५।२६।२७।२८।२९।३०।३१ | ९३।९२।८९।८८ | ७ सास्वादन प्रमाणे |
| ५ | देशविरति | २८।२४।२३।२२।२१ | २८।२९ | २६।२७।२८।२९।३०।३१ | ९३।९२।८९।८८ | ७ देशथी चारित्र छे |
| ६ | प्रमत्त | २८।२४।२३।२२।२१ | २८।२९ | २५।२७।२८।२९।३० | ९३।९२।८९।८८ | ८ |
| ७ | अप्रमत्त | २८।२४।२३।२२।२१ | २८।२९।३०।३१ | २९।३० | ९३।९२।८९।८८ | ८ |
| ८ | अपूर्वकरण | २८।२४।२१ | २८।२९।३०।३१।१ | ३० | ९३।९२।८९।८८ | ८ |
| ९ | अनिवृत्तिकरण | २८।२४।२१।१३।१२।११।५।४।३।२।१ | १ | ३० | ९३।९२।८९।८८।८०।७९।७६।७५ | ८ |
| १० | सूक्ष्मसंपराय | २८।२४।२१।१ | १ | ३० | ९३।९२।८९।८८।८०।७९।७६।७५ | ८ |
| ११ | उपशांतमोह | २८।२४।२१ | ० | ३० | ९३।९२।८९।८८ | ७ कषायात्मा विना |
| १२ | क्षीणमोह | ० | ० | ३० | ८०।७९।७६।७५ | ७ ,, |
| १३ | सयोगी केवली | ० | ० | २०।२१।२६।२७।२८।२९।३०।३१ | ८०।७९।७६।७५ | ७ ,, |
| १४ | अयोगी केवली | ० | ० | ९।८ | ८०।७९।७६।७५।९।८ | ६ योगात्मा विना |
| | | | | | | आठ आत्माना नाम |
| | | | | | | १ द्रव्यात्मा |
| | | | | | | २ कषायात्मा |
| | | | | | | ३ योगात्मा |
| | | | | | | ४ उपयोगात्मा |
| | | | | | | ५ ज्ञानात्मा |
| | | | | | | ६ दर्शनात्मा |
| | | | | | | ७ चारित्रात्मा |
| | | | | | | ८ वीर्यात्मा |

| | | ६९ | ७० | ७१ | ७२ | ७३ | ७४ | ७५ | ७६ | ७७ | ७८ |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | | मोहनीयनी उदय-आश्री चोवीशी ४०।४१ | नाम कर्मना बंधना भांगा १३९४५ | नाम कर्मना उदय-ना भांगा ७७९१ | वेदनीयना भंग ८ | गोत्रना भंग ७ | आयुना भंग २८ | नाम कर्मसत्ता भांगा | मोहनीना पद | योग संबंधी उदय भांगा | योग पद वर्ण |
| १ | मिथ्यात्व | ८ | १३९२६ देवगति प्रायोग १८, नरकगति ९ विना | ७७७३ | ४ | ५ | २८ | ३९२ | ६८ | २२०८ | १८९१२ |
| २ | सास्वादन | ४ | ९६०८ | ४०९७ | ४ | ४ | २६ | १९ | ३२ | १२१६ | ३७२८ |
| ३ | मिश्र | ४ | १६ | ४०४१ | ४ | २ | १६ | ६ | ३२ | ९६० | ७६८० |
| ४ | अविरति | ८ | ३२ | ७६६१ | ४ | २ | २० | ५४ | ६० | २२४० | १६८०० |
| ५ | देशविरति | ८ | १६ | ४८३।५९१ | ४ | १ | १२ | २२ | ५२ | २११२ | १३७२८ |
| ६ | प्रमत्त | ८ | १६ | १५८।३१६ | ४ | १ | ६ | २० | ४८ | २३६८ | १३०२४ |
| ७ | अप्रमत्त | ८ | ४ | १४८।५९२ | २ | १ | ६ | ८ | ४४ | २०४८ | ११२६४ |
| ८ | अपूर्वकरण | ४ | ५ | उ. क्ष. ७२।२४। ३६०।१२० | २ | १ | २ | ८ | २० | ८६४ | ४३२० |
| ९ | अनिवृत्तिकरण | १२ भां. ४।३।२।१ | १ | उ. क्ष. ७२।२४ | २ | १ | २ | ८ | २८ | १४४ | २५२ |
| १० | सूक्ष्मसंपराय | ० | १ | ७२।२४ | २ | १ | २ | ८ | ० | १ | १ |
| ११ | उपशांतमोह | ० | ० | ७२ | २ | १ | २ | ४ | ० | ० | ० |
| १२ | क्षीणमोह | ० | ० | २४ | २ | १ | १ | ४ | ० | ० | ० |
| १३ | सयोगी केवली | ० | ० | ६० | २ | १ | १ | २० | ० | ० | ० |
| १४ | अयोगी केवली | ० | ० | २ | ४ | २ | १ | ६ | ० | ० | ० |

| | ७९ | ८० | ८१ | ८२ | ८३ | ८४ | ८५ | ८६ | ८७ | ८८ |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| गुणस्थान | उपयोग उदय भांगा | उपयोग पदवर्ण | लेश्या उदय भांगा | लेश्या पदवर्ण | योगनी चोवीशी ५५२ अने षोडशक तथा अष्टक | योगना पद ४१४१ | उपयोगनी चोवीशी ३२० | उपयोगना पद २१४९ | लेश्यानी चोवीशी २२० | लेश्याना पद १६२१ |
| १ मिथ्यात्व | ९६० | ८१६० | ११५२ | ९७९२ | ९२ | ७८८ | ४० | ३४० | ४८ | ४०८ |
| २ सास्वादन | ४८० | ३८४० | ५७६ | ४६०८ | ४८/२४—४/१६ | ४१६ | २० | १६० | २४ | १९२ |
| ३ मिश्र | ५७६ | ४६०८ | ५७६ | ४६०८ | ४० | ३२० | २४ | १९२ | २४ | १९२ |
| ४ अविरति | ११५२ | ८६४० | ११५२ | ८६४० | ८० चोवीशी १६–षोडशक ८ अष्टक | ७८० | ४८ | ३६० | ४८ | ३६० |
| ५ देशविरति | ११५२ | ७४८८ | ५७६ | ३७४४ | ८८ | ५७२ | ४८ | ३१२ | २४ | १५६ |
| ६ प्रमत्त | १३४४ | ७३९२ | ५७६ | ३१६८ | ८८ चोवीशी १६–षोडशक | ५७२ | ५६ | ३०८ | २४ | १३२ |
| ७ अप्रमत्त | १३४४ | ७३९२ | ५७६ | ३१६८ | ८०/२४—१६/८ | ४८४ | ५६ | ३०८ | २४ | १३२ |
| ८ अपूर्वकरण | ६७२ | ३३६० | ९६ | ४८० | ३६ | १८० | २८ | १४० | ४ | २० |
| ९ अनिवृत्तिकरण | ११२ | १९६ | १६ | २८ | १–षोडशक | २८ | १ षो | २८ | ० | २८ |
| १० सूक्ष्मसंपराय | ७ | ७ | १ | १ | ० | १ | ० | १ | ० | १ |
| ११ उपशांतमोह | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० |
| १२ क्षीणमोह | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० |
| १३ सयोगी केवली | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० |
| १४ अयोगी केवली | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० |

| | | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | गुणस्थान | योग | चोवीशी | योगे गुणतां | बन्ने चोवीशीनो सरवाळो | चोवीशे गुणतां उदय भंग | पद | योगे गुणतां | कुल पद | चोवीशे गुणतां पद वृंद | उदय | उदय चोवीशी | पद | कुल |
| १ | मिथ्यात्व | १० मन ४, वच० ४, औ. १, वै. १. | ८ | ८० | ९२ | २२०८ | ६८ | ६८० | ७८८ | १८९१२ | १०।९।८।७ | १।३।३।१ | १०।२७।२४।७ | ६८ |
| | | ३. वै. मि. १, औ. मि. १, कार्मण १. | ४ | १२ | | | ३६ | १०८ | | | ८।९।१० | १।२।१ | ८।१८।१० | ३६ |
| २ | सास्वादन | १२ मन ४, वच० ४, औ. २, वै. १, का. १. | ४ | ४८ | ४८<br>६४ भंग | ११५२<br>६४ | ३२ | ३८४ | ४१६ | ९२१६<br>५१२ | ९।८।७ | १।२।१ | ९।१६।७ | ३२ |
| | | १. वै. मि. १. | ४ पोडशक | ६४ भंग | | १२१६ | ३२ | ३२ | | ९७२८ | | | | |
| ३ | मिश्र | १० मन ४, व. ४, औ. १, वै. १ | ४ | ४० | ४० | ९६० | ३२ | ३२० | ३२० | ७६८० | ९।८।७ | १।२।१ | ९।१६।७ | ३२ |
| ४ | अविरति | १० म. ४, व. ४, औ १, वै. १ | ८ | ८० | ८० | १९२० | ६० | ६०० | ७८० | १४४०० | ९।८।७।६ | १।३।३।१ | ९।२४।२१।६ | ६० |
| | | २. वै. मि. १, कार्मण १. | १६ पो. | २५६ भंग | २५६ | २५६ | ६० | १२० | | १९२० | | | | |
| | | १. औ. मि. १. | ८ अष्ट. | ६४ भंग | ६४ | ६४ | ६० | ६० | | ४८० | | | | |
| | | | | | | २२४० | | | | १६८०० | | | | |
| ५ | देशविरति | ११ मन ४, व. ४, औ. १, वै. २. | ८ | ८८ | ८८ | २११२ | ५२ | ५७२ | ५७२ | १३७२८ | ८।७।६।५ | १।३।३।१ | ८।२१।१८।५ | ५२ |
| ६ | प्रमत्त | ११ मन ४, व. ४. औ. १, वै. २. | ८ | ८८ | ८८ | २११२ | ४४ | ४८४ | ५७२ | ११६१६ | ७।६।५।४ | १।३।३।१ | ७।१८।१५।४ | ४४ |
| | | २. आहा २. | १६ पो. | २५६ भंग | २५६ | २५६ | ४४ | ८८ | | १४०८ | | | | |
| | | | | | | २३६८ | | | | १३०२४ | | | | |
| ७ | अप्रमत्त | १० मन ४, व. ४, औ. १, वै. १. | ८ | ८० | ८० | १९२० | ४४ | ४४० | ४८४ | १०५६० | ७।६।५।४ | १।३।३।१ | ७।१८।१५।४ | ४४ |
| | | १. आहा. १. | २ अष्टक | १६ भंग | १२८ | १२८ | ४४ | ४४ | | ७०४ | | | | |
| | | | | | | २०४८ | | | | ११२६४ | | | | |
| ८ | अपूर्वकरण | ९ मन ४, व. ४, औ. १. | ४ | ३६ | ३६ | ८६४ | २० | १८० | १८० | ४३२० | ६।५।४ | १।२।१ | ६।१०।४ | २० |
| ९ | अनिवृत्तिकरण | ९ मन ४, व. ४, औ. १. | १६ पो. | १४४ | १४४ | १४४ | २८ | २५२ | २५२ | २५२ उपयोगे गुणतां | | | | |
| १० | सूक्ष्मसंपराय | ९ मन ४, व. ४, औ. १. | १ पो. | ९ | ९ | ९ | १ | १ | १ | ९ | | | | |
| | कुल सरवाळो | | | | ५५२ | १४१६४ | | | ४१४१ | ९५७१७ | | | | |

| | | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | गुणस्थान | उपयोग | चोवीशी | उपयोगे गुणता | चोवीशे गुणता उदय भग | पद | उपयोगे गुणता पद भग | चोवीशे गुणता पद वृंद | लेश्या | चोवीशी | लेश्याए गुणता | चोवीशे गुणता उदय भग | पदने लेश्याए गुणता | चोवीशे गुणता पद वृंद |
| १ | मिथ्यात्व | ५ | ८ | ४० | ९६० | ६८ | ३४० | ८१६० | २ | ८ | ४८ | ११५२ | ४०८ | ९७९२ |
| २ | सास्वादन | ५ | ४ | २० | ४८० | ३२ | १६० | ३८४० | ६ | ४ | २४ | ५७६ | १९२ | ४६०८ |
| ३ | मिश्र | ६ | ४ | २४ | ५७६ | ३२ | १९२ | ४६०८ | ६ | ४ | २४ | ५७६ | १९२ | ४६०८ |
| ४ | अविरति | ६ | ८ | ४८ | ११५२ | ६० | ३६० | ८६४० | ६ | ८ | ४८ | ११५२ | ३६० | ८६४० |
| ५ | देशविरति | ६ | ८ | ४८ | ११५२ | ५२ | ३१२ | ७४८८ | ३ | ८ | २४ | ५७६ | १५६ | ३७४४ |
| ६ | प्रमत्त | ७ | ८ | ५६ | १३४४ | ४४ | ३०८ | ७३९२ | ३ | ८ | २४ | ५७६ | १३२ | ३१६८ |
| ७ | अप्रमत्त | ७ | ८ | ५६ | १३४४ | ४४ | ३०८ | ७३९२ | ३ | ८ | २४ | ५७६ | १३२ | ३१६८ |
| ८ | अपूर्वकरण | ७ | ४ | २८ | ६७२ | २० | १४० | ३३६० | १ | ४ | ४ | ९६ | २० | ४८० |
| ९ | अनिवृत्तिकरण | ७ | १ पो | | ११२ | २८ | २८ | उपयोगे गुणता १९६ | १ | | | १६ | २८ | २८ |
| १० | सूक्ष्मसंपराय | ७ | १ | ० | ७ | ० | १ | ७ | १ | | | १ | १ | १ |
| | कुल सरवाळो | | • | ३२० | ७७९९ | | २१४९ | ५१०८३ | | | | ५२९७ | १६२१ | ३८२३७ |

## ११ गुणठाणे मोहनीकर्मनाबंधस्थानादिनुं यंत्र.

| गुणस्थानक. | बंधस्थान. १० | बंध भांगा. २५ | उदयस्थान. ९३५ | | उदयभंग चोवीसी. ५२ | | उदय भांगा. १२६५ | | उदयस्थानपद. ३५२ | | पदवृंद. ८४७७ | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १ | २२ | ६ | ७।८।९।१० | ४ | १।३।३।१ | ८ | २४।७२।७२।२४ | १९२ | ७।२४।२७।१० | ६८ | १६८।५७६।६४८।२४० | १६३२ |
| २ | २१ | ४ | ७।८।९ | ३ | १।२।१ | ४ | २४।४८।२४ | ९६ | ७।१६।९ | ३२ | १६८।३८४।२१६ | ७६८ |
| ३ | १७ | २ | ७।८।९ | ३ | १।२।१ | ४ | २४।४८।२४ | ९६ | ७।१६।९ | ३२ | १६८।३८४।२१६ | ७६८ |
| ४ | १७ | २ | ६।७।८।९ | ४ | १।३।३।१ | ८ | २४।७२।७२।२४ | १९२ | ६।२१।२४।९ | ६० | १४४।५०४।५७६।२१७ | १४४० |
| ५ | १३ | २ | ५।६।७।८ | ४ | १।३।३।१ | ८ | २४।७२।७२।२४ | १९२ | ५।१८।२१।८ | ५२ | १२०।४३२।५०४।१९२ | १२४८ |
| ६ | ९ | २ | ४।५।६।७ | ४ | १।३।३।१ | ८ | २४।७२।७२।२४ | १९२ | ४।१५।१८।७ | ४४ | ९६।३६०।४३२।१६८ | १०५६ |
| ७ | ९ | १ | ४।५।६।७ | ४ | १।३।३।१ | ८ | २४।७२।७२।२४ | १९२ | ४।१५।१८।७ | ४४ | ९६।३६०।४३२।१६८ | १०५६ |
| ८ | ९ | १ | ४।५।६ | ३ | १।२।१ | ४ | २४।४८।२४ | ९६ | ४।१०।६ | २० | ९६।२४०।१४४ | ४८० |
| ९ | ५।४।३।२।१ | ५ | २।१।१।१।१ | ५ | ० | ० | १२।१।१।१।१ | १६ | ० | ० | २४।१।१।१।१ | २८ |
| १० | ० | ० | १ | १ | ० | ० | १ | १ | ० | ० | १ | १ |
| ११ | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | १ | १ |

# मोहनी कर्मना बंधस्थानके उदयस्थानादिनुं यंत्र

| मोहस्य बंध स्थानक | बंध भांगा २१ | उदय स्थानक | | उदय चोवीसी ४० | | उदय भंग संख्या ९८३ | | उदय स्थान पद २८८ | | उदय स्थान पद वृंद ६९४७ | | मोहस्य सत्तास्थानक |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| २२ | ६ | ७।८।९।१० | ४ | १।३।३।१ | ८ | २४।७२।७२।२४ | १९२ | ७।२४।२७।१० | ६८ | १६८।५७६।६४८।२४० | १६३२ | २८।२८।२७।२६।२८।२७।२६। २८।२७।२६ |
| २१ | ४ | ७।८।९ | ३ | १।२।१ | ४ | २४।४८।२४ | ९६ | ७।१६।९ | ३२ | १६८।३८४।२१६ | ७६८ | २८।२८।२८ |
| १७ | २ | ६।७।८।९ | ४ | १।४।५।२ | १२ | २४।९६।१२०।४८ | २८८ | ६।२८।४०।१८ | ९२ | १४४।६७२।९६०।४३२ | २२०८ | २८।२४।२१।२८।२७।२४।२३। २२।२१।२८।२७।२४।२३। २२।२१।२८।२७।२४।२३।२२ |
| १३ | २ | ५।६।७।८ | ४ | १।३।३।१ | ८ | २४।७२।७२।२४ | १९२ | ५।१८।२१।८ | ५२ | १२०।४३२।५०४।१९२ | १२४८ | २८।२४।२१।२८।२७।२४।२३। २२।२१।२८।२७।२४।२३। २२।२१।२८।२७।२४।२३।२२ |
| ९ | २ | ४।५।६।७ | ४ | १।३।३।१ | ८ | २४।७२।७२।२४ | १९२ | ४।१५।१८।७ | ४४ | ९६।३६०।४३२।१६८ | १०५६ | २८।२४।२१।२८।२४।२३।२२।२१। २१।२८।२४।२३।२२।२१ २८।२४।२३।२२ |
| ५ | १ | २ | १ | ० | ० | १२ | १२ | ० | ० | २४ | २४ | २८।२४।२१।१३।१२।११ |
| ४ | १ | १ | १ | ० | ० | ४ | ४ | ० | ० | ४ | ४ | २८।२४।२१।११।५।४ |
| ३ | १ | १ | १ | ० | ० | ३ | ३ | ० | ० | ३ | ३ | २८।२४।२१।४।३ |
| २ | १ | १ | १ | ० | ० | २ | २ | ० | ० | २ | २ | २८।२४।२१।३।२ |
| १ | १ | १ | १ | ० | ० | १ | १ | ० | ० | १ | १ | २८।२४।२१।२।१ |
| ० | ० | १ | १ | ० | ० | १ | १ | ० | ० | १ | १ | २८।२४।२१।१ |
| ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | २८।२४।२१ |

| | मार्गणा | गति ४ | जाति ५ | काय ६ | योग ३ | वेद ३ | कपाय ४ | ज्ञान ५, अज्ञान ३, कुल ८ |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १ | नरकगति | १ | १ पंचेंद्रिय | १ त्रस | ३ | १ नपुंसक | ४ | ३ ज्ञान, ३ अज्ञान |
| २ | देवगति | १ | १ पंचेंद्रिय | १ त्रस | ३ | २ स्त्री, पुरुष | ४ | ३ ज्ञान, ३ अज्ञान |
| ३ | मनुष्यगति | १ | १ पंचेंद्रिय | १ त्रस | ३ | ३ | ४ | ५ ज्ञान, ३ अज्ञान |
| ४ | तिर्यंचगति | १ | ५ | ६ | ३ | ३ | ४ | ३ ज्ञान, ३ अज्ञान |
| ५ | एकेंद्रिय | १ तिर्यंच | १ | ५ त्रसविना | १ काययोग | १ नपुंसक | ४ | २ अज्ञान |
| ६ | द्वींद्रिय | १ तिर्यंच | १ | १ त्रस | २ वचन तथा काय | १ ,, | ४ | २ ज्ञान, २ अज्ञान |
| ७ | त्रींद्रिय | १ तिर्यंच | १ | १ त्रस | २ ,, | १ ,, | ४ | २ ज्ञान, २ अज्ञान |
| ८ | चतुरिंद्रिय | १ तिर्यंच | १ | १ त्रस | २ ,, | १ ,, | ४ | २ ज्ञान, २ अज्ञान |
| ९ | पंचेंद्रिय. | ४ | १ | १ त्रस | ३ | ३ | ४ | ५ ज्ञान, ३ अज्ञान |
| १० | पृथ्वीकाय | १ तिर्यंच | १ एकेंद्रिय | १ पृ. | १ काययोग | १ नपुंसक | ४ | २ अज्ञान |
| ११ | अप्काय | १ तिर्यंच | १ | १ अ. | १ ,, | १ ,, | ४ | २ अज्ञान |
| १२ | तेजस्काय | १ तिर्यंच | १ | १ ते. | १ ,, | १ ,, | ४ | २ अज्ञान |
| १३ | वायुकाय | १ तिर्यंच | १ | १ वा. | १ ,, | १ ,, | | २ अज्ञान |
| १४ | वनस्पतिकाय | १ तिर्यंच | १ | १ व. | १ ,, | १ ,, | ४ | २ अज्ञान |
| १५ | त्रसकाय | ४ | ४ एकेंद्रिय विना | १ त्र. | ३ | ३ | ४ | ५ ज्ञान, ३ अज्ञान |
| १६ | मनोयोग | ४ | १ पंचेंद्रिय | १ त्रस | ३ | ३ | ४ | ५ ज्ञान, ३ अज्ञान |
| १७ | वचनयोग | ४ | ४ एकेंद्रिय विना | १ त्रस | ३ | ३ | ४ | ५ ज्ञान, ३ अज्ञान |
| १८ | काययोग | ४ | ५ | ६ | ३ | ३ | ४ | ५ ज्ञान, ३ अज्ञान |
| १९ | पुरुषवेद | ३ नारकी विना | १ पंचेंद्रिय | १ त्रस | ३ | १ | ४ | ५ ज्ञान, ३ अज्ञान |
| २० | स्त्रीवेद | ३ नारकी विना | १ पंचेंद्रिय | १ त्रस | ३ | १ | ४ | ५ ज्ञान, ३ अज्ञान |
| २१ | नपुंसकवेद | ३ देवता विना | ५ | ६ | ३ | १ | ४ | ५ ज्ञान, ३ अज्ञान |
| २२ | क्रोध | ४ | ५ | ६ | ३ | ३ | १ | ४ ज्ञान, ३ अज्ञान |
| २३ | मान | ४ | ५ | ६ | ३ | ३ | १ | ४—३ |
| २४ | माया | ४ | ५ | ६ | ३ | ३ | १ | ४—३ |
| २५ | लोभ | ४ | ५ | ६ | ३ | ३ | १ | ४—३ |
| २६ | मतिज्ञान | ४ | १ पंचेंद्रिय वा ४ एकेंद्रिय विना | १ त्रस | ३ | ३ | ४ | ४ ज्ञान ० |
| २७ | श्रुतज्ञान | ४ | १ ,, | १ ,, | ३ | ३ | ४ | ४—० |
| २८ | अवधिज्ञान | ४ | १ पंचें० | १ ,, | ३ | ३ | ४ | ४—० |
| २९ | मनःपर्यवज्ञान | १ मनुष्य | १ पंचें० | १ ,, | ३ | ३ | ४ संज्वलन | ४—० |
| ३० | केवलज्ञान | १ ,, | १ ,, | १ ,, | ३ | ० | ० | १—० |

| संयम ७ | दर्शन ४ | भव्य अभव्य २ | सम्यक्त्व ६ | संज्ञी असंज्ञी २ | आहारी अनाहारी २ | शरीर ५ | पर्याप्ति ६ | प्राण १० |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १ अविरति | ३ केवलदर्शन विना | २ | ६ | १ संज्ञी | २ | ३ वैक्रिय, तैजस, कार्मण | ६ | १० |
| १ अविरति | ३ „ | २ | ६ | १ „ | २ | ३ „ | ६ | १० |
| ७ | ४ | २ | ६ | २ | २ | ५ | ६ | १० |
| २ देशविरति, अविरति, | ३ केवलदर्शन विना | २ | ६ | २ | २ | ४ आहारक विना | ६ | १० |
| १ अविरति | १ अचक्षु | २ | २ सास्वादन, मिथ्यात्व, | १ असंज्ञी | २ | ४ आहारक विना ३ वैक्रिय विना | ४ | ४ |
| १ अविरति | १ „ | २ | २ „ | १ „ | २ | ३ औदारिक, तैजस, कार्मण | ५ | ६ |
| १ अविरति | १ „ | २ | २ „ | १ „ | २ | ३ „ | ५ | ७ |
| १ अविरति | २ चक्षु, अचक्षु | २ | २ „ | १ „ | २ | ३ „ | ५ | ८ |
| ७ | ४ | २ | ६ | २ | २ | ५ | ६ | १० |
| १ अविरति | १ अचक्षु | २ | २ सास्वादन, मिथ्यात्व, | १ असंज्ञी | २ | ३ औदारिक, तैजस कार्मण | ४ | ४ |
| १ „ | १ „ | २ | २ „ | १ „ | २ | ३ „ | ४ | ४ |
| १ „ | १ „ | २ | १ मिथ्यात्व | १ „ | २ | ३ „ | ४ | ४ |
| १ „ | १ „ | २ | १ „ | १ „ | २ | ४ आहारक विना | ४ | ४ |
| १ „ | १ „ | २ | २ सास्वादन, मिथ्यात्व, | १ „ | २ | ३ औदारिक, तैजस, कार्मण | ४ | ४ |
| ७ | ४ | २ | ६ | २ | २ | ५ | ६ | १० |
| ७ | ४ | २ | ६ | १ „ | २ | ५ | ६ | १० |
| ७ | ४ | २ | ६ | २ | १ | ५ | ६ | १० |
| ७ | ४ | २ | ६ | २ | २ | ५ | ६ | १० |
| ५ सूक्ष्मसंपराय, यथाख्यात विना | ४ | २ | ६ | १ संज्ञी | २ | ५ | ६ | १० |
| ४ परिहार विशुद्धि विना | ४ | २ | ६ | १ „ | २ | ४ आहारक विना | ६ | १० |
| १ पुरुष वेद प्रमाणे | ४ | २ | ६ | २ | २ | ५ | ६ | १० |
| ५ सूक्ष्मसंपराय, यथाख्यात विना | ३ केवळ विना | २ | ६ | २ | २ | ५ | ६ | १० |
| ५ „ | ३ „ | २ | ६ | २ | २ | ५ | ६ | १० |
| २ „ | ३ „ | २ | ६ | २ | २ | [illegible] | ६ | १० |
| ६ यथाख्यात विना | ३ „ | २ | ६ | २ | २ | ५ | ६ | १० |
| ७ | ३ „ | १ भव्य | ३ उपशम, क्षयोपशम, क्षायिक | १ संज्ञी | २ | ५ | ६ | १० |
| ७ | ३ „ | १ „ | ३ „ | १ „ | २ | ५ | ६ | १० |
| ७ | ३ „ | १ „ | ३ „ | १ „ | २ | ५ | ६ | १० |
| २ अविरति देशविरति विना | ३ „ | १ „ | ३ „ | १ „ | १ | ४ कार्मण शरीर विना | ६ | १० |
| १ यथाख्यात | १ केवलदर्शन | १ „ | १ क्षायिक | १ „ | २ | ३ औदारिक, तैजस, कार्मण | ६ | १० |

| | मार्गणा | गति | जाति ५ | काय ६ | योग ३ | वेद ३ | कषाय ४ | ज्ञान ५, अज्ञान ३ कुल ८ |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ३१ | मतिअज्ञान | ४ | ५ | ६ | ३ | ३ | ४ | ०–३ |
| ३२ | श्रुतअज्ञान | ४ | ५ | ६ | ३ | ३ | ४ | ०–३ |
| ३३ | विभंगज्ञान | ४ | १ पंचे० | १ त्रस | ३ | ३ | ४ | ०–३ |
| ३४ | सामायिक चारित्र | १ मनुष्य | १ ,, | १ ,, | ३ | ३ | ४ संज्वलन | ४–० |
| ३५ | छेदोपस्थापनीय ,, | १ ,, | १ ,, | १ ,, | ३ | ३ | ४ ,, | ४–० |
| ३६ | परिहारविशुद्धि ,, | १ ,, | १ ,, | १ ,, | ३ | २ स्त्रीवेद विना | ४ ,, | ४–० |
| ३७ | सूक्ष्मसंपराय ,, | १ ,, | १ ,, | १ ,, | ३ | ० | १ लोभ | ४–० |
| ३८ | यथाख्यात ,, | १ ,, | १ ,, | १ ,, | ३ | ० | ० | ५–० |
| ३९ | देशविरति | २ मनुष्य तिर्यंच | १ ,, | १ ,, | ३ | ३ | ४ | ३–० |
| ४० | अविरति | ४ | ५ | ६ | ३ | ३ | ४ | ३–३ |
| ४१ | चक्षुदर्शन | ४ | २ चतु० पंचें० | १ त्रस | ३ | ३ | ४ | ४–३ |
| ४२ | अचक्षुदर्शन | ४ | ५ | ६ | ३ | ३ | ४ | ४–३ |
| ४३ | अवधिदर्शन | ४ | १ पंचेंद्रिय | १ त्रस | ३ | ३ | ४ | ४–० |
| ४४ | केवलदर्शन | १ मनुष्य | १ ,, | १ ,, | ३ | ० | ० | २–० |
| ४५ | कृष्णलेश्या | ४ | ५ | ६ | ३ | ३ | ४ | ४–३ |
| ४६ | नीललेश्या | ४ | ५ | ६ | ३ | ३ | ४ | ४–३ |
| ४७ | कापोतलेश्या | ४ | ५ | ६ | ३ | ३ | ४ | ४–३ |
| ४८ | तेजोलेश्या | ३ नरकगतिविना | २ एकें० पंचें० | ४तेजस्कायविना | ३ | ३ | ४ | ४–३ |
| ४९ | पद्मलेश्या | ३ ,, | १ पंचें० | १ त्रस | ३ | ३ | ४ | ४–३ |
| ५० | शुक्ललेश्या | ३ ,, | १ ,, | १ ,, | ३ | ३ | ४ | ५–३ |
| ५१ | भव्य | ४ | ५ | ६ | ३ | ३ | ४ | ५–३ |
| ५२ | अभव्य | ४ | ५ | ६ | ३ | ३ | ४ | ०–३ |
| ५३ | उपशम सम्यक्त्व | ४ | १ पंचें० | १ त्रस | ३ | ३ | ४ | ४–० |
| ५४ | क्षायोपशमसम्यक्त्व | ४ | १ ,, | १ ,, | ३ | ३ | ४ | ४–० |
| ५५ | क्षायिकसम्यक्त्व | ४ | १ ,, | १ ,, | ३ | ३ | ४ | ५–० |
| ५६ | मिश्रसम्यक्त्व | ४ | १ ,, | १ ,, | ३ | ३ | ४ | ३ ज्ञानमिश्र |
| ५७ | सास्वादनसम्यक्त्व | ४ | ५ | ४ | ३ | ३ | ४ | ०–३ |
| ५८ | मिथ्यात्व | ४ | ५ | ६ | ३ | ३ | ४ | ०–३ |
| ५९ | संज्ञी | ४ | १ पंचे० | १ त्रस | ३ | ३ | ४ | ५–३ |
| ६० | असंज्ञी | २ मनुष्य तिर्यंच | ५ | ६ | २ | १ नपुंसक | ४ | ०–२ |
| ६१ | आहारी | ४ | ५ | ६ | ३ | ३ | ४ | ५–३ |
| ६२ | अनाहारी | ४ | ५ | ६ | ३ | ३ | ४–० | ४–३ |

| संयम ७ | दर्शन ४ | भव्य अभव्य २ | सम्यकत्व ६ | सञ्ज्ञी असञ्ज्ञी २ | आहारी अनाहारी २ | शरीर ५ | पर्याप्ति ६ | प्राण २ |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १ अविरति | २ चक्षु, अचक्षु | २ | ३ मिथ्यात्व, सास्वादन, मिश्र | २ | २ | ४ आहारक विना | ६ | १० |
| १ ,, | २ ,, | २ | ३ ,, | २ | २ | ४ ,, | ६ | १० |
| १ ,, | २ ,, | २ | ३ ,, | २ | २ | ४ ,, | ६ | १० |
| ३ सामायिक, छेदोपस्थापनीय परिहार० | ३ केवल विना | १ | ३ उपशम क्षयोपशम, क्षायिक | १ सञ्ज्ञी | १ आहारी | ४ कार्मणविना | ६ | १० |
| ३ ,, | ३ ,, | १ भव्य | ३ ,, | १ ,, | १ ,, | ४ ,, | ६ | १० |
| ३ ,, | ३ ,, | १ ,, | ३ ,, | १ ,, | १ ,, | ३ औदारिक, तैजस, कार्मण | ६ | १० |
| १ | ३ ,, | १ ,, | २ उपशम क्षा० | १ ,, | १ ,, | ३ ,, | ६ | १० |
| १ | ४ | १ ,, | २ ,, | १ ,, | २ | ३ ,, | ६ | १० |
| १ | ३ केवल विना | १ ,, | ३ उपशम, क्षयोपशम क्षा० | १ ,, | १ आहारी | ३ ,, | ६ | १० |
| १ | ३ ,, | २ | ६ | २ | २ | ४ आहारकविना | ६ | १० |
| ७ | ३ ,, | २ | ६ | २ | १ आहारी | ५ | ६ | १० |
| ७ | ३ ,, | २ | ६ | २ | २ | ५ | ६ | १० |
| ७ | ३ केवळविना | १ भव्य | ३ उपशम, क्षयोपशम, | १ सञ्ज्ञी | २ | ५ | ६ | १० |
| १ | १ केवळ | १ ,, | १ क्षायिक | १ ,, | २ | ३ आहारक, तैजस, कार्मण | ६ | १० १० |
| १ सूक्ष्म, यथाख्यातविना | ३ केवळविना | २ | ६ | २ | २ | ५ | ६ | १० |
| १ ,, | ३ ,, | २ | ६ | २ | २ | ५ | ६ | १० |
| १ ,, | ३ ,, | | ६ | २ | २ | ५ | ६ | १० |
| १ ,, | ३ ,, | २ | ६ | २ | २ | ५ | ६ | १० |
| १ ,, | ३ ,, | २ | ६ | १ संज्ञी | २ | ५ | ६ | १० |
| ७ | ४ | २ | ६ | १ ,, | २ | ५ | ६ | १० |
| ७ | ४ | २ | ६ | २ | २ | ५ | ६ | १० |
| १ अविरत | २ चक्षु अचक्षु | १ भव्य | १ मिथ्यात्व | २ | २ | ४ आहारकविना | ६ | १० |
| ५ परिहारविशुद्धिविना | ३ केवळविना | १ अभव्य | १ | १ सञ्ज्ञी | २ | ४ ,, | ६ | १० |
| १ सूक्ष्म, यथाख्यातविना | ३ ,, | १ भव्य | १ | १ ,, | २ | ५ | ६ | १० |
| ७ | ४ | १ ,, | १ | १ ,, | २ | ५ | ६ | १० |
| १ अविरति | ३ केवळविना | १ ,, | १ | १ ,, | १ आहारी | ५ | ६ | १० |
| १ ,, | २ चक्षु, अचक्षु | १ ,, | १ | २ | २ | ४ आहारकविना | ६ | १० |
| १ ,, | २ ,, | १ ,, | १ | २ | २ | ४ ,, | ६ | १० |
| ७ | ४ | २ | ६ | १ | २ | ५ | ६ | १० |
| १ अविरति | २ चक्षु, अचक्षु | २ | २ मिथ्यात्व, सास्वादन | १ | २ | ४ आहारकविना | ६ | १० |
| ७ | ४ | २ | ६ | २ | १ | ५ | ६ | १० |
| २ अविरति, यथाख्यात | ३ चक्षु विना | २ | ४ उपशम, मिश्रविना | २ | १ | १ कार्मण | ६ | १०–१ |

| | मार्गणा | ध्यान १६ | संज्ञा ४ | समुद्घात ७ | संस्थान ६ | संघयण ६ | दृष्टि ३ | दंडक २४ | जीवाजोनी ८४००००० | कुल कोटी १९७६०००० | अवगाहना | जीवस्थान १४ | गुणस्थान १४ | योग १५ | उपयोग १२ | लेश्या ६ | अल्पाबहुत्व |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १ | नरकगति | ८–९ ९ धर्मध्याननना पहेला पायासहित | ४ | ४ | १ हुंडक | ० | ३ | १ | ४००००० | २५००००० | ५०० धनुपनी अवगाहना | २ | ४ | ११ | ९ | ३ पहेली | असंख्यात गुणा २ |
| २ | देवगति | ८–९ ,, | ४ | ५ आहारक केवळविना | १ समचतुरस्र | ० | ३ | १३ | ४००००० | २६००००० | सात हाथनी | २ | ४ | ११ | ९ | ६ | ,, ३ |
| ३ | मनुष्यगति | १६ | ४ | ७ | ६ | ६ | ३ | १ | १४००००० | १२००००० | त्रण गाउनी | ३ | १४ | १५ | १२ | ६ | सर्वथी स्तोक १ |
| ४ | तिर्यंचगति | ८ / १० धर्मध्याननना पहेला बे पायासहित | ४ / ४ | ५ आहारक केवळविना | ६ | ६ | ३ | ९ | ६२००००० | १३४५०००० | हजार योजननी | १४ | ५ | १३ | ९ | ६ | अनंतगुणा ४ |
| ५ | एकेंद्रिय | ८–० | ४ | ४ आहारक केवळ, तैजसविना | १ हुंडक | ० | १ मिथ्या | ५ | ५२००००० | ५७००००० | हजार योजनथी अधिक | ४ | २ | ५ | ३ | ४ | ,, ५ |
| ६ | द्वींद्रिय | ८–० | ४ | ३ वेदनी, कषाय, मरण | १ | १ | १–२ | १ | २००००० | ७००००० | बार योजननी | २ | २ | ४ | ३ | ३ | विशेषाधिक ४ |
| ७ | त्रींद्रिय | ८–० | ४ | ३ ,, | १ | १ | १–२ | १ | २००००० | ८००००० | त्रण गाउनी | २ | २ | ४ | ३ | ३ | ,, ३ |
| ८ | चतुरिंद्रिय | ८–० | ४ | ३ ,, | १ | १ | १–२ | १ | २००००० | ९००००० | चार गाउनी | २ | २ | ४ | ४–६ | ३ | ,, २ |
| ९ | पंचेंद्रिय | १६ | ४ | ७ | ६ | ६ | ३ | १६ | २६००००० | ११६५०००० | हजार योजननी | ४ | १४ | १५ | १२ | ६ | सर्वथी स्तोक १ |
| १० | पृथ्वीकाय | ८–० | ४ | ३ | १ | ० | १ मिथ्यादृष्टि | १ | ७००००० | १२००००० | अंगुलनो असंख्यात भाग | ४ | २ | ३ | ३ | ४ | विशेषाधिक ३ |
| ११ | अप्काय | ८–० | ४ | ३ | १ | ० | १ | १ | ७००००० | ७००००० | अंगुलनो अ० भाग | ४ | २ | ३ | ३ | ४ | ,, ४ |
| १२ | तेजस्काय | ८–० | ४ | ३ | १ | ० | १ | १ | ७००००० | ३००००० | अंगुलनो अ० भाग | ४ | १ | ३ | ३ | ३ | असं० गुणा २ |
| १३ | वायुकाय | ८–० | ४ | ४ | १ | ० | १ | १ | ७००००० | ७००००० | अंगुलनो अ० भाग | ४ | १ | ५ | ३ | ३ | विशेषाधिक ५ |
| १४ | वनस्पतिकाय | ८–० | ४ | ३ | १ | ० | १ | १ | २४००००० | २८००००० | हजार यो० अधिक | ४ | २ | ३ | ३ | ४ | अनंतगुणा ६ |
| १५ | त्रसकाय | १६ | ४ | ७ | ६ | ६ | ३ | १९ | ३२००००० | १४०५०००० | हजार योजन | १० | १४ | १५ | १२ | ६ | सर्वथी स्तोक १ |
| १६ | मनोयोग | १४–१५ | ४ | ७ | ६ | ६ | ३ | १६ | २६००००० | ११६५०००० | हजार योजन | १ | १३ | १३ | १२ | ६ | ,, १ |
| १७ | वचनयोग | १४–१५ | ४ | ७ | ६ | ६ | ३ | १९ | ३२००००० | १४०५०००० | हजार योजन | ५ | १३ | १३ | १२ | ६ | असं० गुणा २ |

| | | | | | | | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १८ काययोग | १४–१५ | ४ | ७ | ६ | ६ | ३ | २४ | ८४००००० | १९७५०००० | हजार यो० अधिक | १४ | १३ | १५ | १२ | ६ | अनतगुणा ३ |
| १९ पुरुषवेद | ११ गुरुना पहेलास हित | ४ | ६ केवळी विना | ६ | ६ | ३ | १५ | २२००००० | ९१५०००० | हजार योजन | ४ | ९ | १५ | १२ | ६ | सर्वथी स्तोक १ |
| २० स्त्रीवेद | १३ ,, | ४ | ५ | ६ | ६ | ३ | १५ | २२००००० | ९१५०००० | हजार योजन | ४ | ९ | १३ | १२ | ६ | सख्यातगुण २ |
| २१ नपुसकवेद | १३ ,, | ४ | ६ | ६ | ६ | ३ | ११ | ८०००००० | १७१५०००० | हजार यो० अधिक | १४ | ९ | १५ | १२ | ६ | अनतगुण ३ |
| २२ कोध | १३ | ४ | ६ | ६ | ६ | ३ | २४ | ८४००००० | १९७५०००० | हजार यो० अधिक | १४ | ९ | १५ | १० | ६ | विशेषाधिक २ |
| २३ मान | १३ | ४ | ६ | ६ | ६ | ३ | २४ | ८४००००० | १९७५०००० | हजार यो० अधिन | १४ | ९ | १५ | १० | ६ | सर्वस्तोक १ |
| २४ माया | १३ | ४ | ६ | ६ | ६ | ३ | २४ | ८४००००० | १९७५०००० | हजार यो० अधिक | १४ | ९ | १५ | १० | ६ | विशेषाधिक ३ |
| २५ लोभ | १३ | ४ | ६ | ६ | ६ | ३ | २४ | ८४००००० | १९७५०००० | हजार यो० अधिक | १४ | १० | १५ | १० | ६ | ,, ४ |
| २६ मतिज्ञान | १४ गुरुना त्रीजाचोथा पायाविना | ४ | ६ | ६ | ६ | १ समकित | १६ | २६००००० ३२००००० | ११६५०००० | १००० योजन | २ | ९ | १५ | ७ | ६ | ,, ३ |
| २७ श्रुतज्ञान | १४ ,, | ४ | ६ | ६ | ६ | १ ,, | १६ | २६००००० ३२००००० | ११६५०००० | १००० योजन | २ | ९ | १५ | ७ | ६ | ,, ४ |
| २८ अवधिज्ञान | १४ ,, | ४ | ६ | ६ | ६ | १ ,, | १६ | २६००००० | ११६५०००० | १००० योजन | २ | ९ | १५ | ७ | ६ | अस० गुण २ |
| २९ मन पर्यवज्ञान | ६ धर्मना ४ गुरुना २, ९ आर्तना ३ सहित | ४ | ६ | ६ | ६ | १ ,, | १ | १४००००० | १२००००० | ५०० धनुष | १ | ७ | १३ | ७ | ६ | सर्वस्तोक १ |
| ३० केवलज्ञान | २ शुक्लना छेला | ० | १ केवळी | ६ | १ वज्र | १ ,, | १ | १४००००० | १२००००० | ५०० धनुष | १ | २ | ७ | २ | १ | अनतगुणा ८ |
| ३१ मतिअज्ञान | ८ | ४ | ५ केवळी तथा आहारकविना | ६ | ६ | २ | २४ | ८४००००० | १९७५०००० | हजार यो० अधिक | १४ | ३–२ | १३ | ५ | ६ | ,, ६ |
| ३२ श्रुतअज्ञान | ८ | ४ | ५ ,, | ६ | ६ | २ | २४ | ८४००००० | १९७५०००० | हजार यो० अधिक | १४ | ३–२ | १३ | ५ | ६ | ,, ७ |
| ३३ विभगज्ञान | ८ | ४ | ५ ,, | ६ | ६ | २ | २४ | २६००००० | ११६५०००० | हजार योजन | २ | ३–२ | १३ | ५ | ६ | अस० गुणा ५ |
| ३४ सामायिक चारित्र | ५ धमना ४ शुक्ल १, ८ आर्तना ३ सहित | ४ | ६ केवळी विना | ६ | ६ | १ समकित | १ | १४००००० | १२००००० | ५०० धनुष | १ | ४ | १३ | ७ | ६ | सख्यात गुण ५ |
| ३५ छेदोपस्थापनीय ,, | ५–८ ,, | ४ | ६ ,, | ६ | ६ | १ ,, | १ | १४००००० | १२००००० | ५०० धनुष | १ | ४ | १३ | ७ | ६ | ,, ४ |

| | मार्गणा | ध्यान १६ | संज्ञा ४ | समुद्घात ७ | संस्थान ६ | संघयण ६ | दृष्टि ३ | दंडक २४ | जीवाजोनी ८४००००० | कुल कोटी १९७५०००० | अवगाहना | जीवस्थान १४ | गुणस्थान १४ | योग १५ | उपयोग १२ | लेश्या ६ | अल्पाबहुत्व |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ३६ | परिहारविशुद्धि | ४ धर्मना ७ आर्तना ३ सहित | ४ | ५ | ६ | ६ | १ समकित | १ | १४००००० | १२०००००० | ५०० धनुष | १ | २ | ९ | ७ | ६ | संख्यात गुणा २ |
| ३७ | सूक्ष्मसंपराय, | १ शुक्लध्याननो पहेलो पायो | ४ | ३–२ | ६ | ३ | १ ,, | १ | १४००००० | १२०००००० | ५०० धनुष | १ | १ | ९ | ७ | १ | सर्वस्तोक १ |
| ३८ | यथाख्यात ,, | ४ शुक्लध्यानना | ० | ३ | ६ | ३ | १ ,, | १ | १४००००० | १२०००००० | ५०० धनुष | १ | ४ | ११ | ९ | १ | संख्यात गुणा ३ |
| ३९ | देशविरति ,, | ८ आर्त, रौद्र १० धर्मना पहेला २ | ४ | ५ | ६ | ६ | १ ,, | २ | १८००००० | ६५५०००० | हजार योजन | १ | १ | ११ | ६ | ६ | असं० गुणा ६ |
| ४० | अविरति | ८ ९ धर्मनो पहेलो | ४ | ५ | ६ | ६ | ३ | २४ | ८४००००० | १९७५०००० | हजार यो० अधिक | १४ | ४ | १३ | ९ | ६ | अनंतगुणा ७ |
| ४१ | चक्षुदर्शन | १४ छेल्ला बे विना | ४ | ६ | ६ | ६ | ३ | १७ | २८००००० | १२५५०००० | हजार योजन | ६–३ | १२ | १३ | १० | ६ | असं० गुणा २ |
| ४२ | अचक्षुदर्शन | १४ ,, | ४ | ६ | ६ | ६ | ३ | २४ | ८४००००० | १९७५०००० | हजार यो० अधिक | १४ | १२ | १५ | १० | ६ | अनंतगुणा ४ |
| ४३ | अवधिदर्शन | १४ | ४ | ६ | ६ | ६ | १ समकित | १६ | २६००००० | ११६५०००० | हजार योजन | २ | ९ | १५ | ७ | ६ | सर्वस्तोक १ |
| ४४ | केवलदर्शन | २ | ० | १ केवली | ६ | १ | १ ,, | १ | १४००००० | १२०००००० | ५०० धनुष | १ | २ | ७ | २ | १ | अनंतगुणा ३ |
| ४५ | कृष्णलेश्या | १२ शुक्ल-विना | ४ | ६ | ६ | ६ | ३ | २२ | ८४००००० | १९७५०००० | हजार योजन अ० | १४ | ६–४ | १५ | १० | १ | विशेषाधिक ६ |
| ४६ | नीललेश्या | १२ ,, | ४ | ६ | ६ | ६ | ३ | २२ | ८४००००० | १९७५०००० | हजार योजन अ० | १४ | ६–४ | १५ | १० | १ | ,, ५ |
| ४७ | कापोतलेश्या | १२ ,, | ४ | ६ | ६ | ६ | ३ | २२ | ८४००००० | १९७५०००० | हजार योजन अ० | १४ | ६–४ | १५ | १० | १ | अनंतगुणा ४ |
| ४८ | तेजोलेश्या | १२ ,, | ४ | ६ | ६ | ६ | ३ | १८ | ४६००००० | १२८५०००० | हजार योजन | ३ | ७ | १५ | १० | १ | असं० गुणा ३ |
| ४९ | पद्मलेश्या | १२ ,, | ४ | ६ | ६ | ६ | ३ | ३ | २२००००० | ९१५०००० | हजार योजन | २ | ७ | १५ | १० | १ | असं० गुणा २ |
| ५० | शुक्ललेश्या | १४–१५ | ४ | ७ | ६ | ६ | ३ | ३ | २२००००० | ९१५०००० | हजार योजन | २ | १३ | १५ | १० | १ | सर्वस्तोक १ |

| | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ११ | भव्य | १६–१४ | ४ | ७ | ६ | ६ | ३ | २४ | ८४००००० | १९७५०००० | हजार योजन अ० | १४ | १४ | १५ | १२ | ६ | अनंतगुणा २ |
| ५२ | अभव्य | ८ | ४ | ५ | ६ | ६ | १ मिथ्या | २४ | ८४००००० | १९७५०००० | हजार योजन अ० | १४ | १ | १३ | ५ | ६ | सवस्तोक १ |
| ५३ | उपशम सम्यक्त्व | १२ गुणठाणा पहेला पा या सुधी | ४ | ३ | ६ | ६ | १ | १६ | २६००००० | ११६५०००० | हजार योजन | २ | ८ | १३ | ७ | ६ | सख्यात गुणा २ |
| ५४ | क्षायोपशमसम्यक्त्व | १२ | ४ | ६ | ६ | ६ | १ | १६ | २६००००० | ११६५०००० | हजार योजन | २ | ४ | १५ | ७ | ६ | अस० गुणा ४ |
| ५५ | क्षायिकसम्यक्त्व | १६ | ४ | ७ | ६ | ६ | १ | ४ | २६००००० | ७३००००० | छ गाउ | २ | ११ | १५ | ९ | ६ | अनंतगुणा ५ |
| ५६ | मिश्रसम्यक्त्व | ८ | ४ | २ | ६ | ६ | १ | १६ | २६००००० | ११६५०००० | हजार योजन | १ | १ | १० | ६ | ६ | सख्यात गुणा ३ |
| ५७ | सासादनसम्यक्त्व | ८ | ४ | ५–३ | ६ | ६ | १ | २२ | ५६००००० ३२००००० | १८७५०००० | हजार योजन | ७ | १ | १३ | ५ | ६ | सर्वस्तोक १ |
| ५८ | मिथ्यात्व | ८ | ४ | ५ | ६ | ६ | १ | २४ | ८४००००० | १९७५०००० | हजार योजन अ० | १४ | १ | १३ | ५ | ६ | अनंतगुणा ६ |
| ५९ | संज्ञी | १६–१४ | ४ | ६–७ | ६ | ६ | ३ | १६ | २६००००० | ११६५०००० | हजार योजन | २ | १४ | १५ | १२ | ६ | सर्वस्तोक १ |
| ६० | असंज्ञी | ८ | ४ | ४ | १हुडक | १ छेवट्ठु | १ मिथ्या | १० | ७६००००० | १४६५०००० | हजार योजन अ० | १२ | २ | ६ | ४ | ४ | अनंतगुणा २ |
| १ | आहारी | १४–१५ | ४ | ७ | ६ | ६ | ३ | २४ | ८४००००० | १९७५०००० | हजार योजन अ० | १४ | १३ | १५ | १२ | ६ | अस० गुणा २ |
| ६२ | अनाहारी | १०–८–२ | ४ | २ | ६ | १वज्र० | २ समकित, मिथ्या | २४ | ८४००००० | १९७५०००० | लोक प्रमाण | ८ | ५ | १ | १० | ६ | सर्वस्तोक १ |

| मार्गणा | मूळबंध हेतु ४ | उत्तरबंध हेतु ५७ | मिथ्यात्व ५ | अविरति १२ | कषाय २५ | योग १५ | मूळ भाव ५ | उत्तर भाव ५३ | उपशम भाव २ | क्षायिक भाव ९ | क्षयोपशम भाव १८ | औदारिक भाव २१ | परिणामिक भाव ३ | सांनिपातिक ६ | द्विकसंजोगी भागो ७ मो | त्रिकसंजोगी भांगो ९–१० | चतुःसजोगी भागो ४–५ | पंचसंजोगी भागो १ | सन्निपातिक १५ |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १ नरकगति | ४ | ५१ | ५ | १२ | २३ बे वेद विना | ११ | ५ | ३३ | १ | १ | १५ | १३ | ३ | ३ | ० | ०–१ | १–१ | ० | ३ |
| २ देवगति | ४ | ५२ | ५ | १२ | २४ नपुंसक वेदविना | ११ | ५ | ३७ | १ | १ | १५ | १७ | ३ | ३ | ० | ०–१ | १–१ | ० | ३ |
| ३ मनुष्यगति | ४ | ५७ | ५ | १२ | २५ | १५ | ५ | ५० | २ | ९ | १८ | १८ | ३ | ५ | ० | १–१ | १–१ | १ | ५ |
| ४ तिर्यंचगति | ४ | ५५ | ५ | १२ | २५ | १३ | ५ | ३९ | १ | १ | १६ | १८ | ३ | ३ | ० | ०–१ | १–१ | ० | ३ |
| ५ एकेंद्रिय | ४ | ३६ | १ अनाभोग | ७ चार इंद्रिय तथा एक मन विना | २३ | ५ | ३ | २५ | ० | ० | ८ | १४ | ३ | १ | ० | ०–१ | ०–० | ० | १ |
| ६ द्वींद्रिय | ४ | ३६ | १ ,, | ८ त्रण इंद्रिय तथा एक मन विना | २३ | ६ | ३ | २४ | ० | ० | ८ | १३ | ३ | १ | ० | ०–१ | ०–० | ० | १ |
| ७ त्रींद्रिय | ४ | ३७ | १ ,, | ९ बे इंद्रिय तथा मन विना | २३ | ४ | ३ | २४ | ० | ० | ८ | १३ | ३ | १ | ० | ०–१ | ०–० | ० | १ |
| ८ चतुरिंद्रिय | ४ | ३८ | १ ,, | १० एक इंद्रिय तथा एक मन विना | २३ | ४ | ३ | २५ | ० | ० | ९ | १३ | ३ | १ | ० | ०–१ | ०–० | ० | १ |
| ९ पंचेंद्रिय | ४ | ५७ | ५ | १२ | २५ | १५ | ५ | ५३ | २ | ९ | १८ | २१ | ३ | ५ | ० | १–४ | ४–४ | १ | १४ |
| १० पृथ्वीकाय | ४ | ३४ | १ अनाभोग | ७ | २३ | ३ | ३ | २५ | ० | ० | ८ | १४ | ३ | १ | ० | ०–१ | ०–० | ० | १ |
| ११ अप्काय | ४ | ३४ | १ ,, | ७ | २३ | ३ | ३ | २५ | ० | ० | ८ | १४ | ३ | १ | ० | ०–१ | ०–० | ० | १ |
| १२ तेजस्काय | ४ | ३४ | १ ,, | ७ | २३ | ३ | ३ | २४ | ० | ० | ८ | १३ | ३ | १ | ० | ०–१ | ०–० | ० | १ |
| १३ वायुकाय | ४ | ३६ | १ ,, | ७ | २३ | ५ | ३ | २४ | ० | ० | ८ | १३ | ३ | १ | ० | ०–१ | ०–० | ० | १ |
| १४ वनस्पतिकाय | ४ | ३४ | १ ,, | ७ | २३ | ३ | ३ | २५ | ० | ० | ८ | १४ | ३ | १ | ० | ०–१ | ०–० | ० | १ |
| १५ त्रसकाय | ४ | ५७ | ५ | १२ | २५ | १५ | ५ | ५३ | २ | ९ | १८ | २१ | ३ | ५ | ० | १–४ | ४–४ | १ | १४ |
| १६ मनयोग | ४ | ५५ | ५ | १२ | २५ | १३ | ५ | ५३ | २ | ९ | १८ | २१ | ३ | ५ | ० | १–४ | ४–४ | १ | १४ |

| | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १७ वचनयोग | ४ | ५५ | ५ | १२—११ मन विना | २५ | १३ | ५ | ५३ | २ | ९ | १८ | २१ | ३ | ५ | ० | १—४ | ४—४ | १ | १४ |
| १८ काययोग | ४ | ५७ | ५ | १२ | २५ | १५ | ५ | ५३ | २ | ९ | १८ | २१ | ३ | ५ | ० | १—४ | ४—४ | १ | १४ |
| १९ पुरुषवेद | ४ | ५५ | ५ | १२ | २३ | १५ | ५ | ४२ | २ | १ | १८ | १८ | ३ | ४ | ० | ०—३ | ३—३ | १ | १० |
| २० स्त्रीवेद | ४ | १३ | ५ | १२ | २३ | १३ | ५ | ४२ | २ | १ | १८ | १८ | ३ | ४ | ० | ०—३ | ३—१ | १ | ८ |
| २१ नपुंसकवेद | ४ | ५५ | ५ | १२ | २३ | १५ | ५ | ४२ | २ | १ | १८ | १८ | ३ | ४ | ० | ०—३ | ३—२ | १ | ९ |
| २२ क्रोध | ४ | ४५ | ५ | १२ | १३ क्रोध चार नवनोकषाय | १५ | ५ | ४२ | २ | १ | १८ | १८ | ३ | ४ | ० | ०—४ | ४—४ | १ | १३ |
| २३ मान | ४ | ४५ | ५ | १२ | १३ मान चार नवनोकषाय | १५ | ५ | ४२ | २ | १ | १८ | १८ | ३ | ४ | ० | ०—४ | ४—४ | १ | १३ |
| २४ माया | ४ | ४५ | ५ | १२ | १३ माया चार नवनोकषाय | १५ | ५ | ४२ | २ | १ | १८ | १८ | ३ | ४ | ० | ०—४ | ४—४ | १ | १३ |
| २५ लोभ | ४ | ४५ | ५ | १२ | १३ लोभ चार नवनोकषाय | १५ | ५ | ४२ | २ | १ | १८ | १८ | ३ | ४ | ० | ०—४ | ४—४ | १ | १३ |
| २६ मतिज्ञान | ३ | ४८ | ० | १२ | २१ अनतानुबंधीविना | १५ | ५ | ४० | २ | २ | १५ | १९ | २ | ४ | ० | ०—४ | ४—४ | १ | १३ |
| २७ श्रुतज्ञान | ३ | ४८ | ० | १२ | २१ ,, | १५ | ५ | ४० | २ | २ | १५ | १९ | २ | ४ | ० | ०—४ | ४—४ | १ | १३ |
| २८ अवधिज्ञान | ३ | ४८ | ० | १२ | २१ ,, | १५ | ५ | ४० | २ | २ | १५ | १९ | २ | ४ | ० | ०—४ | ४—३ | १ | १२ |
| २९ मन पर्ययज्ञान | २ | २६ | ० | ० | १३ संज्वलन४ नवनोकषाय | १३ | ५ | ३५ | २ | २ | १४ | १५ | २ | ४ | ० | ०—१ | १—१ | १ | ४ |
| ३० केवलज्ञान | १ | ७ | ० | ० | ० | ७ | ३ | १३ | ० | ९ | ० | ३ | १ | २ | १ | १—० | ०—० | ० | २ |
| ३१ मतिअज्ञान | ४ | ५५ | ५ | १२ | २५ | १३ | ३ | ३४ | ० | ० | १० | २१ | ३ | १ | ० | ०—४ | ०—० | ० | ४ |
| ३२ श्रुतअज्ञान | ४ | ५५ | ५ | १२ | २५ | १३ | ३ | ३४ | ० | ० | १० | २१ | ३ | १ | ० | ०—४ | ०—० | ० | ४ |
| ३३ विभंगज्ञान | ४ | ५५ | ५ | १२ | २५ | १३ | ३ | ३४ | ० | ० | १० | २१ | ३ | १ | ० | ०—४ | ०—० | ० | ४ |
| ३४ सामायिक चारित्र | २ | २६ | ० | ० | १३ | १३ | ५ | ३४ | २ | १ | १४ | १५ | २ | ४ | ० | ०—१ | १—१ | १ | ४ |
| ३५ छेदोपस्थापनीय ,, | २ | २६ | ० | ० | १३ | १३ | ५ | ३४ | २ | १ | १४ | १५ | २ | ४ | ० | ०—१ | १—१ | १ | ४ |
| ३६ परिहारविशुद्धि ,, | २ | २१ | ० | ० | १२ संज्वलन४ आठ नोकषाय | ९ | ५—४ | ३२—३१ | १—० | १ | १४ | १४ | २ | ३—२ | ० | ०—१<br>०—१ | १—१<br>०—१ | ० | २<br>२ |
| ३७ सूक्ष्मसांपराय ,, | २ | १० | ० | ० | १ संज्वलन लोभ | ९ | ५ | २२ | २ | १ | १३ | ४ | २ | ३ | ० | ०—० | १—१ | १ | २ |
| ३८ यथाख्यात ,, | १ | ११ | ० | ० | ० | ११ | ५ | २८ | २ | ९ | १२ | ३ | २ | ४—५ | १ | १—० | १—१ | १ | ५ |

| | मार्गणा | मूळबंध हेतु ४ | उत्तर बंध हेतु ५७ | मिथ्यात्व ५ | अविरति १२ | कषाय २५ | योग १५ | मूळ भाव ५ | उत्तर भाव ५३ | उपशम भाव २ | क्षायिक भाव ९ | क्षयोपशम भाव १८ | औदयिक भाव २१ | पारिणामिक भाव ३ | सन्निपातिक भाव ६ | द्विकसजोगी भागो ७ मो | त्रिकसंजोगी भांगो २–१० | चतुःसंजोगी भांगो ४–५ | पंचसंजोगी भांगो १ | सन्निपातिक १५ |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ३९ | देशविरति | ३ | ३९ | ० | ११ त्रसनी अविरतिविना | १७ पहेली बे चोकडीविना | ११ | ५ | ३४ | १ | १ | १३ | १७ | २ | ३ | ० | ०–१ | २–१ | ० | ५ |
| ४० | अविरति | ४ | ५५ | ५ | १२ | २५ | १३ | ५ | ४१ | १ | १ | १५ | २१ | ३ | ३ | ० | ४–४ | ४–४ | ० | १२ |
| ४१ | चक्षुदर्शन | ४ | ५५ | ५ | १२ | २५ | १३ | ५ | ४६ | २ | २ | १८ | २१ | ३ | ४ | ० | ४–४ | ४–४ | १ | १३ |
| ४२ | अचक्षुदर्शन | ४ | ५७ | ५ | १२ | २५ | १५ | ५ | ४६ | २ | २ | १८ | २१ | ३ | ४ | ० | ४–४ | ४–४ | १ | १३ |
| ४३ | अवधिदर्शन | ३ | ४८ | ० | १२ | २१ | १५ | ५ | ४० | २ | २ | १५ | १९ | २ | ४ | ० | ०–४ | ४–३ | १ | १२ |
| ४४ | केवळदर्शन | १ | ७ | ० | ० | ० | ७ | ३ | १३ | ० | ९ | ० | ३ | १ | २ | १ | १–० | ०–० | ० | २ |
| ४५ | कृष्णलेश्या | ४ | ५७ | ५ | १२ | २५ | १५ | ५ | ३९ | १ | १ | १८ | १६ | ३ | ३ | ० | ०–४ | ४–२ | ० | १० |
| ४६ | नीललेश्या | ४ | ५७ | ५ | १२ | २५ | १५ | ५ | ३९ | १ | १ | १८ | १६ | ३ | ३ | ० | ०–४ | ४–३ | ० | ११ |
| ४७ | कापोतलेश्या | ४ | ५७ | ५ | १२ | २५ | १५ | ५ | ३९ | १ | १ | १८ | १६ | ३ | ३ | ० | ०–४ | ४–३ | ० | ११ |
| ४८ | तेजोलेश्या | ४ | ५७ | ५ | १२ | २५ | १५ | ५ | ३८ | १ | १ | १८ | १५ | ३ | ३ | ० | ०–३ | ३–३ | ० | ९ |
| ४९ | पद्मलेश्या | ४ | ५७ | ५ | १२ | २५ | १५ | ५ | ३८ | १ | १ | १८ | १५ | ३ | ३ | ० | ०–३ | ३–२ | ० | ८ |
| ५० | शुक्ललेश्या | ४ | ५७ | ५ | १२ | २५ | १५ | ५ | ४७ | २ | ९ | १८ | १५ | ३ | ५ | ० | १–३ | ३–२ | १ | १० |
| ५१ | भव्य | ४ | ५७ | ५ | १२ | २५ | १५ | ५ | ५२ | २ | ९ | १८ | २१ | २ | ५–४ | ० | १–४<br>०–४ | ४–४<br>४–४ | १<br>१ | १४<br>१३ |
| ५२ | अभव्य | ४ | ५५ | ५ | १२ | २५ | १३ | ३ | ३३ | ० | ० | १० | २१ | २ | १ | ० | ०–४ | ०–० | ० | ४ |
| ५३ | उपशम सम्यक्त्व | ३ | ४६ | ० | १२ | २१ | १३ | ५ | ३८ | २ | १ | १४ | १९ | २ | १ | ० | ०–० | ४–० | ० | ४ |
| ५४ | क्षयोपशमस० | ३ | ४८ | ० | १२ | २१ | १५ | ३ | ३६ | ० | ० | १५ | १९ | २ | १ | ० | ०–४ | ०–० | ० | ४ |
| ५५ | क्षायिकस० | ३ | ४८ | ० | १२ | २१ | १५ | ५ | ४५ | १ | ९ | १४ | १९ | २ | ४ | १ | १–० | ०–४ | १ | ७ |
| ५६ | मिश्रसम्यक्त्व | ३ | ४३ | ० | १२ | २१ | १० | ३ | ३३ | ० | ० | १२ | १९ | २ | १ | ० | ०–४ | ०–० | ० | ४ |
| ५७ | सास्वादनस० | ३ | ५० | ० | १२ | २५ | १३ | ३ | ३२ | ० | ० | १० | २० | २ | १ | ० | ०–४ | ०–० | ० | ४ |
| ५८ | मिथ्यात्व | ४ | ५५ | ५ | १२ | २५ | १३ | ३ | ३४ | ० | ० | १० | २१ | ३ | १ | ० | ०–४ | ०–० | ० | ४ |
| ५९ | संज्ञी | ४ | ५७ | ५ | १२ | २५ | १५ | ५ | ५३ | २ | ९ | १८ | २१ | ३ | ५ | ० | १–४<br>०–४ | ४–४<br>४–४ | १<br>१ | १४<br>१३ |
| ६० | असंज्ञी | ४ | ४१ | १ | ११ मननी अविरतिविना | २३ | ६ | ३ | २६ | ० | ० | ९ | १५ | ३ | १ | ० | ०–२ | ०–० | ० | २ |
| ६१ | आहारी | ४ | ५७ | ५ | १२ | २५ | १५ | ५ | ५३ | २ | ९ | १८ | २१ | ३ | ५ | ० | १–४ | ४–४ | १ | १४ |
| ६२ | अनाहारी | ४ | ४३–३३ | ५–१ | १२–६ | २५ | १ | ५ | ४८ | १ | ९ | १४ | २१ | ३ | ५–४ | १ | १–४ | १–४ | ० | ११ |

| मार्गणा | पुण्यबंध प्रकृति ४२ | पापबंध प्रकृति ८२ | ध्रुवबंध प्रकृति ४७ | अध्रुवबंध प्रकृति ७३ | परावर्त प्रकृतिबंध ९१ | अपरावर्त प्रकृतिबंध २९ | ज्ञानावरणी प्रकृतिबंध ५ | दर्शनावरणी प्रकृतिबंध ९ | वेदनीय प्रकृतिबंध २ | मोहनीय प्रकृतिबंध २६ | आयुकर्म प्रकृतिबंध ४ | नामकर्म प्रकृतिबंध ६७ | गोत्रकर्म प्रकृतिबंध २ | अंतराय कर्म प्रकृतिबंध ५ |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १ नरकगति | ३४ | ७१ | ४७ | ५४ | ७२ | २९ | ५ | ९ | २ | २६ | २ | ५० | २ | ५ |
| २ देवगति | ३५ | ७३ | ४७ | ५७ | ७५ | २९ | ५ | ९ | २ | २६ | २ | ५३ | २ | ५ |
| ३ मनुष्यगति | ४२ | ८२ | ४७ | ७३ | ९१ | २९ | ५ | ९ | २ | २६ | ४ | ६७ | २ | ५ |
| ४ तिर्यंचगति | ३९ | ८२ | ४७ | ७० | ८९ | २८ | ५ | ९ | २ | २६ | ४ | ६४ | २ | ५ |
| ५ एकेंद्रिय | ३६ | ७९ | ४७ | ६२ | ८१ | २८ | ५ | ९ | २ | २६ | २ | ५८ | २ | ५ |
| ६ द्वींद्रिय | ३४ | ७९ | ४७ | ६२ | ८१ | २८ | ५ | ९ | २ | २६ | २ | ५८ | २ | ५ |
| ७ त्रींद्रिय | ३४ | ७९ | ४७ | ६२ | ८१ | २८ | ५ | ९ | २ | २६ | २ | ५८ | २ | ५ |
| ८ चतुरिंद्रिय | ३४ | ७९ | ४७ | ६२ | ८१ | २८ | ५ | ९ | २ | २६ | २ | ५८ | २ | ५ |
| ९ पंचेंद्रिय | ४२ | ८२ | ४७ | ७३ | ९१ | २९ | ५ | ९ | २ | २६ | ४ | ६७ | २ | ५ |
| १० पृथ्वीकाय | ३४ | ७९ | ४७ | ६२ | ८१ | २८ | ५ | ९ | २ | २६ | २ | ५८ | २ | ५ |
| ११ अपकाय | ३४ | ७९ | ४७ | ६२ | ८१ | २८ | ५ | ९ | २ | २६ | २ | ५८ | २ | ५ |
| १२ तेजस्काय | ३० | ७९ | ४७ | ५८ | ७७ | २८ | ५ | ० | २ | २६ | १ | ५६ | १ | ५ |
| १३ वायुकाय | ३० | ७९ | ४७ | ५८ | ७७ | २८ | ५ | ९ | २ | २६ | १ | ५६ | १ | ५ |
| १४ वनस्पतिकाय | ३६ | ७९ | ४७ | ६२ | ८१ | २८ | ५ | ९ | २ | २६ | २ | ५८ | २ | ५ |
| १५ त्रसकाय | ४२ | ८२ | ४७ | ७३ | ९१ | २९ | ५ | ९ | २ | २६ | ४ | ६७ | २ | ५ |
| १६ मनयोग | ४२ | ८२ | ४७ | ७३ | ९१ | २९ | ५ | ९ | २ | २६ | ४ | ६७ | २ | ५ |
| १७ वचनयोग | ४२ | ८२ | ४७ | ७३ | ९१ | २९ | ५ | ९ | २ | २६ | ४ | ६७ | २ | ५ |
| १८ काययोग | ४२ | ८२ | ४७ | ७३ | ९१ | २९ | ५ | ९ | २ | २६ | ४ | ६७ | २ | ५ |
| १९ पुरुषवेद | ४२ | ८२ | ४७ | ७३ | ९१ | २९ | ५ | ९ | २ | २६ | ४ | ६७ | २ | ५ |
| २० स्त्रीवेद | ४२ | ८२ | ४७ | ७३ | ९१ | २९ | ५ | ९ | २ | २६ | ४ | ६७ | २ | ५ |
| २१ नपुंसकवेद | ४२ | ८२ | ४७ | ७३ | ९१ | २९ | ५ | ९ | २ | २६ | ४ | ६७ | २ | ५ |
| २२ क्रोध | ४२ | ८२ | ४७ | ७३ | ९१ | २९ | ५ | ९ | २ | २६ | ४ | ६७ | २ | ५ |
| २३ मान | ४२ | ८२ | ४७ | ७३ | ९१ | २९ | ५ | ९ | २ | २६ | ४ | ६७ | २ | ५ |
| २४ माया | ४२ | ८२ | ४७ | ७३ | ९१ | २९ | ५ | ९ | २ | २६ | ४ | ६७ | २ | ५ |
| २५ लोभ | ४२ | ८२ | ४७ | ७३ | ९१ | २९ | ५ | ९ | २ | २६ | ४ | ६७ | २ | ५ |

| मार्गणा | पुण्यबंध प्रकृति ४२ | पापबंध प्रकृति ८२ | ध्रुवबंध प्रकृति ४७ | अध्रुवबंध प्रकृति ७३ | परावर्ती प्रकृतिबंध ९१ | अपरावर्ती प्रकृतिबंध २९ | ज्ञानावरणी प्रकृतिबंध ५ | दर्शनावरणी प्रकृतिबंध ९ | वेदनीय प्रकृतिबंध २ | मोहनीय प्रकृतिबंध २६ | आयुकर्म प्रकृतिबंध ४ | नामकर्म प्रकृतिबंध ६७ | गोत्रकर्म प्रकृतिबंध २ | अंतराय कर्मप्रकृति बंध ५ |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| २६ मतिज्ञान | ३९ | ४४ | ३९ | ४० | ५१ | २८ | ५ | ६ | २ | १९ | २ | ३९ | १ | ५ |
| २७ श्रुतज्ञान | ३९ | ४४ | ३९ | ४० | ५१ | २८ | ५ | ६ | २ | १९ | २ | ३९ | १ | ५ |
| २८ अवधिज्ञान | ३९ | ४४ | ३९ | ४० | ५१ | २८ | ५ | ६ | २ | १९ | २ | ३९ | १ | ५ |
| २९ मनःपर्ययज्ञान | ३३ | ३६ | ३१ | ३४ | ३७ | २८ | ५ | ६ | २ | ११ | १ | ३४ | १ | ५ |
| ३० केवलज्ञान | १ | ० | ० | १ | १ | ० | ० | ० | १ | ० | ० | ० | ० | ० |
| ३१ मतिअज्ञान | ३९ | ८२ | ४७ | ७० | ८९ | २८ | ५ | ९ | २ | २६ | ४ | ६४ | २ | ५ |
| ३२ श्रुतअज्ञान | ३९ | ८२ | ४७ | ७० | ८९ | २८ | ५ | ९ | २ | २६ | ४ | ६४ | २ | ५ |
| ३३ विभंगज्ञान | ३९ | ८२ | ४७ | ७० | ८९ | २८ | ५ | ९ | २ | २६ | ४ | ६४ | २ | ५ |
| ३४ सामायिक चारित्र | ३३ | ३६ | ३१ | ३४ | ३७ | २८ | ५ | ६ | २ | ११ | १ | ३४ | १ | ५ |
| ३५ छेदोपस्थापनीय ,, | ३३ | ३६ | ३१ | ३४ | ३७ | २८ | ५ | ६ | २ | ११ | १ | ३४ | १ | ५ |
| ३६ परिहारविशुद्धि ,, | ३३ | ३६ | ३१ | ३४ | ३७ | २८ | ५ | ६ | २ | ११ | १ | ३४ | १ | ५ |
| ३७ सूक्ष्मसपराय ,, | ३ | १४ | १४ | ३ | ३ | १४ | ५ | ४ | १ | ० | ० | १ | १ | ५ |
| ३८ यथाख्यात ,, | १ | ० | ० | १ | १ | ० | ० | ० | १ | ० | ० | ० | ० | ० |
| ३९ देशविरति | ३१ | ६० | ३५ | ३२ | ३९ | २८ | १ | ६ | २ | १५ | १ | ३२ | १ | ५ |
| ४० अविरति | ४० | ८२ | ४७ | ७१ | ८९ | २९ | ५ | ९ | २ | २६ | ४ | ६५ | २ | ५ |
| ४१ चक्षुदर्शन | ४२ | ८२ | ४७ | ७३ | ९१ | २९ | ५ | ९ | २ | २६ | ४ | ६७ | २ | ५ |
| ४२ अचक्षुदर्शन | ४२ | ८२ | ४७ | ७३ | ९१ | २९ | ५ | ९ | २ | २६ | ४ | ६७ | २ | ५ |
| ४३ अवधिदर्शन | ३९ | ४४ | ३९ | ४० | ५१ | २८ | ५ | ६ | २ | १९ | ४ | ३९ | १ | ५ |
| ४४ केवलदर्शन | १ | ० | ० | १ | १ | ० | ० | ० | १ | ० | ० | ० | ० | ० |
| ४५ कृष्णलेश्या | ४० | ८२ | ४७ | ७१ | ८९ | २९ | ५ | ९ | २ | २६ | ४ | ६५ | २ | ५ |
| ४६ नीललेश्या | ४० | ८२ | ४७ | ७१ | ८९ | २९ | ५ | ९ | २ | २६ | ४ | ६५ | २ | ५ |
| ४७ कापोतलेश्या | ४० | ८२ | ४७ | ७१ | ८९ | २९ | ५ | ९ | २ | २६ | ४ | ६५ | २ | ५ |
| ४८ तेजोलेश्या | ४२ | ७३ | ४७ | ६४ | ८२ | २९ | ५ | ९ | २ | २६ | ३ | ५९ | २ | ५ |

| | मार्गणा | बंधविच्छेद प्रकृति | बंधनी ओघ प्रकृति १२० | मिथ्यात्व | साखादन | मिश्र | अविरति | देशविरति | प्रमत्त | अप्रमत्त | अपूर्वकरण | अनिवृत्तिकरण | सूक्ष्मसंपराय | उपशांतमोह | क्षीण मोह | सयोगी केवळी | अयोगी केवळी |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १ | नरकगति | १९ | १०१ | १०० जिन नाम विना | ९६ | ७० | ७२ | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० |
| २ | देवगति | १६ | १०४ | १०३ जिन नाम विना | ९६ | ७० | ७२ | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० |
| ३ | मनुष्यगति | ० | १२० | ११७ जिन नाम, आहारक विना | १०१ | ६९ | ७१ | ६७ | ६३ | ५९ ५८ | ५८।५६।५६।५६। ५६।५६।२६ | २२।२१।२०। १९।१८ | १७ | १ | १ | १ | ० |
| ४ | तिर्यंचगति | ३ | ११७ | ११७ | १०१ | ६९ | ७० | ६६ | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० |
| ५ | एकेंद्रिय | ११ | १०९ | १०९ | ९६—९४ | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० |
| ६ | द्वींद्रिय | ११ | १०९ | १०९ | ९६—९४ | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० |
| ७ | त्रींद्रिय | ११ | १०९ | १०९ | ९६—९४ | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० |
| ८ | चतुरिंद्रिय | ११ | १०९ | १०९ | ९६—९४ | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० |
| ९ | पंचेंद्रिय | ० | १२० | ११७ | १०१ | ७४ | ७७ | ६७ | ६३ | ५९ ५८ | ५८।५६।५६।५६। ५६।५६।२६ | २२।२१।२०। १९।१८ | १७ | १ | १ | १ | ० |
| १० | पृथ्वीकाय | ११ | १०९ | १०९ | ९६—९४ | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० |
| ११ | अप्काय | ११ | १०९ | १०९ | ९६—९४ | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० |
| १२ | तेजस्काय | १५ | १०५ | १०५ | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० |
| १३ | वायुकाय | १५ | १०५ | १०५ | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० |
| १४ | वनस्पतिकाय | ११ | १०९ | १०९ | ९६—९४ | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० |
| १५ | त्रसकाय | ० | १२० | ११७ | १०१ | ७४ | ७७ | ६७ | ६३ | ५९ ५८ | ५८।५६।५६।५६। ५६।५६।२६ | २२।२१।२०। १९।१८ | १७ | १ | १ | १ | ० |
| १६ | मनोयोग | ० | १२० | ११७ | १०१ | ७४ | ७७ | ६७ | ६३ | ५९ ५८ | ५८।५६।५६।५६। ५६।५६।२६ | २२।२१।२०। १९।१८ | १७ | १ | १ | १ | ० |
| १७ | वचनयोग | ० | १२० | ११७ | १०१ | ७४ | ७७ | ६७ | ६३ | ५९ ५८ | ५८।५६।५६।५६। ५६।५६।२६ | २२।२१।२०। १९।१८ | १७ | १ | १ | १ | ० |
| १८ | काययोग | ० | १२० | ११७ | १०१ | ७४ | ७७ | ६७ | ६३ | ५९ ५८ | ५८।५६।५६।५६। ५६।५६।२६ | २२।२१।२०। १९।१८ | १७ | १ | १ | १ | ० |
| १९ | पुरुषवेद | ० | १२० | ११७ | १०१ | ७४ | ७७ | ६७ | ६३ | ५९ ५८ | ५८।५६।५६।५६। ५६।५६।२६ | २२।२१।२०। १९।१८ | ० | ० | ० | ० | ० |

| | | | | | | | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| २० स्त्रीवेद | ० | १२० | ११७ | १०१ | ७४ | ७७ | ६७ | ६३ | ५९<br>५८ | ५८।५६।५६।५६।<br>५६।५६।२५ | २२।२१।२०।<br>१९।१८ | ० | ० | ० | ० | ० |
| २१ नपुंसकवेद | ० | १२० | ११७ | १०१ | ७४ | ७७ | ६७ | ६३ | ५९<br>५८ | ५८।५६। ६।५६।<br>५६।५६।२६ | २२।२१।२०।<br>१९।१८ | ० | ० | ० | ० | ० |
| २२ क्रोध | ० | १२० | ११७ | १०१ | ७४ | ७७ | ६७ | ६३ | ५९<br>५८ | ५८।५६।५६।५६।<br>५६।५६।२६ | २२।२१।२०।<br>१९।१८ | ० | ० | ० | ० | ० |
| २३ मान | ० | १२० | ११७ | १०१ | ७४ | ७७ | ६७ | ६३ | ५९<br>५८ | ५८।५६।५६।५६।<br>५६।५६।२६ | २२।२१।२०।<br>१९।१८ | ० | ० | ० | ० | ० |
| २४ माया | ० | १२० | ११७ | १०१ | ७४ | ७७ | ६७ | ६३ | ५९<br>५८ | ५८।५६।५६।५६।<br>५६।५६।२० | २२।२१।२०।<br>१९।१८ | ० | ० | ० | ० | ० |
| | ० | १२० | ११७ | १०१ | ७४ | ७७ | ६७ | ६३ | ५९<br>५८ | ५८।५६।५ ।५६।<br>५६।५६।२५ | २२।२१।२०।<br>१९।१८ | १७ | ० | ० | ० | ० |
| | ४१ | ७९ | ० | ० | ० | ७७ | ६७ | ६३ | ५९<br>५८ | ५८।५६।५६।५६।<br>५६।५६।२६ | २ ।२१।२०।<br>१९।१८ | १७ | १ | १ | ० | ० |
| २७ श्रुतज्ञान | ४१ | ७९ | ० | ० | ० | ७७ | ६७ | ६३ | ५९<br>५८ | ५८।५६।५६।५६।<br>५६।५६।२६ | २।२१।२०।<br>१९।१८ | १७ | १ | १ | ० | ० |
| २८ अवधिज्ञान | ४१ | ७९ | ० | ० | ० | ७७ | ६७ | ६३ | ५९<br>५८ | ५८।५६।५६।५६।<br>५६।५६।२६ | २२।२१।२०।<br>१९।१८ | १७ | १ | १ | ० | ० |
| २९ मन पर्ययज्ञान | ५५ | ६५ | ० | ० | ० | ० | ० | ६३ | ५९<br>५८ | ५८।५६।५६।५६।<br>५६।५६।२६ | २२।२१।२०।<br>१९।१८ | १७ | १ | १ | ० | ० |
| ३० केवलज्ञान | ११९ | १ | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | १ | ० |
| ३१ मतिअज्ञान | ३ | ११७ | ११७ | १०१ | ७४ | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० |
| ३२ श्रुतअज्ञान | ३ | ११७ | ११७ | १०१ | ७४ | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० |
| ३३ विभंगज्ञान | ३ | ११७ | ११७ | १०१ | ७४ | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० |
| ३४ सामायिक चारित्र | ५५ | ६५ | ० | ० | ० | ० | ० | ६३ | ५९<br>५८ | ५८।५६।५६। ६।<br>५६।५६।२६ | २२।२१।२०।<br>१९।१८ | ० | ० | ० | ० | ० |
| ३५ छेदोपस्थापनीय ,, | ५५ | ६५ | ० | ० | ० | ० | ० | ६३ | ५९<br>५८ | ५८।५६।५६।५६।<br>५६।५६।२५ | २२।२१।२०।<br>१९।१८ | ० | ० | ० | ० | ० |
| परिहारविशुद्धि | ५५ | ६५ | ० | ० | ० | ० | ० | ६३ | ५९–५८ | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० |
| [illegible]सपराय,, | १०३ | १७ | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | १७ | ० | ० | ० | ० |
| [illegible]यात , | ११९ | १ | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | १ | १ | १ | ० |
| [illegible]रति ,, | ५३ | ६७ | ० | ० | ० | ० | ६७ | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० |
| ४० [illegible]रति | २ | ११८ | ११७ | १०१ | ७४ | ७७ | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० |

| | मार्गणा | बंधविच्छेद प्रकृति | बंधनी ओघ प्रकृति १२० | मिथ्यात्व | सास्वादन | मिश्र | अविरति | देशविरति | प्रमत्त | अप्रमत्त | अपूर्वकरण | अनिवृत्तिकरण | सूक्ष्मसंपराय | उपशान्तमोह | क्षीणमोह | सयोगी केवली | अयोगी केवली |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ४१ | चक्षुदर्शन | ० | १२० | ११७ | १०१ | ७४ | ७७ | ६७ | ६३ | ५९<br>५८ | ५८।५६।५६।५६।<br>५६।५६।२६ | २२।२२।२१।२०।<br>१९।१८ | १७ | १ | १ | ० | ० |
| ४२ | अचक्षुदर्शन | ० | १२० | ११७ | १०१ | ७४ | ७७ | ६७ | ६३ | ५९<br>५८ | ५८।५६।५६।५६।<br>५६।५६।२६ | २२।२२।२१।२०।<br>१९।१८ | १७ | १ | १ | ० | ० |
| ४३ | अवधिदर्शन | ४१ | ७९ | ० | ० | ० | ७७ | ६७ | ६३ | ५९<br>५८ | ५८।५६।५६।५६।<br>५६।५६।२६ | २२।२२।२१।२०।<br>१९।१८ | १७ | १ | १ | ० | ० |
| ४४ | केवलदर्शन | ११९ | १ | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | १ | ० |
| ४५ | कृष्णलेश्या | २ | ११८ | ११७ | १०१ | ७४ | ७७ | ६७ | ६३ | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० |
| ४६ | नीललेश्या | २ | ११८ | ११७ | १०१ | ७४ | ७७ | ६७ | ६३ | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० |
| ४७ | कापोतलेश्या | २ | ११८ | ११७ | १०१ | ७४ | ७७ | ६७ | ६३ | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० |
| ४८ | तेजोलेश्या | ९ | १११ | १०८ | १०१ | ७४ | ७७ | ६७ | ६३ | ५९—५८ | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० |
| ४९ | पद्मलेश्या | १२ | १०८ | १०५ | १०१ | ७४ | ७७ | ६७ | ६३ | ५९—५८ | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० |
| ५० | शुक्ललेश्या | १६ | १०४ | १०१ | ९७ | ७४ | ७७ | ६७ | ६३ | ५९<br>५८ | ५८।५६।५६।५६।<br>५६।५६।२६ | २२।२२।२१।२०।<br>१९।१८ | १७ | १ | १ | १ | ० |
| ५१ | भव्य | ० | १२० | ११७ | १०१ | ७४ | ७७ | ६७ | ६३ | ५९<br>५८ | ५८।५६।५६।५६।<br>५६।५६।२६ | २२।२२।२१।२०।<br>१९।१८ | १७ | १ | १ | १ | ० |
| ५२ | अभव्य | ३ | ११७ | ११७ | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० |

| | | | | | | | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ४३ उपशम सम्यक्त्व | ४३ | ७७ | ० | ० | ० | ७५ | ६५ | ६२ | ५९ ५८ | ५८।५६।५६।५६। ५६।५६।२६ | २२।२१।२०। १९।१८ | १७ | १ | ० | ० | ० |
| ४४ क्षयोपशम सम्यक्त्व | ४१ | ७९ | ० | ० | ० | ७७ | ६७ | ६३ | ५९–५८ | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० |
| ४५ क्षायिक सम्यक्त्व | ४१ | ७९ | ० | ० | ० | ७७ | ६७ | ६३ | ५९ ८ | ५८।५६।५०।५६। ५६।५६।२६ | २२।२१।२०। १९।१८ | १७ | १ | १ | १ | ० |
| ४६ मिश्रसम्यक्त्व | ४६ | ७४ | ० | ० | ७४ | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० |
| ४७ सास्वादनसम्यक्त्व | १९ | १०१ | ० | १०१ | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० |
| ४८ मिथ्यात्व | ३ | ११७ | ११७ | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० |
| ४९ संज्ञी | ० | १२० | ११७ | १०१ | ७४ | ७७ | ६७ | ६३ | ५९ ५८ | ५८।५६।५६।५६। ५६।५६।२६ | २२।२१।२०। १९।१८ | १७ | १ | १ | १ | ० |
| ५० असंज्ञी | ३ | ११७ | ११७ | १०१ | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० |
| ५१ आहारी | ० | १२० | ११७ | १०१ | ७४ | ७७ | ६७ | ६३ | ५९ ५८ | ५८।५६।५६।५६। ५६।५६।२६ | २२।२१।२०। १९।१८ | १७ | १ | १ | १ | ० |
| ५२ अनाहारी | ८ | ११२ | ११७ | २४ | ० | ७५ | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | १ | ० |

| | मार्गणा | पुण्यप्रकृति उदय ४२ | पापप्रकृति उदय ८२ | ध्रुवोदयी प्रकृति उदय २७ | अध्रुवोदयी प्रकृति उदय ९५ | क्षेत्रविपाकी प्रकृति उदय ४ | भवविपाकी प्रकृति उदय ४ | जीवविपाकी प्रकृति उदय ७८ | पुद्गलविपाकी प्रकृति उदय ३६ | ज्ञानावरण प्रकृति उदय ५ | दर्शनावरण प्रकृति उदय ९ | वेदनीयकर्म प्रकृति उदय २ | मोहनीकर्म प्रकृति उदय २८ | आयुकर्म प्रकृति उदय ४ | नामकर्म प्रकृति उदय ६७ | गोत्रकर्म प्रकृति उदय २ | अंतरायकर्म प्रकृति उदय ५ |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १ | नरकगति | २० | ५८–६१ | २७ | ५२ | १ | १ | ५९–५६ | १८ | ५ | ९–६ | २ | २६ | १ | ३० | १ | ५ |
| २ | देवगति | ३० | ५५–५२ | २७ | ५६ | १ | १ | ६३–६० | १८ | ५ | ९–६ | २ | २७ | १ | ३३ | १ | ५ |
| ३ | मनुष्यगति | ३४–३६ | ७० | २७ | ७५ | १ | १ | ६९ | ३१ | ५ | ९ | २ | २८ | १ | ५०–५२ | २ | ५ |
| ४ | तिर्यंचगति | ३०–३२ | ७९ | २७ | ८० | १ | १ | ७३ | ३२ | ५ | ९ | २ | २८ | १ | ५६–५८ | १ | ५ |
| ५ | एकेंद्रिय | २१–२२ | ६३ | २७ | ५३ | १ | १ | ५८ | २० | ५ | ९ | २ | २४ | १ | ३३–३४ | १ | ५ |
| ६ | द्वींद्रिय | २३ | ६३ | २७ | ५५ | १ | १ | ६० | २० | ५ | ९ | २ | २४ | १ | ३५ | १ | ५ |
| ७ | त्रींद्रिय | २३ | ६३ | २७ | ५५ | १ | १ | ६० | २० | ५ | ९ | २ | २४ | १ | ३५ | १ | ५ |
| ८ | चतुरिंद्रिय | २३ | ६३ | २७ | ५५ | १ | १ | ६० | २० | ५ | ९ | २ | २४ | १ | ३५ | १ | ५ |
| ९ | पंचेंद्रिय | ४१ | ७५ | २७ | ८७ | ४ | ४ | ७२ | ३४ | ५ | ९ | २ | २८ | ४ | ५९ | २ | ५ |
| १० | पृथ्वीकाय | २१ | ६२ | २७ | ५२ | १ | १ | ५८ | १९ | ५ | ९ | २ | २४ | १ | ३२ | १ | ५ |
| ११ | अप्काय | २० | ६२ | २७ | ५१ | १ | १ | ५८ | १८ | ५ | ९ | २ | २४ | १ | ३१ | १ | ५ |
| १२ | तेजस्काय | १८ | ६२ | २७ | ४९ | १ | १ | ५७ | १७ | ५ | ९ | २ | २४ | १ | २९ | १ | ५ |
| १३ | वायुकाय | १८–१८ | ६२ | २७ | ५०–४९ | १ | १ | ५७ | १७ | ५ | ९ | २ | २४ | १ | २९–३० | १ | ५ |
| १४ | वनस्पतिकाय | २० | ६३ | २७ | ५२ | १ | १ | ५८ | १९ | ५ | ९ | २ | २४ | १ | ३२ | १ | ५ |
| १५ | त्रसकाय | ४१ | ७८ | २७ | ९० | ४ | ४ | ७५ | ३४ | ५ | ९ | २ | २८ | ४ | ६२ | २ | ५ |
| १६ | मनयोग | ३९ | ७२ | २७ | ८२ | ० | ४ | ७१ | ३४ | ५ | ९ | २ | २८ | ४ | ५४ | २ | ५ |
| १७ | वचनयोग | ३९ | ७५ | २७ | ८५ | ० | ४ | ७४ | ३४ | ५ | ९ | २ | २८ | ४ | ५७ | २ | ५ |
| १८ | काययोग | ४२ | ८२ | २७ | ९५ | ४ | ४ | ७८ | ३४ | ५ | ९ | २ | २८ | ४ | ६७ | २ | ५ |
| १९ | पुरुषवेद | ४० | ७० | २७ | ८१ | ३ | ३ | ६८ | ३४ | ५ | ९ | २ | २६ | ३ | ५६ | २ | ५ |
| २० | स्त्रीवेद | ३८ | ७० | २७ | ७९ | ३ | ३ | ६८ | ३२ | ५ | ९ | २ | २६ | ३ | ५४ | २ | ५ |
| २१ | नपुंसकवेद | ३८ | ८० | २७ | ८९ | ३ | ३ | ७४ | ३६ | ५ | ९ | २ | २६ | ३ | ६४ | २ | ५ |
| २२ | क्रोध | ४१ | ७० | २७ | ८२ | ४ | ४ | ६५ | ३६ | ५ | ९ | २ | १६ | ४ | ६६ | २ | ५ |
| २३ | मान | ४१ | ७० | २७ | ८२ | ४ | ४ | ६५ | ३६ | ५ | ९ | २ | १६ | ४ | ६६ | २ | ५ |
| २४ | माया | ४१ | ७० | २७ | ८२ | ४ | ४ | ६५ | ३६ | ५ | ९ | २ | १६ | ६ | ६६ | २ | ५ |
| २५ | लोभ | ४१ | ७० | २७ | ८२ | ४ | ४ | ६५ | ३६ | ५ | ९ | २ | १६ | ४ | ६६ | २ | ५ |
| २६ | मतिज्ञान | ४० | ६९ | २६ | ८० | ४ | ४ | ६४ | ३४ | ५ | ९ | २ | २२ | ४ | ५७ | २ | ५ |

| | | | | | | | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| २७ श्रुतज्ञान | ४० | ६९ | २६ | ८० | ४ | ४ | ६४ | ३४ | ५ | ९ | २ | २२ | ४ | ५७ | २ | ५ |
| २८ अवधिज्ञान | ४० | ६९–६८ | २६ | ८०–७९ | ४–३ | ४ | ६४ | ३४ | ५ | ९ | २ | २२ | ४ | ५७ | २ | ५ |
| २९ मन पर्यवज्ञान | ३२ | ५३ | २६ | ५५ | ० | १ | ४९ | ३१ | ५ | ९ | २ | १४ | १ | ४४ | १ | ५ |
| ३० केवलज्ञान | ३१ | १५ | १२ | ३० | ० | १ | १७ | २४ | ० | ० | २ | ० | १ | ३८ | १ | ० |
| ३१ मतिअज्ञान | ३९ | ८२ | २७ | ९० | ४ | ४ | ७५ | ३४ | ५ | ९ | २ | २६ | ४ | ६४ | २ | ५ |
| ३२ श्रुतअज्ञान | ३९ | ८२ | २७ | ९० | ४ | ४ | ७५ | ३४ | ५ | ९ | २ | २६ | ४ | ६४ | २ | ५ |
| ३३ विभंगज्ञान | ३७ | ७३ | २७ | ८३–८० | ४–२ | ४ | ६९ | ३२ | ५ | ९ | २ | २७ | ४ | ५५–५३ | २ | ५ |
| ३४ सामायिक चारित्र | ३२ | ५३ | २६ | ५५ | ० | १ | ४९ | ३१ | ५ | ९ | २ | १४ | १ | ४४ | १ | ५ |
| ३५ छेदोपस्थापनीय ,, | ३२ | ५२ | २६ | ५५ | ० | १ | ४९ | ३१ | ५ | ९ | २ | १४ | १ | ४४ | १ | ५ |
| ३६ परिहारविशुद्धि ,, | ३० | ५१–४६ | २६ | ४७–५२ | ० | १ | ४८ | २४ | ५ | ९ | २ | १३ | १ | ४२–३७ | १ | ५ |
| ३७ सूक्ष्मसंपराय ,, | ३० | ३४ | २६ | ३४ | ० | १ | ३३ | २६ | ५ | ६ | २ | १ | १ | ३९ | १ | ५ |
| ३८ यथाख्यात ,, | ३१ | ३३ | २६ | ३४ | ० | १ | ३३ | २६ | ५ | ६ | २ | ० | १ | ४० | १ | ५ |
| ३९ देशविरति | ३२ | ५८ | २६ | ६१ | ० | २ | ५५ | ३० | ५ | ९ | २ | १८ | २ | ४४ | २ | ५ |
| ४० अविरति | ३९ | ८२ | २७ | ९२ | ४ | ४ | ७७ | ३४ | ५ | ९ | २ | २८ | ४ | ६४ | २ | ५ |
| ४१ चक्षुदर्शन | ३८ | ७३ | २७ | ८२ | ० | ४ | ७१ | ३४ | ५ | ९ | २ | २८ | ४ | ५४ | २ | ५ |
| ४२ अचक्षुदर्शन | ४१ | ८२ | २७ | ९४ | ४ | ४ | ७७ | ३६ | ५ | ९ | २ | २८ | ४ | ६६ | २ | ५ |
| ४३ अवधिदर्शन | ४० | ६९–६८ | २६ | ८०–७९ | ३–४ | ४ | ६४ | ३४ | ५ | ९ | २ | २२ | ४ | ५६–५७ | २ | ५ |
| ४४ केवलदर्शन | ३१ | १५ | १२ | ३० | ० | १ | १७ | २४ | ० | ० | २ | ० | १ | ३८ | १ | ० |
| ४५ कृष्णलेश्या | ४१ | ८२ | २७ | ९२–९४ | ४ | ४ | ७७ | ३६ | ५ | ९ | २ | २८ | ४ | ६४–६६ | २ | ५ |
| ४६ नीललेश्या | ४१ | ८२ | २७ | ९२–९४ | ४ | ४ | ७७ | ३६ | ५ | ९ | २ | २८ | ४ | ६४–६६ | २ | ५ |
| ४७ कापोतलेश्या | ४१ | ८२ | २७ | ९२–९४ | ४ | ४ | ७७ | ३६ | ५ | ९ | २ | २८ | ४ | ६४–६६ | २ | ५ |
| ४८ तेजोलेश्या | ४० | ७३ | २७ | ८४ | ३ | ३ | ७१ | ३४ | ५ | ९ | २ | २८ | ३ | ५७ | २ | ५ |
| ४९ पद्मलेश्या | ४० | ७१ | २७ | ८२ | ३ | ३ | ६९ | ३४ | ५ | ९ | २ | २८ | ३ | ५५ | २ | ५ |
| ५० शुक्ललेश्या | ४१ | ७१ | २७ | ८३ | ३ | ३ | ७० | ३४ | ५ | ९ | २ | २८ | ३ | ५६ | २ | ५ |
| ५१ भव्य | ४२ | ८२ | २७ | ९५ | ४ | ४ | ७८ | ३६ | ५ | ९ | २ | २८ | ४ | ६७ | २ | ५ |
| ५२ अभव्य | ३९ | ८२ | २७ | ९० | ४ | ४ | ७५ | ३४ | ५ | ९ | २ | २६ | ४ | ६४ | २ | ५ |
| ५३ उपशम सम्यक्त्व | ३६–३७ | ६७ | २६ | ७३ | १ | ४ | ६३ | ३२ | ५ | ९ | २ | २१ | ४ | ५१–५२ | २ | ५ |
| ५४ क्षयोपशमस० | ४० | ६९ | २६ | ८० | ४ | ४ | ६४ | ३४ | ५ | ९ | २ | २२ | ४ | ५७ | २ | ५ |

| मार्गणा | पुण्यप्रकृति उदय ४२ | पापप्रकृति उदय ८२ | ध्रुवोदयी प्रकृति उदय २७ | अध्रुवोदयी प्रकृति उदय ९५ | क्षेत्रविपाकी प्रकृति उदय ४ | भवविपाकी प्रकृति उदय ४ | जीवविपाकी प्रकृति उदय ७८ | पुद्गलविपाकी प्रकृति उदय ३६ | ज्ञानावरण प्रकृति उदय ५ | दर्शनावरण प्रकृति उदय ९ | वेदनीकर्म प्रकृति उदय २ | मोहनीकर्म प्रकृति उदय २८ | आयुकर्म प्रकृति उदय ४ | नामकर्म प्रकृति उदय ६७ | गोत्रकर्म प्रकृति उदय २ | अंतरायकर्म प्रकृति उदय ५ |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ५५ क्षायिक स० | ४१ | ६४ | २६ | ७५ | ४ | ४ | ६४ | २९ | ५ | ९ | २ | २१ | ४ | ५३ | २ | ५ |
| ५६ मिश्रसम्यक्त्व | ३६ | ६७ | २६ | ७४ | ० | ४ | ६४ | ३२ | ५ | ९ | २ | २२ | ४ | ५१ | २ | ५ |
| ५७ सास्वादन० | ३८ | ७७ | २६ | ८५ | ३ | ४ | ७२ | ३२ | ५ | ९ | २ | २१ | ४ | ५९ | २ | ५ |
| ५८ मिथ्यात्व | ३९ | ८२ | २७ | ९० | ४ | ४ | ७५ | ३४ | ५ | ९ | २ | २८ | ४ | ६४ | २ | ५ |
| ५९ संज्ञी | ४१ | ७५ | २७ | ७६—८७ | ४ | ४ | ७२ | ३४ | ५ | ९ | २ | २८ | ४ | ५९ | २ | ५ |
| ६० असंज्ञी | २८ | ६९ | २७ | ६६ | २ | २ | ६७ | ३२ | ५ | ९ | २ | २४ | २ | ४५ | १ | ५ |
| ६१ आहारी | ४० | ८० | २७ | ९१ | ० | ४ | ७८ | ३६ | ५ | ९ | २ | २८ | ४ | ६३ | २ | ५ |
| ६२ अनाहारी | २७ | ७३ | २७ | ६० | ४ | ४ | ७२ | १२ | ५ | ९—४ | २ | २७ | ४ | ३८ | २ | ५ |

| | मार्गणा | उदयविच्छेदक प्रकृति | उदय प्रकृति ओघ १२२ | मिथ्यात्व ११७ | सास्वादन १११ | मिश्र १०० | अविरति १०४ | देशविरति ८७ | प्रमत्त ८१ | अप्रमत्त ७६ | अपूर्वकरण ७२ | अनिवृत्तिकरण ६६ | सूक्ष्मसंपराय ६० | उपशांतमोह ५९ | क्षीण मोह ५७–५५ | सयोगी केवली ४२ | अयोगी केवली १२ |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १ | नरकगति | ४३–४६ | ७९–७६ | ७७–७४ | ७५–७२ | ७२–६९ | ७३–७० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० |
| २ | देवगति | ३९–४२ | ८३–८० | ८१–७८ | ८०–७७ | ७६–७३ | ७७–७४ | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० |
| ३ | मनुष्यगति | २०–१८ | १०२–१०४ | ९७–९९ | ९५–९७ | ९१–९३ | ९२–९४ | ८४ | ८१ | ७६ | ७२ | ६६ | ६० | ५९ | ५५–५७ | ४२ | १२ |
| ४ | तिर्यंचगति | १५–१३ | १०७–१०९ | १०५–१०७ | १००–१०२ | ९१–९३ | ९२–९४ | ८४–८६ | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० |
| ५ | एकेंद्रिय | ४२–४१ | ८०–८१ | ८०–८१ | ७२ | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० |
| ६ | द्वींद्रिय | ४० | ८२ | ८२ | ७४ | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० |
| ७ | त्रींद्रिय | ४० | ८२ | ८२ | ७४ | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० |
| ८ | चतुरिंद्रिय | ४० | ८२ | ८२ | ७४ | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० |
| ९ | पंचेंद्रिय | ८ | ११४ | १०९ | १०६ | १०० | १०४ | ८७ | ८१ | ७६ | ७२ | ६६ | ६० | ५९ | ५५–५७ | ४२ | १२ |
| १० | पृथ्वीकाय | ४३ | ७९ | ७९ | ७२ | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० |
| ११ | अप्काय | ४४ | ७८ | ७८ | ७२ | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० |
| १२ | तेजस्काय | ४६ | ७६ | ७६ | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० |
| १३ | वायुकाय | ४६–४५ | ७६–७७ | ७६–७७ | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० |
| १४ | वनस्पतिकाय | ४३ | ७९ | ७९ | ७२ | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० |
| १५ | त्रसकाय | ५ | ११७ | ११२ | १०९ | १०० | १०४ | ८७ | ८१ | ७६ | ७२ | ६६ | ६० | ५९ | ५५–५७ | ४२ | १२ |
| १६ | मनयोग | १३ | १०९ | १०८ | १०३ | १०० | १०० | ८७ | ८१ | ७६ | ७२ | ६६ | ६० | ५९ | ५५–५७ | ४२ | ० |
| १७ | वचनयोग | १० | ११२ | १०७ | १०३ | १०० | १०० | ८७ | ८१ | ७६ | ७२ | ६६ | ६० | ५९ | ५५–५७ | ४२ | ० |
| १८ | काययोग | ० | १२२ | ११७ | १११ | १०० | १०४ | ८७ | ८१ | ७६ | ७२ | ६६ | ६० | ५९ | ५५–५७ | ४२ | ० |
| १९ | पुरुषवेद | १४ | १०८ | १०४ | १०२ | ९६ | ९९ | ८५ | ७९ | ७४ | ७० | ६४ | ० | ० | ० | ० | ० |
| २० | स्त्रीवेद | १६ | १०६ | १०८ | १०२ | ९६ | ९६ | ८५ | ८७ | ७४ | ७० | ६४ | ० | ० | ० | ० | ० |
| २१ | नपुंसकवेद | ६ | ११६ | ११२ | १०५ | ९६ | ९७ | ८५ | ७९ | ७८ | ७० | ६४ | ० | ० | ० | ० | ० |
| २२ | क्रोध | १३ | १०९ | १०५ | ९९ | ९१ | ९५ | ८१ | ७८ | ७३ | ६९ | ६३ | ० | ० | ० | ० | ० |
| २३ | मान | १३ | १०९ | १०५ | ९९ | ९१ | ९५ | ८१ | ७८ | ७३ | ६९ | ६३ | ० | ० | ० | ० | ० |
| २४ | माया | १३ | १०९ | १०५ | ९९ | ९१ | ९५ | ८१ | ७८ | ७३ | ६९ | ६३ | ० | ० | ० | ० | ० |
| २५ | लोभ | १३ | १०९ | १०५ | ९९ | ९१ | ९५ | ८१ | ७८ | ७३ | ६९ | ६३ | ६० | ० | ० | ० | ० |
| २६ | मतिज्ञान | १६ | १०६ | ० | ० | ० | १०४ | ८७ | ८१ | ७६ | ७२ | ६६ | ६० | ५९ | ५७–५५ | ० | ० |
| २७ | श्रुतज्ञान | १६ | १०६ | ० | ० | ० | १०४ | ८७ | ८१ | ७६ | ७२ | ६६ | ६० | ५९ | ५७–५५ | ० | ० |

| | मार्गणा | उदयविच्छेदक प्रकृति | उदय प्रकृति ओघ १२२ | मिथ्यात्व ११७ | सास्वादन १११ | मिश्र १०० | अविरति १०४ | देशविरति ८७ | प्रमत्त ८१ | अप्रमत्त ७६ | अपूर्वकरण ७२ | अनिवृत्तिकरण ६६ | सूक्ष्मसंपराय ६० | उपशांतमोह ५९ | क्षीणमोह ५७–५५ | सयोगी केवली ४२ | अयोगी केवली १२ |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| २८ | अवधिज्ञान | १६–१७ | १०६–१०५ | ० | ० | ० | १०४–१०३ | ८७ | ८१ | ७६ | ७२ | ६६ | ६० | ५९ | ५७–५५ | ० | ० |
| २९ | मनःपर्यवज्ञान | ४१ | ८१ | ० | ० | ० | ० | ० | ८१ | ७६ | ७२ | ६६ | ६० | ५९ | ५७–५५ | ० | ० |
| ३० | केवलज्ञान | ८० | ४२–१२ | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ४२ | १२ |
| ३१ | मतिअज्ञान | ५ | ११७ | ११७ | १११ | १०० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० |
| ३२ | श्रुतअज्ञान | ५ | ११७ | ११७ | १११ | १०० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० |
| ३३ | विभंगज्ञान | १३–१५ | १०९–१०७ | १०८–१०६ | १०६–१०४ | १०० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० |
| ३४ | सामायिक चारित्र | ४१ | ८१ | ० | ० | ० | ० | ० | ८१ | ७६ | ७२ | ६६ | ० | ० | ० | ० | ० |
| ३५ | छेदोपस्थापनीय ,, | ४१ | ८१ | ० | ० | ० | ० | ० | ८१ | ७६ | ७२ | ६६ | ० | ० | ० | ० | ० |
| ३६ | परिहारविशुद्धि | ४९–४४ | ७३–७८ | ० | ० | ० | ० | ० | ७८–७३ | ७५–७० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० |
| ३७ | सूक्ष्मसपराय ,, | ६२ | ६० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ६० | ० | ० | ० | ० |
| ३८ | यथाख्यात ,, | ६२ | ६० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ५९ | ५७–५५ | ४२ | १२ |
| ३९ | देशविरति ,, | ३५ | ८७ | ० | ० | ० | ० | ८७ | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० |
| ४० | अविरति | ३ | ११९ | ११७ | १११ | १०० | १०४ | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० |
| ४१ | चक्षुदर्शन | १३ | १०९ | १०५ | १०४ | १०० | १०० | ८७ | ८१ | ७६ | ७२ | ६६ | ६० | ५९ | ५७–५५ | ० | ० |
| ४२ | अचक्षुदर्शन | १ | १२१ | ११७ | १११ | १०० | १०४ | ८७ | ८१ | ७६ | ७२ | ६६ | ६० | ५९ | ५७–५५ | ० | ० |
| ४३ | अवधिदर्शन | १६–१७ | १०६–१०५ | ० | ० | ० | १०४–१०३ | ८७ | ८१ | ७६ | ७२ | ६६ | ६० | ५९ | ५७–५५ | ० | ० |
| ४४ | केवलदर्शन | ८० | ४२–१२ | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ४२ | १२ |
| ४५ | कृष्णलेश्या | ३–१ | ११९–१२१ | ११७–११५ | १११–१०९ | १००–९८ | १०४–१०२ | ८७ | ८१ | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० |
| ४६ | नीललेश्या | ३–१ | ११९–१२१ | ११७–११५ | १११–१०९ | १००–९८ | १०४–१०२ | ८७ | ८१ | ० | ० | ० | ० | ० | ० | १ | ० |
| ४७ | कापोतलेश्या | ३–१ | ११९–१२१ | ११७–११५ | १११–१०९ | १००–९८ | १०४–१०२ | ८७ | ८१ | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० |
| ४८ | तेजोलेश्या | ११ | १११ | १०७ | १०६ | ९८ | १०१ | ८७ | ८१ | ७६ | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० |
| ४९ | पद्मलेश्या | १३ | १०९ | १०५ | १०४ | ९८ | १०१ | ८७ | ८१ | ७६ | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० |
| ५० | शुक्लेश्या | १२ | ११० | १०५ | १०४ | ९८ | १०१ | ८७ | ८१ | ७६ | ७२ | ६६ | ६० | ५९ | ५७–५५ | ४२ | ० |
| ५१ | भव्य | ० | १२२ | ११७ | १११ | १०० | १०४ | ८७ | ८१ | ७६ | ७२ | ६६ | ६० | ५९ | ५७–५५ | ४२ | १२ |
| ५२ | अभव्य | ५ | ११७ | ११७ | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० |

| | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ५३ | उपशम सम्यक्त्व | २३-२२ | ९९-१०० | ० | ० | ० | ९९-१०० | ८६ | ७८ | ७५ | ७२ | ६६ | ६० | ५९ | ० | ० | ० |
| ५४ | क्षयोपशमसम्यक्त्व | १६ | १०६ | ० | ० | ० | १०४ | ८७ | ८१ | ७६ | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० |
| ५५ | क्षायिकसम्यक्त्व | २१ | १०१ | ० | ० | ० | ९८ | ७८ | ७५ | ७० | ७० | ६४ | ५८ | ५७ | ५७-५५ | ४२ | १२ |
| ५६ | मिश्रसम्यक्त्व | २२ | १०० | ० | ० | १०० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० |
| ५७ | साखादनसम्यक्त्व | ११ | १११ | ० | १११ | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० |
| ५८ | मिथ्यात्व | ३ | ११९ | ११७ | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० |
| ५९ | सञ्ज्ञी | ८-९ | ११४-११३ | १०९ | १०६ | १०० | १०४ | ८७ | ८१ | ७६ | ७२ | ६६ | ६० | ५९ | ५७-५५ | ४२ | १२ |
| ६० | असञ्ज्ञी | २९ | ९३ | ९३ | ७९ | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० |
| ६१ | आहारी | ४ | ११८ | ११३ | १०८ | १०० | १०० | ८७ | ८१ | ७६ | ७२ | ६६ | ६० | ५९ | ५७-५५ | ४२ | १२ |
| ६२ | अनाहारी | ३५-३० | ८७-९२ | ८५-९० | ७९-८४ | ० | ७४-७९ | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ४२ | १२ |

| | मार्गणा | उदीरणा ओघ प्रकृति १२२ | मिथ्यात्व ११७ | सास्वादन १११ | मिश्र १०० | अविरति १०४ | देशविरति ८७ | प्रमत्त ८१ | अप्रमत्त ७३ | अपूर्वकरण ६९ | अनिवृत्ति-करण ६३ | सूक्ष्मसंप-राय ५७ | उपशां-तमोह ५६ | क्षीणमोह ५४—५२ | सयोगी केवली ३९ | अयोगी केवली ० |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १ | नरकगति | ७९—७६ | ७७—७४ | ५७—७२ | ७२—६९ | ७३—७० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० |
| २ | देवगति | ८३—८० | ८१—७८ | ८०—७७ | ७६—७३ | ७७—७४ | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० |
| ३ | मनुष्यगति | १०२—१०४ | ९७—९९ | ९५—९७ | ९१—९३ | ९२—९४ | ८४ | ८१ | ७३ | ६९ | ६३ | ५७ | ५६ | ५४—५२ | ३९ | ० |
| ४ | तिर्यंचगति | १०७—१०९ | १०५—१०७ | १००—१०२ | ९१—९३ | ९२—९४ | ८४—८६ | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० |
| ५ | एकेंद्रिय | ८०—८१ | ८०—८१ | ७२ | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० |
| ६ | द्वींद्रिय | ८२ | ८२ | ७४ | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० |
| ७ | त्रींद्रिय | ८२ | ८२ | ७४ | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० |
| ८ | चतुरिंद्रिय | ८२ | ८२ | ७४ | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० |
| ९ | पंचेंद्रिय | ११४ | १०९ | १०६ | १०० | १०४ | ८७ | ८१ | ७३ | ६९ | ६३ | ५७ | ५६ | ५४—५२ | ३९ | ० |
| १० | पृथ्वीकाय | ७९ | ७९ | ७२ | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० |
| ११ | अप्काय | ७८ | ७८ | ७२ | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० |
| १२ | तेजस्काय | ७६ | ७६ | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० |
| १३ | वायुकाय | ७६—७७ | ७६—७७ | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० |
| १४ | वनस्पतिकाय | ७९ | ७९ | ७२ | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० |
| १५ | त्रसकाय | ११७ | ११२ | १०९ | १०० | १०४ | ८७ | ८१ | ७३ | ६९ | ६३ | ५७ | ५६ | ५४—५२ | ३९ | ० |
| १६ | मनयोग | १०९ | १०४ | १०३ | १०० | १०० | ८७ | ८१ | ७३ | ६९ | ६३ | ५७ | ५६ | ५४—५२ | ३९ | ० |
| १७ | वचनयोग | ११२ | १०७ | १०३ | १०० | १०० | ८७ | ८१ | ७३ | ६९ | ६३ | ५७ | ५६ | ५४—५२ | ३९ | ० |
| १८ | काययोग | १२२ | ११७ | १११ | १०० | १०४ | ८७ | ८१ | ७३ | ६९ | ६३ | ५७ | ५६ | ५४—५२ | ३९ | ० |
| १९ | पुरुषवेद | १०८ | १०४ | १०२ | ९६ | ९९ | ८५ | ७९ | ७१ | ६७ | ६१ | ० | ० | ० | ० | ० |
| २० | स्त्रीवेद | १०६ | १०४ | १०२ | ९६ | ९६ | ८५ | ७७ | ७१ | ६७ | ६१ | ० | ० | ० | ० | ० |
| २१ | नपुंसकवेद | ११६ | ११२ | १०५ | ९६ | ९७ | ८५ | ७९ | ७१ | ६७ | ६१ | ० | ० | ० | ० | ० |
| २२ | क्रोध | १०९ | १०५ | ९९ | ९१ | ९५ | ८१ | ७८ | ७० | ६६ | ६० | ० | ० | ० | ० | ० |
| २३ | मान | १०९ | १०५ | ९९ | ९१ | ९५ | ८१ | ७८ | ७० | ६६ | ६० | ० | ० | ० | ० | ० |
| २४ | माया | १०९ | १०५ | ९९ | ९१ | ९५ | ८१ | ७८ | ७० | ६६ | ६० | ० | ० | ० | ० | ० |
| २५ | लोभ | १०९ | १०५ | ९९ | ९१ | ९५ | ८१ | ७८ | ७० | ६६ | ६० | ५७ | ० | ० | ० | ० |
| २६ | मतिज्ञान | १०६ | ० | ० | ० | १०४ | ८७ | ८१ | ७३ | ६९ | ६३ | ५७ | ५६ | ५४—५२ | ० | ० |

| | | | | | | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| २७ श्रुतज्ञान | १०६ | ० | ० | ० | १०४ | ८७ | ८१ | ७३ | ६९ | ६३ | ५७ | ५६ | ५४–५२ | ० | ० |
| २८ अवधिज्ञान | १०६–१०५ | ० | ० | ० | १०४–१०३ | ८७ | ८१ | ७३ | ६९ | ६३ | ५७ | ५६ | ५४–५२ | ० | ० |
| २९ मन पर्यवज्ञान | ८१ | ० | ० | ० | ० | ० | ८१ | ७३ | ६९ | ६३ | ५७ | ५६ | ५४–५२ | ० | ० |
| ३० केवलज्ञान | ४२–१२ | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ३९ | ० |
| ३१ मतिअज्ञान | ११७ | ११७ | १११ | १०० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० |
| ३२ श्रुतअज्ञान | ११७ | ११७ | १११ | १०० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० |
| ३३ विभंगज्ञान | १०९–१०७ | १०८–१०६ | १०६–१०४ | १०० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० |
| ३४ सामायिक चारित्र | ८१ | ० | ० | ० | ० | ० | ८१ | ७३ | ६९ | ६३ | ० | ० | ० | ० | ० |
| ३५ छेदोपस्थापनीय " | ८१ | ० | ० | ० | ० | ० | ८१ | ७३ | ६९ | ६३ | ० | ० | ० | ० | ० |
| ३६ परिहारविशुद्धि " | ७३–७८ | ० | ० | ० | ० | ० | ७३–७८ | ६७–७२ | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० |
| ३७ सूक्ष्मसंपराय " | ६० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ५७ | ० | ० | ० | ० |
| ३८ यथाख्यात " | ६० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ५६ | ५४–५२ | ० | ० |
| ३९ देशविरति | ८७ | ० | ० | ० | ० | ८७ | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० |
| ४० अविरति | ११९ | ११७ | १११ | १०० | १०४ | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० |
| ४१ चक्षुदर्शन | १०९ | १०५ | १०४ | १०० | १०० | ८७ | ८१ | ७३ | ६९ | ६३ | ५७ | ५६ | ५४–५२ | ० | ० |
| ४२ अचक्षुदर्शन | १२१ | ११७ | १११ | १०० | १०४ | ८७ | ८१ | ७३ | ६९ | ६३ | ५७ | ५६ | ५४–५२ | ० | ० |
| ४३ अवधिदर्शन | १०६–१०५ | ० | ० | ० | १०४–१०३ | ८७ | ८१ | ७३ | ६९ | ६३ | ५७ | ५६ | ५४–५२ | ० | ० |
| ४४ केवलदर्शन | ४२–१२ | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ३९ | ० |
| ४५ कृष्णलेश्या | १२१–११९ | ११७–११५ | १११–१०९ | १००–९८ | १०४–१०२ | ८७ | ८१ | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० |
| ४६ नीललेश्या | १२१–११९ | ११७–११५ | १११–१०९ | १००–९८ | १०४–१०२ | ८७ | ८१ | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० |
| ४७ कापोतलेश्या | १२१–११९ | ११७–११५ | १११–१०९ | १००–९८ | १०४–१०२ | ८७ | ८१ | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० |
| ४८ तेजोलेश्या | १११ | १०७ | १०६ | ९८ | १०१ | ८७ | ८१ | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० |
| ४९ पद्मलेश्या | १०९ | १०५ | १०४ | ९८ | १०१ | ८७ | ८१ | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० |
| ५० शुक्ललेश्या | ११० | १०५ | १०४ | ९८ | १०१ | ८७ | ८१ | ७३ | ६९ | ६३ | ५७ | ५६ | ५४–५२ | ० | ० |
| ५१ भव्य | १२२ | ११७ | १११ | १०० | १०४ | ८७ | ८१ | ७३ | ६९ | ६३ | ५७ | ५६ | ५४–५२ | ० | ० |
| ५२ अभव्य | ११७ | ११७ | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० |
| ५३ उपशम सम्यक्त्व | ९९–१०० | ० | ० | ० | ९९–१०० | ६६ | ७८ | ७३ | ६९ | ६३ | ५७ | ५६ | ० | ० | ० |
| ५४ क्षयोपशमस० | १०६ | ० | ० | ० | १०४ | ८७ | ८१ | ७३ | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० |

| | मार्गणा | उदीरणा ओघ प्रकृति १२२ | मिथ्यात्व ११७ | सास्वादन १११ | मिश्र १०० | अविरति १०४ | देशविरति ८७ | प्रमत्त ८१ | अप्रमत्त ७३ | अपूर्व-करण ६९ | अनिवृत्ति-करण ६३ | सूक्ष्मसंप-राय ५७ | उपशां-तमोह ५६ | क्षीणमोह ५४–५२ | सयोगी केवळी ३९ | अयोगी केवळी ० |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ५५ | क्षायिकस-म्यक्त्व | १०१ | ० | ० | ० | ९८ | ७८ | ७५ | ६७ | ६७ | ६१ | ५५ | ५४ | ५४–५२ | ३९ | ० |
| ५६ | मिश्रसम्यक्त्व | १०० | ० | ० | १०० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० |
| ५७ | सास्वादनस-म्यक्त्व | १११ | ० | १११ | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० |
| ५८ | मिथ्यात्व | ११७ | ११७ | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० |
| ५९ | संज्ञी | ११४–११३ | १०९ | १०६ | १०० | १०४ | ८७ | ८१ | ७३ | ६९ | ६३ | ५७ | ५६ | ५४–५२ | ३९ | ० |
| ६० | असंज्ञी | ९३ | ९३ | ७९ | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० |
| ६१ | आहारी | ११८ | ११३ | १०८ | १०० | १०० | ८७ | ८१ | ७३ | ६९ | ६३ | ५७ | ५६ | ५४–५२ | ३९ | ० |
| ६२ | अनाहारी | ८७–९२ | ८५–९० | ७९–८४ | ० | ७४–७९ | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ३९ | ० |

| | मागणा | सर्वघाती बंध २० | देशघाती बंध २५ | अघाती बंध ७५ | आश्रव तत्त्व ४२ | संवर तत्त्व ५७ | निर्जरा तत्त्व १२ | बंध तत्त्व ४ | मोक्ष तत्त्व ९ | अजीव तत्त्व १४ | मोहनीय कर्मना उदयना भग २४, चोवीशी भागा १७ | बासठ मागणानी भवस्थिति |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १ | नरकगति | २० | २५ | ५६ | ४१ इर्यावही नी क्रियाविना | १२ | २ | ४ | ० | ११ अण स्कंध-विना | २४ अष्टक | ३३ सागरोपम |
| २ | देवगति | २० | २५ | ५९ | ४१ | १२ | ४ | ४ | ० | ११ | ४८ अष्टक | ३३ ,, |
| ३ | मनुष्यगति | २० | २५ | ७१ | ४२ | ५७ | १२ | ४ | ९ | ११ | ५२ चोवीशी, भग १७ | ३ पल्योपम |
| ४ | तिर्यंचगति | २० | २५ | ७२ | ४१ | १२ | १२ | ४ | ० | ११ | ३२ चोवीशी | ३ ,, |
| ५ | एकेंद्रिय | २० | २५ | ६४ | ३० | ० | १ कायक्लेश | ४ | ० | ११ | ८ अष्टक | २२००० वरस |
| ६ | द्वींद्रिय | २० | २५ | ६४ | ३२ | ० | १ | ४ | ० | ११ | १२ ,, | १२ वरस |
| ७ | त्रींद्रिय | २० | २५ | ६४ | ३३ | ० | १ | ४ | ० | ११ | १२ ,, | ४९ दिवस |
| ८ | चतुरिंद्रिय | २० | २५ | ६४ | ३५ | ० | १ | ४ | ० | ११ | १२ ,, | ६ मास |
| ९ | पंचेंद्रिय | २० | २५ | ७५ | ४२ | ५७ | १२ | ४ | ९ | ११ | ५२ चोवीशी, भग १७ | ३३ सागरोपम |
| १० | पृथ्वीकाय | २० | २५ | ६८ | ३० | ० | १ | ४ | ० | ११ | ८ अष्टक | २२००० वरस |
| ११ | अप्काय | २० | २५ | ५४ | ३० | ० | १ | ४ | ० | ११ | ८ ,, | ७००० वरस |
| १२ | तेजस्काय | २० | २५ | ६० | ३० | ० | १ | ४ | ० | ११ | ८ ,, | ३ अहोरात्री |
| १३ | वायुकाय | २० | २५ | ६० | ३० | ० | १ | ४ | ० | ११ | ८ ,, | ३००० वरस |
| १४ | वनस्पतिकाय | २० | २५ | ६४ | ३० | ० | १ | ४ | ० | ११ | ८ ,, | १०००० वरस |
| १५ | त्रसकाय | २० | २५ | ७५ | ४२ | ५७ | १२ | ४ | ९ | ११ | ५२ चोवीशी, भग १७ | ३३ सागरोपम |
| १६ | मनयोग | २० | २५ | ७५ | ४२ | ५७ | १२ | ४ | ० | ११ | ५२ चोवीशी, भग १७ | ३३ ,, |
| १७ | वचनयोग | २० | २५ | ७५ | ४२ | ५७ | १२ | ४ | ० | ११ | ५२ चोवीशी, भग १७ | ३३ ,, |
| १८ | काययोग | २० | २५ | ७५ | ४२ | ५७ | १२ | ४ | ० | ११ | ५२ चोवीशी, भग १७ | ३३ ,, |
| १९ | पुरुषवेद | २० | २५ | ७५ | ४१ | ५५ | १२ | ४ | ० | ११ | ५२ चोवीशी, भग १७ | ३३ ,, |
| २० | स्त्रीवेद | २० | २५ | ७५ | ४१ | ५५ | १२ | ४ | ० | ११ | ५२ चोवीशी, भग १७ | ५५ पल्योपम |
| २१ | नपुंसकवेद | २० | २५ | ७५ | ४१ | ५५ | १२ | ४ | ० | ११ | ५२ चोवीशी, भग १७ | ३३ सागरोपम |
| २२ | क्रोध | २० | २५ | ७५ | ४१ | ५५ | १२ | ४ | ० | ११ | ५२ चोवीशी, भग १७ | ३३ ,, |
| २३ | मान | २० | २५ | ७५ | ४१ | ५५ | १२ | ४ | ० | ११ | ५२ चोवीशी, भग १७ | ३३ ,, |
| २४ | माया | २० | २५ | ७५ | ४१ | ५५ | १२ | ४ | ० | ११ | ५२ चोवीशी, भग १७ | ३३ ,, |
| २५ | लोभ | २० | २५ | ७५ | ४१ | ५६ | १२ | ४ | ० | ११ | ५२ चोवीशी, भग १७ | ३३ ,, |
| २६ | मतिज्ञान | १२ | २३ | ४४ | ४१ | ५७ | १२ | ४ | ० | ११ | ३६ चोवीशी, भग १७ | ३३ ,, |

| मार्गणा | सर्वघाती वंध २० | देशघाती वंध २५ | अघाती वंध ७५ | आश्रव तत्त्व ४२ | संवर तत्त्व ५७ | निर्जरा तत्त्व १२ | वंध तत्त्व ४ | मोक्ष तत्त्व ९ | अजीव तत्त्व १४ | मोहनीय कर्मना उदयना भंग २४, चोवीशी भांगा १७ | वासठ मार्गणानी भवस्थिति |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| २७ श्रुतज्ञान | १२ | २३ | ४४ | ४१ | ५७ | १२ | ४ | ० | ११ | ३६ चोवीशी, भंग १७ | ३३ सागरोपम |
| २८ अवधिज्ञान | १२ | २३ | ४४ | ४१ | ५७ | १२ | ४ | ० | ११ | ३४ चोवीशी, भंग १७ | ३३ ,, |
| २९ मनःपर्यवज्ञान | ४ | २३ | ३८ | २० | ५७ | १२ | ४ | ० | ११ | २० चोवीशी, भंग १७ | देशे उन पूर्वकोटी |
| ३० केवलज्ञान | ० | ० | १ | ४ | ३०–३१ | २ अनशनने ध्यान | १ | ९ | १३ | ० | देशे उन पूर्वकोटी |
| ३१ मतिअज्ञान | २० | २५ | ७२ | ४१ | ० | ६ | ४ | ० | ११ | १६ चोवीशी | ३३ सागरोपम |
| ३२ श्रुतअज्ञान | २० | २५ | ७२ | ४१ | ० | ६ | ४ | ० | ११ | १६ ,, | ३३ ,, |
| ३३ विभंगज्ञान | २० | २५ | ७२ | ४१ | ० | ६ | ४ | ० | ११ | १६ ,, | ३३ ,, |
| ३४ सामायिक चारित्र | ४ | २३ | ३८ | २७ | ५३ | १२ | ४ | ० | ११ | २० चोवीशी, भंग १६ | देशे उन पूर्वकोटी |
| ३५ छेदोपस्थापनीय ,, | ४ | २३ | ३८ | २७ | ५३ | १२ | ४ | ० | ११ | २० चोवीशी, भंग १६ | देशे उन पूर्वकोटी |
| ३६ परिहारविशुद्धि | ४ | २३ | ३८ | २७ | ५३ | १२ | ४ | ० | ११ | १६ अष्टक | १८ मास |
| ३७ सूक्ष्मसंपराय ,, | २ | १२ | ३ | ७–९ | ४५ | १२ | ४ | ० | ११ | १ भंग | अतर्मुहूर्त |
| ३८ यथाख्यात ,, | ० | ० | १ | ४ | ४५ | १२ | ४ | ९ | ११ | ० | देशे उन पूर्वकोटी |
| ३९ देशविरति ,, | ८ | २३ | ३६ | ४०–३९ | १२ | १२ | ४ | ० | ११ | ८ चोवीशी | देशे उन पूर्वकोटी |
| ४० अविरति | २० | २५ | ७३ | ४१ | १२ | १२ | ४ | ० | ११ | २४ चोवीशी | ३३ सागरोपम |
| ४१ चक्षुदर्शन | २० | २५ | ७५ | ४२ | ५७ | १२ | ४ | ० | ११ | ५२ चोवीशी, भंग १७ | ३३ ,, |
| ४२ अचक्षुदर्शन | २० | २५ | ७५ | ४२ | ५७ | १२ | ४ | ० | ११ | ५२ चोवीशी, भंग १७ | ३३ ,, |
| ४३ अवधिदर्शन | १२ | २३ | ४४ | ४१ | ५७ | १२ | ४ | ० | ११ | ३४ चोवीशी, भंग १७ | ३३ ,, |
| ४४ केवलदर्शन | ० | ० | १ | ४ | ३०–३१ | २ | १ | ९ | १३ | ० | देशे उन पूर्वकोटी |
| ४५ कृष्णलेश्या | २० | २५ | ७३ | ४१ | ५५ | १२ | ४ | ० | ११ | ४० चोवीशी | ३३ सागरोपम |
| ४६ नीललेश्या | २० | २५ | ७३ | ४१ | ५५ | १२ | ४ | ० | ११ | ४० ,, | १० ,, |
| ४७ कापोतलेश्या | २० | २५ | ७३ | ४१ | ५५ | १२ | ४ | ० | ११ | ४० ,, | ३ ,, |
| ४८ तेजोलेश्या | २० | २५ | ६६ | ४१ | ५५ | १२ | ४ | ० | ११ | ४८ ,, | २ ,, |
| ४९ पद्मलेश्या | २० | २५ | ६३ | ४१ | ५५ | १२ | ४ | ० | ११ | ४८ ,, | १० ,, |
| ५० शुक्ललेश्या | २० | २५ | ५९ | ४२ | ५७ | १२ | ४ | ९ | ११ | ५२ चोवीशी, भंग १७ | ३३ ,, |

| | | | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ५१ | भव्य | २० | २५ | ७५ | ४२ | ५७ | १२ | ४ | ० | ११ | ५२ चोवीशी, भग १७ | ३३ सागरोपम |
| ५२ | अभव्य | २० | २५ | ७२ | ४१ | ० | ० | ४ | ० | ११ | ८ चोवीशी | ३३ ,, |
| ५३ | उपशम सम्यक्त्व | १२ | २३ | ४२ | ४१ | ५७ | १२ | ८ | ० | ११ | २० चोवीशी, भग १७ | अंतमुहूर्त |
| ५४ | क्षयोपशमसम्यक्त्व | १२ | २३ | ४४ | ४० | ५५ | १२ | ४ | ० | ११ | २० चोवीशी, भग १७ | ६६ सागरोपम साधिक |
| ५५ | क्षायिक सम्यक्त्व | १२ | २३ | ४४ | ४१ | १७ | १२ | ४ | ९ | ११ | १६ चोवीशी | ३३ ,, |
| ५६ | मिश्रसम्यक्त्व | १२ | २३ | ३९ | ४१ | ० | १ | ४ | ० | ११ | ४ ,, | अंतर्मुहूर्त |
| ५७ | सास्वादनसम्यक्त्व | १९ | २४ | ५८ | ४१ | ० | १ | ४ | ० | ११ | ४ ,, | ६ आवलीका |
| ५८ | मिथ्यात्व | २० | २५ | ७२ | ४१ | ० | १ | ४ | ० | ११ | ८ ,, | अनतकाळ |
| ५९ | सुंगी | २० | २५ | ७५ | ४२ | ५७ | १२ | ४ | ९ | ११ | ५२ चोवीशी, भग १७ | ३३ सागरोपम |
| ६० | असंज्ञी | २० | २५ | ७२ | ४० | ० | १ | ४ | ० | ११ | १२ अष्टक | पूर्वकोटी |
| ६१ | आहारी | २० | २५ | ७५ | ४२ | ५७ | १२ | ४ | ० | ११ | ५२ चोवीशी, भग १७ | ३३ सागरोपम |
| ६२ | अनाहारी | २० | २५ | ६७ | ३३ | ३०—४१ | १२ | ४ | ९ | १३ | २० चोवीशी | ३ समय |

| | मार्गणा | कायस्थिति | ज्ञानावरणी भंग २ | दर्शनावरणीयना भंग ११–१३ | वेदनीयना भंग ८ | आयुना भंग २८ | गोत्रकर्मना भागा ७ | अंतराय कर्मना भागा २ |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | | जघन्य — उत्कृष्ट | | | | | | |
| १ | नरकगति | १०००० वर्ष–३३ सागरोपम | १ | ४ | ४ | ५ | ४ | १ |
| २ | देवगति | १०००० वर्ष–३३ सागरोपम | १ | ४ | ४ | ५ | ४ | १ |
| ३ | मनुष्यगति | अतर्मुहूर्त–त्रण पल्योपम पूर्वकोटी पृथक्त्व अधिक | २ | ११–१३ | ८ | ९ | ६ | २ |
| ४ | तिर्यंचगति | अंतर्मुहूर्त–अनंतकाळ, अनंता पुद्गल परावर्त | १ | ४ | ४ | ५ | ३ | १ |
| ५ | एकेंद्रिय | अतर्मुहूर्त–अनंत पुद्गल परावर्त | १ | २ | ४ | ५ | ३ | १ |
| ६ | द्वींद्रिय | अतर्मुहूर्त–संख्याता हजार वर्ष | १ | २ | ४ | ५ | ३ | १ |
| ७ | त्रींद्रिय | अंतर्मुहूर्त–संख्याता हजार वर्ष | १ | २ | ४ | ५ | ३ | १ |
| ८ | चतुरिंद्रिय | अतर्मुहूर्त–संख्याता हजार वर्ष | १ | २ | ४ | ५ | ३ | १ |
| ९ | पंचेंद्रिय | अतर्मुहूर्त–हजार सागरोपम साधिक | २ | ११–१३ | ८ | २८ | ७ | २ |
| १० | पृथ्वीकाय | अतर्मुहूर्त–असंख्यात काळ | १ | २ | ४ | ५ | ३ | १ |
| ११ | अप्काय | अतर्मुहूर्त–असख्यात काळ | १ | २ | ४ | ५ | ३ | १ |
| १२ | तेजस्काय | अंतर्मुहूर्त–असंख्यात काळ | १ | २ | ४ | ३ | २ | १ |
| १३ | वायुकाय | अंतर्मुहूर्त–असंख्यात काळ | १ | २ | ४ | ३ | २ | १ |
| १४ | वनस्पतिकाय | अतर्मुहूर्त–अनंत पुद्गल परावर्त | १ | २ | ४ | ५ | ३ | १ |
| १५ | त्रसकाय | अतर्मुहूर्त–बे हजार सागरोपम संख्याता वर्ष अधिक | २ | ११–१३ | ८ | २८ | ७ | २ |
| १६ | मनयोग | एक समय–अंतर्मुहूर्त | २ | ११–१३ | ४ | २८ | ५ | २ |
| १७ | वचनयोग | एक समय–अतर्मुहूर्त | २ | ११–१३ | ४ | २८ | ५ | २ |
| १८ | काययोग | अतर्मुहूर्त–अनंतोकाळ | २ | ११–१३ | ४ | २८ | ६ | २ |
| १९ | पुरुषवेद | अतर्मुहूर्त–पृथक्त्व १०० सागरोपम | १ | ७–८ | ४ | २३ | ५ | १ |
| २० | स्त्रीवेद | एक समय–एकसो दश पल्योपम पूर्वकोटी पृथक्त्व अधिक | १ | ७–८ | ४ | २३ | ५ | १ |
| २१ | नपुंसकवेद | एक समय–अनंत काळ | १ | ७–८ | ४ | २३ | ५ | १ |

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| २२ | क्रोध | अतमुहूत–अतमुहूत | १ | ७–८ | ४ | २८ | ५ | १ |
| २३ | मान | अतमुहूत–अतमुहूत | १ | ७–८ | ४ | २८ | ५ | १ |
| २४ | माया | अतर्मुहूत–अतर्मुहूर्त | १ | ७–८ | ४ | २८ | ५ | १ |
| २५ | लोभ | एक समय–अतमुहूर्त | १ | ७–८ | ४ | २८ | ५ | १ |
| २६ | मतिज्ञान | अतमुहूत–६६ सागरोपम साधिक | २ | ९–११ | ४ | २० | ३ | २ |
| २७ | श्रुतज्ञान | अतमुहूर्त–६६ सागरोपम ,, | २ | ९–११ | ४ | २० | ३ | २ |
| २८ | अवधिज्ञान | एक समय–६६ सागरोपम ,, | २ | ९–११ | ४ | २० | ३ | २ |
| २९ | मन पर्यवज्ञान | एक समय–देशे ऊन पूर्वकोटी | २ | ९–११ | ४ | ६ | २ | २ |
| ३० | केवळज्ञान | सादि अनत काळ–अनादि अनत काळ | ० | ० | ६ | १ | २ | ० |
| ३१ | मतिअज्ञान | अतमुहूर्त–अनतकाळ | १ | २–४ | ४ | २८ | ५ | १ |
| ३२ | श्रुतअज्ञान | अतमुहूत–अनतकाळ | १ | २–४ | ४ | २८ | ५ | १ |
| ३३ | विभगज्ञान | एक समय–३३ सागरोपम अधिक | १ | २–४ | ४ | २८ | ४ | १ |
| ३४ | सामायिक चारित्र | अतर्मुहूत–देश ऊन पूवकोटी | १ | ५–६ | ४ | ६ | १ | १ |
| ३५ | छेदोपस्थापनीय ,, | अतमुहूत–देशे ऊन पूवकोटी | १ | ५–६ | ४ | ६ | १ | १ |
| ३६ | परिहारविशुद्धि ,, | १८ मास | १ | २ | ४ | ६ | १ | १ |
| ३७ | सूक्ष्मसपराय ,, | एक समय–अतर्मुहूर्त | १ | ३–४ | २ | २ | १ | १ |
| ३८ | यथाख्यात ,, | एक समय–देशे ऊन पूवकोटी | १ | ४–५ | ६ | २ | २ | १ |
| ३९ | देशविरति | अतमुहूत–देशे ऊन पूवकोटी | १ | २ | ४ | १२ | २ | १ |
| ४० | अविरति | अतर्मुहूत–अनतकाळ | १ | ४ | ४ | २८ | ५ | १ |
| ४१ | चक्षुदर्शन | अतमुहूत–हजार सागरोपम साधिक | २ | ११–१३ | ४ | २८ | ५ | २ |
| ४२ | अचक्षुदर्शन | अभव्य आश्री अनादि अनत तथा भव्य आश्री अनादि सात | २ | ११–१३ | ४ | २८ | ६ | २ |
| ४३ | अवधिदर्शन | एक समय–६६ सागरोपम साधिक | २ | ९–११ | ४ | २० | ३ | २ |
| ४४ | केवळदर्शन | एक जीव आश्री सादि अनत, सर्व जीव आश्री अनादि अनत | ० | ० | १ | १ | २ | २ |
| ४५ | कृष्णलेश्या | अतर्मुहूत–३३ सागरोपम अतर्मुहूर्त अधिक | १ | ४ | ४ | २८ | ५ | १ |
| ४६ | नीललेश्या | अतर्मुहूत–१० सागरोपम, पल्योपमनो असख्यातमो भाग अधिक | १ | ४ | ४ | २८ | १ | १ |

| | मार्गणा | कायस्थिति | ज्ञानावरणीय भंग २ | दर्शनावरणीयना भंग ११ | वेदनीयना भंग ८ | आयुना भंग २८ | गोत्रकर्मना भांगा ७ | अंतराय कर्मना भागा २ |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | | जघन्य — उत्कृष्ट | | | | | | |
| ४७ | कापोतलेश्या | अंतर्मुहूर्त–३ सागरोपम, पल्योपम असंख्यातमो भाग अधिक | १ | ४ | ४ | २८ | ५ | १ |
| ४८ | तेजोलेश्या | अंतर्मुहूर्त–२ सागरोपम, पल्योपमनो असंख्यातमो भाग अधिक | १ | ४ | ४ | २१ | ४ | १ |
| ४९ | पद्मलेश्या | अंतर्मुहूर्त–१० सागरोपम अंतर्मुहूर्त अधिक | १ | ४ | ४ | २१ | ४ | १ |
| ५० | शुक्लेश्या | अंतर्मुहूर्त–३३ सागरोपम साधिक | २ | ११–१३ | ४ | १७–१८ | ५ | २ |
| ५१ | भव्य | अनादि अनंत, अनादि सात | २ | ११–१३ | ८ | २८ | ७ | २ |
| ५२ | अभव्य | अनादि अनंत | १ | २ | ४ | २८ | ५ | १ |
| ५३ | उपशम सम्यक्त्व | अंतर्मुहूर्त–अंतर्मुहूर्त | २ | ६ | ४ | १६ | ३ | २ |
| ५४ | क्षयोपशम सम्यक्त्व | अंतर्मुहूर्त–६६ सागरोपम साधिक | १ | २ | ४ | २० | २ | १ |
| ५५ | क्षायिक सम्यक्त्व | सादि अनंत | २ | ९–११ | ८ | १४–१५ | ४ | २ |
| ५६ | मिश्र सम्यक्त्व | अंतर्मुहूर्त–अंतर्मुहूर्त | १ | २ | ४ | १६ | २ | १ |
| ५७ | सास्वादन सम्यक्त्व | एक समय–छ आवली | १ | २ | ४ | २६ | ४ | १ |
| ५८ | मिथ्यात्व | अंतर्मुहूर्त–अभव्य आश्री अनादि अनंत, भव्य आश्री अनादि सात | १ | २ | ४ | २८ | ५ | १ |
| ५९ | संज्ञी | अंतर्मुहूर्त–१०० पृथक्त्व सागरोपम साधिक | २ | ११–१३ | ८–४ | २८ | ७ | २ |
| ६० | असंज्ञी | अंतर्मुहूर्त–अनंत काळ वनस्पति आश्री | १ | २ | ४ | १४–४ | ३ | १ |
| ६१ | आहारी | अंतर्मुहूर्त–असंख्यात काळ | २ | ११–१३ | ४ | २८ | ६ | २ |
| ६२ | अनाहारी | एक समय–अनंत काळ, एक सिद्ध आश्री सादि अनंत | १–० | ४ | ८ | ५ | ७ | १ |

## सत्तागत प्रकृतिनी समजुती

प्रथम ध्रुवसत्ताक १३० ने अध्रुवसत्ताक २८ प्रकृतिओ मळीने १५८ प्रकृतिओ सत्तागत पृष्ठ ६० अने ६१ म बतावेली छे परतु आ साथेना यत्रमा बधन १५ ने बदले पाच गणवाथी १४८ प्रकृतिनु गुणस्थानके अने मार्गणाए विवरण लखेल होवाथी अहीं ते प्रमाणे समजुती लखी छे

### ध्रुवसत्ताक प्रकृति १२६-६२ मार्गणा आश्री

१३० माथी तैजस कामण बधन १, औदारिक तैजस बधन १, औदारिक कामण बधन १, औदारिक तैजस कामण बधन १, ( आ चार बधन जता १२६ प्रकृति रहे छे )

( ५७ ) गति ४, इद्रिय ५, काय ६, योग ३, वेद ३, कषाय ४, केवळ ज्ञान विना ४ ज्ञान, अज्ञान ३, सूक्ष्म सपराय अने यथाख्यात चारित्र विना ५ चारित्र, केवळ दर्शन विना ३ दर्शन, लेश्या ६, भव्य १, अभव्य १, क्षायिक सम्यक्त्व विना सम्यक्त्व ५, सज्ञी १, असज्ञी १, आहारी १, अनाहारी १, आ ५७ मार्गणाए ध्रुव सत्ता १२६ प्रकृतिनी होय

( २ ) केवळ ज्ञान १, केवळ दर्शन १, आ बे मार्गणाए ध्रुव सत्ता ७० प्रकृतिनी होय, ते आ प्रमाणे—खगति द्विक २, वर्णादि २०, औदारिक शरीर १, तैजस शरीर १, कामण शरीर १, तेना ज सघातन ३, तेना ज बधन ३, निर्माण १, सघयण ६, अस्थिर षट्क ६, सस्थान ६, अगुरुलघु १, उपघात १, पराघात १, उच्छ्वास १, वेदनीय द्विक २, औदारिक अगोपाग १, नीचगोत्र १, सुस्वर १, अपर्याप्त १, प्रत्येक १, स्थिर १, शुभ १, त्रस १, बादर १, पर्याप्त १, यश १, आदेय १, सुभग १, पचेंद्रिय जाति १, कुल ७०

( २ ) सूक्ष्मसपराय चारित्र अने यथाख्यात चारित्र आ बे मार्गणाए अनतानुबधि ४ कषाय विना १२२ प्रकृतिनी ध्रुव सत्ता क्षपकने होय अने १२६ नी उपशामकने होय

( १ ) क्षायिक सम्यक्त्वना मार्गणाए अनतानुबधि कषाय ४, मिथ्यात्व मोहनी १, ए पाच विना १२१ प्रकृतिनी ध्रुव सत्ता होय

### अध्रुव सत्ताक प्रकृति २२-६२ मार्गणा आश्री

२८ माथी वैक्रिय तैजस बधन १, वैक्रिय कामण बधन १, वैक्रिय तैजस कामण बधन १, आहारक तैजस बधन १, आहारक कामण बधन १, आहारक तैजस कामण बधन १, (ए ६ बधन विना २२ प्रकृति रहे छे )

( ३४ ) मनुष्य गति १, पचेंद्रिय जाति १, त्रस काय १, योग ३, वेद ३, कषाय ४, पहेला ज्ञान ३, देशविरति चारित्र १, अविरति चारित्र १, पहेला दर्शन ३, लेश्या ६, भव्य १, उपशम समकित १, क्षयोपशम समकित १, मिथ्यात्व १, सज्ञी १, आहारी १, अनाहारी १, आ ३४ मार्गणाए २२ प्रकृतिनी अध्रुव सत्ता होय

( ७ ) एकेद्रिय १, विकलेद्रिय ३, पृथ्वीकाय १, अप्काय १, वनस्पतिकाय १, आ ७ मार्गणाए तीर्थंकर नाम कर्म १, आहारक द्विक २, आ ३ प्रकृति विना १९ प्रकृतिनी अध्रुव सत्ता होय

( २ ) तेजस्काय १, वायुकाय १, आ बे मार्गणाए तीर्थंकर नाम कर्म १, आहारक द्विक २, मनुष्यायु १, आ चार प्रकृति विना १८ प्रकृतिनी अध्रुव सत्ता होय

( १ ) मन पर्यव ज्ञाननी मार्गणाए तिर्यगायु १, नरकायु १, ए बे प्रकृति विना २० प्रकृतिनी अध्रुव सत्ता होय अथवा २२ पण होय

( २ ) केवळ ज्ञान अने केवळ दर्शननी मार्गणाए देवद्विक २, वैक्रिय शरीर १, आहारक शरीर १, तेना बधन २, तेना सघातन २, तेना ज अगोपाग २, मनुष्य त्रिक ३, जिन नाम कर्म १, उच्च गोत्र १, आ १५ प्रकृतिनी अध्रुव सत्ता होय

( ३ ) त्रण अज्ञाननी मार्गणाए तीर्थंकर नाम कर्म १, आहारक द्विक २, ए त्रण प्रकृति विना १९ प्रकृतिनी अध्रुव सत्ता होय

( ५ ) पहेला पाच चारित्रनी मार्गणाए तिर्यगायु १, नरकायु १, ए बे प्रकृति विना २० प्रकृतिनी अध्रुव सत्ता होय अथवा २२ पण होय

( १ ) अभव्यनी मार्गणाए तीर्थंकर नाम कर्म १, अने आहारक द्विक २, ए ३ विना १९ नी सत्ता होय

( १ ) क्षायिक समकितनी मार्गणाए समकित मोहनी १, अने मिश्र मोहनी १, ए बे प्रकृति विना २० प्रकृतिनी अध्रुव सत्ता होय

( ३ ) सास्वादन समकित, मिश्र अने असज्ञि ए त्रण मार्गणाए तीर्थंकर नाम कर्म विना २१ प्रकृतिना अध्रुव सत्ता होय

( ३ ) देवगति १, नरकगति १ अने तिर्यंचगति १ ए त्रण मार्गणाए तीर्थंकर नाम कर्मनी प्रकृति विना २१ प्रकृतिनी अध्रुव सत्ता होय अथवा २२ ना पण होय

—

| | मार्गणा | ध्रुवसत्ता प्रकृति १२६ | अध्रुव-सत्ता प्रकृति २२ | सत्ता प्रकृति ओघ १४८ | मिथ्यात्व | सास्वादन | मिश्र | अविरत | देशविरत | प्रमत्त |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १ | नरकगति | १२६ | २२।२१ | १४८।१४७ | १४८।१४७ | १४७ | १४७ | उ. क्ष. १४७<br>क्षा. १३९ | ० | ० |
| २ | देवगति | १२६ | २२।२१ | १४८।१४७ | १४८।१४७ | १४७ | १४७ | उ. क्ष. १४७<br>क्षा. १३९ | ० | ० |
| ३ | मनुष्यगति | १२६ | २२ | १४८ | १४८।१४७ | १४७ | १४७ | उ. १४१<br>क्ष.१४५।१३८ | उ. १४१<br>क्ष १४५।१३८ | उ. १४१<br>क्ष.१४५।१३८ |
| ४ | तिर्यंचगति | १२६ | २२।२१ | १४८।१४७ | १४८।१४७ | १४७ | १४७ | उ. क्ष. १४७<br>क्षा. १३८ | उ. क्ष. १४७<br>क्षा. १३८ | ० |
| ५ | एकेंद्रिय | १२६ | १९ | १४५ | १४५ | १४५ | ० | ० | ० | ० |
| ६ | द्वींद्रिय | १२६ | १९ | १४५ | १४५ | १४५ | ० | ० | ० | ० |
| ७ | त्रींद्रिय | १२६ | १९ | १४५ | १४५ | १४५ | ० | ० | ० | ० |
| ८ | चतुरिंद्रिय | १२६ | १९ | १४५ | १४५ | १४५ | ० | ० | ० | ० |
| ९ | पंचेंद्रिय | १२६ | २२ | १४८ | १४८।१४७ | १४७ | १४७ | उ. १४१<br>क्ष.१४५।१३८ | उ. १४१<br>क्ष.१४५।१३८ | उ. १४१<br>क्ष.१४५।१३८ |
| १० | पृथ्वीकाय | १२६ | १९ | १४५ | १४५ | १४५ | ० | ० | ० | ० |
| ११ | अप्काय | १२६ | १९ | १४५ | १४५ | १४५ | ० | ० | ० | ० |
| १२ | तेजस्काय | १२६ | १८ | १४४ | १४४ | ० | ० | ० | ० | ० |
| १३ | वायुकाय | १२६ | १८ | १४४ | १४४ | ० | ० | ० | ० | ० |
| १४ | वनस्पतिकाय | १२६ | १९ | १४५ | १४५ | १४५ | ० | ० | ० | ० |
| १५ | त्रसकाय | १२६ | २२ | १४८ | १४८।१४७ | १४७ | १४७ | उ. १४१<br>क्ष.१४५।१३८ | उ. १४१<br>क्ष.१४५।१३८ | उ. १४१<br>क्ष.१४५।१३८ |
| १६ | मनयोग | १२६ | २२ | १४८ | १४८।१४७ | १४७ | १४७ | उ. १४१<br>क्ष.१४५।१३८ | उ. १४१<br>क्ष.१४५।१३८ | उ. १४१<br>क्ष.१४५।१३८ |
| १७ | वचनयोग | १२६ | २२ | १४८ | १४८।१४७ | १४७ | १४७ | उ. १४१<br>क्ष.१४५।१३८ | उ. १४१<br>क्ष.१४५।१३८ | उ. १४१<br>क्ष.१४५।१३८ |
| १८ | काययोग | १२६ | २२ | १४८ | १४८।१४७ | १४७ | १४७ | उ. १४१<br>क्ष.१४५।१३८ | उ. १४१<br>क्ष.१४५।१३८ | उ. १४१<br>क्ष.१४५।१३८ |
| १९ | पुरुषवेद | १२६ | २२ | १४८ | १४८।१४७ | १४७ | १४७ | उ. १४१<br>क्ष.१४५।१३८ | उ. १४१<br>क्ष.१४५।१३८ | उ. १४१<br>क्ष.१४५।१३८ |
| २० | स्त्रीवेद | १२६ | २२ | १४८ | १४८।१४७ | १४७ | १४७ | उ. १४१<br>क्ष.१४५।१३८ | उ. १४१<br>क्ष.१४५।१३८ | उ. १४१<br>क्ष.१४५।१३८ |
| २१ | नपुंसकवेद | १२६ | २२ | १४८ | १४८।१४७ | १४७ | १४७ | उ. १४१<br>क्ष १४५।१३८ | उ. १४१<br>क्ष.१४५।१३८ | उ. १४१<br>क्ष.१४५।१३८ |
| २२ | क्रोध | १२६ | २२ | १४८ | १४८।१४७ | १४७ | १४७ | उ. १४१<br>क्ष.१४५।१३८ | उ. १४१<br>क्ष.१४५।१३८ | उ १४१<br>क्ष.१४५।१३८ |
| २३ | मान | १२६ | २२ | १४८ | १४८।१४७ | १४७ | १४७ | उ. १४१<br>क्ष.१४५।१३८ | उ. १४१<br>क्ष.१४५।१३८ | उ. १४१<br>क्ष.१४५।१३८ |
| २४ | माया | १२६ | २२ | १४८ | १४८।१४७ | १४७ | १४७ | उ. १४१<br>क्ष.१४५।१३८ | उ. १४१<br>क्ष.१४५।१३८ | उ. १४१<br>क्ष.१४५।१३८ |
| २५ | लोभ | १२६ | २२ | १४८ | १४७।१४७ | १४७ | १४७ | उ. १४१<br>क्ष.१४५।१३८ | उ. १४१<br>क्ष.१४५।१३८ | उ. १४१<br>क्ष.१४५।१३८ |
| २६ | मतिज्ञान | १२६ | २२ | १४८ | ० | ० | ० | उ. १४१<br>क्ष.१४५।१३८ | उ. १४१<br>क्ष.१४५।१३८ | उ. १४१<br>क्ष.१४५।१३८ |
| २७ | श्रुतज्ञान | १२६ | २२ | १४८ | ० | ० | ० | उ. १४१<br>क्ष.१४५।१३८ | उ. १४१<br>क्ष.१४५।१३८ | उ. १४१<br>क्ष.१४५।१३८ |

| अप्रमत्त | अपूर्वकरण | अनिवृत्तिकरण | सूक्ष्मसपराय | उपशातमोह | क्षीणमोह | सयोगी केवली | अयोगी केवली |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० |
| ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० |
| उ १४१<br>क्ष १४५।१३८ | उ १४२।१३९<br>क्ष १३८ | उ १४२।१३९<br>क्ष १३८।१०३ | उ १४२।१३९<br>क्ष १०२ | उ १४२।१३९ | क्ष १०१।९९ | क्ष ८५।८५ | क्ष ८५।१३।१२ |
| ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० |
| ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० |
| ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० |
| ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० |
| ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० |
| उ १४१<br>क्ष १४५।१३८ | उ १४२।१३९<br>क्ष १३८ | उ १४२।१३९<br>क्ष १३८।१०३ | उ १४२।१३९<br>क्ष, १०२ | उ १४२।१३९ | क्ष १०१।९९ | क्ष ८५।८५ | क्ष ८५।१३।१२ |
| ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० |
| ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० |
| ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० |
| ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० |
| ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० |
| उ १४१<br>क्ष १४५।१३८ | उ १४२।१३९<br>क्ष १३८ | उ १४२।१३९<br>क्ष १३८।१०३ | उ १४२।१३९<br>क्ष १०२ | उ १४२।१३९ | क्ष १०१।९९ | क्ष ८५।८५ | क्ष ८५।१३।१२ |
| उ १४१<br>क्ष १४५।१३८ | उ १४२।१३९<br>क्ष १३८ | उ १४२।१३९<br>क्ष १३८।१०३ | उ १४२।१३९<br>क्ष १०२ | उ १४२।१३९ | क्ष १०१।९९ | क्ष ८५।८५ | ० |
| उ १४१<br>क्ष १४५।१३८ | उ १४२।१३९<br>क्ष १३८ | उ १४२।१३९<br>क्ष १३८।१०३ | उ १४२।१३९<br>क्ष १०२ | उ १४२।१३९ | क्ष १०१।९९ | क्ष ८५।८५ | ० |
| उ १४१<br>क्ष १४५।१३८ | उ १४२।१३९<br>क्ष १३८ | उ १४२।१३९<br>क्ष १३८।१०३ | उ १४२।१३९<br>क्ष १०२ | उ १४२।१३९ | क्ष १०१।९९ | क्ष ८५।८५ | ० |
| उ १४१<br>क्ष १४५।१३८ | उ १४२।१३९<br>क्ष १३८ | उ १४२।१३९<br>क्ष १३८।१०३ | ० | ० | ० | ० | ० |
| उ १४१<br>क्ष १४५।१३८ | उ १४२।१३९<br>क्ष १३८ | उ १४२।१३९<br>क्ष १३८।१०३ | ० | ० | ० | ० | ० |
| उ १४१<br>क्ष १४५।१३८ | उ १४२।१३९<br>क्ष १३८ | उ १४२।१३९<br>क्ष १३८।१०३ | ० | ० | ० | ० | ० |
| उ १४१<br>क्ष १४५।१३८ | उ १४२।१३९<br>क्ष १३८ | उ १४२।१३९<br>क्ष १३८।१०३ | ० | ० | ० | ० | ० |
| उ १४१<br>क्ष १४५।१३८ | उ १४२।१३९<br>क्ष १३८ | उ १४२।१३९<br>क्ष १३८।१०३ | ० | ० | ० | ० | ० |
| उ १४१<br>क्ष १४५।१३८ | उ १४२।१३९<br>क्ष १३८ | उ १४२।१३९<br>क्ष १३८।१०३ | ० | ० | ० | ० | ० |
| उ १४१<br>क्ष १४५।१३८ | उ १४२।१३९<br>क्ष १३८ | उ १४२।१३९<br>क्ष १३८।१०३ | उ १४२।१३९<br>क्ष १०२ | ० | ० | ० | ० |
| उ १४१<br>क्ष १४५।१३८ | उ १४२।१३९<br>क्ष १३८ | उ १४२।१३९<br>क्ष १३८।१०३ | उ १४२।१३९<br>क्ष १०२ | उ १४२।१३९ | क्ष १०१।९९ | ० | ० |
| उ १४१<br>क्ष १४५।१३८ | उ १४२।१३९<br>क्ष १३८ | उ १४२।१३९<br>क्ष १३८।१०३ | उ १४२।१३९<br>क्ष १०२ | उ १४२।१३९ | क्ष १०१।९९ | ० | ० |

| | मार्गणा | ध्रुवसत्ता प्रकृति १२६ | अध्रुव सत्ता प्रकृति २२ | सत्ता प्रकृति ओघ १४८ | मिथ्यात्व | सास्वादन | मिश्र | अविरत | देशविरत | प्रमत्त |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| २८ | अवधिज्ञान | १२६ | २२ | १४८ | ० | ० | ० | उ. १४१ क्ष.१४५।१३८ | उ. १४१ क्ष.१४५।१३८ | उ. १४१ क्ष.१४५।१३८ |
| २९ | मनःपर्यवज्ञान | १२६ | २२।२० | १४८।१४६ | ० | ० | ० | ० | ० | उ. १४१ क्ष.१४५।१३८ |
| ३० | केवलज्ञान | ६४ | २१ | ८५ | ० | ० | ० | ० | ० | ० |
| ३१ | मतिअज्ञान | १२६ | २२।१९ | १४८।१४५ | १४५ | १४५ | १४७ | ० | ० | ० |
| ३२ | श्रुतअज्ञान | १२६ | २२।१९ | १४८।१४५ | १४५ | १४५ | १४७ | ० | ० | ० |
| ३३ | विभंगज्ञान | १२६ | २२।१९ | १४८।१४५ | १४५ | १४५ | १४७ | ० | ० | ० |
| ३४ | सामायिक चारित्र | १२६ | २२।२० | १४८।१४६ | ० | ० | ० | ० | ० | उ. १४१ क्ष.१४५।१३८ |
| ३५ | छेदोपस्थापनीय ,, | १२६ | २२।२० | १४८।१४६ | ० | ० | ० | ० | ० | उ. १४१ क्ष.१४५।१३८ |
| ३६ | परिहारविशुद्धि ,, | १२६ | २२।२० | १४८।१४२ | ० | ० | ० | ० | ० | उ. १४१ क्ष.१४५।१३८ |
| ३७ | सूक्ष्मसंपराय ,, | १२६।१२२ | २२।२० | १४८।१४२ | ० | ० | ० | ० | ० | ० |
| ३८ | यथाख्यात ,, | १२६।१२२ | २२।२० | १४८।१४२ | ० | ० | ० | ० | ० | ० |
| ३९ | देशविरति | १२६ | २२ | १४८ | ० | ० | ० | ० | उ. १४१ क्ष.१४५।१३८ | ० |
| ४० | अविरति | १२६ | २२ | १४८ | १४८।१४७ | १४७ | १४७ | उ. १४१ क्ष.१४५।१३८ | ० | ० |
| ४१ | चक्षुदर्शन | १२६ | २२ | १४८ | १४८।१४७ | १४७ | १४७ | उ. १४१ क्ष.१४५।१३८ | उ. १४१ क्ष.१४५।१३८ | उ. १४१ क्ष.१४५।१३८ |
| ४२ | अचक्षुदर्शन | १२६ | २२ | १४८ | १४८।१४७ | १४७ | १४७ | उ. १४१ क्ष.१४५।१३८ | उ. १४१ क्ष.१४५।१३८ | उ. १४१ क्ष.१४५।१३८ |
| ४३ | अवधिदर्शन | १२६ | २२ | १४८ | ० | ० | ० | उ. १४१ क्ष.१४५।१३८ | उ. १४१ क्ष.१४५।१३८ | उ. १४१ क्ष.१४५।१३८ |
| ४४ | केवळदर्शन | ६४ | २२ | ८५ | ० | ० | ० | ० | ० | ० |
| ४५ | कृष्णलेश्या | १२६ | २२ | १४८ | १४८।१४७ | १४७ | १४७ | उ. १४१ क्ष.१४५।१३८ | उ. १४१ क्ष.१४५।१३८ | उ. १४१ क्ष.१४५।१३८ |
| ४६ | नीललेश्या | १२६ | २२ | १४८ | १४८।१४७ | १४७ | १४७ | उ. १४१ क्ष.१४५।१३८ | उ. १४१ क्ष.१४५।१३८ | उ. १४१ क्ष.१४५।१३८ |
| ४७ | कापोतलेश्या | १२६ | २२ | १४८ | १४८।१४७ | १४७ | १४७ | उ. १४१ क्ष.१४५।१३८ | उ. १४१ क्ष.१४५।१३८ | उ. १४१ क्ष.१४५।१३८ |
| ४८ | तेजोलेश्या | १२६ | २२ | १४८ | १४८।१४७ | १४७ | १४७ | उ. १४१ क्ष.१४५।१३८ | उ. १४१ क्ष.१४५।१३८ | उ. १४१ क्ष.१४५।१३८ |
| ४९ | पद्मलेश्या | १२६ | २२ | १४८ | १४८।१४७ | १४७ | १४७ | उ. १४१ क्ष.१४५।१३८ | उ. १४१ क्ष.१४५।१३८ | उ. १४१ क्ष.१४५।१३८ |
| ५० | शुक्ललेश्या | १२६ | २२ | १४८ | १४८।१४७ | १४७ | १४७ | उ. १४१ क्ष.१४५।१३८ | उ. १४१ क्ष.१४५।१३८ | उ. १४१ क्ष.१४५।१३८ |
| ५१ | भव्य | १२६ | २२ | १४८ | १४८।१४७ | १४७ | १४७ | उ. १४१ क्ष.१४५।१३८ | उ. १४१ क्ष.१४५।१३८ | उ. १४१ क्ष.१४५।१३८ |
| ५२ | अभव्य | १२६ | १९ | १४५ | १४५ | ० | ० | ० | ० | ० |
| ५३ | उपशमसम्यक्त्व | १२६ | २२ | १४८ | ० | ० | ० | उ. १४१ क्ष.१४५।१३८ | उ. १४१ क्ष.१४५।१३८ | उ. १४१ क्ष.१४५।१३८ |

| अप्रमत्त | अपूर्वकरण | अनिवृत्ति | सूक्ष्मसपराय | उपशातमोह | क्षीणमोह | सयोगी केवळी | अयोगी केवळी |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उ १४१<br>क्ष १४५।१३८ | उ १४२।१३९<br>क्ष १३८ | उ १४२।१३९<br>क्ष १३८।१०३ | उ १४२।१३९<br>क्ष १०२ | उ १४२।१३९ | क्ष १०१।९९ | ० | ० |
| उ १४१<br>क्ष १४५।१३८ | उ १४२।१३९<br>क्ष १३८ | उ १४२।१३९<br>क्ष १३८।१०३ | उ १४२।१३९<br>क्ष १०२ | उ १४२।१३९ | क्ष १०१।९९ | ० | ० |
| ० | ० | ० | ० | ० | ० | क्ष ८५ | क्ष ८५।१३।१२ |
| ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० |
| ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० |
| ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० |
| उ १४१<br>क्ष १४५।१३८ | उ १४२।१३९<br>क्ष १३८ | उ १४२।१३९<br>क्ष १३८।१०३ | ० | ० | ० | ० | ० |
| उ १४१<br>क्ष १४५।१३८ | उ १४२।१३९<br>क्ष १३८ | उ १४२।१३९<br>क्ष १३८।१०३ | ० | ० | ० | ० | ० |
| उ १४१<br>क्ष १४५।१३८ | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० |
| ० | ० | ० | उ १४२।१३९<br>क्ष १०२ | ० | ० | ० | ० |
| ० | ० | ० | ० | उ १४२।१३९ | क्ष १०१।९९ | क्ष ८५ | क्ष ८५।१३।१२ |
| ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० |
| ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० |
| उ १४१<br>क्ष १४५।१३८ | उ १४२।१३९<br>क्ष १३८ | उ १४२।१३९<br>क्ष १३८।१०३ | उ १४२।१३९<br>क्ष १०२ | उ १४२।१३९ | क्ष १०१।९९ | ० | ० |
| उ १४१<br>क्ष १४५।१३८ | उ १४२।१३९<br>क्ष १३८ | उ १४२।१३९<br>क्ष १३८।१०३ | उ १४२।१३९<br>क्ष १०२ | उ १४२।१३९ | क्ष १०१।९९ | ० | ० |
| उ १४१<br>क्ष १४५।१३८ | उ १४२।१३९<br>क्ष १३८ | उ १४२।१३९<br>क्ष १३८।१०३ | उ १४२।१३९<br>क्ष १०२ | उ १४२।१३९ | क्ष १०१।९९ | ० | ० |
| ० | ० | ० | ० | ० | ० | क्ष ८५ | क्ष ८५।१३।१२ |
| ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० |
| ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० |
| ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० |
| उ १४१<br>क्ष १४५।१३८ | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० |
| उ १४१<br>क्ष १४५।१३८ | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० |
| उ १४१<br>क्ष १४५।१३८ | उ १४२।१३९<br>क्ष १३८ | उ १४२।१३९<br>क्ष १३८।१०३ | उ १४२।१३९<br>क्ष १०२ | उ १४२।१३९ | क्ष १०१।९९ | क्ष ८५ | ० |
| उ १४१<br>क्ष १४५।१३८ | उ १४२।१३९<br>क्ष १३८ | उ १४२।१३९<br>क्ष १३८।१०३ | उ १४२।१३९<br>क्ष १०२ | उ १४२।१३९ | क्ष १०१।९९ | क्ष ८५ | क्ष ८५।१३।१२ |
| ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० |
| उ १४१<br>क्ष १४५।१३८ | उ १४२।१३८<br>क्ष १३८ | उ १४२।१३९<br>क्ष १३८।१०३ | उ १४२।१३९<br>क्ष १०२ | उ १४२।१३९ | ० | ० | ० |

| | मार्गणा | ध्रुवसत्ता प्रकृति १२६ | अध्रुव सत्ता प्रकृति २२ | सत्ता प्रकृति ओघ १४८ | मिथ्यात्व | सासादन | मिश्र | अविरत | देशविरत | प्रमत्त |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ५४ | क्षयोपशमसम्यक्त्व | १२६ | २२ | १४८ | ० | ० | ० | उ. १४१ क्ष. १४५।१३८ | उ. १४१ क्ष. १४५।१३८ | उ. १४१ क्ष. १४५।१३८ |
| ५५ | क्षायिकसम्यक्त्व | १२१ | २० | १४१ | ० | ० | ० | उ. १४१ क्ष. १४५।१३८ | उ. १४१ क्ष. १४५।१३८ | उ. १४१ क्ष. १४५।१३८ |
| ५६ | मिश्र | १२६ | २१ | १४७ | ० | ० | १४७ | ० | ० | ० |
| ५७ | सास्वादनसम्यक्त्व | १२६ | २१ | १४७ | ० | १४७ | ० | ० | ० | ० |
| ५८ | मिथ्यात्व | १२६ | २२ | १४८ | १४८।१४७ | ० | ० | ० | ० | ० |
| ५९ | संज्ञी | १२६ | २२ | १४८ | १४८।१४७ | १४७ | १४७ | उ. १४१ क्ष. १४५।१३८ | उ. १४१ क्ष. १४५।१३८ | उ. १४१ क्ष. १४५।१३८ |
| ६० | असंज्ञी | १२६ | २१ | १४७ | १४७ | १४७ | ० | ० | ० | ० |
| ६१ | आहारी | १२६ | २२ | १४८ | १४८।१४७ | १४७ | १४७ | उ. १४१ क्ष. १४५।१३८ | उ. १४१ क्ष. १४५।१३८ | उ. १४१ क्ष. १४५।१३८ |
| ६२ | अनाहारी | १२६ | २२ | १४८ | १४८।१४७ | १४७ | ० | उ. १४१ क्ष. १४५।१३८ | ० | ० |

| अप्रमत्त | अपूर्वकरण | अनिवृत्तिकरण | सूक्ष्मसपराय | उपशातमोह | क्षीणमोह | सयोगी केवली | अयोगी केवली |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उ १४१<br>क्ष १४५।१३८ | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० |
| उ १४१<br>क्ष १४५।१३८ | उ १४२।१३९<br>क्ष १३८ | उ १८२।१३९<br>क्ष १३८।१०३ | उ १४२।१३९<br>क्ष १०२ | उ १४२।१३९ | क्ष १०१।९९ | क्ष ८५ | क्ष ८५।१३।१२ |
| ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० |
| ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० |
| ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० |
| उ १४१<br>उ १४५।१३८ | उ १४२।१३९<br>क्ष १३८ | उ १४२।१३९<br>क्ष १३८।१०३ | उ १४२।१३९<br>क्ष १०२ | उ १४२।१३९ | क्ष १०१।९९ | क्ष ८५ | क्ष ८५।१३।१२ |
| ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० |
| उ १४१<br>क्ष १४५।१३८ | उ १४२।१३९<br>क्ष १३८ | उ १४२।१३९<br>क्ष १३८।१०३ | उ १४२।१३९<br>क्ष १०२ | उ १४२।१३९ | क्ष १०१।९९ | क्ष ८५ | ० |
| ० | ० | ० | ० | ० | ० | क्ष ८५ | क्ष ८५।१३।१२ |

# ६२ मार्गणाए गुणस्थानने आश्री सत्तानुं विचरण.

ध्रुव अध्रुवमां जे १० वंधन वाद कर्या छे, ते दश विना १४८ प्रकृतिनी सत्ता गुणस्थानने आश्रीने नीचे प्रमाणे.

२ नरकगति अने देवगति ए वे मार्गणाए ओघे १४८ प्रकृतिनी सत्ता होय.

१ मिथ्यात्व गुणस्थाने १४८ नी सत्ता. तथा तीर्थंकर नाम कर्म विना १४७ नी पण सत्ता होय.

३ वीजे अने त्रीजे गुणस्थाने जिन नाम कर्म विना १४७ नी सत्ता होय.

४ अविरति गुणस्थाने क्षायिक समकितीने अनंतानुवंधि ४, समकित मोहनी १, मिश्र मोहनी १, मिथ्यात्व मोहनी १, ए ७ प्रकृति विना १४१ नी तेमज वे आयु विना १३९ नी सत्ता होय. अने उपशम तथा क्षयोपशम समकितीने एक आयु विना १४७ नी सत्ता होय. नारकीने देवतानुं अने देवताने नारकीनुं आयु न होय. केमके तेनो त्यां वंधज नथी. क्षायिक आश्री तिर्यगायु पण न होय.

३ मनुष्य गति मार्गणाए ओघे १४८ प्रकृतिनी सत्ता होय.

३ पहेलेथी त्रण गुणस्थानक सुधी देवगतिनी मार्गणा प्रमाणे जाणवुं.

४ अविरति गुणस्थाने क्षायिक समकिती, अचरम शरीरी, उपशम श्रेणिवाळाने अनंतानुवंधी ४, दर्शन मोहनी ३, ए ७ प्रकृति विना १४१ नी सत्ता होय. तथा क्षपक श्रेणिवाळा चरम शरीरीने नरकायु, तिर्यगायु अने देवायु ए ३ विना १४५ नी होय. अने अनंतानुवंधी ४ तथा दर्शन मोहनी ३ कुल ७ खपावे त्यारे १३८ नी सत्ता होय. उपशम समकिती उपशम श्रेणिवाळाने १४८ नी सत्ता होय.

७ देशविरति, प्रमत्त, अप्रमत्त ए ३ गुणस्थाने उपशमश्रेणि अने क्षपकश्रेणि आश्री चोथा गुणस्थानक प्रमाणे जाणवुं.

८ अपूर्वकरण गुणस्थाने ओघे उपशम समकिती उपशमश्रेणिवाळा आश्री अनंतानुवंधी ४, तिर्यगायु १, नरकायु १, ए छ विना १४२ होय. क्षायिक समकितीने उपशमश्रेणि आश्री दर्शन सप्तक विना १४१ मांथी तिर्यगायु १, नरकायु १, ए वे विना १३९ होय. क्षपकश्रेणि आश्री पूर्वे कह्या प्रमाणे १३८ होय.

९ अनिवृत्तिवादर गुणस्थानके प्रथम भागे अपूर्वकरण गुणस्थान प्रमाणे जाणवुं. वीजे भागे क्षपकश्रेणीए स्थावर द्विक २, तिर्यंच द्विक २, नरकद्विक २, आतप द्विक २, स्त्यानर्द्धि त्रिक ३, एकेंद्रिय जाति १, विकलेंद्रिय त्रिक ३, साधारण नाम १, ए सोळ प्रकृति विना १२२ नी सत्ता होय. त्रीजे भागे अप्रत्याख्यान चतुष्क ४, प्रत्याख्यान चतुष्क ४, ए ८ प्रकृति विना ११४ नी सत्ता होय. चोथे भागे नपुंसक वेद विना ११३ प्रकृतिनी सत्ता होय. पाचमे भागे स्त्रीवेद विना ११२ नी सत्ता होय. छठ्ठे भागे हास्यादि षट्क ६ विना १०६ नी सत्ता होय. सातमे भागे पुरुषवेद विना १०५ नी होय. आठमे भागे संज्वलन क्रोध विना १०४ नी होय. नवमे भागे संज्वलन मान विना १०३ प्रकृतिनी सत्ता होय. उपशमश्रेणीवाळाने १४२ अथवा १३९ होय.

१० सूक्ष्मसंपराय गुणस्थाने नवमा गुणस्थानना पहेला भाग प्रमाणे. परंतु क्षपक श्रेणि वाळाने १०३ प्रकृतिमांथी संज्वलन माया विना १०२ प्रकृतिनी सत्ता होय. उपशम श्रेणी वाळाने १४२ अथवा १३९ होय.

११ उपशांतमोह गुणस्थाने उपशम श्रेणी वाळाने सूक्ष्मसंपराय गुणस्थान प्रमाणे जाणवुं क्षपकश्रेणिवाळा आ गुणठाणे आवताज नथी.

१२ क्षीणमोह गुणस्थाने क्षपकश्रेणीवाळाने संज्वलन लोभ विना ओघे १०१ प्रकृति होय, तेमांथी निद्रा तथा प्रचला ए वे प्रकृति द्विचरम समये जवाथी ९९ नी सत्ता होय.

१३ सयोगी गुणस्थाने ज्ञानावरणीय ५, दर्शनावरणीय ४, अंतराय ५, ए १४ प्रकृति विना क्षपकश्रेणीए सत्ताए ८५ प्रकृति होय.

१४ अयोगी गुणस्थानके उपर प्रमाणे ८५ प्रकृति सत्ताए होय. तेमांथी देव द्विक २, खगति द्विक २, गंध २, स्पर्श ८, वर्ण ५, रस ५, शरीर ५, वंधन ५, संघातन ५, निर्माण नाम कर्म १, संघयण ६, अस्थिर षट्क ६, संस्थान ६, अगुरुलघु चतुष्क ४, अपर्याप्तक नाम १, वेमांथी एक वेदनीय १, प्रत्येक त्रिक ३, उपाग त्रिक ३, सुस्वर नाम १, नीचगोत्र १, ए ७२ प्रकृति विना वाकीनी १३ प्रकृतिनी

सत्ता छेहानी अगाउना समये होय जो मनुष्यानुपूर्वी खपावे तो १२ नी सत्ता होय त्यार पछी छेडे स मये मनुष्य त्रिक ३, त्रस त्रिक ३, जश नाम १, आदेय नाम १, सौभाग्य नाम १, जिन नाम १, उच्चगोत्र १, पचेंद्रिय जाति १, वेदनीय १, ए तेर अथवा मनुष्यानुपूर्वी शिवाय १२ प्रकृति खपावी मोक्षे जाय

४ तिर्यंच गतिनी मार्गणाए ओघे ने त्रण गुणस्थाणे जिन नाम विना १४७ प्रकृतिनी सत्ता जाणवी

४ चोथे गुणठाणे क्षायिक समकितीने दर्शन सप्तक अने नरकायु तथा मनुष्यायु विना १३८ होय अने उपशम तथा क्षयोपशमवाळाने जिननाम विना १४७ सत्तामां होय

५ पांचमे गुणठाणे उपर प्रमाणे समजवु

८ एकेंद्रिय तथा विकलेंद्रियनी मागणाए ओघे, मिथ्यात्व गुणस्थाने तथा सास्वादन गुणस्थाने जिन नाम कर्म १, अने आहारक द्विक २ ए ३ प्रकृति विना १४५ नी सत्ता होय

९ पंचद्रियनी मागणाए मनुष्यनी मागणा प्रमाणे जाणवु

१२ पृथ्वीकाय, अपकाय अने वनस्पतिकाय ए त्रण मार्गणाए एकेंद्रियनी मागणा प्रमाणे जाणवु

१४ तेजस्काय अने वायुकायना मागणाए ओघे तथा मिथ्यात्व गुणस्थाने तीर्थंकर नाम कर्म १, आहारक द्विक २, मनुष्यायु १, ए ४ प्रकृति विना १४४ प्रकृतिनी सत्ता होय

१५ त्रस कायनी मागणाए मनुष्यगतिनी मागणा प्रमाणे जाणवु

१८ मनयोगी, वचनयोगी अने काययोगी ए त्रण मागणाए मनुष्यनी मागणा प्रमाणे १३ गुणस्थानक सुधी जाणवु

२४ त्रण वेद अने त्रण कषाय ( क्रोध, मान, माया ) ए छ मागणाए मनुष्य गतिनी मागणा प्रमाणे नव गुण स्थानक सुधी जाणवु

२५ लोभनी मागणाए मनुष्य गतिनी मागणा प्रमाणे दश गुणस्थानक सुधी जाणवु

२८ मतिज्ञान, श्रुतज्ञान, अवधिज्ञान ए त्रण मागणाए मनुष्य गतिना मागणा प्रमाणे चोथा गुणस्थानकथी मा डीने बारमा गुणस्थानक सुधी जाणवु

२९ मन पर्यव ज्ञाननी मागणाए ओघे १४८ अथवा तिर्यगायु १ अने नरकायु १ ए ब विना १४६ प्रकृतिनी सत्ता होय ते छट्ठा गुणस्थानकथी बारमा गुणस्थानक सुधी मनुष्यगतिनी मागणा प्रमाणे जाणवु

३० केवळ ज्ञाननी मागणाए मनुष्य गतिनी मार्गणा प्रमाणे छेल्ला बे गुणस्थानक जाणवा

३३ त्रण अज्ञाननी मार्गणाए ओघे १४८ अथवा १४५ प्रकृतिनी सत्ता होय तथा पहेलेथी त्रण गुणस्थानक सुधी एकेंद्रियनी मागणा प्रमाणे १४५ नी सत्ता होय

३५ सामायिक चारित्र अने छेदोपस्थापनीय ए बे मागणाए ओघ १४८ नी सत्ता अथवा तिर्यगायु अने नरकायु ए ब प्रकृति विना १४६ नी पण सत्ता होय तेने छट्ठेथी माडान नवमा गुणस्थानक सुधी मन पर्यव ज्ञानाव रणनी मागणा प्रमाणे जाणवु

३६ परिहारविशुद्धि चारित्रनी मागणाए ओघे उपर प्रमाणे तथा छट्ठु अने सातमु गुणस्थानक होवाथी तेने माटे उपर प्रमाणे जाणवु

३७ सूक्ष्मसपरायनी मागणाए ओघ १४८ नी सत्ता होय अथवा अनतानुबधी ४, तिर्यगायु १, नरकायु १, ए छ प्रकृति विना १४२ नी सत्ता होय तेने एक दशमु ज गुणस्थानक होय ते मनुष्य गतिनी मागणा प्रमाणे जाणवु

३८ यथाख्यात चारित्रनी मागणाए ओघे दशमा गुणस्थानक प्रमाणे अग्यारमाथी माडीने चौदमा गुणस्थानक सुधी मनुष्य गतिनी मागणा प्रमाणे जाणवु

३९ देशविरति मागणाए ओघ १४८ नी सत्ता होय तेने एक पांचमु ज गुणस्थान मनुष्य गति प्रमाणे होय

४० अविरति मागणाए ओघे तथा पहेलेथी गुणस्थान चार सुधी मनुष्य गतिनी मागणा प्रमाणे होय

४२ चक्षु अने अचक्षु दर्शननी मागणाए ओघे तथा पहेलेथी बारमा गुणस्थान सुधी मनुष्यगति प्रमाणे जाणवु

४३ अवधि दर्शन मार्गणाए अवधि ज्ञान प्रमाणे जाणवुं.

४४ केवळ दर्शन मार्गणाए केवळ ज्ञान प्रमाणे जाणवुं.

४७ कृष्णलेश्या, नीललेश्या अने कापोतलेश्या ए त्रण मार्गणाए ओघे तथा पहेलेथी छठ्ठा गुणस्थान सुधी मनुष्य गतिनी मार्गणा प्रमाणे जाणवुं.

४८ तेजोलेश्या अने पद्मलेश्यानी मार्गणाए ओघे तथा पहेलेथी सात गुणस्थानक सुधी मनुष्य गतिनी मार्गणा प्रमाणे जाणवुं.

५० शुक्लेश्यानी मार्गणाए ओघे तथा पहेलेथी तेरमा गुणस्थान सुधी मनुष्य गतिनी मार्गणा प्रमाणे जाणवुं.

५१ भव्य मार्गणाए ओघे तथा पहेलेथी चौदे गुणस्थानके मनुष्य गति प्रमाणे जाणवुं.

५२ अभव्य मार्गणाए ओघे तथा मिथ्यात्व गुणस्थाने जिन नाम १ अने आहारक द्विक २ ए त्रण प्रकृति विना १४५ नी सत्ता होय.

५३ उपशम समकितनी मार्गणाए ओघे तथा चोथेथी अग्यारमा गुणस्थान सुधी मनुष्य गतिनी मार्गणा प्रमाणे जाणवुं.

५४ क्षयोपशम समकितनी मार्गणाए ओघे तथा चोथेथी सातमा गुणस्थानक सुधी मनुष्य गति प्रमाणे जाणवुं.

५५ क्षायिक समकितनी मार्गणाए ओघे अनंतानुबंधी ४ त्रण मोहनी ३ ए ७ प्रकृति विना १४१ प्रकृतिनी सत्ता होय. तेने चोथा गुणस्थानथी मांडीने चौदमा गुणस्थान सुधी मनुष्य गति प्रमाणे जाणवुं.

५६ मिश्रनी मार्गणाए ओघे तथा त्रीजे गुणस्थाने जिन नाम विना १४७ नी सत्ता होय.

५७ सास्वादन समकित मार्गणाए ओघे तथा बीजे गुणस्थाने जिन नाम विना १४७ नी सत्ता होय.

५८ मिथ्यात्वनी मार्गणाए ओघे तथा मिथ्यात्वे १४८ नी सत्ता होय.

५९ संज्ञी मार्गणाए ओघे तथा पहेलेथी चौदे गुणस्थान मनुष्य गति प्रमाणे जाणवा.

६० असंज्ञी मार्गणाए ओघे तथा पहेले अने बीजे गुणस्थाने जिन नाम विना १४७ नी सत्ता होय.

६१ आहारीनी मार्गणाए ओघे तथा पहेलेथी तेर गुणस्थानक सुधी मनुष्य गतिनी मार्गणा प्रमाणे जाणवुं.

६२ अनाहारीनी मार्गणाए ओघे तथा पहेले, बीजे, चोथे, तेरमे अने चौदमे ए पांच गुणस्थाने मनुष्यगतिनी मार्गणा प्रमाणे जाणवुं.